शास्त्रार्थ महारथी ठाकुर अमरसिंह जी आर्य पथिक
महामहोपदेशक प्रादेशिक सभा सन् १९१६ ई०
(अमर स्वामी जी युवावस्था में)

॥ ओ३म् ॥

शास्त्रार्थ केशरी अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ
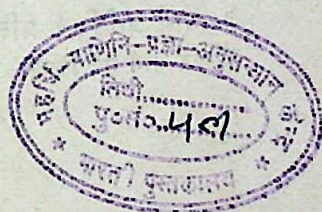
सम्पादक

ठाकुर विक्रमसिंह एम० ए०

प्रकाशक

अमर स्वामी अभिनन्दन समिति

आर्यसमाज कस्तूरबा नगर (डिफैन्स कालोनी)

नई दिल्ली ११०००३

१७ दिसम्बर, १९७८ ई०

१. पुस्तक प्राप्ति स्थान—

राजपूताना प्रकाशन

ठा० विक्रमसिंह एम० ए०
पाकिट ३ फ्लेट ५८ पश्चिमपुरी,
नई दिल्ली-११००६३

२. लाजपतराय आर्य

अमर स्वामी प्रकाशन

संन्यास आश्रम गाजियाबाद (उ० प्र०)

३. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

मूल्य : अजिल्द—१२ रुपये
सजिल्द—१५ रुपये

मुद्रक :

जागृति प्रिंटर्स

७१०८, गली पहाड़ वाली, पहाड़ी धीरज,
दिल्ली-६

समर्पण

आर्यजगत् के महान संन्यासी महर्षि दयानन्द की सेना के महान सेनानी,
ब्राह्मण समाज के पूज्य, क्षत्रीय समाज के अग्रणी महात्मा,
स्वनामधन्य जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्य समाज के सिद्धान्तों के
प्रचार एवं प्रसार में समर्पित कर दिया। प्रमाण महार्णव
रामायण, गीता, महाभारत के महान व्याख्याता वेद
शास्त्र-उपनिषद मर्मज्ञ, पुराण, कुरान आदि अवैदिक
मतों के मानमर्दन करने वाले, अद्वितीय
वक्ता, जिन्होंने दिग्दिगान्तर में
वैदिक सिद्धान्तों की
विजय वैजन्ती
फहराई।
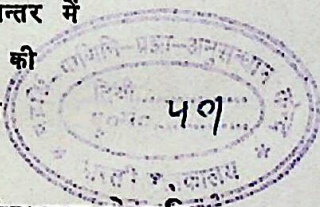
महात्मा अमर स्वामी परिव्राजक के प्रति

जिस
दिव्य गुरु ने
"अग्निना अग्नि समिध्यते'
को जीवन में चरितार्थ कर
हजारों शिष्यों को उपदेशक, भजनोपदेशक,
प्रोफेसर, डाक्टर, बनाकर दलित पीडितजनों के
हितैषी बना कर समाज को समर्पित किया।
इसी अजेय योद्धा के जीवन के ८५वें वर्ष में सादर समर्पित।
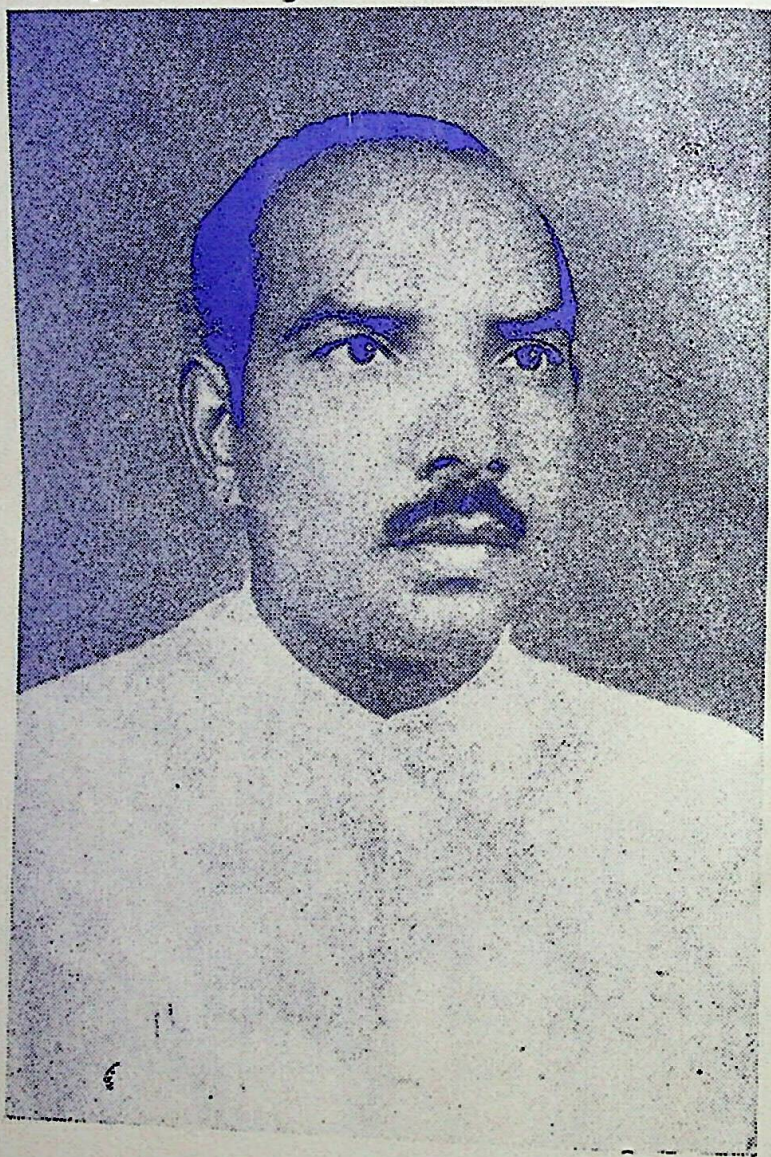
सम्पादक—ठा० विक्रमसिंह एम० ए०

सम्पादकीय

लगभग दो वर्ष पूर्व पूज्य अमर स्वामी जी महाराज के शिष्य वर्ग एवं श्रद्धालु जनों ने सम्मिलित होकर निर्णय लिया कि महाराज के यशस्वी जीवन एवं निष्काम समाज सेवा के कारण उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जाय।

पूज्य अमर स्वामी जी महाराज का जीवन एक आदर्श जीवन रहा है। जिन्होंने 'अग्निना अग्नि समिध्यते' को जीवन में चरितार्थ कर हजारों शिष्य समाज को दिये जिनमें आज अनेकों डाक्टर—प्रोफेसर— उपदेशक – पुरोहित भजनोपदेशक बनकर आर्यसमाज के काम को बढ़ा रहे हैं साथ ही स्वामी जी महाराज की प्रतिभा का दर्शन करा रहे हैं। आर्य जगत में कई उपदेशक विद्यालय खुले एवं चल रहे हैं किन्तु कुछेक को छोड़कर बढ़िया उपदेशक कम बने हैं परन्तु महाराज के पास जो चार महीने भी रह गया वह महा-महोपदेशक बन गया।

समिति ने सम्पादन एवं धन संग्रह आदि का कार्य मुझे ही सौंपा। मैं जो कुछ भी व्यस्त जीवन में से समय निकालकर कर पाया वह आपके सम्मुख है। मैं भी आज इसी रूप में गुरु दक्षिणा दे पाया हूं।

इस महान कार्य में श्री प० ओमप्रकाश जी आर्य पथिक एवं आचार्य जय प्रकाश जी, पं० वेद व्यास जी, लाजपतराय जी आर्य एवं प्रोफेसर वीरपाल जी विद्यालंकार का सहयोग सब तरह से सराहनीय रहा है मैं उनका आभारी हूं।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल 'आर्य रत्न' एवं प्रधान ला० सूरजभान जी तथा आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश जी बहल एवं मन्त्री विश्वमित्र जी चड्ढा तथा श्री वेद कुमार जी वेदालंकार मन्त्री आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश श्री देशराज जी बहल राजेन्द्र नगर, श्री देवराज जी संधीर एडवोकेट हिसार, श्री ओंकार नाथ जी मानकटाला बम्बईका आभारी हूं जिन्होंने सम्पूर्ण व्यवस्था में सहयोग दिया।

इस ग्रन्थ में अनेक विद्वानों के विभिन्न सैद्धान्तिक लेख समाविष्ट हैं इससे ग्रन्थ की उपयोगिता बढ़ गई है साथ ही कु० सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, पं० प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न, शास्त्रार्थ महारथी ओमप्रकाश जी खतौली की रचनाओं ने ग्रन्थ की शोभा बढ़ाई है। मैं सभी के प्रति कृतज्ञ हूं।

श्री शोभाराम जी आर्य ने ग्रन्थ के मुद्रण का कार्य बड़े ही परिश्रम एवं सहृदयता से करके सभी का दिल जीत लिया है। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं। अनेक अनिवार्य कारणों से ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब हुआ कुछ त्रुटियाँ भी हो सकती हैं। अच्छाईयां आप सब की हैं। त्रुटियां मेरी हैं क्षमा प्रार्थी हूं।

विक्रमसिंह

विषय-सूचि

श्री अमर स्वामी जी महाराज भाषण देते हुए
आर्यसमाज वम्वई सन् १९७६ ई०

श्री अमर स्वामी जी सरस्वती

श्री अमर स्वामी जी सरस्वती का आर्य समाज के संन्यासी मण्डल में एक विशेष स्थान है। संन्यास आश्रम की दीक्षा लेने से पूर्व वे ठाकुर अमर सिंह जी 'आर्य मुसाफिर' के रूप में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक के पद पर रहते हुए अविभाजित पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा भारत के अन्य प्रान्तों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ भ्रमण करते रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पुराने महोपदेशकों में श्री मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री, श्री पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी तथा श्री ठाकुर अमर सिंह जी 'आर्य मुसाफिर' विशेष ख्याति प्राप्त महोपदेशक थे। श्री मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री तथा श्री पं० बुद्ध देव जी 'मीरपुरी' तो दिवंगत हो गए हैं। अब उस समय की निशानी के रूप में केवल श्री ठाकुर अमर सिंह जी 'आर्य मुसाफिर' (श्री अमर स्वामी जी सरस्वती) हमारे समक्ष हैं।
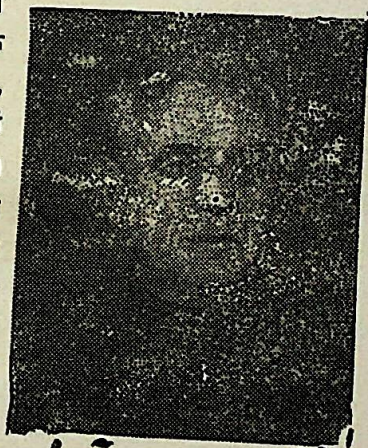
ला० सूरजभान जी सभा प्रधान

श्री अमर स्वामी जी सरस्वती शास्त्रार्थ कला के मर्मज्ञ हैं। लगभग सभी प्रसिद्ध पौराणिक शास्त्रार्थ महारथियों के साथ उन्होंने शास्त्रार्थ किए हैं। इन शास्त्रार्थों में उनकी हाजिर जवाबी, विद्वता तथा शास्त्रार्थ कला में निपुणता के पर्याप्त प्रमाण मिलते रहे हैं। इस्लाम तथा ईसाई मत के विद्वानों के साथ भी उनके सफल शास्त्रार्थ हुए हैं।

पं० भोजदत्त जी 'आर्य मुसाफिर 'द्वारा संस्थापित' आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा' के स्नातक होते ही १६१८ ई० में इन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपदेशक के रूप में वैदिक धर्म प्रचार के पुनीत कार्य को

करना आरम्भ किया। इस प्रकार लगभग ६० वर्ष स्वामी जी को महर्षि दयानन्द के मिशन का प्रसार करते हुए हो गए हैं। इस लिए मैं उचित समझता हूँ कि उनकी दीर्घ सेवा को समक्ष रखते हुए उनका हार्दिक अभिनन्दन किया जाए। यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अमर स्वामी जी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

स्वामी जी इस आयु में भी वैदिक धर्म प्रचार करने में रत हैं। वे जहाँ अपने प्रवचनों, व्याख्यानों तथा शास्त्रार्थों द्वारा समस्त भारत में भ्रमण करते हैं, वहाँ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्य जगत' के सम्पादक के रूप में लेखनी के द्वारा भी अपने विचारों से जनता को लाभान्वित करते हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के इतिहास लेखन का कार्य भी स्वामी जी ने अपने हाथ में लिया हुआ है। इतिहास लेखन के उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य के करने के लिए वे सर्वथा उपयुक्त महानुभाव हैं। क्योंकि सभा के इतिहास से संबंधित अनेक घटनाओं का स्वामी जी ने स्वयं साक्षात्कार किया है।

मेरे लिए यह चिन्ता का विषय है कि आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के महानुभाव इस असार संसार से एक-एक करके क्रमशः दिवगंत होते जा रहे हैं। ऐसी अवस्था में श्री अमर स्वामी जी का दम गनीमत है। मैं परम पिता परमात्मा से उनकी दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ। वे सौ वर्ष से भी अधिक आयु को भोगें तथा वैदिक धर्म के प्रचार में लगे रहें। आर्य समाज को स्वामी जी की सेवाओं की अभी बहुत आवश्यकता है।

आदर्श गुरु

पूज्य अमर स्वामी जी महाराज को यूं तो मैं जन्म से ही जानता हूं उनकी ख्याति ठा० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ केसरी के रूप में सर्वत्र थी किन्तु जब मैं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का महामंत्री बना तो स्वामी जी महाराज से विशेष परिचय हुआ। सभा वर्ष में कई महत्वपूर्ण पर्व राजधानी में मनाती है जिनमें देश के बड़े २ नेता भाग लेते हैं। ऐसी किसी भी सभा की अध्यक्षता करने के लिए ऐसे संन्यासी की आवश्यकता अनुभव होती थी जो विद्वता के साथ २ उच्च कोटि का वक्ता भी हो, ऐसे में मेरी निगाह बरबस पूज्य अमर स्वामी जी, महाराज की ओर उठ जाती थी जो कि सभा की शोभा हैं।
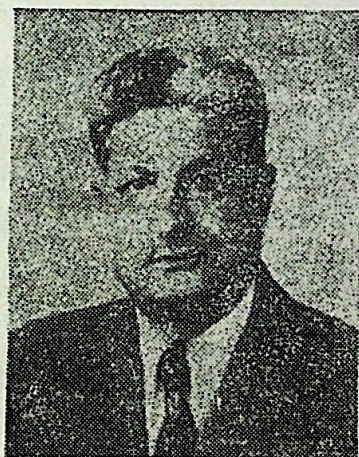
दिनों दिन पूज्य स्वामी जी महाराज से मेरा सम्बन्ध प्रगाढ़तर होता चला गया और मेरे सुपुत्र अजय सहगल के शुभ विवाह पर पधार कर स्वामी जी महाराज ने नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया तथा विवाह संस्कार भी उनके सुयोग्य शिष्य ओजस्वी वक्ता श्री विक्रमसिंह जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। साथ ही श्रद्धेय शिव कुमार जी शास्त्री एवं स्वामी सत्यप्रकाश जी ने भी आशीर्वाद दिया तथा उन सबको भी जब मैंने अमर स्वामी जी महाराज के प्रति नमन करते पाया तो मैंने समझा कि विद्वानों में विद्या से कौन बड़ा है।

मेरे प्रिय मित्र पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी तो जब भी चर्चा चलती तो कहते कि अमर स्वामी जी महाराज अपने ढंग के उदात्त मना एक ही हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री बनने के बाद सभा का इतिहास लिखने के लिये भी स्वामी जी महाराज को ही सबसे प्रमुख व्यक्ति माना गया। ऐसे महा मानव के प्रति मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

रामनाथ सहगल
मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग नई दिल्ली

विज्ञप्ति

पूज्य अमर स्वामी जी महाराज ने संसार के उन सभी लोगों को चुनौती दी है जो वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध मान्यतायें रखते हैं। साथ ही उन आर्य विद्वानों को भी जो स्वामी दयानन्द जी महाराज के मन्तव्यों का उल्टा-सीधा अर्थ लगाकर अपने वेद विरुद्ध मत का पोषण करना चाहते हैं अथवा कर्म-काण्ड के नाम पर अहं पंडितं मन्यमानाः समझते हैं। चौबीसों घंटे स्वामी जी महाराज शास्त्रार्थ के लिये समुद्यत हैं। है कोई माई का लाल जो इस अपराजेय योद्धा के सम्मुख डट सके। दुनिया के लोगो अब अमर स्वामी का शरीर जरूर ८५ वर्ष का बूढ़ा हो गया किन्तु मस्तिष्क अब भी जवान है इस प्रमाण सागर में कितने ही विद्वान् गोता लगाकर डूब गये अब और कौन डूबने के लिये तैयार होगा। इस ज्ञान भंवर में बड़े-बड़े तैराक चक्कर खा गये हैं किन्तु अब भी स्वामी जी महाराज की चुनौती बरकरार है। उठो आओ शंका निवारण करो फिर न कहना कि दिल की तमन्ना दिल में ही रह गई है।

—सम्पादक

जीवन-वृत्त

(ठाकुर विक्रमसिंह एम.ए.)

१. जन्म—वैशाख कृष्ण द्वितीया वि० सम्वत् १९५१ अप्रैल सन् १८९४ ई० ग्राम अरनियाँ जिला बुलन्दशहर

२. वंश— राजपूत चौहान गोत्रीय

३. शिक्षा—सन् १९१४ तक हिन्दी-संस्कृत, राधाकृष्ण पाठशाला खुर्जा जि० बुलन्दशहर सन् १९१४ से १९१८ तक चार वर्ष तक आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में संस्कृत-फारसी-अरबी तथा वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया।

४. विवाह—सन् १९१४ में विवाह हुआ।

५. स्नातक—अप्रैल १९१८ में स्नातक बने।

६. गृहस्थ—गृहस्थ में जया और विजया दो सुपुत्री तथा-मृत्युञ्जय, शत्रुञ्जय एवं धनञ्जय तीन पुत्र रत्न प्राप्त हुये।

७. सत्याग्रह—सन् १९१८ में धौलपुर में महाराज उदयभान सिंह ने वजीर काजी अजीजुद्दीन की शरारत से आर्य समाज मंदिर गिरवा कर मोटर हाऊस बनवाना था। मुसाफिर विद्यालय से जत्था गया जिसमें पं० बिहारी लाल जी शास्त्री-मौलवी महेशप्रशाद जी आलिम फाजिल-केदार नाथ पांडे (पं० राहुल सांकृतायन) आदि के साथ ठाकुर अमरसिंह जी भी थे।

८. उपदेशक—अक्टूबर १९१८ में महात्मा हंसराज जी के आग्रह पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में उपदेशक बने।

९. प्रथम शास्त्रार्थ—सन् १९१९ में पिंडी घेप कैम्बलपुर अटक (पाकिस्तान) में शास्त्रार्थ किया।

१०. सन् १९१९ में सभा छोड़कर दर्शनानन्द उपदेशक मंडल एवं विद्यालय लाहौर में बनाया।

११. सन् १९२१ में महात्मा हंसराज जी ने महात्मा खुशहाल चन्द (आनन्द स्वामी) एवं मस्ताम जी बी. ए. को भेजकर सभा में बुलवा लिया।

१२. सन् १९२३ में हापुड में एक माह कार्य करके ५० ईसाई शुद्ध किये तथा ईसाईयों का वहां से अड्डा ही उखाड दिया और वर्तमान आर्य समाज आज वहां ईसाईयों की भूमि पर खडा हुआ है।

१३. सन् १९२३ में ही आगरा में मलकानों की शुद्धि प्रारम्भ की।

१४. सन् १९२३ में ही ठाकुर इन्द्रवर्मा महोपदेशक की वहिन प्रेमवती पूर्वनाम नारायणादेवी से ग्रा० नहोठी जि० अलीगढ से विवाह हुआ। प्रथम पत्नी का देहान्त हो गया था।

१५. सन् १९२७ में होश्यारपुर में पुरोहित विद्यालय के आचार्य वने।

१६. सन् १९३५ में सीमा प्रान्त (एप्टाबाद) में भयंकर अग्निकांड हुआ वहाँ एक माह तक रह कर ऋषि लंगर जारी रक्खा

१७. सन् १९३५ में शास्त्रार्थ विधवा विवाह पर सनातन धर्मियों की ओर से ही ठाकुर अमरसिंह जी गये और सनातन धर्मी पं० कालूरामजी शास्त्री से जि० होश्यारपुर (पंजाब) में शास्त्रार्थ कर विजय श्री पाई।

१८. सन् १९३९ में हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह किया जिसने आर्य समाज के प्रचार पर प्रतिवन्ध लगा दिया था ४॥ माह तक जेल में रहे साथ में ला० खुशहालचन्द जी, कु० सुखलाल जी, धुरेन्द्र शास्त्री आदि थे।

१९. सन् १९४१ में नूरपुर जिला० कांगडा में बूचड खाना बनने का विरोध करने पर २ माह धर्मशाला की जेल में रहे।

२०. सन् १९४४ में आर्योपदेशक विद्यालय मोहन नगर (हरिद्वार) के आचार्य वने।

२१. सन् १९४७ में भारत विभाजन के साथ सभा छोड़ दी।

२२. सन् १९५१ में अपनी जन्मभूमि ग्राम अरनिया में उपदेशक विद्यालय खोला।

२३. सन् १९५१ में भयंकर वायु प्रकोप से घुटने बेकार हो गये और एक वर्ष तक चारपाई पर लेटे ही रहे फिर प्रभु

कृपा से जीवन पाया और ४ वर्षों तक लकड़ी वगल में लगाकर चलते रहे। अब भी घुटनों में दर्द रहता है।

२४. सन् १९५७ में हिन्दी सत्याग्रह (पंजाव) में काम किया किन्तु गिरफ्तार किसी ने न किया।

२५. सन् १९५८ में आर्यसमाज कलकत्ता १९ विधान सरणी के धर्माचार्य बने साथ ही आर्य संसार और आर्य समाज पत्रों का सम्पादन किया। आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द औषधालय खोला जो आज भी वह वहुत अच्छे ढंग से चल रहा है और आपकी सेवा की याद दिला रहा है।

२६. सन् १९६१ में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्यापन कार्य किया।

२७. सन् १९६२ में उपदेशक विद्यालय हापुड के आचार्य बने। (मैं भी वहीं पर पढ़ा और स्नातक वना) सम्पादक।

२८. सन् १९६५ में वेद पथ मासिक पत्र का सम्पादन संन्यास आश्रम गाजियाबाद से किया जिसका प्रबन्ध स्वामी विज्ञानानन्द जी करते थे।

२९. सन् १९६५ में गौरक्षा आन्दोलन में अम्बाला की सैन्ट्रल जेल में रहे।

३०. सन् १९६७ में वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में स्वामी विवेकानन्द जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ली तथा महात्मा अमर स्वामी परिव्राजक के नाम से प्रसिद्ध हुये।

३१. सन् १९७७ में आर्य प्रादेशिक सभा के पत्र आर्य जगत के सम्पादक बने।

३२. सन् १९७८ में आर्य प्रादेशिक सभा का इतिहास लिखा। अब भी अनवरत—लेख एवं उपदेश से जीवन के ८५ वर्ष में भी वेद प्रचार करते हुए महर्षि दयानन्द की कीर्ति फैला रहे हैं।

श्रद्धा सुमन खंड (१)

१—महात्मा अमर स्वामी जी महाराज जिन्हें मैं आर्य समाज के बचपन से जानता और मानता हूं। मेरे परम सहयोगी, आर्य समाज के रत्न-शास्त्रार्थ के केसरी- अद्वितीय वक्ता की शान आज भी मस्तक झुका देती है। संन्यासी तो वास्तव में ये ही हैं। महाराज का हार्दिक अभिनन्दन है।

—आनन्द स्वामी सरस्वती

२—मैं दर्शन का महा पंडित स्वयं को मानता था किन्तु एक दिन जब दर्शनों पर पूज्य अमर स्वामी जी महाराज का प्रवचन सुना तो पता लगा कि मैं दर्शन के महा समुद्र के किनारे खड़ा था और वो बीच में थे।

—स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी एटा

३—बचपन से ही पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की स्मृति मन में समा गई थी जिसे मैंने ठा० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ-महारथी के रूप में प्रथम वार देखा था। इस महापंडित दिग्गज का अभिनन्दन युवकों में भव्य भावना भरेगा। महर्षि दयानन्द की प्रचार कड़ी में आर्य समाज के गौरव, पंडितों की प्रथम पंक्ति में आने वाले, क्षत्रियों के सिरमौर, साधुओं में महा तपस्वी सीधे-सादे गुरु अमर स्वामी जी को शत-शत प्रणाम

—पं० प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य

४—श्री स्वामी जी संन्यास लेने से पूर्व ठा० अमरसिंह जी के नाम से प्रसिद्ध थे। वे आर्य प्रादेशिक सभा के वर्षों तक महोपदेशक पद पर प्रचार कार्य करते रहे।

उन्होंने अपने जीवन में हजारों शास्त्रार्थ किये। उनका अगाध स्वाध्याय आर्य जगत् में प्रसिद्ध है। वैदिक धर्म के मंडन एवं अवैदिक मतों के खण्डन में जितने प्रमाण उनके पास हैं, शायद ही अन्य किसी विद्वान के पास हों। इसके अतिरिक्त आर्य समाज ने जितने भी आंदोलन चलाए हैं उन सबमें उनका सक्रिय सहयोग रहा है। हैदराबाद आंदोलन में वे एक प्रभावशाली जत्था लेकर गये थे। हिन्दी आंदोलन में उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया।

संन्यास लेकर पूज्य अमर स्वामी जी के नाम से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

श्री स्वामी जी ने वैदिक धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन इस ढंग से किया है कि जन सामान्य के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत बन गये।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि परमपिता परमात्मा उन्हें शतायु करें।

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—रामगोपाल वानप्रस्थ

५—श्री अमर स्वामी जी (पूर्व ठा० अमर सिंह जी) का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज और उसकी सेवा पर समर्पित रहा है और वह अनुकरणीय कीर्तिमानों से परिपोषित है। स्वामी जी ने मौखिक एवं लेखबद्ध प्रचार के द्वारा सेवा की है और आर्य समाज का साहित्य सुदृढ़ किया है। शास्त्रार्थ करने में वे बड़े निपुण रहे हैं और उनकी गणना इने-गिने शास्त्रार्थ महारथियों में होती है। परमात्मा उन्हें शतायु करे।

—ओम प्रकाश पुरुषार्थी संसद सदस्य
मंत्री सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

६—पूज्य अमर स्वामी जी महाराज मेरे समकालीन हैं। डी० ए० वी०कालिज प्रवन्धकर्त्री सभा के प्रधान होने के नाते तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का भी प्रधान होने से वहुत पूर्व से इन्हें भली भांति जानता हूं और सभा के उपदेशकों में इन्हीं का स्थान सर्वोच्च था। ये सारे जीवन मेरे अभिन्न मित्र रहे हैं। इस मित्रता पर मुझे नाज है इनके स्वाध्याय पर मुझे गहरी आस्था है। परमात्मा से दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

—डा० गोवर्धनलाल दत्त, नई दिल्ली
पूर्व उपकुलपति, प्रधान डी. ए. वी. मैनेजिंग कमैटी
एवं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

७—पूज्य अमर स्वामी जी को जिन्हें दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मंडल के विशेष उत्सवों पर सभा की अध्यक्षता के लिये चुना जाता है उनके आने से सभा की शोभा बढ़ जाती है वोलने से विद्या की शोभा वढ़ जाती हैं। नमस्कार करता हूं।

—रामशरण दास आर्य मंत्री
दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल

८—पूज्य अमर स्वामी जी महाराज आर्य समाज के सजग प्रहरी हैं जब भी सिद्धान्त विरुद्ध चर्चा चलती तो शास्त्रार्थ के लिये स्वयं उपस्थित हो जाते हैं और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा करते हैं। मैं उन्हें नमस्कार करता हूं।

—रामशरण दास आहुजा
मंत्री टंकारा सहायक समिति, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

९—आय समाज को प्रारम्भ से ही संन्यासियों पर गर्व रहा है। अमर स्वामी जी इस शृंखला में मूर्धन्य स्थान रखते हैं। उनके चरणों में मेरा विनय अभिनन्दन है। वह सब तरह से मेरे से बड़े हैं।

—स्वामी सत्यप्रकाश इलाहाबाद

१०—हो सत्कार अमर स्वामी का मुझे बहुत आल्हाद।
रोम-रोम मेरा देता है उनको आशीर्वाद॥

—बिहारीलाल शास्त्री बरेली

११—पंडितों की मंडली में शोभायमान पूज्य अमर स्वामी जी महाराज का किन शब्दों में गुणगान करूं।

—पं० देवप्रकाश अमृतसर

१२—श्री अमर स्वामी जी महाराज सूर्य हैं और हम सब टिमटिमाते दीपक हैं।

—प्रो० रत्नसिंह गाजियाबाद

१३—काम किये निष्काम, धर्म हित बढ़ चढ़ करके।
लड़े धर्म हित सदा, तली पर सिर धर करके॥
संकट सहे अनेक, नहीं किंचित घबराए।
गुणी विप्र मतिमान, सभी के पूज्य कहाये॥

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर

१४—पूज्य अमर स्वामी जी महाराज ने जो आर्य समाज की सेवा की है वह आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करती रहेगी। उनकी विद्वता-ऋषि-प्रेम-नवयुवकों से स्नेह तथा यह लोह लेखनी उन्हीं के हिस्से में आ पाई है। इस समय उनकी तुलना का व्यक्तित्व खोज पाना आसान नहीं। आपने सर्वस्व आर्य समाज के लिए लगा दिया है। मुझे जीवन में पूज्य स्वामी जी से बहुत प्रेरणा मिली है।

वह सलामत रहें हजार वर्ष, हर वर्ष के हों दिन पचास हजार।

—डा० रामप्रकाश चंडीगढ़

१५—दीन दयालु, गुरुवर शिरोमणि, पुराण मत मर्दन, भयंकर गर्जन को शत् शत् प्रणाम।

—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार पिलखुआ

१६—धर्म धुरन्धर- आर्यकुल दिवाकर, आर्यसमाज के गौरव महाराज अमर स्वामी जी को जिनके चरणों में वर्षों बैठ सरस्वती की आराधना की नमस्कार करता हूं।

—आचार्य जयप्रकाश सिकन्द्राबाद

१७—धर्म धुरीण ध्यान में लावें, कुटील, कुचील, कुपात्र न पावें।
हे अमर स्वामी आपका ज्ञान, एक सहारा आपका धाम ॥

—वेदप्रकाश शास्त्री फाजिल्का

१८—संसार में कुछ व्यक्ति युग पुरुष के रूप में उत्पन्न होते हैं जो विश्व में व्यापक समस्याओं के समाधान के लिये आते हैं। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में जो कतिपय व्यक्ति उत्पन्न हुए, जिन्होंने आर्य समाज को चार चांद लगाये, उन्हीं महापुरुषों में आदरणीय अमर स्वामी जी (श्री ठा० अमरसिंह जी) महाराज का नाम आता है। "अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि" के पवित्र कार्य में अपना सम्पूर्ण जीवन उन्होंने लगा दिया। विभिन्न मत मतान्तरों के असंख्य ग्रन्थों का अध्ययन उनके शास्त्रार्थों में प्रकट होता है। प्रमाणों का तो उन्हें "साइक्लोपिडिया" कहा जाता है। स्वभाव से मिलनसार आर्य जगत में आने वाले प्रत्येक नए वक्ता को स्नेह प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति उनका विशेष गुण है। शास्त्रार्थों में निर्भीकता के साथ उनके चेहरे की मृदु मुस्कान को जिन्होंने देखा है वे उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते शास्त्रार्थ से पूर्व पर्याप्त तैयारी करते और कराते हैं। मुझे कतिपय शास्त्रार्थों से पूर्व अपने पास बुलाकर प्रमाणों को लिखाना, युक्तियों और तर्कों की जानकारी वह देते रहे हैं उन्होंने बिना अन्य सामाजिक सहयोग के भी केवल अपने साहस-परिश्रम और उत्साह के बल पर आर्य जगत को अपने योग्य शिष्य देकर उपकृत किया है।

मैं उनके सुन्दर स्वास्थ्य सहित दीर्घ आयुष्य की कामना करता हूं।

—शास्त्रार्थ महारथी ओम्प्रकाश शास्त्री खतौली

१९—श्रद्धेय पूज्य अमर स्वामी जी महाराज ने भारत के अनेक मत-मतान्तरों से भारी शास्त्रार्थ किये हैं और सर्वत्र विजय प्राप्त की है। वे राजनीति के भी धुरन्धर विद्वान् हैं उन्हें नमस्ते करता हूं।

—जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री दिल्ली

ओ३म्

२०—उभावेव नमस्यौ मे ऽमरसिंहौ यथार्थतः ।
कर्ता चामरकोषस्य प्रमाणानां च षट्पदः ॥१॥
मानसे मानसं यस्य मस्तके निगमागमाः ।
भुजयोर्बलशालित्वं पादयोः प्रतियोगिनः ॥२॥

—दौलतराम शास्त्री अमृतसर

२१—आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी महान् तार्किक, प्रत्युत्पन्न मति, प्रतिवादी भयंकर, अनेक भाषाविज्ञ, पुरातन महोपदेशक माननीय अमर स्वामी जी महाराज का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूं ।

—प्रिन्सिपल कृष्णचन्द्र एम० ए० सह-सम्पादक—'आर्यजगत्'

२२—महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा है—

"जब सच्चा उपदेश न रहा तब आर्यावर्त में अविद्या फैलकर परस्पर लड़ने झगड़ने लगे । क्योंकि—उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः ॥ इतरथान्धपरम्परा ॥ सांख्य सू० ॥ अर्थात् जब उत्तम-उत्तम उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अन्ध परम्परा चलती है । फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं तभी अन्ध परम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है ।"

सच्चे, अच्छे और महान उपदेशकों की राष्ट्र को आवश्यकता हैं। जब जब मैं श्री अमर स्वामी जी से मिला हूं तब तब उन्होंने उपदेशकों की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की है । श्री अमर स्वामी जी महाराज चाहते हैं। कि देश को और आर्य समाज को बढ़िया से उपदेशक उपलब्ध हों और वे अपने तेजस्वी विचारों और जीवनों द्वारा देश का निर्माण करें ।

श्री अमर स्वामी जी महाराज सदा सर्वदा उपदेशकों के अधिकारों के लिए तथा प्रतिष्ठा के लिए लड़ते रहे हैं ।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री स्वामीजी महाराज को स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करें ताकि स्वामी जी महाराज देश और आर्यसमाज की चिरकाल सेवा करते रहें ।

—आचार्य पुरुषोत्तम वेद प्रचार अधिष्ठाता
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग-नई दिल्ली

जीवन चरित्र खण्ड (२)

(प्रो० वीरपाल जी विद्यालंकार पिलखुवा)

वंश और जन्म स्थान :—

भारत के अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान (राय पिथौरा) के वंशज अधिक जिला अलीगढ़ और कुछ जि० बुलन्दशहर में निवास करते हैं। उन्हीं चौहान राजपूतों का एक ग्राम अरनियां जिला बुलन्दशहर से बीस और खुर्जा से नौ मील पूर्व को जी० टी० रोड पर स्थित है। उस ग्राम में बड़े वीर स्वभाव के प्रतापी राजपूत ठाकुर कुंवरसिंह जी थे। उनके छः पुत्र थे— एक ठाकुर टीकमसिंह जी दूसरे ठा० चन्दनसिंह तीसरे ठा० हुलासीसिंह जी चौथे ठा० मुंशी सामलसिंह जी पांचवे ठा० गणपतसिंह जी छठे ठा० शहजादसिंह थे। ठा० कुंवरसिंह जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री ठा० टीकमसिंह जी के एक पुत्री और तीन पुत्र थे : बड़े ठा० गोकुलसिंह जी दूसरे ठा० सरदारसिंह जी तीसरे ठा० अमरसिंह जी।

ग्राम पर अंग्रेज सरकार की क्रूर दृष्टि

सन् १८५७ के भारत स्वतन्त्रता संग्राम के समय इस ग्राम के लोगों ने दो अंग्रेजों को मारकर भूमि में दबा दिया था। इस ग्राम के बाहर ग्राम से एक फर्लाङ्ग की दूरी पर उन अंग्रेजों का बंगला था। उस बंगले में स्त्रियों और बच्चों के सहित वह रहते थे और ग्राम अरनियाँ तथा उसके निकट चारों ओर के ग्रामवासियों को वह अंग्रेजों के भक्त बने रहने का उपदेश करते और डराते रहते थे। अरनियां ग्रामवासियों ने उन दोनों अंग्रेजों को मारकर भूमि में दबा दिया और उनके स्त्री बच्चों को अपनी सवारियों में बैठाकर मेरठ अंग्रेजों की छावनी में पहुंचा दिया। छावनी के कमाण्डर ने उनको वफादारी का परवाना लिखकर दे दिया।

दो अंग्रेजों के मरने की सूचना पाकर अंग्रेजों ने अरनियां के पास दो तोपें लगा दीं। गांव को तोपों से उड़ाया जाना था। यह सूचना पाकर दूसरी अरनियां के जमीदार ठा० पदमसिंह जी जो [illegible] गांवों के मालिक थे

वह इस अरनियां में आये और इस गांव को उड़ाये जाने से बचा लिया वह अंग्रेजों के बड़े वफादार माने जाते थे। अंग्रेज उनका कहना मानते थे। गांव बचाया गया पर अंग्रेजों की क्रूर दृष्टि इस ग्राम पर बनी ही रही। (ठा० टीकमसिंह जी के तीसरे पुत्र अमरसिंह जी का जन्म माता राजकुमारी जी के उदर से वैशाख कृष्ण २ द्वितीया सं० १९५१ सन् १८९४ में हुआ।

ठा० टीकमसिंह जी ने कर्णवास में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये और एक व्याख्यान भी सुना था पहिले पहल ऋषि दयानन्द जी तथा उनके कुछ विचार ग्राम अरनियां में पहुंचे पीछे महर्षि दयानन्द जी के शिष्य—श्री ठा० महावीर सिंह जी तथा श्री ठा० गिरवरसिंह जी, का सम्बन्ध (रिश्ता) इस ग्राम से हो गया इस प्रकार इस ग्राम में आर्य समाज की स्थापना हो गई।

श्री ठा० टीकमसिंह जी के छोटे भाई मुंशी सांवलसिंह जी, पोस्ट मास्टर ठा० बलवन्तसिंह जी, ठा० तेजरामसिंह जी, ठा० नारायणसिंह जी, ठा० तोताराम जी, श्री नेतराम जी स्वर्णकार, ला० जौहरीमल जी पटवारी और ला० कोमलकिशोर जी आदि आर्य समाज के संचालक हो गये।

ठा० सरदारसिंह जी (ठा० अमरसिंह जी के बड़े भाई) उपदेशक हो गये श्री कुंवर सुखलाल जी ऐसे भजनोपदेशक हुए कि—उनके जैसा प्रभाव न किसी उपदेशक का हुआ न किसी भजनोपदेशक का। वह देश भर में प्रसिद्ध हो गये।

श्री ठा० टीकमसिंह जी के तीसरे अर्थात् सबसे छोटे पुत्र अमरसिंह जी पौराणिक रहे और पौराणिक पन्थ की ओर से वाद विवाद भी करते रहे।

अमरसिंह जी की शिक्षा—

हिन्दी की शिक्षा अरनियां और कैरोला में लेकर संस्कृत—लघु कौमुदी और व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी आदि खुर्जा में महा पण्डित चण्डीप्रसाद जी तथा ऐसे ही महाविद्वान् पं० परमानन्द जी से पढ़ी।

श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर अमरसिंह जी को आगरा ले गये और वहां श्री भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर द्वारा संस्थापित और संचालित "मुसाफिर विद्यालय" में श्री डा० लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर के संरक्षण में श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री आदि पण्डितों से—संस्कृत तथा मौलवी करीमुद्दीन जी मौलवी फ़ाज़िल से फ़ारसी अरबी और कु.रआन आदि को भली-भाँति पढ़ा।

सत्याग्रह—

धौलपुर (राजस्थान) में महाराजा श्री उदयभानसिंह जी और उनके प्रधानमन्त्री काज़ी अज़ीजुद्दीन साहिब थे उन्होंने धौलपुर के आर्य समाज मन्दिर को गिरवा दिया था और उस स्थान पर एक मोटर हाऊस बनाना आरम्भ कर दिया था। उसके विरुद्ध सत्याग्रह करने को सबसे पहला जत्था मुसाफिर विद्यालय आगरा से गया था।

उस जत्थे में अमरसिंह जी भी थे तथा अन्य श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ, श्री साधू महेश प्रसाद जी मौलवी फ़ाजिल, केदारनाथ जी पाण्डेय (जो पीछे राहुल सांकृत्यायन बने) श्री रामचन्द्र जी आर्य मुसाफ़िर, श्री बाबूनाथमल जी अधिष्ठाता, आर्य मित्र आदि थे।

वह सत्याग्रह आर्य समाज के एक बड़े नेता के भ्रम में पड़ जाने के कारण असफल हो गया था।

उपदेशक पद पर नियुक्ति :—

श्री महात्मा हंसराज जी द्वारा बुलाये जाने पर लाहौर जाकर अक्टूबर सन् १९१८ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, सिन्ध बिलोचिस्तान के उपदेशक नियुक्त हुए।

सन् १९२० में लाहोर में श्री दर्शनानन्द उपदेशक मण्डल और दर्शनानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना की।

सन् १९२७ में होशियारपुर पंजाब में श्री लाला देवीचन्द जी एम० ए० द्वारा खोले गये पुरोहित विद्यालय के आचार्य बनाये गये।

सन् १९४४ में मोहन आश्रम हरिद्वार में आर्योपदेशक महाविद्यालय खोला गया उसका आचार्य पं० अमरसिंह जी को बनाया गया।

शास्त्रार्थ:—

पिण्डी घेप जिला केम्बलपुर कोहाट (सीमा प्रान्त) पौराणिकों से शास्त्रार्थ हुए :—बद्दोमल्ली जिला स्यालकोट पतरैंडी जिला अम्बाला चूनियां जिला लाहौर, गिदड़वाहा मण्डी जिला--फिरोजपुर, डच कोट जिला लायलपुर, मियांनी जिला शाहपुर, होशियारपुर पंजाब, भौं बहादुरपुर जिला बुलन्दशहर, अरनियां जिला बुलन्दशहर हरदुआगंज जिला अलीगढ़, बांकनेर जिला अलीगढ़ राजधनवार जिला हजारीबाग (बिहार) गढ़मुक्तेश्वर जिला मेरठ, झेलम (पञ्जाब) इसी प्रकार पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान, जम्मू,

कश्मीर, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, विहार, मध्य प्रदेश, बम्बई और बंगाल आदि प्रान्तों में असंख्य शास्त्रार्थ और मुबाहिसे किये। जिनकी गिनती करना कठिन है।

जिन-जिन विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किये उनमें से मुख्य मुख्य के नाम ये हैं :—

कविरत्न पं० अखिलानन्द जी, पं० माधवाचार्य जी, पं० कालूराम जी शास्त्री, पं० भीमसेन जी, पं० श्री कृष्ण जी शास्त्री,

जैनियों में :—

पं० राजेन्द्र कुमार जी शास्त्री, स्वामी कर्मानन्द जी आदि

ईसाईयों में :—

पादरी अब्दुलहक जी मन्तकी, पादरी एस० एम० पाल जी, पादरी रलाराम जी और पादरी जगन्नाथ जी आदि

मुसलमानों में :—

मौलाना सनाउल्ला साहब अमृतसरी, मौलवी लालहुसैन जी अख़्तर, मौलवी फ़जल मौहम्मद "शर्मा"

क़ादयानी अहमदी :—हाफ़िज़ रोशन अली साहब, मौलवी कासिम अली, मौलवी अब्दुल रहमान मिश्री, मौलवी मुहम्मद उमर "शर्मा" आदि

लाहौरी अहमदियों में :—

मौलवी अब्दुल हक "विद्यार्थी", मौलवी इस्मतुल्ला।

अपने गृहस्थ जीवन के प्रति ठा० अमरसिंह जी आर्य समाज की अपनी अति सेवाओं के कारण विशेष ध्यान न दे पाये आपके परिवार में दो पुत्री जया और विजया—तीन पुत्र मृत्युञ्जय—शत्रुञ्जय—धनञ्जय हैं। ठाकुर जी का संन्यास लेने के वाद परिवार से कोई सम्बन्ध नहीं है। सब सन्तानें विवाहित हैं और अपने कार्य में लगी हैं।

साहित्य सृजन :—

(१) आर्य सिद्धान्त सागर (प्रथम भाग) (३००० प्रमाणयुक्त)
(२) जीवित पितर (पितर का अर्थ जीवित ही होता है मृतक नहीं) सवा सौ प्रमाण)
(३) हनुमान आदि वानर (बन्दर) थे या मनुष्य (सैकड़ों प्रमाण)

(४) क्या रावण वध विजय दशमी को हुआ था ?

(५) रामायण दर्पण (इसमें रामायण सम्वन्धी बहुत से भ्रमों का निवारण किया गया है)

(६) क्या द्रौपदी के पांच पति थे ? (इसमें सिद्ध किया गया है कि द्रौपदी के पांच पति नहीं एक ही था—और वह भी अर्जुन नहीं युधिष्ठर था।

(बहुत खोजपूर्ण पुस्तक है :—)

(७) गीता में ईश्वर का स्वरूप

(८) गीता और महर्षि दयानन्द

(९) गीता और वेद

(१०) मूर्ति पूजा से हानियां

(११) कत्ले इन्सान पर वेद और कुरान

(१२) धर्म वलिदान (आचार्य शुक्रराज जी शास्त्री को धर्म प्रचार के कारण ही नैपाल में वृक्ष पर लटका कर फांसी दी गयी थी इस पुस्तक में उनका रोमांचकारी जीवन वृतान्त है।

छोटी-छोटी और भी कई पुस्तकें थीं जो मिलती नहीं हैं।

जो ग्रन्थ लिखे हुए हैं या लिखे जा रहे हैं :—

(१) गीता अमर विवेक भाष्य (वेदों, दर्शनों, उपनिषदों स्मृतियों आदि के प्रमाणों, युक्तियों, और शंका-समाधानों से युक्त लगभग एक हजार पृष्ठों का ग्रन्थ)

(२) प्रमाण महार्णव :—(अर्थात् प्रमाण सागर लगभग ६००० प्रमाणों का संग्रह, शास्त्रार्थ कर्ताओं व्याख्यानदाताओं, लेखकों के लिए बहुत ही उपयोगी पुस्तक होगी और किसी विषय पर भी कोई प्रमाण ढूंढने की आवश्यकता इस पुस्तक को रखकर के नहीं होगी।

(३) वैदिक धर्म :—वैदिक धर्म पर यह एक सांगो पांग ग्रन्थ होगा जिसमें वह सब कुछ होगा जो वैदिक धर्म के सम्वन्ध में जानना आवश्यकता है। लगभग १००० पृष्ठों का ग्रन्थ होगा।

(४) शुद्ध महाभारत :—महर्षि दयानन्द जी महाराज के जीवन चरित्र में उल्लेख है कि वह एक शुद्ध महाभारत के प्रकाशन की आवश्यकता अनुभव

करते थे। महर्षि के बलिदान को ९६ वर्ष हो रहे हैं अब तक आर्य समाज की ओर से इस अत्यावश्यक कार्य पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। अब इस वृद्धावस्था में उस कार्य को पूरा करना चाहते हैं। महाभारत में एक वचन है चतुर्विंशति सहस्रि चक्रे भारत संहिताम् अर्थात् व्यास जी कहते हैं कि मैंने २४००० श्लोकों की भारत संहिता बनाई है। स्वामी जी भी लगभग इतने ही श्लोकों का महाभारत प्रकाशित कराना चाहते हैं जो सरल टीका से युक्त होगा साथ-साथ आवश्यक टिप्पणियां होगी और शंकाओं का समाधान होगा।

पं० अमरसिंह जी आर्यपथिक ने पचास वर्ष प्रचार पूरे करके सन् १९६७ में आर्य समाज स्थापना दिवस पर वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में बड़ी सादगी के साथ स्वामी विवेकानन्द जी तीर्थ से संन्यास ग्रहण कर लिया। महात्मा आनन्द स्वामी जी ने इनका नाम अमर स्वामी प्रसिद्ध किया। अब उनकी आयु का ८५ वां वर्ष चल रहा है वृद्धावस्था के कारण चलने फिरने की बहुत सामर्थ्य नहीं है फिर भी उपदेश एवं लेखन से समाज सेवा में अहर्निश लगे हुए हैं।

स्वराज्य

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

—सत्यार्थ प्रकाश

एक अमर व्यक्तित्व

(ले० श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य)

"गोमायवः पलायन्ते पुराण-वन चारिणः ।
शास्त्रार्थं कृत हुङ्कारेऽमर सिंहे भुवंगते ।।
दुर्मतध्वान्त नाशेन वेद ज्योतिः प्रकाशनात् ।
महर्षिस्तु दयानन्दोऽमर स्वामी वभूव ह ।।"

भारत की उर्वर बसुन्धरा ने विश्व को ज्ञान और ज्ञानी दिये हैं। कर्मवीर देश-भक्त दिये हैं। आदि काल से अब तक विद्वानों और सद् विवेकियों की परम्परा ने अपने ज्ञान के आलोक से अविद्या अन्धकार को छिन्न-भिन्न किया।

आर्यसमाज ने, अक्षपाद गौतम, न्याय-दर्शन कार के विद्यालय में दीक्षित रूढ़ि ग्रस्त धारणाओं पर कठोर प्रहार करने वाले तार्किक एवम् शास्त्रार्थ महारथी उत्पन्न किये। स्वनाम धन्य स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित प्रवर गणपति शर्मा, आर्यपथिक पं० लेखराम, और पं० रामचन्द्र देहलवी जैसे शास्त्रार्थ महा-रथियों की शृंखला में आर्य जगत् के विख्यात नामा श्री अमर स्वामी जी महाराज परिव्राजक हैं।

आपका जन्म वि० सं० १९५१ वैशाख कृष्ण द्वितीया को ग्राम अरनियां जि० बुलन्दशहर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री टीकमसिंह जी तथा माता का नाम श्रीमती राजकुमारी देवी था।

आपका पूर्वनाम अमरसिंह था खर्जा संस्कृत विद्यालय में सिद्धान्त कौमुदी सम्पूर्ण पढ़ने के पश्चात् आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में प्रविष्ट हो गए। इस विद्यालय में श्री मौलवी महेश प्रसाद जी अध्यापक थे जो बाद में काशी वि० वि० में प्रोफेसर रहे। १९१८ में यहां से स्नातक होकर आप ऋषि के मिशन की सेवा करने मैदान में कूद पड़े।

महाराज धौलपुर ने आर्यसमाज मन्दिर गिरवा दिया इस समाचार ने आर्य वीरों में आन्दोलन की तीव्र विद्युत् अग्नि पैदा कर दी। आ० स० की रक्षा के लिए सत्याग्रह हुआ।

प्रथम जत्थे में श्री अमरसिंह जी गिरफ्तार हुए। साथ में पं० विहारी-लाल शास्त्री, मौ० महेश प्रसाद जी, केदार पाँडे आदि भी थे।

आप सन् १६१८ में महात्मा हंसराज जी के अनुरोध पर "आ० प्रादेशिक सभा पंजाव" में उपदेशक बने।

आपका पहला शास्त्रार्थ "पितृ" विषय पर पिण्डी घेप जो अब पाकिस्तान में, हुआ था।

दूसरा शास्त्रार्थ "अवतारवाद" पर कोहाट में हुआ था तीसरा शास्त्रार्थ चूनिया (लाहौर) में "क्या स० प्र० वेदानुकूल है ;" विषय पर हुआ था।

इन शास्त्रार्थों में विजयी रहने के कारण श्री स्वामी जी का यश चतुर्दिक छाने लगा। आपने कालूराम शास्त्री, माधवाचार्य अखिलानन्द जी से अनेकों शास्त्रार्थ किए और उन्हें पराजित किया। कई शास्त्रार्थों में तो पौराणिक पं० स्वयं चैलैंज देकर भी सामने नहीं आते थे। आपने लगभग सभी मतावलम्वियों से कई शास्त्रार्थ किये हैं और विजयमाला पहन कर वैदिक धर्म की ध्वजा को फहराया है।

मौलाना मुहम्मद अली शास्त्रार्थ में इतने प्रभावित हुए कि शुद्ध होकर रोशनलाल वन गए। कई मौलवियों को आपने शास्त्रार्थ में पराजित किया।

संवत् २०२४ में हमारे चरित्रनायक 'ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम' में संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर अमर स्वामी परिव्राजक के रूप में देश के कोने कोने में वैदिक धर्म का अलख जगाने लगे।

धन्य है—

"आत्मार्थं जीव लोकेस्मिन् केन जीवति मानवः
परं परोपकारार्थां यो जीवति स जीवति ॥"

इस जीव लोक में अपने लिए कौन मनुष्य नहीं जीता है पर जो परोपकार के लिए जीता है वही जीवित है।

स्वामी जी में प्रकाण्ड पाण्डित्य, पैनी तर्क शक्ति के दर्शन होते हैं।

ऐसे ही महापुरुषों के विषय में लिखा है—

"जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयम् ॥"

वे सुकृती रस सिद्ध कवीश्वर धन्य हैं जिनके कीर्ति रूपी शरीर में जरा और मृत्यु जन्य भय नहीं होता।

साहित्य सेवाएं

(स्वामी जी के प्रमुख ग्रन्थ हैं)

(१) "प्रमाण महार्णव"—स्वामी जी महाराज का असंख्यों विषयों पर जितना विस्तृत अध्ययन है उतना विरले ही विद्वान का है। (प्रत्येक विषय पर उनके पास पक्ष और विपक्ष के कितने प्रमाण हैं? उनकी गिनती करना कोई आसान कार्य नहीं। उन प्रमाणों पर स्वामी जी महाराज का कितना गम्भीर चिन्तन है इसका अनुमान शंका समाधान के मंच पर उनके द्वारा किये जाते समाधानों से भलीभांति लग सकता है। यह महान ग्रन्थ इसी प्रकार के समस्त प्रमाणों का एक बृहद् संग्रह है। "स्व" सिद्धान्तों के पक्ष और "पर" सिद्धान्तों के विपक्ष में सहस्त्रों प्रमाण इस ग्रन्थ में विषय क्रमानुसार एक स्थान पर एकत्र कर रख दिये गए हैं। इस ग्रंथ को पढ़कर प्रत्येक व्यक्ति उन विषयों पर विपक्षियों को शास्त्रार्थ में परास्त कर सकता है। उन्होंने कितना धन तथा श्रम इन प्रमाणों के संग्रह में लगाया होगा इसका अनुमान ग्रंथ के पढ़ने से पाठकगण स्वत: लगा सकते हैं। आशा है कि यह शीघ्र ही सम्पूर्ण रूप में पाठकों के समक्ष आ जायेगा।

(२) "जीवित पितर"--"पितर" शब्द बहुत ही प्रचलित है; जन साधारण के मस्तिष्क में यह विचार घर कर चुका है कि पितर का अर्थ है मरे हुए माता-पिता आदि। मृतक श्राद्ध जैसे अवैदिक कर्म भी इस पितर शब्द के वास्तविक आशय को न समझने के कारण चल रहे हैं। पूज्य स्वामी जी महाराज ने प्रस्तुत पुस्तक में प्रबल युक्तियां व ठोस प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि पितर का अर्थ जीवित माता-पिता आदि ही है मृत नहीं। पुस्तक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(३) "हनुमान आदि वानर (बन्दर) थे या मनुष्य ?" यह वात प्राय: प्रत्येक हिन्दू के मस्तिष्क में वसी हुई है कि हनुमान आदि बानर (बन्दर) थे। वात यह है कि जब मनुष्य अपने मस्तिष्क को ताला लगा लेता है तब वह जिस किसी भ्रम में पड़ जाए वह थोड़ा है। हनुमान के बन्दर मान लेने का भ्रम इसी कारण से बना हुआ है। स्वामी जी महाराज ने यह पुस्तक लिखकर उस

भ्रम का निवारण किया। असंख्यों महत्वपूर्ण प्रमाणों से भरपूर सामग्री के साथ लिखी गई यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

(४) "रावण का वध कब हुआ ?" आप विचारते होंगे क्या यह भी कोई प्रश्न है ? प्रत्येक वर्ष विजय दशमी (दशहरा) के अवसर पर एक बड़ा दस सिरों वाला खपच्चियों का काले कपड़े से ढका ढांचा जला कर रख दिया जाता है। बड़े धूम-धाम के मेले से कोई लड़का राम बनता और रामलीला का नाटक होने के पश्चात् मार दिया जाता है रावण। पर नहीं भ्रम में ना पड़िए। इतिहास के गर्त में छुपे हुए रहस्य को खोला है पूज्य स्वामी जी महाराज ने। महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाणों से भरपूर यह पुस्तक एक महत्व-पूर्ण ऐतिहासिक पुस्तक है।

(५) "गीता में ईश्वर का स्वरूप" स्वामी जी महाराज गीता को आर्ष ग्रन्थों में स्वीकार करते हैं। उनका मत है कि गीता भी आर्यों का मान्य ग्रंथ है। इसी दृष्टिकोण से लिखी गई यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

(६) "गीता और अवतार वाद" गीता के सम्बन्ध में स्वामी जी का एक विशेष चिन्तन है। उन्हें गीता में अवतारवाद की गन्ध नहीं आती है। अव-तारवाद के पक्ष में दिये जाने वाले सभी प्रमाणों पर अदभुत समीक्षा प्रस्तुत की है स्वामी जी महाराज ने। पुस्तक पठनीय तथा विचारणीय है।

(७) "शिवाजी का पत्र महाराज जयसिंह के नाम" एक महत्वपूर्ण ऐति-हासिक ग्रन्थ है।

(८) "विधर्मियों की शुद्धि अर्थात् भारतीयकरण" राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत एक गम्भीर पुस्तक है।

(९) "विहसी शास्त्रार्थ"—स्वामी जी का एक महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ माध-वाचार्य जी की संस्कृत का एक नमूना है।

(१०) "शास्त्रार्थ राजधनवार"-- इसमें माधवाचार्य जी तथा कविरत्न पं० अखिलानन्द से हुए स्वामी जी के दो शास्त्रार्थों का वर्णन है।

रात दिन प्रचार में रत रहने के कारण स्वामी जी को लिखने का अव-सर कम ही मिला है। परन्तु इस अल्प समय में उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं वह गवेषणात्मक साहित्य की एक महत्वपूर्ण अंग है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनको स्वस्थ रक्खे जिससे "प्रमाण महार्णव" आदि ग्रन्थ पूर्ण होकर जनता के सामने आ सकें।

एक संस्मरण

शास्त्रार्थ का एक बहुत ही रोचक प्रसंग याद आया। शास्त्रार्थ के अन्त में अखिलानन्द जी ने आर्य समाज की वेदी की ओर हाथ करके कहा—"इस घर को आग लग गई," "अपनी ओर हाथ करके कहा—"घर के चिराग से"।

स्वामी जी का उत्तर भी देखने योग्य है—

"सर्वथा सत्य है कि मिट्टी के तेल का चिराग हमारे घर में जलता था। हमारे घर की दीवारें काली करता था। हमारे घर में दुर्गन्धि फैलाता था। हमारे घर में इससे आग लग जाने की भी संभावना थी। हमने यह सब अनुभव किया इस चिराग को बुझा दिया और घर से बाहर निकाल कर फेंक दिया।

हमारे घर में इसकी जगह बिजली के बल्ब जगमगाते हैं। जिनके घर में घुप्प अन्धेरा था उन्होंने इस चिराग को अपने घर में जला दिया। अब यह उसी घर में टिमटिमा रहा है।"

कहना पड़ेगा कि सौम्यता और सफलता स्वामी जी के विशेष गुण हैं। जीवन में ना जाने कितने शास्त्रार्थ उन्होंने किए हैं। उनका अध्ययन विस्तृत पर गम्भीर है। उस पर उनका एक विशाल चिन्तन है। उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण है। जब वे बोलते हैं। तो प्रमाणों की झड़ी लगा देते हैं। उनकी प्रत्युत्पन्नमति भी अद्भुत है यही कारण है कि वे अपने प्रतिपक्षी को बड़ी सरलता के साथ शास्त्रार्थ में पराजित कर देते हैं।

उन्होंने अपने जीवन का पहला शास्त्रार्थ १९ वर्ष की आयु में किया था और इस शास्त्रार्थ के बाद तो मानो शास्त्रार्थों की झड़ी लग गई। शास्त्रार्थ के मंच पर आज किसी को उनसे लोहा लेने की शक्ति नहीं है। आज भी उनका विश्व के पौराणिकों को खुला चैलेंज है। पर किस में साहस है उनसे टकराने का।

"शतवार अभिनन्दन है इस, शास्त्रार्थ केशरी का।"

ओ३म्

संस्मरण-खंड (३)

पूज्य श्री १०८ अमर स्वामी जी सरस्वती

(शास्त्रार्थ महारथी पं० विहारी लाल जी शास्त्री बरेली)

पूज्य श्री अमर स्वामी जी का पहला नाम है श्री ठाकुर अमर सिंह जी सिद्धान्त भास्कर।

ये वत्स गोत्रीय चौहान (चातुवर्ण) क्षत्रिय हैं। अरनियाँ जिला बुलन्द शहर इनकी जन्म भूमि है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध वक्ता और गायक श्री कुंवर सुखलाल जी के कुटुम्बी भाई हैं। वे ही इनको आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में लाये थे। मैं विद्यालय में सिद्धान्त और संस्कृत पढ़ाता था ८/१० विद्यार्थी थे। इन सब में अर्थ को ठीक समझने और पाठ्य विषय को ग्रहण करने की मेधा श्री अमर सिंह जी में अनुपम थी।

घर की स्थिति :—

श्री अमर स्वामी (अमर सिंह जी) भूमिदार हैं। गांव के सरपंच रह चुके हैं। अच्छे-अच्छे कुलों से उनके सम्बन्ध हैं। आर्य जगत् के प्रख्यात वक्ता श्री प्रोफेसर रत्नसिंह जी इनके जामाता हैं। आर्यसमाज के वक्ता और प्रबल कार्यकर्ता श्री ठाकुर इन्द्र वर्मा जी श्री स्वामी जी के साले थे।

श्री स्वामी जी राजनीति में पड़ना पसन्द नहीं करते वरना वे अपने क्षेत्र से एम. पी. हो सकते थे। उनकी रुचि केवल धर्म प्रचार में है। जवानी इसी में वितादी अव जरावस्था में भी ऋषि का सन्देश सुना रहे हैं।

एक ही है शौक इनका, एक ही दिल में लगन।
धर्म प्रेमी, सदाचारी देश के बन जायें जन॥

विशेष :—गुरु भक्ति, बड़ों का सम्मान, परिश्रम ये गुण थे सब इनमें जन्म जात। इन गुणों ने ही इन्हें सर उठाया है। दिन में एक मौलवी साहब और मैं पढ़ाते थे। रात को श्री डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी भाषण शैली, शास्त्रार्थ के ढंग और इस्लाम सम्बन्धी विशेष ज्ञान की शिक्षा देते थे। ३ वर्ष में श्री अमर सिंह जी शास्त्रार्थ कला में दक्ष हो गये और पंजाब प्रादेशिक सभा में उपदेशक हो गये। उपदेशक रहते हुए इन्होंने अपने बुद्धि बल और मनोयोग से इतना स्वाध्याय किया कि इस समय उन्हें सर्वशास्त्रों, मतग्रन्थों का मर्मज्ञ विद्वान् कहा जा सकता है। शास्त्रार्थ कानन के तो वे स्वतन्त्र केसरी ही हैं।

शास्त्रार्थ समरेऽध्वस्ताः, लुण्ठन्ति प्रतिवादिनः।
न लालनाश्च गच्छन्ति ह्यमरेण पराजिताः॥

हमने उनके शास्त्रार्थ देखे हैं। ईसाई, मुसलमान, पौराणिक जैन सभी प्रतिवादियों से वाद करने की क्षमता श्री स्वामी जी में विद्यमान है।

त्याग :—श्री स्वामी जी वह संन्यासी हैं जो धन बटोरने और पूजा पाने के लिये संन्यासी नहीं बने हैं। उनका सब धन उपकार में लगता है, पचासों उपदेशक, भजनोपदेशक, अध्यापक और आर्य पुरोहित बनाये हैं जो समाज सेवा, धर्म प्रचार के साथ ही अपने परिवार का पालन भी भली भांति कर रहे हैं।

लोभ, परिग्रह से रहित, ईर्ष्या-द्वेष से विमुख, सदा प्रसन्नचित्त, धर्म और देश की चिन्तायुक्त हैं श्री अमर स्वामी जी।

जेल :—हैदराबाद सत्याग्रह में तथा गौरक्षा आन्दोलन में स्वामी जी जेल भी जा चुके हैं। कांग्रेस आन्दोलन में श्री स्वामी जी इसलिये सम्मिलित नहीं हुए कि पंजाब में थे और वहां का वातावरण खिलाफत आन्दोलन के कारण साम्प्रदायकिता से दूषित बन गया था।

इस समय श्री स्वामी जी वृद्धता की ओर बढ़ रहे हैं किन्तु उत्साह उनका जवानों से भी बढ़कर है। अब उनके विचार, ग्रन्थ रूपों में जनता तक पहुँचे। जनता का कर्तव्य है कि श्री स्वामी जी को आर्थिक कठिनाई न होने दे। वे आगे को उपदेशक, आर्य पुरोहित भी तैयार कर रहे हैं। आर्य भाईयों से धन अनधिकारी लूट रहे हैं। यह धन श्री अमर स्वामी जी जैसे कर्मठ को मिलना चाहिये।

स्वामी जी का सारा जीवन स्वाध्याय, शास्त्रार्थ और उपदेशों में बीता है। घर का ध्यान भी वह भूले ही रहे हैं। वे धार्मिक गृहस्थ रहे और अब त्यागी-तपस्वी संन्यासी हैं। उन्होंने बड़ी लग्न से पंजाब प्रादेशिक सभा की सेवा की है और अब सारे देश की धर्म प्रचार से सेवा कर रहे हैं।

सुदक्षो ह्यमर स्वामी सर्वं शास्त्रार्थ कोविदः।
वक्तता कुशल वाग्मी वेद वेदान्त पंडितः ॥

विद्या : श्री स्वामी जी ने संस्कृत, अरबी, उर्दू, हिन्दी तो गुरुमुख से पढ़ी है। गुरु से प्राप्त ज्ञान को उन्होंने स्वाध्याय द्वारा शतगुणा कर लिया है। आयुर्वेद के भी वे पण्डित हैं। गायन कला, वादन विद्या और कविता रचना में भी उनकी प्रतिभा विलक्षण है। वे कला विद्या विशारद तो हैं ही परन्तु सबसे बढ़कर उनका गुण है सर्व हितकारक होना; सर्वप्रिय, निश्चिन्त, जीवन मुक्त सा रहना।

अमर, अमर स्वामी रहें अपने गुण से नित्र।
धर्म कार्य में रत रहें सदा उदार सुचित्र ॥

सभी की उन्नति

मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूं वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूं। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूं वैसा विदेशियों के साथ भी।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

अमर स्वामी और राजधनवार (बिहार) का शास्त्रार्थ

(आचार्य रामानन्द शास्त्री पटना उपप्रधान बिहार सभा)

श्रीमान् अमर स्वामी प्रतिभाशाली प्रत्युत्पन्नमति सर्वतन्त्र स्वतन्त्र तथा प्रमाण के आगार हैं। विषम परिस्थिति में भी वे घबड़ाते नहीं हैं। विरोधी कितना भी कटु वाक्य का प्रयोग करता रहे किन्तु अमर स्वामी प्रसन्न मुद्रा में ही उत्तर देते हैं, विरोधी को सर्वदा आदर युक्त शब्दों से सम्बोधित करते हैं। मुझको इनके प्रवचन, तथा शङ्का समाधान करते हुये अनेक वार सुनने के अवसर प्राप्त हुये हैं। किन्तु जो शास्त्रार्थ दक्षिण विहार के राजधनवार (हजारी बाग) में सम्पन्न हुआ वह अभूतपूर्व था। १० हजार से अधिक जनता तन्मय होकर शास्त्रार्थ का रसास्वादन कर रही थी, कहीं से कुछ भी आवाज नहीं आती थी। पौराणिक पंथ के प्रसिद्ध विद्वान् कविरत्न पं० अखिलानन्द जी एवं पं० माधवाचार्य थे। आर्यसमाज की ओर से कई विशिष्ट विद्वान् उपस्थित थे। प्रसिद्ध विद्वान् पं० अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कौलर तथा स्वामी अभेदानन्द जी सरस्वती आदि गणमान्य लोगों की उपस्थिति में भी सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया— इस शास्त्रार्थ में आर्यसमाज की ओर से एक मात्र वक्ता श्री अमर स्वामी (अमर सिंह जी) ही हों।

इस शास्त्रार्थ के द्वारा विहार की आर्य समाजों का भाग्य निर्णय होना था। विहार की भावुक जनता इसी ओर ध्यान लगाये वैठी थी। सम्पूर्ण प्रान्त की आर्य समाजों के विशिष्ट आर्य जन धर्म निर्णयार्थ तथा आर्यसमाज की वैदिकता पर प्रवल युक्ति सुनने को उत्सुक थे। अपूर्व समारोह था उत्तर चम्पारण से लेकर दक्षिण विहार के खरसावां-राज्य की जनता विभिन्न साधनों से अपना आवास प्रवास व्यवस्था से सजधज कर धर्म निर्णयार्थ पधारी थी। पौराणिकों को विश्वास था, इस शास्त्रार्थ से आर्यसमाज का उन्मूलन इस क्षेत्र से हो जायेगा। धनवार के राजा साहेब की ओर से पं० अखिलानन्द जी एवं पं० माधवाचार्य राजकीय ढंग से सभा मंच पर लाये गये। घंटा घड़ियाल वज रहे थे, पुष्प की वृष्टि हो रही थी। इन्हें आधुनिक

शङ्कराचार्य तथा कुमारिल भट्ट की उपमा से उच्चारित कर जयध्वनि की जाती थी। भव्य सुन्दर सुनहरी मंच पर दोनों पण्डित आकर बैठ गये।

दूसरी ओर साधारण खद्दर की धोती कुर्त्ता के वेश में साधारण चौकी पर आर्य समाज की ओर से श्री अमर स्वामी (अमर सिंह जी) विराजमान हुये। अगल बगल में श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी, श्री स्वामी अभेदानन्द जी एवं आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री बैठे थे। छोटा नागपुर डिवीजन की पुलिस गस्त लगा रही थी, सुरक्षा का पूर्ण प्रवन्ध था। किसी प्रकार कोई झगड़ा तकरार न हो इसके लिए पुलिस चौकन्नी थी।

सनातनियों ने कहा कि लग्न मुहूर्त के अनुसार विजय श्री पं० अखिलानन्द कविरत्न के द्वारा होनी है, अतः वे प्रथम वक्ता हों। अतः कविरत्न जी ने अपना प्रश्न प्रारम्भ किया —

वही पुराना घिसा पिटा प्रश्न था— स्वामी दयानन्द ने नियोग किस प्रमाण से लिखा है ?

धाई से दूध पिलाना किस वेद के आधार पर है ?

योनि संकोचन आदि कितनी गन्दी बातें हैं, यह क्यों लिखा गया ? अपने ३० मिनट के भाषण में अनेक अश्लील तथा गन्दे शब्दों का प्रयोग श्री पं० अखिलानन्द कविरत्न ने किया महर्षि स्वामी दयानन्द के लिए जो भी गाली उनके कोष में थी, सभी का उपयोग उन्होंने किया।

श्री अखिलानन्द जी के प्रश्न वाले ३० मिनट के भाषण के पश्चात् पौराणिक पण्डितों ने जय जय कार के नारे लगाये, शंख बजाया गया, पुष्प की वृष्टि की गई। धनवार के वगल में वेग प्रान्त है वहां के पौराणिक पुजारियों ने उलूक-ध्वनि की। उन्हें विश्वास हो गया कि अब आर्य समाजी निरुत्तर हो जायेंगे।

सम्पूर्ण आर्य समाजी जनों का ध्यान अमर स्वामी पर था। श्री अमर स्वामी ने अपने ओजस्वी भाषण द्वारा वेद महाभारत तथा पुराणों के अनेक प्रमाणों से नियोग वैदिक सिद्ध किया। अन्त में गरुड़ पुराण का श्लोक—

अ पुत्रीं गुर्वनुज्ञात देवरः पुत्रकाम्यया
सपण्डिो वा स गोत्रो वा घृताभ्यक्तो
ऋतावियात—गरुड़पुराण

उधृत किया, सारी पौराणिक मंण्डली स्तव्ध हो गयी, क्योंकि वेद-महाभारत वे पढ़ते नहीं, किन्तु गरुड़ पुराण का पाठ तो सर्वदा करते हैं।

धाई के लिए यजुर्वेद का प्रमाण द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे, अन्यान्या वत्समुप धापयेते—मन्त्र उपस्थितकर श्री स्वामी जी ने ऋग्वेद के मन्त्री का हवाला दिया एवं इतिहास में पन्ना धाई की वीरता का उल्लेख किया। प्रमाण-सागर स्वामी ने गरुडपुराण के कुछ श्लोक बोले—

माहिषं नवनीतञ्च गुटी करण मुत्तमम्, स नलानि च पक्षाणि क्षीरेणा-ञ्जेन पेषयेत इत्यादि। स्वामी जी की विशेषता थी कि वे पुस्तक देखकर श्लोक नहीं बोलते थे अपितु श्लोक बोल कर उसका पता कह देते थे, हम लोग पुस्तक खोल कर विरोधी पण्डितों को दिखा देते थे।

इसी प्रसंग में नियोग के सम्बन्ध में वेद व्यास का नाम आया। पौराणिक अखिलानन्द जी कहते थे कि वेद व्यास योगी थे, अवतार थे, उनकी दृष्टि से ही रानियाँ गर्भवती हो गयीं। इस पर पौराणिक जगत् बहुत प्रसन्न हुआ। तब स्वामी ने निम्न लिखित महाभारत आदिपर्व का प्रमाण उपस्थित किया—

कामोपभोगेन रहस्तस्याम्
तुष्टि मगार्द्दर्षिः, तया सहोषितो राजन्

महर्षि सं शित व्रतः।

हम लोगों ने पुस्तक उठा कर जनता के सामने रख दिया कि जनता ही निर्णय करे। अब तो चारों ओर महर्षि दयानन्द की जय आर्य समाज अमर रहे की ध्वनि होने लगी। इस वार के उत्तर में श्री स्वामी ने अखिलानन्द जी की लिखी हुई पुस्तकें जब पढ़ कर सुनाई तो अखिलानन्द जी बोखला गये तथा गाली देते हुये उठ गये एवम् राजासाहेब से कहा कि चलिये इन राक्षसों की सभा में न बैठिये।

दूसरे मन्त्र में श्री पं० माधवाचार्य पधारे इस बार प्रश्न कर्त्ता श्री अमर स्वामी थे। स्वामी जी का पक्ष था कि पुराण अवैदिक वेद विरोधी तथा वैदिक संस्कृति के विरुद्ध है। श्री माधवाचार्य इधर-उधर की बातें बना रहे थे प्रसंग से दूर आर्य समाज पर आक्षेप करते रहे। किन्तु एक प्रश्न आया कि

ब्रह्म वैवर्त्तपुराण में लिखा है कि रुक्मणी के विवाह में रुक्म ने, अनेक पशुओं को मार कर भोज्य बनाने का आदेश दिया उसमें एक लाख गायों को भी मारने का आदेश दिया। इस पर माधवाचार्य ने तपाक से उत्तर दिया कि रुक्म राक्षस था इसलिए ऐसा किया। स्वामी ने लोगों को सम्बोधित करते हुये उद्घोष किया कि—

सज्जनों गौ रक्षा के लिए अधिनियम बनाने में पुराण बाधक है, क्योंकि विधर्मी कहते है कि भारत वर्ष में पुरातन काल से गाये मारी जाती थी देखिये पुराण। हम आर्य समाजी कहते हैं कि इस पवित्र देश में यवनों के पहले गाय मारना अपराध था रावण कंस आदि हुये किन्तु मांस भक्षी मद्यपायी थे, पर गाय का मांस नहीं खाते थे। क्यों कृष्ण गोभक्षी की पुत्री से विवाह करते ? पौराणिक माधवाचार्य चुप हो गये अब सुनने में आया है कि माधवाचार्य तथा उनके अनुयायी पुत्र आदि इसे प्रक्षिप्त कहने लगे हैं। यह अमर स्वामी का प्रभाव है।

उपरोक्त धनवार शास्त्रार्थ से विहार में आर्य समाज की नींव पताल में गई। हजारों ने वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। सनातन धर्म सभा टूट गई, जो पौराणिक पण्डित अपना खेत आदि वेच कर फीस देकर अखिलानन्द व माधवाचार्य को लाया था, वह अब आर्य समाज का झंडा लेकर ऋषि स्वामी दयानन्द की जय-जयकार कर रहा है।

हजारों व्याख्यान तथा प्रवचन से इतना कार्य नहीं होता न इतनी उपलब्धि होती, जितनी उपलब्धि इस शास्त्रार्थ से हुई। अब तो दो चार व्याख्यान कहकर पण्डित प्रचारक घूमते हैं जिन्हें आर्य समाज के सूक्ष्म सिद्धान्तों का ज्ञान ही नहीं है। कम से कम दर्शन पक्ष तो एक दम कमजोर हो रहा है।

इस समय आर्य समाज के क्षितिज पर दो नक्षत्र देदीप्यमान हैं (१) अमरस्वामी (२) श्री पं० विहारी लाल शास्त्री। इन दोनों की विद्या पुस्तक में नहीं अपितु जिह्वा पर है—

पुस्तकस्था तु या विद्या,
पर हस्त गतं धनम्।
कार्य काले सम्प्राप्ते न,
सा विद्या न तद् धनम्॥

मैंने देखा है कि अमर स्वामी महान् विचारक भी हैं, कुछ दिन हुये लोगों द्वारा श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता को पौराणिक ग्रन्थ घोषित किया जाता था। अमर स्वामी ने प्रबल युक्तियों से वैदिकत्व सिद्ध किया तथा बताया कि स्वामी दयानन्द ने उसका प्रवचन किया। यज्ञ के बाद प्रार्थना भजन में हाथ जोड़ झुकाये-मस्तक पर कुछ लोगों ने कहा कि इसमें मूर्तिपूजा झलकती है स्वामी ने उसका समाधान किया—विश्वतो मुख उत् विश्वतः याद् आदि।

मुझे स्मरण है कि बहराइच (उत्तर प्रदेश) में स्वामी पधारे मैं यज्ञ वेदि पर बैठा था। प्रत्येक मन्त्र के आदि में ओ३म् का उच्चारण होता है, उसे बोल रहा था कि एक सज्जन विगड़ कर बोले कि आप ओ३म् आरम्भ में बोलते हैं स्वामी जी ने कहा लिखा है। ओ३म् का उच्चारण एक बार ही होना चाहिये। अमर स्वामी वहाँ उपस्थित थे उन्होंने कहा कि- ओ३म् के उच्चारण का कोटा बनेगा ?

बहुत संस्मरण हैं मैं इतना ही लिख कर उनके चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

वेदांश्च वेदितव्यञ्च,
विदित्वा च यथास्थितिम्।
एवं वेद विदित्याहुः
अतोऽन्ये बातरेचकाः ॥

महाभारत
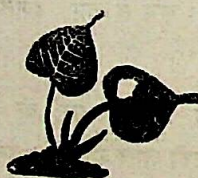
पंडित संन्यासी

(स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती)

जब मैं कभी भी प्रचार में बाहर निकलता हूं। तो बहुधा मेरे संन्यासी वेष भूषा को देख कर लोग यह जानने को उत्सुक होते हैं कि मेरे सम्बन्ध किसी साम्प्रदायिक संगठन अथवा संस्था से हैं। बहुधा जब वे देखते हैं। कि मैं कुछ अंग्रेजी भी पढ़ा लिखा हूं। तो वें मुझे रामकृष्ण मिशन का संन्यासी समझते हैं। जब मैं उन्हें बताता हूं कि संन्यासी किसी सम्प्रदाय का नहीं होता मैं तो मानव समाज का एक सेवक हूँ और बताता हूं कि मेरा सम्बन्ध आर्य समाज से है। तो उन्हें आश्चर्य होता है। मुझे बताना पड़ता है कि आर्यसमाज का प्रवर्तक और संस्थापक एक संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती था और उनके गुरु भी एक संन्यासी स्वामी विरजानन्द जी थे।

आर्य समाज को प्रारम्भ से ही अपने संन्यासियों पर गर्व है इस श्रृङ्खला में आदरणीय अमर स्वामी जी महाराज मूर्धन्य स्थान रखते हैं। प्रसन्नता की बात है कि उनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में उनके। श्रद्धालु भक्त अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करने जा रहे हैं। निश्चय ही ग्रन्थ में अन्यत्र उनके उदीर्ण जीवन का विस्तार विवरण आप को पढ़ने को मिलेगा। उनके चरणों में मेरा सविनय, अभिनन्दन है।

स्वामी दर्शनानन्द के बाद अमर स्वामी जी ही एक ऐसे संन्यासी हैं। जिन्होंने शास्त्रार्थ में भाग लिया पुराणियों के आक्षेपों के प्रति उत्तर स्वरूप उनके पास युक्ति और प्रमाणों का अखण्ड भंडार है। वैदिक शास्त्र से लेकर पुराणों तक का उन्होंने अच्छा मन्थन किया है स्मरण शक्ति अद्‌भुत है और ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी अत्यन्त (मौलिक) है केवल एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा साधारणतया लोगों का विश्वास है कि क्वार के महीने में विजय दशमी के दिन रामने रावण का वध किया था। विजय दशमी के दिन राम रावण सम्प्रदाय के लिए एक त्योहार बन गया अमर स्वामी जी ने बाल्मिकि रामायण के आधार पर ही यह प्रमाणित कर दिया कि विजय दशमी के दिन

रावण वध नहीं हुआ। इसी प्रकार द्रोपदी के पांच पतियों वाला प्रश्न है वर्षों पुरानी बात है कि मैंने नागरीप्रचारिणी पत्रिका (काशी) में प्रकाशित इस विषय का एक शोध निबन्ध पढ़ा था स्पष्ट है कि पांच पांडव माता कुन्ती की अनुमति से द्रोपदी स्वयम्वर सभा देखने गये थे इसी समारोह में अर्जुन ने अपना पराक्रम प्रदर्शित कर स्वयम्वर की शर्त पूरी की।

किन्तु इस समय उनके भाई युधिष्ठर अविवाहित थे अतः जब तक उनका विवाह न हो जाये अर्जुन के विवाह का कोई प्रश्न ही न था। इस दृष्टि से महाराज द्रोपद और द्रोपदी इस बात के लिए राजी हो गये और द्रोपदी का विवाह महाराज युधिष्ठर के साथ हुआ। नकुल और सहदेव ने पहले ही जाकर माता कुन्ती को यह आनन्द दायक सम्वाद बता दिया।

पौराणिकों ने अनेक घटनाये मिलाकर द्रोपदी को पांचों पाडंवों की पत्नी बना दिया महा अनर्थ और अनाचार फैलाने में लिये। अमर स्वामी जी के साहित्य को पढ़ें। जिसमें उन्होंने ऐतिहाहिक तत्वों की अच्छी विवेचना की औद सच्ची बातों के मानने के लिए हमारा मार्ग प्रदर्शन किया इधर कई वर्षों से स्वामी जी का मेरे उपर विशेष स्नेह रहा है। इस वृद्ध अवस्था में उनका अदम्य साहस, उत्साह और चिन्तन अद्भुत और उल्लेखनीय रहा है। प्रभु अमर स्वामी जी को स्वास्थ्य, दीर्घ आयु प्रदान करें और हम सब लोगों की आकांक्षा है कि वृद्ध अवस्था में भी उनका आशीर्वाद लें।

—●—

पशुओं का बड़ा भाई

जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र कराता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

संन्यासी का अभिनन्दन

(प्रो० उत्तमचन्द शरर एम. ए. पानीपत)

यह विरक्त, यह वीर पुरुष, यह अमर स्वामि संन्यासी।
पाखंडों का सदा सदा विद्रोही, ईश विश्वासी॥

जीवन भरजो रहा पूजता वैदिक आदर्शों को।
सदा सदा आमन्त्रित करता आया संघर्षों को॥

वेद ज्योति से अपने जीवन को ज्योतित कर डाला।
निज वाणी से लेखनी से, जग आलोकित कर डाला॥

शास्त्र समर में यह योद्धा जिस जां पर अड जाता है।
कौन हिला पाये अगंद का पाँव गड जाता है॥

दयानन्द का सैनिक यह, सेनानी यह आर्य सेना का।
बढ़ा जिधर को ओ३म् ध्वजा ले, फहरी विजय पताका॥

तर्क बाण, जब यह प्रमाण का वेत्ता बरसाता है।
पांखडों का दुर्ग धराशायी हो गिर जाता है॥

क्या साहस ले, सम्प्रदायवादी विवाद की ठाने।
हैं पुराण, कुरआन, बाईबिल, सब जाने पहिचाने॥

इसी मनस्वी, ज्ञान वारिधि का यह अभिनन्दन है।
इस विरक्त के स्वागत में पुलकित हर्षित जन मन है॥

जुग जुग जिये, सदा चमके तेजस्वी ! तेरा जीवन।
यही कामना है ईश्वर से, शरर यही अभिनन्दन॥

आर्यसमाज की अमर विभूति
श्री अमर स्वामी जी महाराज

(पं० नेत्रपाल शास्त्री जम्मू कश्मीर)

श्री अमर स्वामी जी महाराज महर्षि दयानन्द जी की चौथी-पाँचवीं पीढ़ी में आते हैं। श्रद्धेय स्वामी जी का जन्म सन् १६०० में ग्राम अरनियाँ जिला बुलन्दशहर (उत्तर-प्रदेश) के क्षत्रीय वंश में हुआ था।

जब से स्वामी दयानन्द जी ने उत्तर-प्रदेश में यत्र-तत्र-भ्रमण प्रारम्भ किया और वैदिक सिद्धान्तों को स्थायित्व प्रदान करने के निमित्त अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन किया तभी से अरनियाँ ग्राम वैदिक विचारधारा में रंगा हुआ है। उस गांव का प्रत्येक कण वैदिक भावनाओं से ओत-प्रोत है यही कारण है कि भौतिक दृष्टि से विपन्न होते हुए भी वैदिक विचारों से मालामाल है, सम्पन्न है।

यही कारण है कि अरनियाँ में जो भी जन्म लेता है वह दयानन्दी ही होता है। बेशक विधर्मी ही क्यों न हो। उसी आर्य समाजी वातावरण में श्री ठाकुर अमरसिंह जी आर्य पथिक का जन्म हुआ, जिनका वर्तमान शुभ नाम पूज्य अमर स्वामी जी महाराज है।

जन्मजात उत्तम संस्कार और तदनुकूल ग्राम्य तथा पारिवारिक सभ्य वातावरण के प्राप्त होने से ही श्री स्वामी जी उन्नीस वर्ष की अल्प आयु में अविभाज्य पंजाब (जिसको पुनः पूर्ववत होना है) में उपदेशक बन गये थे। उपदेशक भी कोई सामान्य उपदेशक नहीं बने, अपितु उस समय स्वामी जी की उच्चकोटि के महोपदेशकों में गणना होती थी।

वह युग शास्त्रार्थों का युग था। तात्कालिक जितने भी अवैदिक मत मतान्तर थे आर्य समाज उनको शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज देता था और उनके चैलेंज सहर्ष स्वीकार भी करता था। उस समय एक आर्यसमाज के साधारण सदस्य से लेकर शास्त्रार्थ महारथी तक सभी शास्त्रार्थ के लिए कटिबद्ध रहते थे, जिसका परिणाम यह था कि दुकान पर शास्त्रार्थ, मकान पर शास्त्रार्थ,

सड़क पर शास्त्रार्थ, पार्क में शास्त्रार्थ, बस में शास्त्रार्थ, रेल में शास्त्रार्थ, सोते शास्त्रार्थ, जागते शास्त्रार्थ, अपनों से शास्त्रार्थ, परायों से शास्त्रार्थ, जहाँ आर्य समाजी वहीं शास्त्रार्थ।

आर्यसमाज के पास उस समय अनेक शास्त्रार्थ करने वाले प्रकाण्ड पण्डित थे, जिनमें से कोई पण्डित तो केवल पौराणिकों से शास्त्रार्थ कर सकता था वर्तमान में कर सकते हैं। कोई यवनों से तो कोई ईसाइयों से शास्त्रार्थ कर सकते हैं कोई बौद्धों से तो कोई जैनियों से शास्त्रार्थ कर सकते हैं किन्तु समस्त मतावलम्बियों के साथ शास्त्रार्थ करने की क्षमता केवल पूज्य अमर स्वामी जी में ही विद्यमान है।

स्वामी जी ने अपने जीवन में सभी सम्प्रदायवादियों से अनेक बार सफल शास्त्रार्थ किये हैं, जिनसे आर्य जगत् भली भांति परिचित है। आज भी इस वृद्धावस्था में शरीर के जीर्ण-शीर्ण और शिथिल हो जाने पर भी शास्त्रार्थ करने के लिए उद्यत रहते हैं।

यदि कहीं एक ओर से तो प्राणहरण के लिए स्वयं यमराज आये और दूसरी ओर शास्त्रार्थ करने के निमित्त बुलाने किसी आर्य समाज के मन्त्री महोदय आ पहुंचे तो स्वामी जी तुरन्त ही यमराज से कहेंगे तू मेरे आने तक सत्यार्थ प्रकाश पढ़ और मैं मन्त्री जी के साथ शास्त्रार्थ करने जा रहा हूं, वापसी पर तुझसे भी शास्त्रार्थ करूंगा।

स्वामी जी वैदिक सिद्धान्तों के तो अद्वितीय पण्डित हैं। देव दयानन्द जी ने जिन मन्तव्यों का प्रतिपादन किया है, उनके सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, व्यवहारिक तथा दार्शनिक पक्ष को जितनी सूक्ष्मता से श्री अमर स्वामी जी समझते हैं उतनी सूक्ष्मता से समझने की क्षमता रखने वाले आर्यसमाज में दो-चार व्यक्ति ही होंगे।

स्वामी जी महाराज की स्मरणशक्ति भी इतनी विलक्षण है जितनी पुस्तकें उनके विशाल पुस्तकालय में हैं वे लगभग सभी कण्ठस्थ हैं किसी ने सच ही कहा है कि स्वामी जी एक चलती फिरती लाइब्रेरी हैं। आपके पुस्तकालय में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, अरबी, फारसी और उर्दू की सहस्रों की संख्या में पुस्तकें हैं।

अमर स्वामी जी चिकित्सक के रूप में

स्वामी जी आयुर्वेदिक यूनानी दोनों ही प्रकार की पद्धति से चिकित्सा करने में सिद्ध हस्त हैं। आपने लाहौर में, लाहौर के उपरान्त अरनियाँ में "अमर औषधालय" के नाम से धर्मार्थ में ही वर्षों तक औषधालय चलाया है।

रसायन शास्त्र और औषधि निर्माण का आपको अनुपम अनुभव है। किसी अन्य औषधालय की निर्मित औषधियों का प्रयोग आपने कभी नहीं किया। सदैव अपनी बनी औषधियों से चिकित्सा की है।

अमर सुधा ओर अमर घुट्टी तो जादू का सा असर रखती हैं। वैदिक धर्म के प्रचार की उन्मादित भावना के कारण ही स्वामी जी अर्थ करी विद्या वैद्यक की ओर ध्यान नहीं दे सके। वैसे भी धनोपार्जन स्वामी जी के जीवन का कभी ध्येय नहीं रहा।

अमर स्वामी जी महान संगीत कार

श्री स्वामी जी शास्त्रीय संगीत के चित्ताकर्षक गन्धर्व हैं आपने संगीत की साधना में वर्षों लगाये हैं। राग, रागनियाँ ध्रुपद, ठुमरी, गजल, कव्वाली, ख्याल तथा तराना आदि गाने का आपको गुरु माना जाता है। स्वर तथा लय पर आपका पूरा अधिकार है। प्रत्यंक वाद्य स्वामी जी के हाथ में आते ही स्वयमेव ही वज उठता है।

स्वामी जी के पास आज भी अनेक प्रकार के साज मौजूद हैं। संगीत के क्षेत्र में स्वामी जी के लव्धप्रतिष्ठ अनेक शिष्य हैं।

अमर स्वामी जी कवि के रूप में

स्वामी जी ने कवि हृदय पाया है, हिन्दी, उर्दू दोनों भाषाओं में समान रूप से कविता लिखते हैं, आपकी कविता में स्वाभाविकता है, सरलता है, सुगमता है, मर्मस्पर्शी ओजस्वी तथा हृदयग्राह्य है। साहित्य तथा कला की कसौटी पर खरी उतरती है।

अखिलाधार अमर सुख धाम

एक सहारा तेरा नाम।

कभी-कभी स्वामी जी अपनी कथा के प्रारम्भ में उक्त गीत को स्वयं ही

गाते हैं और साथ ही उपस्थित जनता से भी गवाते हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होने लगता है, मानो स्वयं भक्ति रस ही उतर कर आ गया हो। आपके गीतों को जो भी गुनगुनाता है वही थोड़े समय के लिए तो अपने आपको ही भूल जाता है।

आपके गीतों का उत्तम संग्रह "अमर गीतांजलि" के नाम से तीन भागों में प्रकाशित हो चुका है जिसकी सभी ने प्रशंसा की है।

अमर स्वामी जी लेखक के रूप में

जहाँ स्वामी जी एक प्रभावशाली वक्ता है वहाँ एक श्रेष्ठ लेखक भी हैं। सम्पादन कला में भी आप एक आदर्श हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का आपने सम्पादन किया है, पचासों वर्षों से आप अपने खोज पूर्ण लेखों के द्वारा आर्य जनता को लाभान्वित करते चले आ रहे हैं।

आपने आज तक अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिससे आर्य साहित्य समृद्धशाली हुआ है। आज तक आपने दस पन्द्रह पुस्तकें लिखी हैं यह भी ययाति अवस्था में ही लिखी हैं। समय और धन के अभाव में जितना भी लिखा है वह थोड़ा नहीं है। साधन सुलभ होने पर आज भी स्वामी जी बहुत कुछ लिख सकते हैं।

ऐसे हैं आर्य समाज की अमर विभूति श्री अमर स्वामी जी महाराज।

सनातन धर्मी, शास्त्रार्थ महारथी ठा० अमर सिंह

(प्रि० लक्ष्मीदत्त दीक्षित माडलटाउन दिल्ली)

सन् १९३५ की बात है, होशियारपुर में सनातन धर्मियों में ही कुछ लोग विधवा विवाह के पक्षपती हो गये। विधवा विवाह के विरोधी कट्टर पन्थियों ने उन्हें शास्त्रार्थ का चैलेंज दे दिया। अपनी ओर से उन्होंने सनातन धर्म के दिग्गज पं० अखिलानन्द और पं० कालूराम जी शास्त्री को बुला लिया, विधवा विवाह के पक्षपाती सनातन धर्मियों के पैरों तले की जमीन खिसकने लगी, भला सनातन धर्मियों में विधवा विवाह के पक्ष में शास्त्रार्थ करके अपने पेट पर कौन लात मारे ? और शास्त्रार्थ भी सनातन धर्म के सबसे बड़े महारथियों के साथ वे लोग दौड़े-दौड़े मेरे पिताजी (स्वर्गीय पं० केदारनाथ जी) के पास आये और किसी आर्य समाजी विद्वान का प्रबन्ध करने के लिए कहा।

पिताजी ने तत्काल टेलीफोन पर लाहौर में महात्मा हंसराज जी से सम्पर्क करके ठाकुर अमर सिंह जी को बुलवा लिया, सनातन धर्म स्कूल के मैदान में, शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ, श्री पं० अखिलानन्द जी ने आपत्ति की, कि यह शास्त्रार्थ सनातन धर्मियों के ही दो पक्षों के बीच में है, इस लिए सनातनधर्मी पण्डित ही शास्त्रार्थ कर सकता है। ठा० अमर सिंह यह घोषणा करे कि वह सनातन धर्मी हैं, ठाकुर अमर सिंह जी ने तत्काल कह दिया कि, "मैं सनातन धर्मी हूँ" पंडित अखिलानन्द ने इसे बड़ी भारी जीत समझा, शास्त्रार्थ की समाप्ति पर ठाकुर जी ने स्पष्ट कर दिया कि, वस्तुत: शाश्वत वैदिक धर्म को मानने वाला ही सनातन धर्मी होता है।

श्री पं० अखिलानन्द जी तो नवीन धर्मी हैं, क्योंकि वह वेदों के बहुत बाद बने पुराणों को मानते हैं, पं० अखिलानन्द 'सनातन' शब्द के यौगिक अर्थ को भूलकर उसके रूढ़ अर्थ के कारण ही भ्रम में पड़ कर अपनी हार को जीत समझ बैठे।

इसी शास्त्रार्थ में ठाकुर जी ने विधवा विवाह के पक्ष में एक वेद मन्त्र उद्धृत किया।

"या पूर्वम् पतिम् वित्त्वा अथान्यम् विन्दते परम् ॥ अथर्व वेद ॥

इसके अर्थ को सुन कर श्री पं० कालूराम जी शास्त्री ने कहा, कि आपका यह अर्थ ठीक नहीं है, इस पर ठाकुर जी ने कहा कि यह अर्थ मेरा किया हुआ नहीं है, मैं वही अर्थ बोल रहा हूँ जो पं० अखिलानन्द जी ने अपनी पुस्तक "वैधव्य विध्वंसन चम्पू" में लिखा है, ठाकुर जी की इस खोज पर सनातन-धर्मी लोग बगले झाँकने लगे, पं० अखिलानन्द जी बोले यह पुस्तक तो मेरा पूर्व पक्ष है, ठाकुर जी ने स्पष्ट करते हुए कहा कि ऐसा तो सब कहीं होता है। कि एक ही स्थान पर पहले पूर्वपक्ष की स्थापना करके उत्तर पक्ष के रूप में उसका समाधान किया जाता है, लेकिन एक पूरीं पुस्तक को पूर्व पक्ष बता कर ३० वर्ष तक उसके उत्तर पक्ष का न होना, ऐसी बात है, जिस पर कोई विश्वास नहीं कर सकता, वस्तुतः यह पुस्तक पं० अखिलानन्द जी ने तब लिखी थी जब वह आर्य समाज में उपदेशक थे।

प्रसंगवश ठाकुर जी के पाडित्य की भी एक झलक देखने को मिली, विधवा विवाह के समर्थन में ठाकुर जी ने एक मन्त्र उद्धृत करके बताया कि यहां स्पष्ट लिखा है, कि एक पति को प्राप्त कर लेने के बाद उसके मरने पर दूसरा पति बनाया जा सकता है, इस मन्त्र में आये 'वित्त्वा' शब्द को लेकर पं० कालूराम जी शास्त्री ने कहा कि 'वित्त्वा' का अर्थ है जानकर अर्थात यदि किसी लड़की के विवाह की बात चल रही हो या रिश्ता तय हो जाने के कारण लड़की को उसकी 'जानकारी' हो गयी हो किन्तु विवाह न हुआ हो, तो उसका दूसरा विवाह हो सकता है, श्री ठाकुर जी ने पं० कालूराम शास्त्री की व्याकरण की अज्ञानता बताते हुए कहा कि 'विद् ज्ञाने' का रूप 'विदित्त्वा' बनता है, 'वित्त्वा' विद्लृलाभे' से बनता है। इसलिए 'वित्त्वा' का अर्थ 'जानकर' नही अपितु 'पाकर' बनता है। फिर जानने या बातचीत चलने मात्र से किसी की पत्नी संज्ञा नहीं बन जाती। विवाह हो जाने पर ही किसी को पति या पत्नी कहा जा सकता है, श्री कालूराम जी शास्त्री एवं पं० अखिलानन्द जी को निरूत्तर हो जाना पड़ा, यह आर्य समाज की विजय थी। सनातन धर्म के माध्यम से और इसका श्रेय था ठाकुर अमर सिंह जी वर्तमान अमर स्वामी जी महाराज को"।

उसके पश्चात श्री ठाकुर जी का बड़ी धूम धाम एवं जोर-शोर से पूरे नगर में जलूस निकाला गया, जलूस के साथ हजारों नर-नारियों एवं बच्चों की भीड थी।

यह लड़का क्या शास्त्रार्थ करेगा

(स्वामी भीष्म जी महाराज घरौंडा)

सर्व सज्जनों को विदित हो कि अव से साठ वर्ष पूर्व ठाकुर अमर सिंह वर्तमान श्री अमर स्वामी जी, ग्राम सिसाया, जि० हिसार (हरियाणा) में मिले थे, इनके साथ में वेद आदि शास्त्रों से भरा हुआ सन्दूक भी था, क्योंकि वहाँ के पौराणिकों की ओर से, आर्य समाज को चुनौती दी गयी थी, ये ही ठाकुर अमर सिंह जी (वर्तमान महात्मा अमर स्वामी जी महाराज) चुनौती को स्वीकार करके शास्त्रार्थ करने आये थे। पौराणिकों की ओर से तीन पण्डित थे, और आर्य समाज की ओर से यह शेर अकेला था, मैंने इनको देख कर यह समझा था, कि यह लड़का क्या शास्त्रार्थ करेगा, परन्तु इन्होंने तीनों पण्डितों की जुवान वन्द कर दी, और उन पौराणिक पण्डितों को अपनी हार माननी पड़ी, और वे लोग रात्री में ही उठकर भाग गये थे, क्योंकि इनका स्वाध्याय वहुत ऊँचा था, तथा वाक चातुर्य तथा तर्क शैली वहुत ही विचित्र थी, उसके पश्चात मेरा उनसे वहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इन्होंने अपने जीवन में हजारों ही शास्त्रार्थ किये, और वहुत से ग्रन्थ लिखे है। पौराणिक पण्डित तो इनका नाम सुन कर ही काँपने लग जाते थे आप अपने समय में कभी भी पराजित नहीं हुए। शास्त्रार्थ समर में सफलता, इनके वायें हाथ का काम था।

शंका करने वाले वीसीयों पण्डित आगे खड़े हो जाते थे, और ये उन सबका मिनटो में समाधान करते थे। इनके सैकड़ों सुयोग्य शिष्य है। इनकी सेवाओं से आर्य जगत भली-भाँति परिचित है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज के वेद को उत्तारने के लिए जीवन भर

भरसक प्रयत्न करते रहे। आप हिन्दी, और संस्कृत के अतिरिक्त, उर्दू, अरबी फारसी आदि भाषाओं के ज्ञाता और उच्च कोटि के कवि भी हैं।

इस समय आप वृद्ध हो गये है। चलने-फिरने और उठने-बैठने में भी कष्ट होता है। अब आर्य समाज को चाहिये कि इनके कार्यों को भुलाये नहीं, और इसी प्रकार के सैंकड़ों शास्त्रार्थ केसरी तैयार करें। और इनकी सेवा भी करते रहे।

दोहा —

आर्य जगत के रत्न हैं, अमर स्वामी जी महाराज।
भीष्म ने निज भावना, प्रकट करी है आज॥

मनुष्य कौन

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्व आत्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महा बलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावें परन्तु इस मनुष्यपन धर्म से पृथक कभी न होवें।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

श्रद्धेय परिव्राजक अमर स्वामी जी महाराज के प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

(पं० प्रकाश चन्द्र कविरत्न, अजमेर)

(१)

परमेश प्रेम अनुरक्त ऋषिवर भक्त,
सजग सशक्त आर्य जाति के रक्षण काज ।
सुकवि, सुलेखक, सुवक्ता, सुविचारक हैं जो,
साहसी स्वतन्त्रता सेनानी शूर सिरताज ।।
सत्य पक्ष पोषणार्थ मिथ्यामत वादियों के,
दुर्ग पै प्रमाण, युक्ति, तर्क की गिराते गाज ।
धन्य-धन्य है, पुनीत वेद पथ-गामी नामी,
शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी महाराज ।।

(२)

देखे मैंने नगर-नगर, ग्राम-ग्राम,
वैदिक सिद्धान्त का प्रचार करते हुए ।
देखे मैंने आप सत्याग्रही रूप में निजाम,
शाही अत्याचार क्षार-क्षार करते हुए ।।
देखे मैंने आप प्रचारार्थ कितने युवक,
योग्य उपदेशक तैयार करते हुए ।
देखे मैंने आप है, संलग्नता से सर्वाङ्गीण,
सुदृढ़ सामाजिक सुधार करते हुए ।।

(३)

शास्त्रों के विजेता वा सुग्रन्थों के प्रणेता,
नेता वा वेदोपदेशक विख्यात कहूं आपको।
त्यागी तपोनिष्ठ वा वरिष्ठ धीर वा संसृति,
सिन्धु में अलिप्त जलजात कहूं आपको।
सज्जनों के प्रति मैं विनम्र नवनीत कहूँ,
दुर्जनों के प्रति वज्रघात कहूं आपको।
स्नेही सुहृदय मित्र अथवा मैं भ्रात कहूँ,
वा अमर स्वामी गुरु तात कहूं आपको।

(४)

आपका ये शत् वर्ष सचेष्ट,
रहे चलता शुचि जीवनस्पन्दन।
आर्य जनों को प्रबुद्ध रहें,
करते जिमि पाण्डवों को नन्दनन्दन।
है मुझ पै मृदु पेय व्यञ्जन,
कंचन मुक्त, न फूल न चन्दन।
हार्दिक स्नेह श्रद्धांजलि से प्रिय!
आपका मैं करता अभिनन्दन।
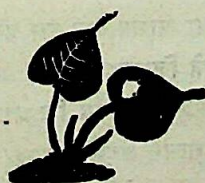
बन्दना के इन स्वरों में स्वामिनं तमहं वन्दे !

(आचार्य उमाकान्त उपाध्याय कलकत्ता)

"बहुत अच्छे प्रचारक हैं, सत्संग बहुत अच्छा करवाते हैं, स्वामी जी के पूर्ण भक्त हैं, आर्यसमाज के पक्के मिश्नरी प्रचारक………"

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कुछ इस रूप में श्री ठाकुर अमर सिंह जी 'आर्य पथिक' का परिचय दिया था। उस समय आर्य समाज कलकत्ता में विशेष प्रचार योजना में आर्य जगत् के गण्यमान विद्वान प्रचारक तीन-तीन चार-चार महीनों के लिए आमन्त्रित किये जाते थे, श्री मुनीश्वर देव जी श्री लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति इत्यादि इस योजना के अन्तर्गत कलकत्ता आ चुके थे, उसी प्रसंग में श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने परिचय दिया और कलकत्ता आर्य समाज के निमन्त्रण पर श्री ठाकुर अमर सिंह जी कलकत्ता पधारे।

आर्य सत्संग का सभा कक्ष, अच्छी उपस्थिति, हाल भरा हुआ था, मैं भीं श्रोताओं में बैठ गया, श्री ठाकुर जी व्याख्यानपीठ पर आसीन हुए। धीर स्वर, गम्भीर वाणी, प्रशस्त मुख मण्डल आकृत्या-प्रकृत्या उपदेशक ! सर्व प्रथम एक सामूहिक भजन गवाया आगे-आगे आप गाते थे, पीछे श्रौतागण तन्मय होकर दोहराते जा रहे थे। सत्संग की एक सभा बन्ध गई, मैं भी अति प्रभावित हो रहा था।

अब व्याख्यान आरम्भ हुआ आशय कुछ इस प्रकार था। आपको सत्संग में आना चाहिये, व्याख्यान चाहे जिसका भी हो, आपको कुछ न कुछ अवश्य मिलेगा, नहीं तो आप यही समझकर आईये कि आपको आर्य समाज में आता देखकर बहुत लोग सोचेंगे कि सत्संग अच्छी जगह है तभी तो आप गये हैं। इसलिए वे भी आना आरम्भ कर देंगे, आपके आने का लाभ आपको तो होगा ही दूसरों को भी होगा, और आप पुण्य के भागी बनेंगे।

बहुत ही सीधे-सादे ढंग से कही हुई दिलकी बात सीधा घर कर गई।

मैंने उसी दिन निश्चय कर लिया कि सत्संग में जाना ही है। आज यह स्वाभाविक कट्टरता में बदल गया है, और इसका श्रेय आदरणीय अमर स्वामी जी के व्याख्यान को है।

☼ ☼ ☼

स्वामी जी के व्याख्यानों में किस्से कहानियों के स्थान पर शास्त्रार्थों के चुटकुले बड़े रोचक और हृदयग्राही होते हैं। आर्य समाज कलकत्ता की बस जा रही थी, समीपाञ्चल के किसी समाज का जीर्णोद्धार था वार्षिकोत्सव का आयोजन था। वहां ईसाई-मुसलमानों की बहुलता थी, आदरणीय अमर स्वामी जी ने बड़ी सरलता से प्रमाणित किया कि ईसाई-मुसलमान किस प्रकार वेद से अनुप्राणित होते हैं। ईसाईयों का father Hood of god और मुसलमानों का Brother hood of mankind किस प्रकार मूल रूप में वेद से निकले हैं प्रसिद्ध मन्त्र "सनो वन्धुर्जनिता स विधाता" का प्रमाण देकर बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान दिया।

समय-समय पर प्रमाणों का प्रयोग सचमुच बड़ी सूझ-बूझ का फल होता है। स्वामी जी शास्त्रार्थ कला के अति माहिर कलाकार रहे हैं। ये प्रमाण तो हम लोगों के सम्मुख भी होते हैं। किन्तु प्रमाणों का प्रयोग सबके वश की बात नहीं है। ठीक भी है—

"शस्त्रं शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च,
पुरुष विशेष प्राप्य भवन्ति योग्या: अयोग्याश्च।"

यह हाथ की तासीर और प्रयोग की कुशलता ही है, कि सरस्वती मुखरित हो उठती है। आदरणीय स्वामी जी के सान्निध्य में वही प्रचलित मन्त्र कैसी-कैसी सैद्धान्तिक पुष्टियाँ कर जाते थे।

उन्हीं दिनों चार मन्त्र और तीन समिधाओं वाला प्रसिद्ध विवाद चल पड़ा। उन दिनों भी मैं कलकत्ता आर्य समाज के मुख पत्र 'आर्य संसार' का सम्पादक था, आदरणीय स्वामी जी कलकत्ता में ही थे, कई लेख आपने संस्कार विधि के समर्थन में वर्तमान निदेश के समर्थन में लिखा था। स्वामी जी महर्षि स्वामी दयानन्द जी के दृढ़ समर्थकों में हैं। हम लोगों ने आदरणीय अमर स्वामी जी की गणना कट्टर दयानन्दी प्रचारकों में कर रखी है।

उन्हीं दिनों एक और विवाद उठ खड़ा हुआ कि संस्कार विधि ग्रन्थ अधूरा है, ऋषि ने कई आवश्यक निर्देश किये ही नहीं है। कई विचारकों

का विचार था, कि संस्कारविधि को गृह्यसूत्रों आदि उन ग्रन्थों के आधार पर पूर्ण कर लेना चाहिये। जिन्हें स्वामी दयानन्द जी ने आधार मानकर संस्कार विधि का प्रणयन किया।

इस विवाद में आदरणीय अमर स्वामी जी का पक्ष था कि महर्षि दयानन्द जी अपने में स्वयं एक पूर्ण कल्पकार थे! अतः उनके निर्देश और विधान पूर्ण हैं। उन्हें अधूरा या अपूर्ण समझ कर परिपरक अंशों को जोड़ना नहीं चाहिये।

इस मान्यता में कितनी दूरदर्शिता है। यदि ऋषि के ग्रन्थों के परिपूरक परिशिष्ठ बनने लगेंगे तो थोड़े दिनों में फिर ग्रन्थ का मूल रूप ही न रह जायगा। साथ ही प्रत्येक पण्डित या कर्मकाण्डी पौराणिक कर्मकाण्डों के साथ तालमेल बैठाने में कुछ न कुछ जोड़ना ही चाहेगा, इस प्रकार संस्कार-विधि का स्वरूप विकृत हो जायेगा। इसी महर्षि भक्ति की कट्टरता के कारण आदरणीय अमर स्वामी जी के कलकत्ता प्रवास के समय स्वर्गीय (आचार्य रमाकान्त जी शास्त्री) जी के साथ आत्मीयता एक पारिवारिक परिवेश में उभर आई थी। इसी दृढ़ निष्ठा के कारण हमारा सम्पूर्ण परिवार स्वामी जी का आदर्श मुग्ध है।

❖ ❖ ❖

स्वामी जी निष्ठावान प्रचारक हैं। कलकत्ता प्रवास के समय आपने छोटे बड़े कई ग्रन्थों का प्रणयन किया। यहाँ आपका एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था। 'जीवित पितर' ! सामान्यतः लोग मृतकों को ही पितर संज्ञा से अभि-हित करते हैं। स्वामी जी ने एक तो मृतक श्राद्ध का खण्डन किया, और साथ पितर संज्ञा जीवितों की है, यह प्रमाणित किया। कलकत्ता में आदर-णीय स्वामी जी का एक और ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। "हनुमानादि वानर, बन्दर थे या मनुष्य ?" स्वामी जी ने भरपूर प्रमाण इस वात के दिये, कि वानर मनुष्यों की ही एक जाति थी। स्वामी जी का सम्पूर्ण साहित्य, खोज, अनुसंधान, शास्त्रार्थों का साहित्य है। जिस दिन 'अमर साहित्य सर्वस्व' प्रकाशित होगा, उस दिन वैदिक सिद्धांतों पर दार्शनिक और प्रमाण समन्वित एक विशाल साहित्य का उदय होगा।

❋ ❋ ❋

कलकत्ता आर्य समाज का "महर्षि दयानन्द दातव्य औषधालय" अमर स्वामी जी का चिर स्मारक है। आपने कलकत्ता निवास के समय एक सच्चे

मिशनरी, प्रचारक के दृष्टिकोण से आपने यह अनुभव किया कि कलकत्ता जैसे नगर में आर्य समाज की अपनी कोई ऐसी संस्था होनी चाहिये जिससे जन सेवा का कार्य निरन्तर चलता रहे। इसी भूमिका में आपने "महर्षि दयानन्द दातव्य औषधालय" का आरम्भ किया। आज इस औषधालय से प्रतिदिन औषधियां दी जाती हैं। और सारी व्यवस्था निःशुल्क है। जब इसका आरम्भ हुआ तो आदरणीय श्री अमर स्वामी जी स्वयं दवाइयाँ बनवाते स्वयं रोगियों को देखते स्वयं ही चन्दा करते स्वयं ही सारी व्यवस्था करते, उस समय गुरुकुल ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक श्री दिनेश चन्द्र शर्मा जी का भी सहयोग प्राप्त था, किन्तु यह कृतित्व तो स्वामी जी जैसे अनुभवी प्रचारक का ही था। यहीं से मेरे मन में एक और बात घर कर गई, कि आर्य प्रचारक मिशनरियों को कुछ न कुछ औषधि और जन सेवा का अनुभव अवश्य होना चाहिये।

आदरणीय अमर स्वामी जी का जीवन इस बात का स्वयं प्रमाण है।

❀ 卐 卐

आप कलकत्ता से चले गये, कई वर्ष बीत गये। वार्षिकोत्सवों या अन्य प्रसङ्गों पर आना जाना होता रहा। कलकत्ता में आर्यसमाज बड़ा बाजार अपने वार्षिकोत्सव पर प्रति वर्ष एक प्रतिष्ठित समर्पित जीवन आर्य उपदेशक का अभिनन्दन करता है। इसी क्रम में बड़े उल्लास के वातावरण में आदरणीय अमर स्वामी जी का सार्वजनिक अभिनन्दन कलकत्ता में किया गया। इस अभिनन्दन में सम्पूर्ण कलकत्ता के आर्य नरनारी बड़ी श्रद्धा से सम्मिलित हुए। उस अवसर पर एक वीतराग एषणाओं से रहित आर्य संन्यासी का स्वरूप सम्मुखीन हुआ। स्वामी जी अभिनन्दन जनित प्रसन्नता से ऊपर उठ चुके हैं। उस समय आर्य समाज और आर्य जनों की ओर से जो सश्रद्धा धन राशि समर्पित की गई उसे वहीं आर्य साहित्य निर्माण में लगाने की घोषणा करके आप तटस्थ हो गये।

स्वामी जी का जीवन, आपकी विद्या आपके शास्त्रों का इतिहास, आपका प्रमाणों का संग्रह सब कुछ अपने में निराला है, अद्‌भुत है। परम प्रभु आपको चिरायु और स्वस्थ रक्खें। यही प्रार्थना है।

हमारे माननीय श्री अमर स्वामी जी

(प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर)

मेरा जन्म एक छोटे से ग्राम में हुआ, मेरा पालन-पोषण आर्य समाज के स्वस्थ वातावरण में हुआ, बालकाल में ही, आर्य समाज में सक्रिय रूचि लेने लगा, अतः मुझे ठीक-ठीक ज्ञात नहीं, कि मैंने श्री ठाकुर अमर सिंह जी (श्री अमर स्वामी जी) का नाम पहले-पहल कब सुना। ग्राम के आर्य लोग शास्त्रार्थों की चर्चा करते रहते थे, इन चर्चाओं में ठाकुर अमर सिंह जी की सिंह गर्जना विद्वता व निडरता की भूरि-भूरि प्रशंसा होती रहती थी, इन चर्चाओं को सुन-सुन कर मेरे मन में ठाकुर जी के दर्शन करने की चाह करवटें लेती रहती थी। विद्यार्थी जीवन में ही स्वाध्याय की विशेष रूचि थी, इस रूचि ने ठाकुर जी के प्रति और आकर्षण पैदा कर दिया।

वह शुभ घड़ी भी आ गई, ठाकुर जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला, अमृतसर में आठ दिन तक पादरी अब्दुलहक से आर्यों का शास्त्रार्थ था, यह १९५४ ई० की घटना है, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री ठाकुर जी एवं पं० शान्ति प्रकाश जी वहां पर पधारे ! मैं तब लेखराम नगर (कादियां) में अध्यापन कार्य करता था, पादरी महोदय का हठ था कि मैं ठाकुर अमर सिंह जी व पं० शान्ति प्रकाश जी से शास्त्रार्थ नहीं करूंगा, लिखित शास्त्रार्थ के समय ये दोनों रामचन्द्र देहलवी के पास बैठ भी नहीं सकते। सब श्रोताओं पर पादरी जी की इस हठ का विशेष प्रभाव पड़ता था, तब मैंने स्वयं देखा कि ठाकुर जी की विद्वता व शास्त्रार्थ कला का कितना रौब है।

तब आर्य समाज लक्षमण सर में प्रथम बार मेरा श्री ठाकुर जी से परिचय हुआ।

आपने बड़ी आत्मीयता दिखाई, और आर्य समाज की सेवा करने की प्रबल प्रेरणा दी। इसके बाद एक बार १९६१ ई० में या १९६२ ई० में ठाकुर जी पंजाब पधारे, मैं तब धूरी में पढ़ाया करता था, वहां के विख्यात आर्य समाजी महाशय कुन्दन लाल जी आपके बड़े भक्त हैं, ठाकुर जी बिना प्रोग्राम के आर्य समाज में पहुंचे और मुझे बुलवाया, मैंने पूछा कि आपने यह

कृपा कैसे की ? आपने कहा कि मुझे आपके लेखों से पता था, कि आप यहां रहते हैं। सोचा कि इधर आया हूं तो जाते-जाते मिलता ही जाऊं कार्य कर्त्ताओं से इतना प्रेम, इस प्यार व इस आत्मीयता का मुझ पर एक अमिट व गहरा प्रभाव पड़ा, आज पर्यन्त मेरी आंखों के सामने वह वैंच व स्थान है, जहां धूरी में आकर आप वैठे थे, यदि आर्य समाज के नेता, व विद्वान सेवकों से ऐसा स्नेह करेंगे तो संगठन सुदृढ़ व तेजस्वी होगा।

फिर तो स्वामी जी महाराज से कई वार भेंट होती रही, एक घटना तो अविस्मरणीय ही रहेगी, आर्य प्रादेशिक सभा ने अमृतसर में आर्य समाज शताब्दी समारोह का आयोजन किया। प्रातःकाल यज्ञ हवन के पश्चात् स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी का प्रवचन था, स्वामी जी ने श्री शंकराचार्य जी की चर्चा करते हुए कोई योगापन्थी वात कह दी, सब विद्वानों को वह अखरी। अभी कानाफूंसी आरम्भ ही हुई थी, कि अमर स्वामी जी ने एक ही मिनट में उनकी वात को काटकर सिद्धांत विरुद्ध कथन का खण्डन कर दिया, स्वामी सच्चिदानन्द भला श्री अमर स्वामी जी का प्रतिवाद क्या करते। सब पर श्री अमर स्वामी जी की सिद्धान्त प्रियता व पाण्डित्य की छाप पड़ी, एक वार मैं गाजियाबाद आश्रम में गया, चलने लगा तो स्वामी जी ने कहा खिलाए पिलाए विना मैं न जाने दूंगा। उनकी इस व्यवहार कुशलता एवं प्रेम का स्मरण करके आज भी चित्त गद्गद् हो जाता है।

एक भजनोपदेशक ने मुझे बतलाया कि, जब मैं नया-नया प्रचार क्षेत्र में उतरा तो ठाकुर जी के साथ प्रचारार्थ गया। रात्री को समाज के मन्त्री जी ने ठाकुर जी के लिए तो दूध मंगवाया परन्तु भजनोपदेशक को नहीं पूछा ठाकुर जी ने मन्त्री महोदय को इस अशिष्ठता के लिए ऐसा फटकारा व धिक्कारा कि वह इसे कभी भूल न सके।

कुछ नेताओं ने अपने पद की सुरक्षा के लिए ऐसी जोड़-तोड़ की कि आर्य समाज में वेद-संध्या-हवन आदि का उपहास उड़ाने वाले कुछ उच्छृङ्खल तत्वों का बोल वाला हो गया, तब तक बड़े नेता ने, अमृतसर में भाषण देते हुए अवैदिक मतों को उखाड़ने व वैदिक अध्यात्मवाद के प्रचार की बड़ी जोरदार वात कही। अमर स्वामी जी ने तब कुछ मिलने वालों को कहा कि नास्तिकों को आर्य समाज के मंच पर लाने वाले अब वैदिक अध्यात्मवाद की बात किस मुंह से करते हैं ?

आपात काल स्थिति में एक शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ, वैदिक धर्म के निष्ठावान प्रहरी ला० दीपचन्द जी इसके व्यवस्थापकों में से एक थे। मैंने उनसे पूछा कि आपने शास्त्रार्थ में श्री अमर स्वामी जी अथवा श्री शान्ति प्रकाश जी को शास्त्रार्थ करने का अवसर क्यों न दिया ? लाला दीपचन्द जी ने कहा "आप जानते हैं कि अमर स्वामी जी को विधर्मियों के सब प्रमाण कण्ठस्थ हैं। विरोधियों को किसी अनुचित बात पर वह उनकी सारी पोल पट्टी खोल कर रख देते। आपात स्थिति में कोई समस्या खड़ी हो जाती" इस कथन से पाठक समझ लें कि स्वामी जी का स्वाध्याय कितना विस्तृत व गहन है, और आपातस्थिति हो या मार्शलाला वैदिक धर्म का यह प्रहरी सदा निडरता का मूर्त्तरूप रहा है। आर्य समाज के सैकड़ों नहीं सहस्रों अलभ्य ग्रन्थों का संग्रह करके आपने ऋषि मिशन की जो सेवा की है, उसके लिए वह सदा पूजनीय माने जावेंगे।

एक उदाहरण लीजिये स्थूलाक्षरी सत्यार्थ प्रकाश का पुनः प्रकाशन करते समय महा विद्वान आचार्य उदयवीर जी शास्त्री के सम्मुख त्रयोदश सम्मुलास की एक समस्या उपस्थित हो गई। वेद विद् स्वामी वेदानन्द जी तो अब थे नहीं, कौन इसका समाधान करे ?

आचार्य जी ने ठाकुर जी से बात की, आपने बाईबिल का वह अनुवाद लाकर सामने रख दिया, जिसे आधार बनाकर ऋषि ने ईसाई मत की समीक्षा की। गुत्थी सुलझ गई। सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के समय बाई-बिल की आयत का अनुवाद उद्धृत करते एक-दो पंक्तियां छूट गई। ऐसा हो ही जाता है, जब दो पंक्तियों के आरम्भिक शब्द एक ही हों तो ऐसा होना साधारण सी बात होती है।

मेरी लेख माला मूल की भूल चल रही थी। एक प्रसंग में कुछ बात अस्पष्ट सी रही, और कुछ छपने में भी शब्द छूट गये। झट स्वामी जी का पत्र आ गया, लेखमाला की तो प्रशंसा की, परन्तु साथ ही लिखा कि 'यदा-यदा हि धर्मस्य' श्लोक के अर्थ व भाव जो ऋषि ने दिये हैं, उन्हें सम्मुख रखकर चलें। जिन विद्वानों का आर्य समाज में चहुंदिश ध्यान रहा, जिन्होंने आर्ष सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदा जागरूक रहकर समाज सेवा की है—ऐसे महान सपूतों में श्री अमर स्वामी जी एक हैं, छोटी से छोटी भूल भी आपको अखरती है। और शुद्ध हृदय से उसका सुधार करने को आप सदैव तत्पर रहते हैं।

पुन: उनके सौजन्य की एक चर्चा करके इस लेख माला को विराम देता हूं, ठाकुर यशपाल सिंह जी कि, प्रथम पुण्य तिथि उनके ग्राम पनियाला (सहारनपुर) में मनाई गई मैं रुड़की नगर में प्रचारार्थ गया हुआ था। वहां से दिन को ग्राम में चला गया, भारी भीड़ थी, कई नेता पधारे, श्री कुलतार सिंह राज्य मन्त्री उ० प्र० सरकार भी आये थे, मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी। भीड़ में पीछे बैठ गया। श्री स्वामी जी महाराज आये और भीड़ में से अन्दर चले गये, मैंने नमस्ते की।

जब स्वामी जी की व्याख्यान की बारी आई तो आपने अपने भाषण में कहा "देखिये ठाकुर यशपाल सिंह जी का व्यक्तित्व व उनकी मित्र मण्डली आज यहां देश के दूरस्थ भाग अबोहर से हमारे प्रसिद्ध विद्वान प्रो० राजेन्द्र "जिज्ञासु" जी व उनकी पत्नी भी पधारें हैं।

ऐसे शब्द कहकर स्वामी जी ने सारी सभा का ध्यान मेरी और आकर्षित कर दिया। बाद में सब बड़े-छोटे नेताओं ने बड़े आदर भाव से मुझसे बात की।

किसी-किसी ने यह भी कहा आप पीछे क्यों बैठ गये ? स्टेज पर क्यों नहीं आ गये आदि।

ऐसे गुणी, शास्त्रार्थ महारथी स्पष्टवादी सिद्धान्तनिष्ठ माननीय अमर स्वामी जी का मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूं।

ओ३म्

सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम ओ३म् को कहा है अन्य सब गौणिक नाम हैं।

—स० प्र० प्रथम समु०

अमर स्तवन

(कविवर "प्रणव" शास्त्री एम० ए०, आर्य नगर, फिरोजाबाद उ० प्र०)

मातृ भूमि भारत के प्यारे गुण-गण धारे,
नत मस्तक हैं, आर्य सुधीजन चरण तुम्हारे।
नीर क्षीर विवेकी हो प्रतिभा के बल से,
यश की धवल धरोहर धारी बुद्धि प्रबल से ॥१॥
श्री विहीन हो किन्तु भारती धन के भूषण,
अविचल प्रिय पांण्ड़ित्य प्रथा के पावन पूषण।
मन्थन कर गम्भीर ज्ञान का सागर अनुपम,
रत्न प्रमाण प्रदान किये हैं, उत्तम-उत्तम ॥२॥
स्वागत करती मुक्ति अप्सरा-स्नेह सुधा से,
मीत भाव से मन्त्र दे रहे अर्थ सदा से।
जीवन भर ही रहो विपक्षी हारी लंका,
शास्त्र-समर में रहे बजाते जय का डंका ॥३॥
अर्थ महोज्वल आर्ष ज्ञान के दीप जलाये,
मतवादों के तीक्ष्ण तर्कों से होश उड़ाये।
हार न मानी कहीं स्तुत्य व्याख्यान प्रणाली,
रक्षित जिससे आर्य धर्म की ध्वजा निराली ॥४॥
थी न स्वार्थ की गन्ध, न होगी मन उपवन में,
कीर्ति कोकिला निशदिन कूके स्वर साधन में।
जब तक गंगाधार-धरा में रहे रवानी,
यहाँ सुनाते रहो "प्रणव" कविता लासानी ॥५॥

***

पतित-पावनी शास्त्रार्थ-गंगा
और
शास्त्रार्थ-महारथी महात्मा अमर स्वामी जी परिव्राजक

(ज्ञानी पिंडीदास जी अमृतसर)

यद्यपि भोग-प्रधान-प्रकृति के आधुनिक विषाक्त वातावरण में अर्थोपार्जन, धन-सञ्चय एवं जीवन-यापन की अनिवार्य आवश्यकताओं की प्राप्त्यर्थ उपयोगी सामग्री-समूह के संकलन की निस्सीम दौड़ लगी हुई है। प्रत्येक व्यक्ति की अभिलाषा है कि वह एकाकी ही धन-धान्य समन्विता, कोठी-कार कमनीयता, बैंक-बैलैंस वरीयता और उद्योग-धन्धों में सम्पन्नता का ठेकेदार बन जाये, तथापि दीर्घ-दृष्टि सम्पन्न मनन-शील मनस्वी-मानव, इस तथ्य की अवहेलना नहीं कर सकते कि हमारी चिर-चर्चित, मनसा अर्चित तथा यत्नेन परिरक्षित विचार-धारा के अनुसार मानव-जीवन का परमोच्च लक्ष्य, निर्धारित ध्येय, फल-चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति ही रहा है। अर्थात् भौतिक एवं आध्यात्मिक अथवा लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति का पूर्ण समन्वय। केवल भौतिकता अथवा मात्र आध्यात्मिकता मानव-जीवन की चतुर्मुखी समुन्नतिका कारण सिद्ध नहीं हो सकती। हाँ, दोनों का सुन्दर-सुष्टु समन्वय लक्ष्य पूर्त्ति का साधन अवश्य बन सकता है।

हमारे धर्म की परिभाषा है "यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।" अर्थात्—धर्म उन नैसर्गिक नियमों का नाम है जिनका परिपालन करने वाले, भाग्यशील व्यक्ति के दोनों हाथों में लड्डू हैं, वह सर्वविध लौकिक समुन्नति के साथ-ही-साथ पारमार्थिक परम कल्याण की सम्प्राप्ति से भी वञ्चित नहीं रहता। प्रत्येक व्यक्ति का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि धर्मपूर्वक विविध वैभव का उपार्जन करके शुद्ध-शुभ-शुभ कामनाओं, भव्य भावनाओं से ओत-प्रोत अपने परम लक्ष्य मोक्ष-पथ पर निरन्तर बढ़ता चला जाये।

इसी निःश्रेयस् (मोक्ष) की उपलब्धि के मार्ग में न्याय-दर्शन-प्रणेता महामुनि गौतम ने सोलह स्टेशनों (तत्त्वों) का वर्णन किया है—

१	२	३	४	५	६	७	८
प्रमाण	प्रमेय	संशय	प्रयोजन	दृष्टान्त	सिद्धान्त	अवयव	तर्क

९	१०	११	१२	१३	१४	१५
निर्णय	वाद	जल्प	वितण्डा	हेत्वाभास	छल	जाति

१६
निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः ॥१॥

महामुनि गोतम का आदेश है कि मानव-जीवन के परमलक्ष्य चरम-ध्येय, गन्तव्य-स्थान 'निःश्रेयस' तक पहुंचने के लिये हमारे मानव-जीवन-यान को उपरि लिखित स्टेशनों पर से होकर, रुक कर जाना अनिवार्य है। उन में नौवां स्टेशन 'वाद' पर ठहरना, पाथेय (अन्नजल) संग्रह करना, मार्ग पर अग्रसर होने की क्षमता प्राप्त करना भी अत्यावश्यक है। हमारे प्राचीन-पुरातन पूर्व-पुरुषाओं की यही प्रसिद्ध पद्धति रही है कि जब तक वाद सत्या-सत्य, कर्त्तव्याकर्त्तव्य निर्धारित करने के लिये युक्ति-युक्त एवं प्रमाण-पोषित ऊहा-पोह न कर ली जाये, तब तक मुक्ति मार्ग प्रशस्त हो ही नहीं सकता। इसी वाद-विवाद के राज मार्ग का अवलम्बन करके उपनिषद्-वक्ता महर्षियों ने जिज्ञासु महानुभावों की ज्ञान-विज्ञान पिपासा को शान्त किया था, वाद-विवाद की इसी जर्नैली सड़क पर चलकर शंकर स्वामी ने मण्डन-मिश्र से वाग्युद्ध किया था, और भारत-भर में फैली नास्तिकता की तमिस्रा की घनघोर घटाओं को छिन्न-भिन्न करके वेद के सूर्य के पुनः दर्शन कराये थे, इसी 'वाद-विवाद' के प्रशंसनीय पथ का अनुसंरण करके महर्षि दयानन्द की पाखण्ड-खण्डिनी ने अपने दैवी चमत्कार दिखाये थे और उनके अनुगामी पं० लेखराम 'आर्यमुसाफिर, दर्शनाचार्य स्वामी दर्शनानन्द, महावाग्मी पं० भोजदत्त प्रतिवादी भयङ्कर परन्तु मधुरभाषी पं० रामचन्द्र देहलवी, शास्त्रार्थ महारथी पं० मुरारीलाल शर्मा, अनुसंधान प्रिय पं० भगवद्दत्त, महाविद्वान् पं० व्यासदेव शास्त्री, एम० ए०, एल० एल० वी०, शतपथ में एक-पथ वाले पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, स्मृति सागर पं० बुद्धदेव 'मीरपुरी' "वैदिकतोप' पं० मनसाराम, और विधर्मी गढ़ों में निर्भीक दनदनाने वाले पं० धर्म भिक्षु आदि योद्धाओं ने विरोधियों को शास्त्रार्थ समरों में से पलायन करने पर विवश कर दिया था। आज भी इसी पथ के पथिक पं० बिहारी लाल शास्त्री और श्री महात्मा अमर स्वामी 'परिव्राजक' आर्यसमाज के माध्यम से दिग्दिगन्त में वैदिक धर्म की लुप्त प्रायः परम ज्योति को उद्दीप्त करके उल्लूक प्रकृति, अन्धविश्वासी, साम्प्रदायिक रूढ़िवादों के सुदृढ़ समझे जाने वाले दुर्गों की प्राचीरों में अपने युक्ति प्रमाणों की अमोघ गोलाबारी और बेपनाह बम्म वर्षा से भूचाल की-सी भयानक स्थिति उत्पन्न करते रहते हैं— ईसाई पनाह मांगने, मुसलमान अलामान पुकारने और पौराणिक त्राहिमाम् कहने लग जाते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थों की संक्षिप्त तालिका—आज तो यातायात की सर्व प्रकार की सुविधाएँ सुलभ हैं, परन्तु जिन दिनों आदित्य ब्रह्मचारी, तरुण तपस्वी भगवान् दयानन्द ने अपनी कुन्दन-काया को तीव्र तप-त्याग, तीखी-तिरछी तितिक्षा, और विचित्र-विलक्षणा वैराग्य की धधकती, लपलपाती लाल जिह्वा ज्वालाओं में झोंककर और ज्ञान-विज्ञान के अथाह अगाध-अनन्त तोय-निधि की गहरी-गम्भीर तहों में बैठकर-समाधिस्थ होकर वैदिक ज्ञान और शास्त्र-तत्त्व के जिन महामूल्य मणि-माणिक्य-मूंगा-मुक्ता मर्वारीद-मोतियों को संग्रहीत-संकलित किया था, उन्हें मन-मस्तिष्क की महती-मनीषा एवं विस्तृत-विशाल दयार्द्र हृदय की असीम उदारता से जन-जन के समक्ष प्रचारित-प्रसारित करने के दृढ़ संकल्प से कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए थे, उस काल खण्ड में अनेक प्रकार के छोटे-बड़े वायुयान, वायु वेग से फर्राटें भरने वाली मोटर कार टैक्सी बस आदि का अभी आविष्कार भी नहीं हो पाया था। रेलवे लाइनें भी संकुचित से क्षेत्र में बिछ पाई थीं और ट्रेनें भी आज की अपेक्षा रीघूं-रीघूं चाल से चला करती थीं फिर भी धन्य थे महर्षि दयानन्द, जिन्होंने वाद-विवाद, शंका-समाधान और शास्त्रार्थों द्वारा वेद-पथ-भ्रष्ट सम्प्रदाइयों को सन्मार्गारूढ़ करने के लिये घोरतम तपस्या की साधना की ताकि विदेशी-विधर्मी शासन की कूट नीति और ईसाई-मुसलमानों की धांधली तथा रूढ़िवादी पौराणिकों द्वारा प्रसारित-प्रचारित अनान्धकार के काले-कलूटे बादलों द्वारा फैलाई तमिस्रा को हटा कर सत्यार्थ का प्रकाश कर सकें। इस विषय में भी महाराज को कितना घोर परिश्रम करना पड़ा, इसका दिग्दर्शन कराने के लिये, हम उनके अगणित शास्त्रार्थों में से एक संक्षिप्त-सी तालिका प्रस्तुत कर रहे हैं—

क्रम सं०	वर्ष मास	स्थान	किसके साथ ?
१	१८६६	अजमेर	पादरी ग्रे०, इबसन, शूलब्रैंड
२	१८६७	कर्णवास	पं० अम्बादत्त अनूप शहर वाले
३	,,	रामघाट	पं० कृष्णानन्द
४	,,	कर्णवास	पं० हीरा वल्लभ
५	,,	सोरों	पं० अङ्गद शास्त्री
६	१८६८	काकोरीका मेला	पं० उमादत्त
७	,,	फर्रुखाबाद	पं० श्रीगोपाल

क्रम स०	वर्ष मास	स्थान	किसके साथ
८	१८६९	फर्रुखाबाद	पं० हलधर ओझा
९	"	कन्नौज	पं० हरिशंकर
१०	" जौलाई	कानपुर	पं० हलधर ओझा
११	" नवम्बर	बनारस	पं० ताराशरण तर्क रत्न
			स्वामी विशुद्धानन्द
			पं० बालशास्त्री,
			पं० राजाराम शास्त्री
			पं० माधवाचार्य
			पं० वामनाचार्य
१२	" जून	ब्यावर	पादरी शूलब्रैंड
१३	१८७२	मिर्जापुर	पं० गोविन्द भट्ट पं० जैसीराम
१४	"	डुमराओं	पं० दुर्गादत्त
१५	"	आरा	पं० रुद्रदत्त, पं० चन्द्रदत्त
१६	" सितम्बर	पटना	पं० रामजीवन भट्ट
			पं० रामावतार
१७	" अप्रैल	हुगली	पं० ताराचरण तर्क रत्न
१८	१८७३ मार्च	कलकत्ता	पं० हेमचन्द्र चक्रवर्ती
			पं० महेशचन्द्र न्याय रत्न
१९	" मई	छपरा	पं० जगन्नाथ
२०	" अक्टूबर	कानपुर	पं० गंगाधर
२१	" नवम्बर	लखनऊ	"
२२	१८७४ फरवरी	इलाहाबाद	पं० कांशीनाथ शास्त्री
२३	" नवम्बर	सूरत	पं० इच्छाराम शास्त्री
२४	" "	भड़ौंच	पं० माधोराव शास्त्री
२५	" "	राजकोट	पं० महीधर
२६	१८७५ जून	बम्बई	पं० कंवलनयन आचार्य

क्रम स०	वर्ष मास	स्थान	किसके साथ
२७	,, मार्च	बम्वई	पं० खेमचन्द पं० बालजी शास्त्री
२८	,, जून	बड़ोदा	पं० यज्ञेश्वर, पं० अप्पा शम्भु
२९	१८७६ ,,	बम्वई	पं० रामलाल
३०	,, नवम्वर	मुरादाबाद	पादरी पारकर
३१	१८७७ मार्च	गुजरांवाला	ईसाइयों के साथ
३२	१८७७ नवम्वर	अजमेर	पादरी ग्रे० पादरी हुसवैंड
३३	,, मार्च	चांदपुर मेला	पादरी स्कॉट, मौ० मुहम्मद कासिम
३४	,, २४ सित०	जालन्धर	मौ० अहमद हसन
३५	१८७८ अगस्त	बदायूँ	प० रामप्रसाद
३६	,, २५ अगस्त	वरेली	पादरी स्कॉट
३७	१८८२ २५ सितम्बर	उदयपुर	मौ० अवदुर्रहमान

नोट—स्मरणीय है कि महर्षि का प्रथम शास्त्रार्थ अजमेर में ईसाइयों के साथ और अन्तिम, ११ सितम्वर, १८८२ को उदयपुर में मुसलमानों के साथ हुआ था।

महात्मा अमरस्वामी परिव्राजक—(भूतपूर्व ठाकुर अमर सिंह), प्रधान अखिल भारत आर्य वानप्रस्थ संन्यासी मण्डल, ज्वालापुर, ग्राम अर्णियां जिला बुलन्द शहर (उ० प्र०) के एक खाते-पीते जमींदार राजपूत परिवार के सुपुत्र हैं। वैदिक धर्म सम्बन्धी ज्ञानार्जनार्थ आर्य श्री पं० भोजदत्त जी द्वारा संस्थापित तथा संचालित "आर्य मुसाफिर उपदेशक विद्यालय" आगरा में जा प्रविष्ट हुए। वहाँ योग्य गुरु के अनेकों अन्य शिष्यों के साथ श्री कुंवर सुखलाल जी 'आर्य मुसाफिर' (जो आपके भाई हैं) का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उक्त विद्यालय में स्नातक होने के उपरांत हमारे चरित्र नायक १७-१८ वर्ष की किशोर अवस्था में ही पूज्य महात्मा हंसराज जी महाराज प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब, सिंध, बलोचिस्थान लाहौर की देख-रेख में आर्योपदेशक बन गये। लम्बे सेवाकाल में आपने पेशावर से कलकत्ता, लाहौर से कराची, काश्मीर से कन्याकुमारी और जगन्नाथपुरी से भगवान श्रीकृष्ण

जी की राजधानी द्वारिकापुरी तक समस्त भारत में सहस्रों व्याख्यानों के अति-रिक्त सैंकड़ों शास्त्रार्थों में कुरानी, किरानी और पुराणी दिग्गज विद्वानों को शास्त्रार्थ समर स्थलियों में परास्त किया। इन पंक्तियों के लेखक ने उनकी दर्जनों कथाएं सुनी और अगणित शास्त्रार्थों में संयोजक-प्रवन्धक, दर्शक और अध्यक्ष के रूप में भाग लिया। सबका संक्षिप्त व्योरा भी एक पृथक् वृहद् ग्रंथ की अपेक्षा रखता है, अतः स्थाली पाक न्याय से यत्किञ्चित निम्न पंक्तियों में अंकित करने का यत्न किया गया है—

(१) घोनेवाला का शास्त्रार्थ—कसवा रमदास जिला अमृतसर के निकटवर्ती छोटे से ग्राम घोनेवाला में महाशय बूआदित्तामल एक ही आर्य समाजी सज्जन रहते थे। उनकी प्रेरणा से स्यालकोट जिला निवासी एक काश्मीरी मौलवी शुद्ध होकर स्वामी सत्यानन्द बना। इस से उत्तेजित मुसलमानों ने शास्त्रार्थ का चैलेंज दे दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। उसी ग्राम के विस्तृत खेतों में श्री आचार्य जगदीशचन्द्र जी न्याय रत्न, श्री-मद्दयानन्द अरबी संस्कृत महाविद्यालय अमृतसर का एक शास्त्रार्थ, लेखक की अध्यक्षता में अहमदियों के नट-खट प्रचारक मौ० इस्मतुल्ला के साथ हुआ। आचार्य देवप्रकाश, ठाकुर अमरसिंह, तथा मौलवी सत्यदेव सहायक थे। इन विद्वानों के सामने मौ० की ऐसी गत वनी, कि उसने आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करने से तौबा करली।

(२) 'वैदिक राज वाले' भागे—श्री के. एम. मुन्शी के भारती भवन वम्बई ने 'वैदिक राज' नामकी एक पुस्तक का प्रणयन-प्रकाशन-प्रसारण किया। उसमें लिखा—'कि प्राचीन आर्य विवाहोत्सवों पर आगन्तुक अतिथियों का सत्कार उस समय पर वध की हुई गौ के मांस से किया करते थे। इस पर उन्हें शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया गया। लेखक ने श्री आचार्य जगदीश चन्द्र श्री पं० भगवद्दत्त और श्री ठाकुर अमरसिंह के नाम लिखकर ललकारा तो वे टाल गये और मैदान हमारे हाथ रहा।

(३) ईसाइयों के कुख्यात प्रचारक पादरी अब्दुलहक ने शेखी बघारते हुए आर्यसमाज को शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया। आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर ने इसे स्वीकार कर लिया। नियम आदि तय होने के पश्चात् यह महान् शास्त्रार्थ-संग्राम १३ दिसम्बर, १९५४ से २१ दिसम्बर १९५४ तक निरन्तर ८ दिन प्रतिदिन प्रातः ८½ बजे से १२ बजे तक आर्यसमाज लक्ष्मणसर, अमृतसर में लिखित रूप में और सायं ५ बजे से ८ बजे तक डी. ए. वी. हाई स्कूल के

विशाल प्राङ्गण में मौखिक रूप से होता रहा। ईसाइयों की ओर से पादरी अब्दुलहक और आर्यसमाज के प्रवक्ता युक्ति विशारद, मधुर भाषी श्री पं० रामचन्द्र देहलवी थे। पादरी के साथ आर्च डीन श्री बरकतुल्ला और महेन्द्र सिंह थे। और पं० रामचन्द्र के सहायक पं० शान्ति स्वरूप तथा श्री ठा० अमरसिंह थे। श्री ठा० जी का तो पादरी अब्दुल हक पर इतना आतंक था कि उन्हें देखते ही उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया—'मैं इनके साथ कदापि शास्त्रार्थ नहीं करूँगा पं० रामचन्द्र जी से उनकी शिकायत थी कि पं० अमरसिंह जी से सहायता लेते हैं। इन शास्त्रार्थों में ईसाइयों की ओर से सभा प्रधान पादरी बरकतुल्ला थे और आर्य समाज की ओर से लेखक, इन शास्त्रार्थों में उपस्थिति ८-१० हजार तक पहुंच गई। १९ दिसम्बर को रविवार के दिन शास्त्रार्थ बन्द रहा। शास्त्रार्थ स्थल पर तीनों आर्य विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान हुए जिनमें ईसाइयों का भारत में इतिहास, इनके देश विरोधी षड्यन्त्र, बाईबिल की शिक्षा और सिद्धान्त आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। प्रभाव यह हुआ कि व्याख्यान के मध्य में कई ईसाई युवकों की प्रार्थना पर उन्हें शुद्धिका अमृत पिलाया गया और दूसरा परिणाम यह हुआ कि पादरी अब्दुलहक की उछल-कूद सदा के लिये बन्द हो गई और उसने आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करने से कानों को हाथ लगा लिये।

(४) **कुम्भ पर विजय**—हर बारह वर्ष के बाद हरिद्वार में कुम्भ का भारी मेला हुआ करता है। महर्षि दयानन्द भी १८५५ और १८६७ के कुम्भों पर पधारे थे। यहाँ लाखों यात्री एकत्रित हो जाते हैं। सन्तों-महन्तों, मठाधीशों, साम्प्रदायिक महात्माओं की 'शाहियां' (जलूस) निकलती हैं, प्रचार कैम्प लगते हैं। १९७४ के कुम्भ पर लेखक स्वयं उपस्थित था। (अपनी होश में १९१५ से आने वाले छः कुम्भों और दो अर्द्ध कुम्भियों में सम्मिलित होने का अवसर उसे मिल चुका है)। उन दिनों श्री ठाकुर अमर सिंह, जो संन्यास की दीक्षा लेकर महात्मा अमरस्वामी परिव्राजक बन चुके थे, ने भी मेले में प्रचार कैम्प लगाया। पौराणिकों के कैम्प के ठीक सामने अपने कैम्प में प्रतिदिन व्याख्यान देते और शास्त्रार्थ का आह्वान भी करते रहते थे, ताकि सत्यासत्य का निर्णय हो सके, परन्तु किसी को आपके सामने आने का साहस नहीं हो पाया। एक दिन उन लोगों ने हौसला किया तो सही, परन्तु अनर्गल बकझक करके और वाद-विवाद के स्थान पर वितण्डा वाद करते हुए, वापस अपने कैम्प में जा घुसे। बाद में भी श्री अमर स्वामी जी का प्रचार-कार्य निरन्तर चलता रहा।

अन्तिम निवेदन—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कुम्भ मेला हरद्वार, १८६७ ई० में सप्त सरोवर के स्थान पर पाखण्ड-खण्डिनी पताका लहरा कर (आधुनिक मोहन आश्रम के स्थल पर) वाद-विवाद, शंका समाधानों और शास्त्रार्थों की अजस्र पतित-पावनी पाप-संताप नाशिनी जो निर्मल धारा वहाई थी और उनके अनुगामी-अनुयायी श्री पं० लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पं० भोजदत्त, मास्टर आत्माराम अमृतसरी, पं० भगवद्दत्त और पं० काली चरण आदि विद्वत् शिरोमणियों ने उसे चालू रक्खा था, उसे निरन्तर बहता रहने देना चाहिये। इसी की कृपा से संसार-भर के पाखण्ड-प्रपंच पाप-संताप, अवैदिक प्रथाओं घातक रूढियों और अनर्गल प्रथाओं का कूड़ा-कचरा बहकर खारे समुद्र में विलीन हो सकता है। परन्तु हीन-हतभाग्यता कि कुछ व्यक्तियों के दुराग्रह, कई लोगों की पद-लोलुपता और अपनी अकर्मण्यता ने इसके मार्ग में अनेक प्रकार के व्यवधान उपस्थित करके इसे प्रायः वंद ही कर दिया है। इसका परिणाम यह दीखता है कि यद्यपि अपने सिद्धान्तों के बल-बूते पर विश्व भर में आर्य समाज का अनन्त विस्तार होता जा रहा है, परंतु शास्त्र चर्चा के अभाव, स्वाध्याय में अरुचि के कारण आन्तरिक क्षमता, सामाजिक संगठन, धार्मिक विश्लेषण और सत्य सिद्धान्तों पर वलिदान की भावनाऐं उतनी वलवती प्रतीत नहीं हो पा रहीं, जैसा कि अभीष्ट थीं, तथापि अभी भी वहुत कुछ हो सकता है। सौभाग्य से अभी तक पं० विहारीलाल शास्त्री, महात्मा अमरस्वामी परिव्राजक, आज भी हमारे मध्य में विद्यमान् हैं, जो हर प्रकार का व्यक्तिगत परिश्रम करके शास्त्रार्थों की परिपाटी प्रचलित रखने, विद्यार्थियों को सुरक्षित करने को मनसा, वाचा, कर्मणा कटिबद्ध हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि आर्यसमाज उनके तप-त्याग, उनकी विद्या, उनके अनुभव और वैदिक धर्म प्रेम का लाभ उठाने के लिए कोई क्रियात्मक योजना वना सके। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह महात्मा अमर स्वामी परिव्राजक और उनके अन्य साथी विद्वानों को शताधिक स्वस्थ आयु प्रदान करे ताकि वे जगती-तल पर अपनी विद्या, अपनी अकाट्य युक्तियों अपने अनन्त प्रमाण-भण्डार और दैवी उपलब्धियों के चमत्कार दिखाते रहें।

शास्त्रार्थ महारथी 'अमर स्वामी'

(कवि कस्तूरचन्द घनसार (राजस्थान)

कवित्त—

(१)

सत्य सुख ब्रह्मा नन्द, अमर अखण्ड रहे,
उसी में रमन वाले, आर्य वही स्वामी हैं।
वैदिक सुनीति-रीति-जग को बताने वाले,
ऐसे पूज्यवर नित्य-देव सुख धामी हैं।

भिन्न हैं लोकेषणा से लोगों को जगाते रहे,
स्वयम् अमर आप, नित्य निष्कामी हैं।
वही गुरुवर प्रिय, वही हैं विद्या के दाता,
कवि "घनसार" पाद जिनके नमामी हैं॥

(२)

भेद भ्रान्ति वाले कभी, समक्ष न ठहर सके,
भीष्म पितामह ऐसे, खड़े रहे युद्ध में।
शास्त्रार्थ महारथी हो, तर्क मति विचक्षण,
बोलते जो भग जाते, वेदों के विरुद्ध में॥

हुए हैं हतास कई, आये जो शास्त्रार्थ हेतु,
होश खता किये होते, विज्ञ बड़े बुद्ध में।
मेधावी 'अमर' स्वामी वेदों का प्रचार किया,
कवि 'घनसार' भूले, लाये पथ शुद्ध में॥

(३)

अरनियाँ की भूमि आज, हुई है आलोकमय,
अमर स्वामी जी आज गौरव हमारे हैं।
आप हैं कृपा के सिन्धु, ज्ञान के सुनिकेतन,
बाबा दयानन्द के सैनिक रखवारे हैं।।

वीतराग, अनुराग रहा वेद प्रचार में,
समदृष्टि ले के जग मानव निहारें हैं।
कवि "घनसार" प्रिय ललित कविता ले के,
सुयश-सुगान करे, चरण सहारे हैं।।

सुख का कारण होम

आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

पूज्य श्री अमर स्वामी जी महाराज शास्त्रार्थ के केसरी ही हैं

(लेखक श्री मथुरादास जी वानप्रस्थ आर्योपदेशक अमृतसर)

मैं श्री अमर स्वामी जी महाराज को लगभग ५० वर्ष से जानता हूं उनकी योग्यता, विद्वत्ता तथा शास्त्रार्थ शैली अद्भुत ही है।

मैंने अपने नगर वद्दोमल्ली जिला स्यालकोट पंजाव (जो अब पाकिस्तान में है) में अनेकानेक शास्त्रार्थ कराये। वद्दोमल्ली छोटा सा नगर था पर था अद्भुत उस नगर में आर्यसमाज तो था ही— सनातन धर्म सभा, क्रिश्चियन एसोशियेशन, सिक्खों की सिंह सभा, मुसलमानों की जमाअत अहलेहदीस, अहमदियों की दो पार्टियां कादियानी पार्टी और लाहोरी पार्टी इस प्रकार सात संस्थायें उस छोटे से नगर में थीं और सबके वार्षिक उत्सव होते थे सिक्खों की सिंह सभा को छोड़कर अन्य पांचों के साथ आर्यसमाज के शास्त्रार्थ और मुवाहिसे होते थे। श्री अमर स्वामी जी महाराज का नाम तब श्री ठाकुर अमर सिंह जी आर्यपथिक था। पांचों सम्प्रदायों के उत्सवों के समय श्री ठा० अमर सिंह जी आर्यपथिक को आना और सबके साथ भिड़ना होता था।

सनातन धर्मियों के साथ एक बार आठ दिन के लिये शास्त्रार्थों का निश्चय हुआ, नियम यह था कि—एक दिन आर्य समाज की ओर से पौराणिकों पर प्रश्न हुआ करेंगे और एक दिन पौराणिकों की ओर से आर्य समाज पर प्रश्न हुआ करेंगे और आर्य समाज की ओर से उत्तर। यह क्रम इसी प्रकार आठ दिन तक चलना निश्चय हुआ।

नियमपत्रों पर एक ईसाई और एक मुसलमान के साक्षी रूप में हस्ताक्षर हुए। आर्यसमाज की ओर से शास्त्रार्थ के लिये श्री ठाकुर जी कई दिन पहिले मनो पुस्तकें लेकर आ गये थे। पौराणिकों ने शास्त्रार्थ के लिये पं० माधवाचार्य जी को बुलाया था, उनके आने और शास्त्रार्थ के दिन से एक दिन पहिले पौराणिक पं० श्रीकृष्ण शास्त्री, दो अन्य शास्त्रियों को साथ लेकर आर्यसमाज मन्दिर में शास्त्रार्थ करने के लिये आये उनके पीछे ही तत्काल सनातन धर्म

सभा बद्दोमल्ली के सारे अधिकारी इकट्ठे होकर आ गये और उन तीनों पण्डितों को रोब के साथ उठाले गये और कहते गये कि आप हम लोगों से बिना पूछे शास्त्रार्थ करने को क्यों आये ? शास्त्रार्थ पं० माधवाचार्य जी ही करेंगे। वे सब लोग इन तीनों पण्डितों को अकेले ठाकुर जी के साथ भिड़ने योग्य नहीं मानते थे ऐसा प्रभाव विरोधियों पर भी उनका था।

श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री के आने पर शास्त्रार्थ हुआ, श्री ठाकुर अमर सिंह जी ने पुराणों पर बड़े विकट प्रश्न किये (वह शास्त्रार्थ भी छपेगा वहां उनको पढ़ने का आनन्द आवेगा) श्री पं० माधवाचार्य जी के उत्तरों को सुनकर स्पष्ट पता लगता था कि श्री पं० जी ने न इन प्रश्नों को पहिले सुना है और न स्थलों को कभी देखा है पुराणों के जिन स्थलों से वह प्रश्न श्री ठाकुर जी ने किये थे। सबको पता लगता था कि श्री ठाकुर जी का पुराण सम्बन्धी ज्ञान भी अनुपम है।

एक स्टेशन मास्टर कट्टर सनातन धर्मी थे उन्होंने उसी दिन के शास्त्रार्थ को सुनकर कह दिया कि मैं तो आज से सनातनधर्मी नहीं रहा।

दूसरे दिन श्री पं० माधवाचार्य जी ने आर्यसमाज पर प्रश्न किये उन प्रश्नों में सारा बल उन्होंने नियोग पर ही लगाया। श्री ठाकुर अमरसिंह जी आर्य पथिक ने नियोग के पक्ष में पौराणिक साहित्य से प्रमाणों की झड़ी लगादी और सिद्ध कर दिया कि पौराणिकों के बड़े-बड़े ऋषि और महर्षि नियोग करते रहे हैं।

श्रोतालोग और स्वयं पं० माधवाचार्य जी भी श्री ठाकुर जी के अगाध ज्ञान को देखकर चकित रह गये।

तीसरे दिन आर्य समाज की ओर से श्री ठाकुर जी द्वारा पौराणिकों पर पुराणों के विषय में ही प्रश्न होने थे।

शास्त्रार्थ का समय हो गया दोनों ओर के मंचों पर दोनों ओर के पण्डित वैठे हुए, हजारों लोग शास्त्रार्थ सुनने को वैठे हुए थे।

इन्सपेक्टर पुलिस और कई सिपाही हथकड़ी लिये आ पहुंचे और उन्होंने दोनों मंचों के बीच में खड़े होकर स्यालकोट के डिप्टी कमिश्नर (कलक्टर साहिब) और सुपरिण्टेण्डेण्ट के हुक्म पढ़कर सुनाये उनमें सुनाया कि— सनातन धर्म सभा बद्दोमल्ली के मन्त्री आदि ने रिपोर्ट की है कि—हम शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते हैं और आर्य समाज हमारी इच्छा के विरुद्ध शास्त्रार्थ करना चाहता है यह शास्त्रार्थ हुक्मन् बन्द किया जाये।

पुलिस इन्सपेक्टर ने कहा—मैं हुक्म देता हूं कि— शास्त्रार्थ फौरन रोक दिया जाये और दोनों पक्ष यहां से उठकर फौरन इस स्थान को खाली करदें नहीं तो मैं दोनों पक्षों के मुख्य शास्त्रार्थ कर्त्ताओं को गिरफ्तार कर लूंगा।

शास्त्रार्थ बन्द हो गया आर्यसमाज और श्री ठाकुर जी की वड़ी भारी विजय हुई।

एक वार अहमदियों का सालाना जलसा था मुवाहिसा भी होना था श्री ठाकुर अमरसिंह जी आर्यपथिक (वर्त्तमान श्री अमर स्वामी जी महाराज) दो मास से बीमार थे। हम लोग लाहौर में उनके पास गये उनकी दशा देखी अहमदियों के जलसे पर आने की वात की और कमजोरी देखकर चले आये। पीछे मुबाहिसे की सूचना श्री ठाकुर जी को दी तो उसी कमजोरी में दो मन पुस्तके साथ लेकर वट्टोमल्ली पहुंच गये।

श्री ठाकुर जी के आने का पता लगते ही अहमदी लोग घबरा उठे और डेपूटेशन के रूप में आर्यसमाज के प्रधान श्री जीवन दास जी के पास आये और उनसे कहा कि— हमारे और आपके ताल्लुकात अच्छे हैं खण्डन आदि होने से ताल्लुकात बिगड़ने का डर है इसलिये श्री ठाकुर जी को कह दीजिये कि— खण्डन और मुबाहिसा न करें।

श्री प्रधान जी ने यह वात श्री ठाकुर जी को कही और चाहा कि— खण्डन और मुबाहिसा न हो। उस समय श्री ठाकुर जी चुप रहे रात को भारी भीड़ में उनका व्याख्यान हुआ। और गरजते हुए कहा कि—ताल्लुकात बिगड़ने का डर हमारे गुरु महर्षि दयानन्द जी को नहीं था। ताल्लुकात विगड़ने के डर से हम आर्यसमाज का प्रचार बन्द नहीं कर सकते हैं।

सच्ची दोस्ती यही है कि—अपने दोस्त की बुराई दोस्त से जरूर कहे ताल्लुकात विगड़ने के डर से दोस्त का दोष उसको नहीं बताना दोस्ती नहीं दुश्मनी ही है।

फिर गरज कर कहा मैं बीमारी से उठकर इस कमजोरी में मुबाहिसा करने को ही आया हूं मुबाहिसा करके ही जाऊंगा। बड़ी तालियां बजी और वैदिक धर्म की जय बोली गई।

दूसरे दिन मुबाहिसा हुआ और आर्यसमाज की भारी विजय हुई।

एक मुबाहिसा श्री ठाकुर जी का मौलाना मौलवी सनाउल्ला साहिब अमृतसरी के साथ रूह और माद्दे की कदामत (जीव और प्रकृति के अनादित्व) पर हुआ।

उस मुबाहिसे का इतना बड़ा प्रभाव हुआ कि अहमदियों ने भी श्री ठाकुर जी की तारीफ की और बधाई दी।

सिंह सभा के वार्षिक उत्सव पर निर्मला श्री इन्द्रसिंह जी आये उनको अपने पाण्डित्य पर बड़ा अभिमान था उन्होंने कहा कि—वेदों में गौ हत्या का विधान है, सनातन धर्मी कई पण्डित बैठे सुनते रहे श्री ठाकुर अमर सिंह जी आये हुए थे श्री ठाकुर जी ने आर्यसमाज की ओर से ढिंढोरा करवाया कि—श्री इन्द्रसिंह जी के साथ मैं शास्त्रार्थ करूंगा वह मेरे सामने वेदों से गौ हत्या सिद्ध करें। ढिंढोरा सुनते ही श्री इन्द्रसिंह जी चुपचाप विदा हो गये अर्थात् विदा कर दिए गये।

ईसाई पादरियों श्री सुलतान अहमद पाल और पादरी जगन्नाथ जी के साथ श्री ठाकुर जी के मुबाहिसे हुए। कमाल की वाक्फियत का पता लगा।

एक बार लगातार २१ दिन तक सिद्धान्तों पर व्याख्यान देते रहे असंख्य प्रमाण मौखिक ही बोले एक प्रमाण के लिए भी कोई पुस्तक नहीं उठाई।

श्री ठाकुर अमर सिंह जी आर्य पथिक अब स्वामी श्री अमर स्वामी जी महाराज संन्यासी हैं। उनकी विद्वत्ता तर्क शैली शास्त्रार्थ शैली, उनका अगाध ज्ञान और स्मरण शक्ति सभी गुण अद्भुत और बहुत प्रशंसा के योग्य हैं मेरे और बद्दोमल्ली निवासियों के हृदय में उनके लिए भारी श्रद्धा है बहुत लिखने योग्य बातों में से मैंने थोड़ी लिखी हैं। मैं उनके लिए श्रद्धा के फूल अर्पण करता हूं।

—❀—

चतुर्मुखी ब्रह्मा

(श्री दौलतराम शास्त्री अमृतसर)

लगभग साठ वर्षों से मैं श्री ठाकुर अमर स्वामी से परिचित तथा घना मित्र रहा हूं। हम दोनों को परस्पर की योग्यता तथा स्वभाव आदि का ज्ञान है। दोनों में आकर्षण दौलतपुर चलेट के उत्सव से हुआ। ठाकुर जी ने मेरा संगीत-मय प्रचार देखा मैंने उनका निर्भीक व्याख्यान सुना। वह प्रदेश राजपूताना से वीरता में न्यून नहीं हैं। सन् १९०८ वा ९ में पृथ्वीपुर में आर्यसमाज होश्यार-पुर ने अपने कार्यकर्ताओं को शुद्धि के अर्थ भेजा। लगभग २०० परिवार शुद्ध अथवा समाज में प्रविष्ट हुए। वे सब कबीर पंथी भाई थे। थोड़े दिनों के अनंतर पं० हरनंद को पृथ्वी चौक में प्रचार करते को ब्राह्मण तथा राजपूत चिड़चिड़ों ने मार के फैंक दिया। दैवयोग से पं० हरनन्द की कुछ देर बाद आँख खुली-कुछ भद्र दुकानदारों ने उन पर दया करके उनका उपचार किया। पृथ्वीपुर से होश्यारपुर २५ मील की दूरी पर है। कुछ सेवक रात ही रात होश्यारपुर पहुंचे। डा० श्री भोलासिंह व श्री ला० देवीचन्द्र जी M.A. आदि पैंदल ही चल कर वहां पहुंचे। समयानुकूल समाज के सदस्यों के धीरज ने उस प्रान्त के विरोधियों के मन में परिवर्तन कर दिया। उस प्रदेश के सैनिकों में कैप्टन संध्यादास तथा एक अन्य रिटायर्ड सैनिक सूबेदार लायक सिंह के मन में पक्का निर्णय कर दिया। स्कूल खुल गया पं० विश्वा-मित्र शास्त्री रिटायर्ड संस्कृताध्यापक ने स्कूल में राजपूत छात्रों की खूब भर्ती करवाई ठा० बलदेव सिंह सुपुत्र सूबे० लायक सिंह छात्र होश्यारपुर स्कूल ने शुद्धि आंदोलन में बहुत काम किया।

ठा० अमरसिंह जी दौलतपुर में उत्सव पर आये थे। इन्होंने सब इलाका के राजपूतों में तथा मेरे सम्बन्धियों ने उधर की जनता का सब विरोध नष्ट प्राय कर दिया। अब तो वह स्कूल एक कॉलेज बन चुका है। उस इलाके के राजपूतों में जागृति का मूल दृढ़ करने वाले अमरसिंह को मैं कुंवर स्वामी कहता हूं। ये आयु की दृष्टि से मुझ से लगभग १० वर्ष छोटे हैं पर गुणा

सर्वत्र पूज्यन्ते —अतः "भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति" मुझ से बहुत बड़े हैं। पूज्य और नमस्य हैं।

ढ़ोलवाहा स्कूल

ढोलवाहा स्कूल में जब ठाकुर जी गये तो उन्हें (राजपूत भाइयों,) को अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि हमारे भाई संस्कृत के महा विद्वान् साथ फारसी अच्छी उर्दू के भी तत्वज्ञ हैं। इनके जाने से वहां तीर्थ सा माना जाता था। उक्त दोनों उत्सवों पर इनका स्वभाव, व्यवहार पांडित्य पूर्ण है। मैं यद्यपि उनसे १० वर्ष वड़ा हूं इनको सच्चे हृदय से भाई मान लिया।

संगीत कलाविद्

जब ठाकुरजी को पता लगा कि मैंने पं० महादेव कत्थक से शास्त्रीय गायन सीखा तो वे भी उनके शिष्य बन गये। तब से हमारा भाईचारा और भी प्रगाढ़ हो गया। मंडी के प्रचार से लौटते हुए मंडी से १५ मीलों पर हमारी कार के दोनों पहियों के टायर फट गये। मंडी से गोमा नमक की खान १९ मील और गोमासे बैंजनाथ ३७ मील हम न इधर के रहे न उधर के। वहां एक दुकान थी उस पर ही सारी रात विश्राम किया। कुछ सवारियां भी हमारे साथ थी। क्रम-क्रम से हम दोनों ने वहां सारी रात गायन द्वारा प्रचार करते-करते बिता दी। भाई साहब न केवल गायनमें प्रवीण हैं अपितु ढोलक बजाने में भी निपुण हैं। गांधर्व वेद पर व्याख्यान करने में भी वाग्मी हैं

समर स्वामी

ठाकुर जी को शास्त्रार्थ महारथी तो आर्य जनता कहती है मैंने उनका उपनाम समर स्वामी रक्खा है उनके एक दो शास्त्रार्थ देख सुन कर हमारा विचार पक्का हो गया कि वे ठीक समर स्वामी ही हैं। पौराणिक नास्तिक-बौद्ध-जैन बाईबिल वेदान्तादि सब विषयों में धर्म चर्चा खूब निभाते हैं। कुरान के भी पंण्डित हैं।

समर स्वामी के शास्त्रार्थ

आपके शास्त्रार्थों में यह बड़ा गुण होता है— 'गौतमीय न्याय' प्रश्न का उत्तर देते-देते वादी पर ही प्रश्नों की बौछार कर देना जिससे उसका मस्तिष्क विषयान्तरों में ही उलझा रहे। दूसरा यह कि पर प्रसिद्धया

परोबोधनीयः" कदाजिरा सिद्धान्त को मानता है उसी के मन्तव्य से निग्रह स्थापना में फँस जाए। तीसरा स्पष्ट तथा निर्भीक होकर कहना सबसे बड़ा यह गुण था कि सैंकड़ों प्रमाणों के स्थान श्लोक पंक्तियों तक को कंठाग्र किए होना। मुझे जब किसी श्लोक व वेद मंत्र के विषय में पूछना होता इनसे उसी समय प्रश्नोत्तर हल हो जाता था।

सेवायें

नियुक्ति से लेकर सेवा मुक्ति तक केवल आर्य प्रादेशिक सभा में ही कार्य करने वालों में केवल महता रामचन्द्र शास्त्री तथा श्री अमर स्वामी के सिवाय किसी अन्य विद्वान् के भाग में नहीं आया। यह अपना अनुभव है कि श्री अमर स्वामी "दूध पियू मजनूं नहीं" प्रमाणित हुए प्रयोग रूप से उनमें आर्यत्व है। एक दो निर्धन अनाथों के पूर्ण सहायता देकर अच्छे स्थानों पर लगवाना और निष्काम भाव से संरक्षकता का प्रमाण देना है।

प्रायः सर्वत्र सब विभागों-धर्मालयों-यहां तक कि मण्डलेश्वर साधुओं में भी स्पर्धा पाई जाती है—

खल-मीन-सज्जनानां तृण-जल-संतोष विहिवष्टत्ती नाम्-दुर्जन-धीवर-पिशुना निष्कारण वैरिणो जगति ॥ नीति

अतः

स्वामी जी की तो भद्र प्रतिभा से निर्बल प्रतियोगी चिढ़ते थे। वे हमारे पास बैठते थे तो विरोधी हताश हो जाते थे।

भाई साहब !

अमरजी शास्त्रार्थी महोपदेशक संगीतज्ञ वादक स्वयं सेवक होने से पवित्र पावन

संस्कृत फारसी अरबी तथा पंजाबी के अभिज्ञ हैं, अतः हम इन्हें चतुंमुख भी कहते हैं। इनकी उदारता से लाभ उठाना चाहिये। ये सिंह भी हैं और ठाकुर भी, रक्षक भी, पूज्य भी।

अमर स्वामी

जब इन्होंने चतुर्थ आश्रम में पग रक्खा और वे स्वामी कहलाये जाने लगे। उन्होंने व्रत किया कि अब आलोचना करनी चाहिये। ज्ञान वृद्धि भी हो और हम ज्ञान से शनैः शनैः अपने आपको समझना चाहिये। उसे स्वामी शब्द को व्याकरण शास्त्री तीन अर्थों में ग्रहण करते हैं।

यथा

स्वं भय अपने को जानने वाला। जैसे

न बिभेति यदा चायं यदा चास्मात्र बिभ्यति ब्रह्मसंपद्यते तदा।

जब यह जीवन किसी से नहीं डरता और न ही इससे कोई डरता। सुख दुःखादि से रहित होकर ब्रह्म से मिल जाता है। अर्थात् मुक्त दशा में तद्रूप हो जाता है। भिन्नता रहते भी आनन्द स्वरूप हो जाता है। यथा—

सत्यपि भेदापग मे नाथ ! तवाहं न मामकी नस्त्वम्—

सामुद्रो तरंग ! क्कचन समुद्रो न तारगः।

अर्थ

हे प्रभो ! तेरे साथ पूर्ण रूप समानता सी हो जाने पर भी मैं तेरा हूं न कि तू मेरा। क्योंकि सब कोई समुद्र की लहर तो कहता है पर लहर को समुद्र नहीं कहता।

शिशिर वसन्तौ पुनरायात

कोऽहं कस्त्वं कुत आयात। कस्ते वन्धुः कस्ते तातः।

तदि दे चिन्तय सत्यं भ्रातः

भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढ़ मतरे॥

स्वं स्वकीयं अमा अपने प्यारे को प्राप्त करने वाला।

सख्ये ते इन्द्र वाजिनो या भेम शव शस्पते।

हे प्रिय तेरे साथ मित्र भावना हो जाय हमें किसी का डर नहीं।

सु शोभन प्रकारेण अभी ज्ञाता। भली भाति ज्ञाता।

"द्वासपर्णा सयुजा सखायः। इत्यादि मंत्र में ईश्वर जीव प्रकृति की परस्पर साम्यता कहां-कहां है, यह ज्ञान ठीक-ठीक जान लेने वाला।

स पर्य्यं गाच्छुक्रमकाय—इत्यादि में प्रभु का यथार्थ रूप तथा शक्ति व नियामक भली प्रकार जान लेना।

इत्यादि सब कुछ का जानने वाले को स्वामी कहते हैं।

उपसंहार

मुझे पूर्ण हर्ष है कि स्वामी जी ने ये सब प्रकार की सामग्री अपने वाचनालय में वर्तमान रक्खी है। आपने चतुर्थाश्रमी होकर अनेकानेक ग्रंथ रचकर उसमें संगृहीत रक्खे है। ऐसे नितान्त परमज्ञानी स्वामी के अभिनन्दन से दूरास्थित भाइयों को भी लाभ प्राप्त हो मेरी शुभकामना है। यह मेरी ओर से श्री स्वामी जी का अभिनन्दन है।
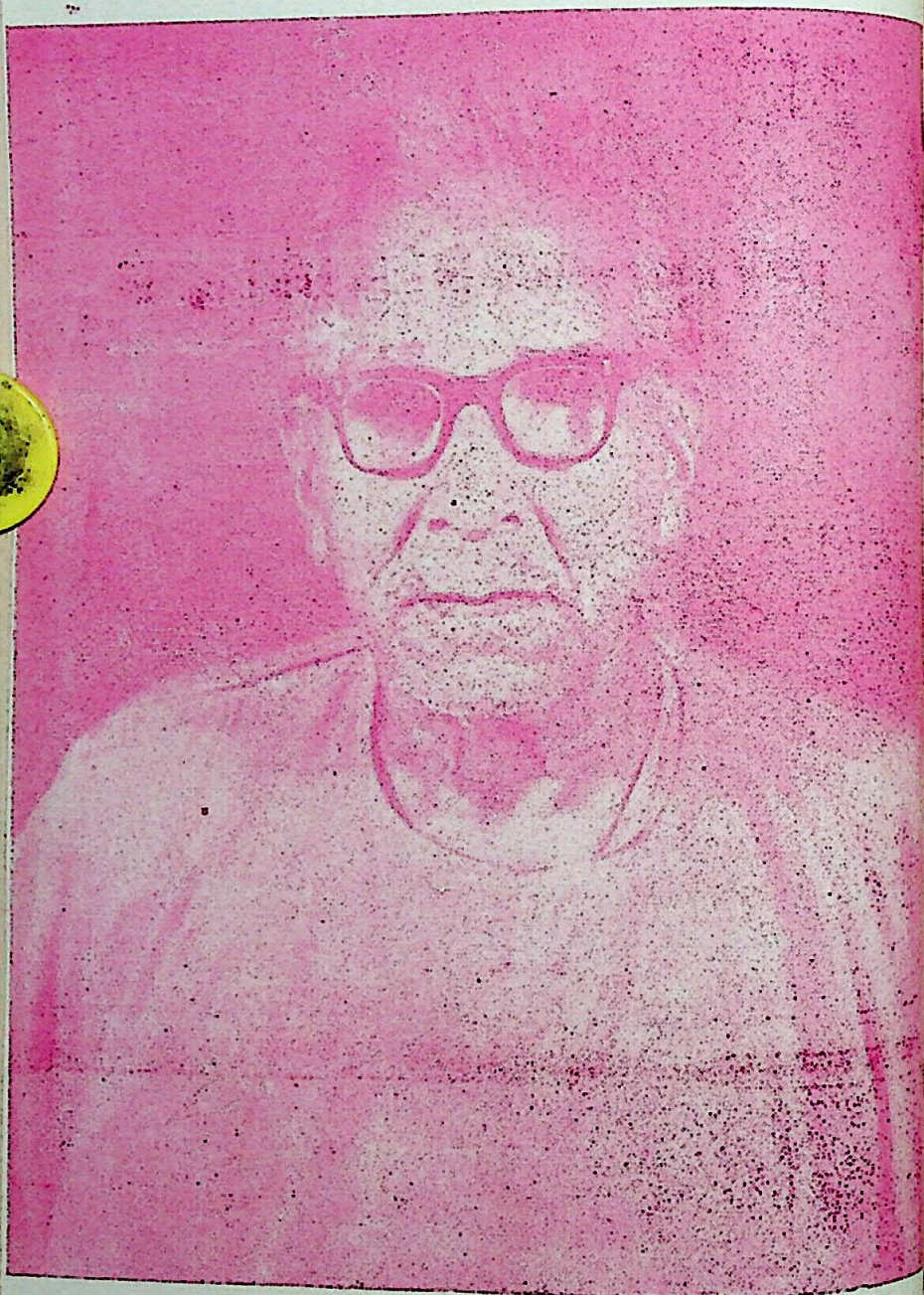
श्री महात्मा अमर स्वामी जी परिव्राजक साधना के बाद

महात्मा अमर स्वामी सरस्वती जी मेरे संस्मरण

(लेखक—प्रिंसिपल कृष्ण चन्द्र एम० ए० सम्पादक 'आर्य जगत्', नई दिल्ली)

मैं विद्यार्थी अवस्था से ही श्री ठाकुर अमर सिंह जी को जानता था परन्तु उनके दर्शन नहीं किए थे। अक्टूबर १९३३ में अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी मनाई गई थी। उस समारोह में 'आर्य सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन' का आयोजन किया गया था। जिसके सभापति स्वर्गीय राज्य रत्न मा० आत्मा-राम जी अमृतसरी थे। उस सम्मेलन में मैंने श्री ठाकुर अमर सिंह जी का भाषण प्रथम वार सुना था। उस भाषण में उन्होंने कहा था कि अन्य मतावल-म्बियों से शास्त्रार्थ करने में कई बार आर्य समाजी कहलाने वाले तथाकथित विद्वानों द्वारा रचित ऐसे ग्रन्थों के प्रमाण जब प्रस्तुत किए जाते हैं जो सिद्धान्त विरुद्ध होते हैं, तव आर्य समाज का पक्ष प्रस्तुत करने वाले विद्वानों को कभी-कभी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः आर्यसमाज के विद्वानों को आर्यसमाज के सिद्धान्तों की रक्षा करने में कटिबद्ध रहना चाहिए। उनके प्रथम दर्शन मैंने प्रथमवार महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध-शताब्दी समारोह में आयोजित इसी 'आर्य सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन' में किए थे।

श्री ठाकुर अमर सिंह जी का जन्म खुर्जा जिला बुलन्द शहर के निकट अरनियाँ ग्राम में हुआ। आर्य समाज के निर्भीक तथा ओजस्वी शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० भोजदत्त जी 'आर्य मुसाफिर' ने धर्मवीर पं० लेखराम जी 'आर्य मुसाफिर' की स्मृति में आगरा में 'शुद्धि सभा' तथा 'आर्य मुसाफिर मिशन' की स्थापना की और इसी मिशन के अन्तर्गत ही साप्ताहिक 'मुसाफिर' पत्र तथा 'आर्य मुसाफिर विद्यालय' भी स्थापित किया। इस विद्यालय का उद्देश्य आर्य समाज के लिए उपदेशक तैयार करना था। इसी विद्यालय में अरवी, फारसी, संस्कृत, दर्शन, उपनिषद् आदि पढ़ाए जाते थे। तुलनात्मक दृष्टिकोण से शास्त्रार्थ करने का अध्यापन भी होता था। इसी विद्यालय में श्री ठाकुर अमर सिंह जी आर्य मुसाफिर ने शिक्षा प्राप्त की। श्री साधु

महेश प्रसाद जी, मौलवी फाजिल, श्री मुरारीलाल जी शास्त्री, पं० धर्मवीर जी 'आर्य मुसाफिर पं० रामगोपाल जी आर्य मुसाफिर', कुँवर अभिलाष चन्द्र जी, पं० परमानन्द जी, पं० प्यारेलाल जी, मुन्शी वहादुर सिंह जी, पं० इन्द्र वर्मा जी, कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, पं० बिहारी लाल जी शास्त्री, काव्यतीर्थ और पं० रामचन्द्र जी शर्मा अजमेर निवासी ने भी इसी विद्यालय में अध्ययन किया था।

श्री महात्मा हंसराज जी की मर्म भेदिनी पैनी दृष्टि जब श्री ठाकुर अमर सिंह जी पर पड़ी तो उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के उपदेशक पद के लिए डा० लक्ष्मी दत्त जी से श्री ठाकुर अमर सिंह जी को मांग लिया। इस प्रकार १९१८ ई० से आप नियम पूर्वक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान के महोपदेशक के रूप में समस्त भारत में वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे।

आप प्रत्युत्पन्नमति, महान् तार्किक, बहुभाषाविज्ञ, शास्त्रार्थ समर विजेता तथा प्रतिवादी भयंकर हैं। प्रतिपक्षी के भरसक आवेश दिलाने पर भी। आप मुस्कराते हुए युक्तियों तथा प्रमाणों के बल पर उसे निरुत्तर कर देते हैं। लगभग सभी पौराणिक शास्त्रार्थ महारथियों पं० माधवाचार्य, कवि रत्न पं० अखिलानन्द शर्मा, पं० कालूराम शास्त्री आदि को आपने शास्त्रार्थ समर में पराजित किया है। मौलाना सनाउल्ला और पादरी अब्दुल हक आदि मुसलमान तथा ईसाई मुनाजिरों के साथ "आपके मारके के मुनाजिरे हुए हैं। स्वर्गीय पं० बुद्धदेव जी 'मीरपुरी' कहा करते थे कि जब शास्त्रार्थ में मेरे साथ ठाकुर अमर सिंह जी हों तो मुझ में हाथी का बल आ जाता है।"

१९६२ ई० में मैं जब लगभग एक वर्ष आर्य समाज मन्दिर खुर्जा में निवास करता रहा। तब मुझे आपके सान्निध्य का अधिक अवसर प्राप्त हुआ। आप अरनियाँ जाते हुए आर्य समाज मन्दिर खुर्जा में विश्राम करने के लिए रुक जाते थे। तो आपके पास बैठ कर आर्य समाज के पुरातन इतिहास की चर्चा करते-करते कई बार घण्टों व्यतीत हो जाते थे।

आप नए उपदेशकों को सदा प्रोत्साहित करते हैं। समस्त देश की अनेक आर्य समाजों में आपके शिष्य फैले हुए हैं। तथा वे आपकी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्राप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार करने में सतत रत हैं।

आप किसी भी व्याख्यानदाता अथवा भजनोपदेशक के व्याख्यान तथा भजनोपदेश को सुनकर उसकी प्रशंसा ही करते हैं। जब मैंने २४ अप्रैल १९७८ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र साप्ताहिक 'आर्य जगत्' के सह-सम्पादक के रूप में कार्यभार सम्भाला तो इस समाचार को सुनते ही आपने 'आर्य जगत्' में सम्पादकीय लेख प्रकाशित कराया। जिसका शीर्षक था कि:—"मैं श्री आचार्य कृष्ण चन्द्र जी शास्त्री एम० ए० (त्रय) का स्वागत करता हूं।

इस सम्पादकीय लेख में आपने मेरी भरपूर प्रशंसा करके मुझे अत्यधिक प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार आप अपने साथ कार्य करने वाले सभी उपदेशकों, लेखकों तथा भजनोपदेशकों को प्रोत्साहित करते हैं।

व्याख्यान कला विशारद होने के अतिरिक्त आप संगीत विद्या के भी आचार्य हैं। सारंगी, तवला, हारमोनियम आदि वाद्य यन्त्रों के प्रयोग पर भी आपका समानाधिकार है।

साप्ताहिक 'आर्य जगत्' के सम्पादक के रूप में आपकी लेखनी से लिखे लेख 'आर्यजगत्' की शोभा हैं। और पाठक उन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं। अभी पिछले दिनों 'पुरोहित' शीर्षकान्तर्गत उनके लेखों की आर्यसमाज के पुरोहित वर्ग में वहुत चर्चा रही है।

आप सफेद वस्त्रों में तो पहिले भी परिव्राजक थे परन्तु पश्चात् आप संन्यासाश्रम की दीक्षा लेकर महात्मा अमर स्वामी सरस्वती के रूप में आर्य समाज के संन्यासी मण्डल के भी शिरोमणि हो गए। आज जब कि आर्यसमाज में इने गिने विद्वान् संन्यासी रह गए हैं। श्री महात्मा अमर स्वामी सरस्वती जी महाराज आर्यसमाज के संन्यासी मण्डल की शोभा हैं। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि आपकी छत्र छाया अधिकाधिक समय तक बनी रहे। 'गालिब' के शब्दों में मेरी परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि:—

"आप सलामत रहें हजार वर्ष।
हर वर्ष के हों दिन पचास हजार।"

सोना नहीं खरीदा पुस्तकें खरीदी हैं

(ठा० विक्रम सिंह एम० ए० दिल्ली)

सन् १९६३ में मैं आर्योपदेशक विद्यालय देहरादून में पढ़ने चला गया था तब तक मैं आर्य समाज के कार्य कलाप तथा उपदेशक वर्ग से पूरी तरह परिचित न था और समझता था कि बस बाजा ढोलक लेकर स्वामी भीष्म जी महाराज की तरह गांव-गांव घूम कर भजन कहने का नाम ही आर्यसमाज है। कालिज समय में ही मैं कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखता था और मैंने यह भी निश्चय किया कि देश एवं समाज सुधार के लिए सर्व प्रथम व्यक्ति को अच्छा वक्ता होना चाहिए और इसी उद्देश्य को लेकर मैं उपदेशक विद्यालय में प्रविष्ट हो गया था। विद्यालय में हमारे एक साथी शंकर सिंह नाम से पढ़ते थे उनका उच्चारण और प्रतिभा विलक्षण थी तथा आर्य समाज के क्षेत्र से भली भांति परिचित थे। वे ही हमें आर्य विद्वानों के बारे में सुनाया करते थे तथा ठाकुर अमर सिंह जी शास्त्रार्थ महारथी की विशेष प्रशंसा किया करते थे उस चर्चा को सुनकर ही मेरे मन में ठाकुर अमरसिंह जी के प्रति विशेष श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी और मैं उनके दर्शन करने तथा सानिध्य में रहने का अवसर ढूंढने लगा। उन्हीं दिनों दीपावली के दिन हम सब विद्यार्थी देहरादून से पैदल ही सहस्रधारा नामक तीर्थ पर पहुंचे जहां झरनों के पवित्र जल में स्नान करने का अपना ही आनन्द है और शाम तक वापिस लौट आने के लिए आचार्य जी से कह गये। सहस्रधारा पहुंच कर मन में आया कि अब मंसूरी भी पैदल ही चलें मेरे ब्रह्मचारी साथियों ने मेरा समर्थन किया और हम सब मंसूरी पहुंच गये वहां आर्यसमाज में ठहरे और अगले दिन शाम को विद्यालय वापिस पहुंचे तो आचार्य श्री जगदीश चन्द्र जी दर्शनाचार्य एवं अधिष्ठाता जी हरिचन्द्र जी बत्रा ने निश्चय किया कि विक्रम सिंह ने अनुशासन भंग किया अतः विद्यालय से निष्कासित किया जाए महात्मा आनन्द स्वामी जी भी चाहते थे कि विद्यार्थी ज्यादा हो गये दो विद्यार्थी कम किए जाएँ अधिष्ठाता को अच्छा अवसर मिला मेरे साथ ही एक और विद्यार्थी विद्याव्रत को भी निष्कासित कर दिया गया।

मैं उदास मन से विद्यालय छोड़ विद्याव्रत के साथ उसके गांव आ गया तथा उसने अपने पिता से किराया लेकर मुझे देकर हापुड़ उपदेशक विद्यालय के लिए बिदा किया। मैं २० दिसम्बर सन् १९६३ को ठाकुर अमर सिंह जी के चरणों में उपस्थित हो गया वे उपदेशक विद्यालय आर्य समाज हापुड़ में आचार्य थे। आर्य संस्थाओं एवं व्यक्तियों से रुष्ट-खिन्न हुआ अन्तिम अवसर की तलाश में वहां आया था। पूज्य ठाकुर जी ने जो सहृदयता दिखाई उसे जीवन भर न भूल सकूंगा अपने चरणों में स्थान देकर अमृत वर्षा विद्या द्वारा ज्ञान चक्षु खोल दिए और सारे ही विद्यालय में तथा उनके शिष्य वर्ग में मैं ही एक ऐसा विद्यार्थी था जो वक्तृत्व कला में विशेष योग्यता रखता था पूज्य पं० रामचन्द्र देहलवी भी हमें एक घण्टा पढ़ाते थे तथा विशेष स्नेह रखते थे। ठाकुर अमर सिंह जी के साथ विद्यार्थी अवस्था में भी कई जगह जाने का सुअवसर मिला अकसर व्याख्यान में ठाकुर साहब कहा करते थे कि मैंने जीवन में कई पुत्र और पुत्रियों के विवाह किए किन्तु आज तक सोने के भाव का कुछ पता न चला क्योंकि जीवन में कभी एक तोला सोना नहीं खरीदा हमेशा ही पुस्तकें खरीदी हैं।

आज उनके पुस्तकालय में कई हजार अनमोल तथा दुर्लभ ग्रन्थ उपस्थित हैं और पुस्तकों के बीच पूज्य अमर स्वामी जी की जो छवि बनती है वह दर्शनीय है।

मूर्ति क्या करेगी

जब सम्वत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर, मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहां गई थी? परन्तु बाघरी लोगों ने जितनी वीरता की ओर लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति मक्खी की एक टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और वे भागते फिरते।

—स० प्र० एकादश समु०

पूज्यपाद अमर स्वामी परिव्राजक जी के प्रति हृदयोद्गार

(लेखक : स्वामी स्वरूपानंद संन्यासी (पूर्व त्रिलोक चंद राघव)

—: कवित :—

स्वामी जी ! आपके अभिनंदन का, सुन्दर समाचार सुनकर।
साहस कर बैठा ये मन ! कविता लिखने को हरषाकर ।।
हो रहा आपका अभिनंदन सुन करके हरष अपार हुवा।
दिल का मुरझाया पुष्प खिला, कविता का रंग सवार हुआ ।।

हे शुचि वैदिक धर्मानुरक्त, हे दयानंद ऋषिराज भक्त।
हे सुवाग्मी लेखन ललाम, हे आर्य जाति सेवक सशक्त ।।
हे शास्त्रार्थ महारथी, आपने वेदों की महिमा गाई।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जन-जन प्रिय विजय सदा पाई ।।

संगीत कला के माध्यम से वैदिक सुधर्म प्रचार किये।
भजनोपदेशक और उपदेशक हैं कितने ही तैयार किये ।।
आर्य जगत पत्रिका का, संपादन कार्य संभाला है।
जन गण मन क्लेश मिटाने को जीवन सांचे में ढाला है ।।

संन्यासी वानप्रस्थ मंडल का प्रधान पद स्वीकार लिया।
अनवरत कार्यरत लग्न शील सेवाव्रत तुमने धार लिया ।।
उर में कटुभाव न किंचित है, पटु पंडित पूज्य प्रतिष्ठित हो।
हे आर्य जनों के प्रिय स्वामी कौन न तुमसे परिचित हो ।।

सब भांति सुयोग्य सुशिक्षित हो ऋषि दयानंद के अनुयाई।
विद्वानों में सम्मानित हो जन-जन को आज खुशी छाई ।।
शुचि वैदिक धर्म प्रचारार्थ सर्वत्र आप प्रस्थान करें।
संतप्त लोक कल्याण हेतु प्रिय आर्य समाजोत्थान करें ।।

हे गुरुवर आप पर अनुकम्पा सच्चिदानंद भगवान करें।
यह पावन घडी आज आई हम मिलकर के सन्मान करें ।।
निरखें जीवन के शत वसंत, दिक् दिगन्त होवे यश उज्जवल।
अभिलाषा स्वरूपानंद की है ये मानव जीवन करें सफल ।।

शास्त्रार्थ केसरी अमर स्वामी जी महाराज
सन् १६७५ ई०

सैद्धान्तिक लेख-खंड (४)

त्रैतवाद

(स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल घरौंडा करनाल)

पाठक वृन्द

श्री स्वामी शंकराचार्य जी ने त्रैतवाद के विरुद्ध अद्वैतवाद खड़ा किया है। यद्यपि शास्त्रों में अद्वैतवाद का नाम भी नहीं है। परन्तु सर्वोपनिषद, वेदान्त, दर्शन और गीता को अखाड़ा बनाया हुआ है। ईशोपनिषद् के आरम्भ में ही आत्मा का अनेकत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व वाद जो कि सर्वथा वैदिक है उसका खण्डन करके आत्मा का एकत्व, सर्वंगतत्व, अकर्तृत्व स्वरूप माना है। जो कि सर्वथा वेद विरुद्ध है। यद्यपि ईशोपनिषद् के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र में ही ईश्वर जीव प्रकृति का स्पष्ट वर्णन है। ईशावास्यमिद सर्वंयत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृद्धः कस्य स्विद्धनम् (य.४० मं० १)॥ इस प्राथमिक मन्त्र में ही श्री शंकराचार्य की प्रतिज्ञा भंग हो जाती है। तथा त्रैतवाद का स्पष्ट विधान है यथा (इदं सर्वंयत् किञ्चित् जगत्यां जगत्) यह मन्त्र भाग प्रकृति कार्य जगत् का विधान करता है। और (ईशा वास्यं) यह मन्त्र भाग ईश्वर का वर्णन करता है एवं (तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्) यह भाग जीवात्मा के कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व का विधान करता है अर्थात् यह सारा जगत् जोकि ईश्वराच्छादित है। हे जीव तू इस जगत् का त्याग पूर्वक उपभोग और किसी दूसरे जीव के धन को अधर्म से लेना तो रहा दूर उसकी इच्छा भी न कर यह मन्त्र का सामान्य अर्थ है। अतएव इस प्रथम मंत्र से ही शंकराचार्य की आत्मा का एकत्व अकर्तृत्व, अभोक्तृत्व का स्पष्ट खण्डन है। इसी प्रकार वेदों में सैंकड़ों मन्त्र हैं। जिनमें ईश्वर, जीव, प्रकृति का वर्णन है यथा—द्वा सुपर्णासियुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वादृत्त्यनश्नन्न्यो अभिचाकशीति। ऋ. १।१६४।२०।

यह ऋग्वेद का मन्त्र है। इसमें जीवात्मा प्रकृति और ब्रह्म का बड़ा ही आलंकारिक वर्णन है। (द्वा सुपर्णा) दो पक्षी हैं। (सयुजा) व्याप्य व्यापक

भाव से रहते हैं (सखाय) दोनों मित्र हैं (समानं वृक्षं परिषस्वजाते) प्रकृति रूपी वृक्ष पर दोनों ने आश्रय किया हुआ है (तयोः) उन दोनों में (अन्यः) जीवात्मा (पिप्पलं स्वाद्वन्ति) अपने कर्मों के मीठे-मीठे फल खाता है और (अन्यः) दूसरा परमात्मा (अभिचाकशीति) स्वयं प्रकाशमान है और कोई कर्म का फल नहीं भोगता। स्वामी शंकराचार्य जी ने य. ४० मं० १ के भुञ्जीथा पद का धात्वर्थ के विरुद्ध पालयेथाः अर्थ किया है क्यों कि भुजधातु भोग और पालन के अर्थ में आती है। किन्तु पालन अर्थ में परस्मैपदी क्रिया आती है। यह आत्मनेपद की क्रिया है। यहां परस्मैपद मान कर पालन अर्थ करना व्याकरण विरूद्ध है भुजोऽनवने अ. १।३।६६ इस अष्टाध्यायी के सूत्र से भुज धातु आत्मेनपदी भोगार्थ में ही होती है पालनार्थ में तो भूपालो भूमिं भुनक्ति "यह प्रयोग होता है। सनातन धर्म के दादा गुरु श्री उव्वट एवं महीधर ने भी भुञ्जीथा का अर्थ भोग अनुभवे और उव्वट ने अनुभावयस्वः अर्थ किया है।

तथा यजुर्वेद अ० ४० म० २ में तो जीवात्मा को जब तक जीवे। तब तक कर्म करने का विधान है। यथा—कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः एवं त्वयि······और ईश्वर का लक्षण सपर्यगाच्छुक्रमकायम व्रणम स्नाविर··· ······यजु० अ ४० मं० ८ आदि है। और यदि ईश्वर जीव दोनों ही कर्म नहीं करते तो सृष्टि के निर्माण, संचालन, नियम में रखना और कर्म फल देना ये किसके कर्म हैं तथा शाश्वतीभ्यः समाभ्यः यह मंत्र का भाग प्रकृति एवं जीव का वर्णन करता है। ओ३म्-असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः यजु० ४०।म०३। अर्थ—जो-लोक=देखने वाले। अन्धेन==अन्धकार रूप। तमसा=अज्ञान से। आवृताः ढके हुए। नाम=प्रसिद्ध है वे जीवन मरण में दुख पाते हैं तथा च—

ओ३म्—अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये विद्यामुपासते—य० अ ४०।१२।

अर्थ—ये जो मनुष्य। अविद्यां=अविद्या को। उपासते=उपासना करते हैं। ते=वे। अन्धन्तम=अत्यन्त अन्धकार को। प्रविशन्ति=पाते हैं।

तथा च—

ओ३म्, अंधंतमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते। य० ४०।९।

अर्थः—(ये) जो (असम्भूतिम्) प्रकृति की (उपासते) उपासना करते हैं। वे (अन्धंतमः) अंधकार को (प्रविशन्ति) प्राप्त होते हैं।

जीवेश्वर का विधान

१—ओ३म् क्रतो स्मर। य० ४०।१५।

अर्थः—(क्रतोः) हे कर्म करने वाले जीव (ओ३म्) ओ३म् नाम वाच्य ईश्वर का (स्मर) स्मरण कर।

२—ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। य० १४।१६।

अर्थः—(अग्ने) हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर (देव) दिव्य आप (अस्मान्) हम जीवों को (सुपथा) अच्छे मार्ग से (नय) ले चलिए। आप हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रशस्य ज्ञानादि को (विद्वान्) जानते हैं।

अनेक जीवों का विधान

३—इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामिमेषानुगादपरो अर्थमेतं य० ३५।१५। इसमें अनेक जीवों का विधान है।

अर्थः—मैं परमेश्वर (जीवेभ्यः) सब जीवों के लिए (परिधिं) मर्यादा को (दधामि) स्थापित करता हूँ। कोई किसी के धन का ग्रहण न करे।

४—ओ३म् देवेभ्योहिप्रथमं यज्ञियेभ्यः। जीवितामनुषेभ्यः। य० ३३ म० ५४।

ओ३म् य इमा विश्वा भुवनानि जुहवदृषिर्होतान्यषीदत्पिता नः य० १७।१७। इस मंत्र में जीवेश्वर का विधान है। तथा ब्रह्म को जीव का पिता माना है।

अर्थ—(यः) जो (इमा) इन (विश्वा) सब (भुवनानि) लोकों को (जुहवत्) रचता है, देता है। वह (ऋषिः होता) सर्व दृष्टा (न) हमारा (पिता) पालक है (नि) निरन्तर (अषीदत्) स्थिर था। निम्न मंत्र में जीव का बन्धु कथन किया है ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता सविधाता य० ३२।१०।

अर्थ—यह बहुत जीववाद का विधायक है। सः=वह परमेश्वर नः= हम जीवों के शरीरों का। जनिता=उत्पादक तथा (बन्धुः) भ्रातृवत्। सः= वह। विधाता=धारक है।

ओ३म्=न तं विदाथ य इमा जजान। य० १७।३१।

अर्थ हे जीवों। तं=उस परमेश्वर को तुम (न) नहीं। (विदाथ) जानते हो (यः) जो (इमा) चराचर को (जजान) शरीर आदि को रचता है। जीवों के बहुत्व और ब्रह्म का विधान है।

ओ३म्—तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन । य० ३४।४१।

अर्थ—सर्व पोषक परमेश्वर हम तेरे व्रत में स्थिर रहें। उससे इत्यादि मन्त्रों में जीवों के अनेकत्व और ईश्वर के साथ पिता पुत्र सम्बन्ध का विधान है। चारों वेदों में ऐसे अनेक मन्त्र हैं। विद्वान् जानते ही हैं। अब वेदान्त दर्शन का दूसरा सूत्र उपस्थित करता हूं। "जन्माद्यस्य यतः" वेदान्त अ० १ पा० १ सू० २ में स्पष्ट वर्णन है। ईश्वर वह है कि जिससे (अस्य) इस जगत् की उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि होते हैं। इसमें ईश्वर और जगत् प्रकृति के कार्य तथा जीवों का विधान है। और योग दर्शन में भी ईश्वर, जीव, प्रकृति का विधान है यथा क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामष्टः पुरुष विशेषः ईश्वरः यह ईश्वर का लक्षण है। और दृष्टा दृषिमात्रशुद्धोऽपिप्रत्ययानुपश्य—यह जीवात्मा का लक्षण है और प्रकाश क्रिया स्थिति शीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम्--यह प्रकृति का लक्षण है।

मकड़ी का दृष्टान्त

यह मकड़ी का दृष्टान्त भी त्रैतवाद का साधक है। अद्वैतवाद का नहीं क्योंकि जीव मकड़ी का शरीर ये दो वस्तु हैं। जीव चेतन है मकड़ी का शरीर जड़ है और वह स्वयं क्रीड़ा नहीं करती। अपितु दूसरे मक्खी, मच्छर आदि को फंसाने के लिए क्रीड़ा करती है मकड़ी का शरीर साकार है। और आत्मा निराकार है। मकड़ी के साकार शरीर से साकार जाला उत्पन्न होना उचित है। किन्तु निराकार सर्वव्यापक ब्रह्म स्वयं जगत् किस प्रकार बन गया। यह कल्पना मात्र है।

गीता और त्रैतवाद

स्वामी शंकराचार्य जी ने गीता से अद्वैतवाद सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। किन्तु गीता में स्पष्ट त्रैतवाद है यथा—

क्षरः सर्वाणि भूतानिकूटस्थोऽक्षर उच्यते।

"उत्तम पुरुषस्त्वन्यः" इस गीता के श्लोक में प्रकृति और जीव तथा परमेश्वर का विधान है। इसी प्रकार "ईश्वरः सर्व भूतानां (हृदेशे) अर्जुन तिष्ठति" इस श्लोक में जीवों का तथा परमात्मा का विधान है। इस प्रकार अनेक स्थान पर गीता में ईश्वर, जीव, प्रकृति का वर्णन है।

उपनिषद और त्रैतवाद

यथा—अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां वह्वीः प्रजा सृजमानां स्वरूपाः अजो-

ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्त भोगामजोऽन्यः ।। श्वेत, उ०।अ० ४ मं०५। प्रकृति जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात् जिनका जन्म कभी नहीं होता और न कभी ये जन्म लेते अर्थात् ये तीन सब जगत् के कारण हैं। इनका कारण कोई नहीं इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है। और उसमें परमात्मा न फंसता है। और उसका न भोग करता है।

समाने वृक्षे पुरुषोनिमग्नोऽनीशयाशोचति मुह्यमानः।

जुष्टं यदापश्यत्यन्य मीशस्य महिमानमितिवीतशोकः ।।श्वेताश्वे० ४।६।

इस मंत्र में भी ईश्वर जीव प्रकृति का वर्णन है। और सांख्य दर्शन में २४ पदार्थों को माना है। यथा—सत्वरजस्तमसों साम्यवस्था प्रकृति आदि न्याय में सोलह पदार्थ यथा—प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन आदि और वैशेषिक में षट् पदार्थ माने हैं। यथा द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय इत्यादि से सिद्ध है। कि प्रधानतया, ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन ही हैं। न तीन से अधिक न न्यून। यदि इन्हें न्यून किया जाये तो जड़ चेतन भेद से दो भेद कहे जा सकते हैं। किन्तु एक ब्रह्म ही है। इसकी सिद्धि असम्भव है क्योंकि अद्वैतवाद का साधक प्रमाण अद्वैत नहीं हो सकता है।

अपितु द्वैत ही होगा। जैसे प्रमेय की सिद्धि प्रमाण से होती है। और उसका प्रमाता भी चाहिए जो उसको सिद्ध करे। और प्रमेय स्वयं प्रमाण और प्रमाता भी नहीं बन सकता। क्योंकि प्रमेय का साधन प्रमाण और प्रमाता प्रमेय से भिन्न होते हैं एक में त्रिपुटी अर्थात् प्रमाता-प्रमाण प्रमेय एवं ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय तथा ध्याता, ध्यान ध्येय ये तीनों पृथक्-पृथक् हैं। और स्वामी शंकराचार्य जी की दृष्टि से जगत को मिथ्या भी माना जाए तब ये प्रश्न होता है। कि यदि जगत् रज्जु में सर्प की तरह मिथ्या है तो भी जगत् का अत्यन्ता भाव सिद्ध नहीं होता। क्योंकि आप रज्जु में सर्प को मिथ्या मानते हैं। किन्तु रज्जु में सर्प न सही। परन्तु अन्यत्र सर्प भी सत्य है। और रज्जु भी सत्य है क्योंकि प्रतीति सत्य की सत्य में होती है। अभाव की प्रतीति नहीं होती है। और रज्जु में सर्प की प्रतीति तो मिथ्या है। किन्तु इस दृष्टान्त में तीन वस्तुएँ हो जाती हैं। रज्जु सर्प और जिसको सर्प की प्रतीति होती है। केवल सर्पाकार की प्रतीति हो मिथ्या है। अतएव प्रकृति में यह प्रश्न होता है। कि यदि जगत् मिथ्या है। तो यह जगत् की मिथ्या प्रतीति किसकी है। यह जगत् वास्तव में क्या है। और यह मिथ्या प्रतीति किसकी

है और वह वस्तु भी क्या है। जिसकी प्रतीति हो रही है। मृग तृष्णा के जल से पिपासा शान्त नहीं होती। क्योंकि वह असत्य है। स्वप्न में काटे हुए सांप का विष नहीं चढ़ता। जागृत में उसकी औषधी भी नहीं की जाती। वन्ध्या पुत्र के विवाह के गीत नहीं गाये जाते शशश्रृङ्ग का धनुष भी नहीं होता। आकाश के पुष्पों की सुगन्धी भी नहीं होती। क्योंकि ये मिथ्या हैं। किन्तु सत्य जल से पिपासा शान्त हो जाती है। वास्तविक मनुष्यों के विवाह भी होते हैं। और उनके गीत भी गाये जाते हैं। वाटिका के पुष्पों की सुगन्धी भी होती है। बांस आदि के धनुष भी होते हैं। और जागृत में काटे हुए सर्प की औषधी भी होती है। यह क्योंकि जगत् उपर्युक्त मृग तृष्णा के जलादि की तरह मिथ्या है तो इसकी प्रतीति भी कभी न होनी चाहिए। वस्तुतः जगत् में कोई वस्तु तीन विना सिद्ध नहीं होती। अर्थात् एक निर्माता दूसरा निर्माण का साधन उपादान कारण तीसरा जिसके लिए वस्तु का निर्माण किया जाएगा। जैसे-कुम्भकार, मृत्तिका एवं क्रेता, पाचक, भोजन का सामान दाल, शाक, चूर्ण। तन्तुवी तन्तु और जिनके लिए कपड़ा बनेगा एवं प्रकृति परमेश्वर तथा परमात्मा ये तीन न होंगे। तब तक जगत् न वनेगा। कोई भी कर्त्ता स्वयं कार्य नहीं बनता किन्तु शंकराचार्य का निराकार व्यापक चेतन ब्रह्म कैसे स्वयं जगत् बन गया। जब कि कोई रसोईया स्वयं भोजन नहीं बनता। कुम्हार स्वयं घट तन्तुवाय पट नहीं बनता।
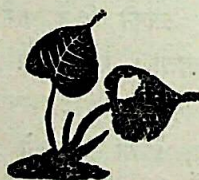
आर्य

आर्य नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों का है और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है।

— स० प्र० एकादश समु०

'विषूचिका'

ऋषि की दृष्टि में

(डा० प्रज्ञा देवी, वाराणसी-५)

यह एक तथ्य है कि ऋषि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में व्याकरण एवं निरुक्त प्रक्रिया को सर्वाधिक महत्त्व देते हुये शब्दार्थ प्रस्तुत किये हैं, पुनरपि यह कहना असंगत न होगा कि शब्दार्थ प्रस्तुत करने में यास्क की निर्वचन प्रक्रिया को आधार बनाते हुये भी ऋषिवर उससे कहीं आगे निकल गये हैं। ऋषि के समक्ष उनका अद्भुत वेदार्थ ज्ञान लहरा रहा था अतः यास्क प्रतिपादित निर्वचन प्रक्रिया उनके वेदभाष्य में प्रमाणभूत आधार शिला तो थी पर इयत्ता अवधारण नहीं। ऋषि ने सहस्रों शब्दों के व्याकरण संगत युक्ति-युक्त ऐसे निर्वचन प्रस्तुत किये हैं कि जिनका मूल निरूक्त में नहीं है एवं वे निर्वचन ऋषि की सूझबूझ के प्रदर्शन के साथ-साथ मन्त्र के रहस्य को अच्छी प्रकार उद्घाटित करने वाले हैं, ऐसा ही एक शब्द पाठकों के कौतूहलार्थ यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

(१) विषूचिका—यजु० १६।१० में विषूचिका शब्द आया है। संस्कृत में विषूचिका 'हैजा' रोग विशेष को कहते हैं। यह शब्द हैजा रोग का वाचक क्यों है ऐसी कोई निरूक्ति शब्द कोशों में कहीं नहीं प्राप्त होती। आप्टे कोश में विषूचिका शब्द को 'सूच पैशुन्ये' धातु से ण्वुल् करके सिद्ध किया है जो अर्थ दृष्टया अयुक्त है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में यह शब्द विषूचिका, विसूचिका दोनों प्रकार से प्राप्त होता है। जो चिन्त्य है। विषु निपात मान के इस शब्द की व्युत्पत्ति करने पर विषूचिका ही युक्त होगा।

उव्वट ने अपने भाष्य में इस शब्द का अर्थ किया है—"विषु निपातो नानावचनः अञ्चतिर्गत्यर्थः। अन्तर्व्याप्तिर्नानाञ्चना विषूचिका व्याधि-विशेषः।" महीधर ने भी इस शब्द पर लिखा है "विषु सर्वत्र अञ्चति गच्छति विषूची सैव विषूचिका रोग विशेषः। केऽणः (अष्टा. ७।४।१३) इति ङीपो ह्रस्वः।" उव्वट महीधर की विषूचिका शब्द पर ये निरूक्तियाँ

रोग विशेष हैजे को करने के लिये संगत ही हैं। हैजे में दोनों ओर से मलोत्सर्ग का होना ही उसकी "अन्तर्व्याप्तिर्नानाञ्चना" है यही इस शब्द का हैजा वाचक होने में हेतु है पर प्रकृत मन्त्र में विषूचिका शब्द का हैजा रोग को कहने में क्या प्रयोजन है? इसकी संगति प्रदर्शित करना तो वेद के प्रति अनादर दृष्टि वाले एवं वेद में केवल यज्ञ-याज्ञादि परक सीमित अर्थ को मानने वाले इन भाष्यकारों के क्या वश में था? यजु० १९।१ का प्रकृत सम्पूर्ण मन्त्र इस प्रकार है—

या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति।
श्येनं पतत्रिण ँ सि ँहँसेमं सेमं पात्व ँहसः॥

दोनों भाष्यकारों ने इस मन्त्र को व्याधि स्तुति परक मानते हुये लिखा है— विषूचिका स्तुतिः। पापसमूहव्याप्तेः व्याधीनाम धिष्ठात्र्यो देवताः सन्ति ताः प्रार्थ्यन्ते? इनके अनुसार इस मन्त्र से व्याधियों की अधिष्ठात्री देवता विषूचिका रोग की स्तुति की जा रही है। बलिहारी है इन भाष्यकारों के बुद्धिमत्ता की जिनके यहाँ रोग की भी अधिष्ठात्री देवता होती हैं और उनकी स्तुति की जाती है?

इस मन्त्र का अर्थ करते हुये विषूचिका शब्द का ऋषि दयानन्द ने गजब ही अर्थ किया है "विषूचिका=विविध अर्थों की सूचना करने हारी राजा की रानी।" अर्थात् राज्य की विविध प्रकार की गुप्त खबरों को अपनी चतुरता से जानकर जो राजा को इन वातों से सूचित करके राज्य कार्य में विशेष सहयोग प्रदान करती है ऐसी चतुर-योग्य रानी विषूचिका शब्द से विभूषित होगी। ऋषि की इस व्युत्पत्यनुसार वि पूर्वक सूच धातु से ही ण्वुल् प्रत्यय मानना होगा। 'अनेकार्थत्वाद् धातूनाम्'के अनुसार यहाँ "सूच" भी पैशुन्य= चुगली अर्थ में नहीं अपितु प्रशंसाहरक सूचना देने अर्थ में है ऐसा जानना चाहिये। शब्दकोश एवं अन्य भाष्यकार कोई भी विषूचिका शब्द के हैजा अर्थ से आगे नहीं जा सके पर ऋषिवर की यह अनोखी व्युत्पत्ति हमें वास्तविक वेदार्थ तक पहुंचा देती है। सम्पूर्ण अर्थ इनके वेदभाष्य में देखें।

प्रसङ्गानुसार पाठक एक शब्द और देखें—

(२) उपजिह्विका—यह शब्द भी आयुर्वेद के ग्रन्थों में रोग विशेष का वाचक है तद्यथा चरक संहिता में कहा है—

"जिह्वोपरिष्टादुपजिका स्यात् कफादधरतादधिजिह्विका च"

(चिकित्सा स्थान १२।७६) अर्थात् कफ के कारण जिह्वा के ऊपर जो कड़ी गांठ सी बनती है वह 'उपजिह्विका' और जिह्वा के नीचे बनती है वह 'अधिजिह्विका' रोग विशेष है। चरक संहिता १८।२१ में पुनः कहा है—

यस्य श्लेष्मा प्रकुपितो जिह्वामूलेऽवतिष्ठते।
आशु संजनयेच्चोथं जायतेऽस्योपचिह्विका॥

अर्थात् जब कभी कुपित होकर जिह्वा की जड़ में एकत्र होकर सूजन उत्पन्न कर दे, उसे उपजिह्विका कहते हैं।

आयुर्वेद के ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत के लौकिक एवं वैदिक दोनों ही ग्रन्थों में उपजिह्विका शब्द दीमक के अर्थ में आया है। यास्क ने भी 'उपजिह्विका उपजिघ्रयः' निरु० ३।२० अर्थात् जो सूंघने में विशेष पटु हो ऐसी (दीमक) अर्थ किया है। उव्वट महीधर ११।७४ एवं सायण ऋ०८।१०२।२१ तथा दुर्गाचार्य सभी ने उपजिह्विका का दीमक अर्थ मन्त्रार्थ में प्रदर्शित किया है किन्तु ऋषि दयानन्द यजु० ११।७४ के मन्त्र का अर्थ करते हुये उपजिह्विका शब्द का इन सबसे भिन्न किन्तु युक्तियुक्त अर्थ लिखते हैं—

"उपगता अनुकूलता जिह्व यस्याः सा उपजिह्विका" अर्थात् जिसकी जिह्वा=स्वादेन्द्रिय अनुकूल वश में हो, जो लोलुप न हो ऐसी स्त्री उपजिह्विका हुई।[1] यहाँ गत शब्द का लोप करके मध्यम पदलोपी समास ऋषिवर ने दिखाया है, इस प्रकार ऐसी सुसंगत विभिन्न व्युत्पत्तियों को दिखाकर ऋषिवर ने मन्त्रार्थ को बहुत व्यापक बना दिया।

जिन मन्त्रों के सायण उव्वट आदि भाष्यकारों ने अत्यन्त वीभत्स कुत्सित अर्थ किये थे उन्हीं का स्वामी जी ने मन्त्रगत किसी शब्द की अनोखी पकड़ करके समूचे मन्त्रार्थ को ही उलट दिया, एक दिव्य नूतन प्रकाश प्रदान किया। जिस मन्त्र का उव्वट महीधरादि ने पशु के काटने परक अर्थ किया।

---

१. यजु० ११।७४ मन्त्र का भावार्थ ऋषिवर ने इस प्रकार किया है—"जिस पुरुष से पुरुष वा स्त्री का व्यवहार सिद्ध होता हो उसके अनुकूल स्त्री-पुरुष दोनों वर्त्तें। जो स्त्री का पदार्थ है वह पुरुष का और जो पुरुष का वह स्त्री का भी होवे ......।"

उदाहरणार्थं यजुर्वेद के २४वें अध्याय (जहाँ ६०९ पशुओं के नाम आये हैं) के सम्पूर्ण मन्त्रों का अर्थ देखें। यहाँ विभिन्न प्रकार के पशु किस-किस गुण वाले होते हैं तथा किस प्रकार ये हमारे लिए उपयोगी हैं यह अर्थ ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य से जहां उपलब्ध होता है वहीं ये सब पशु अश्वमेधीय हैं इनकी वलि यज्ञ के समय देवता के नाम पर कैसे-कैसे चढ़ा देनी चाहिए यही विवरण उव्वट महीधर के भाष्य से प्राप्त होता है।

इस प्रकार वेदों के सहस्रशः लुप्त एवं अप्रकटित रहस्य ऋषिवर के भाष्य शैली को जान एवं समझकर उपलब्ध किये जा सकते हैं, आवश्यकता मूल दृष्टिकोण को समझ लेने की है।

पारसमणि

जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यवर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

—स० प्र० एकादश समु०

आर्यसमाज : कुछ ज्वलन्त समस्यायें

(लेखक—डा० भवानी लाल भारतीय अजमेर)

आर्यसमाज में युवक शक्ति का प्रवेश

आर्यसमाज के अतीतकाल के नेताओं ने इस तथ्य को भली भांति हृदयंगम किया था कि वैदिक विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार में युवा वर्ग को किस प्रकार नियोजित किया जा सकता है। लाहौर आर्यसमाज के प्रथम प्रधान लाला साईंदास सदैव इस बात का यत्न करते थे कि होनहार युवक समाज में प्रविष्ट हों। जिस समय महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय तथा महात्मा मुन्शीराम (कालान्तर में स्वामी श्रद्धानन्द) जैसे आर्य नेताओं ने युवक रूप में आर्य समाज में प्रवेश किया उस समय वयोवृद्ध लाला साईंदास भाव विभोर हो उठे थे।

आर्य युवकों को आर्यसमाज में प्रविष्ट होने से पूर्व वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति की दीक्षा देने हेतु आर्य कुमार परिषद की स्थापना स्व० डा० केशवदेव शास्त्री ने की। समय समय पर अनेक सुयोग्य आर्य नेताओं का मार्गदर्शन आर्य युवक समुदाय को मिलता रहा। दिल्ली के स्वर्गीय नेता लाला देशबन्धु गुप्त, डा० युद्धवीर सिंह, यहां तक कि स्व० बैरिस्टर आसफअली भी दिल्ली आर्य कुमार सभा के निकट सम्पर्क में आए थे। आर्य कुमार परिषद की ही भांति आर्य वीर दल का संगठन भी युवक वर्ग को शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि से सुसंगठित तथा शक्ति सम्पन्न बनाने हेतु किया गया। आर्य कुमार आन्दोलन का सिद्धान्त वाक्य था "विद्या धर्मेण शोभते" तो आर्य वीरों ने 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु' कह कर "वीर भोग्या वसुन्धरा" का जयघोष किया। अज्ञान, अन्याय और अभाव को समाप्त कर समाज में व्याप्त अनाचार, विषमता तथा पाखण्ड का ध्वंस ही आर्य वीर दल का लक्ष्य रहा है। अपने ध्येय की पूर्ति के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप लोगों के समक्ष उपस्थित करना तथा उस आदर्श समान व्यवस्था की स्थापना हेतु यत्न करना आर्य वीर दल का प्रमुख कार्यक्रम है।

यह सब कुछ होने पर भी युवक वर्ग आर्य समाज के प्रति कुछ अधिक आकृष्ट नहीं है। इसके अनेक मनोवैज्ञानिक तथा अन्य कारण हैं। युवकों के लिए जिस कार्यक्रम की अपेक्षा होती है वैसा कार्यक्रम बहुत कुछ विचार करने के पश्चात् भी आर्य समाज नहीं बना पाया है। अतः हमें इस बात पर पुनर्विचार करना होगा कि युवक शक्ति का आर्यसमाज में प्रवेश किस प्रकार हो ? यदि आर्यसमाज की वृद्ध पीढ़ी ने नवयुवक वर्ग के लिए स्थान रिक्त नहीं किया तो नये रक्त के अभाव में यह सशक्त एवं जीवन्त भी मरणासन्न हो सकती है। युवक वर्ग के लिए जहां आर्यसमाज की विचारधारा को सुव्यवस्थित, तर्कपूर्ण तथा सहज ग्राह्य ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक है, वहां उनके लिए कुछ सक्रिय आयोजन भी रखने होंगे। विचार गोष्ठियां, स्नेह सम्मेलन, आकस्मिक विपत्ति के अवसरों पर सेवा दलों का संगठन आदि ऐसे कार्यक्रम हैं जिनमें युवकों की सहज रुचि होती है। देश की राजनैतिक तथा आर्थिक समस्याओं के प्रति आर्यसमाज के दृष्टिकोण को भी स्पष्ट किया जाना आवश्यक है। युवकों का ऐसी समस्याओं के प्रति सहज आकर्षण होता है। अतः यदि राजनीति और अर्थनीति के क्षेत्र में उनका उचित मार्गदर्शन नहीं किया जाता तो वे अन्य अतिवादी दक्षिण पंथी अथवा अनीश्वर वादी, नैतिक मूल्यों से विहीन वामपंथी राजनैतिक दलों की ओर झुक जाएंगे। आर्यसमाज ने अब तक देश तथा मानवता के समक्ष उपस्थित आर्थिक चुनौतियों के प्रति जो उपेक्षा भाव प्रदर्शित किया है उसी का यह परिणाम है कि सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार पर प्रतिष्ठित होने तथा व्यापक प्रगतिशील विचारधारा का समर्थक होते हुए भी आर्यसमाज आज के जनजीवन को प्रभावित नहीं कर सका है।

आर्यसमाज और दक्षिण भारत

आर्य समाज जिस वैदिक धर्म का प्रतिपादन एवं प्रचार करता है वह सार्वभौम, सार्वकालिक तथा सार्वजनीन है। आर्यसमाज के मुख्य ध्येय का उल्लेख करते हुए उसके छठे नियम में कहा गया है कि "संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यसमाज के प्रवर्तक ने अपनी शिक्षाओं को सार्वदेशिक रूप प्रदान किया। यह सत्य है कि महर्षि के दिवंगत हो जाने के पश्चात् उनके अनुयायियों ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया तथापि यह भी उतना ही सत्य है कि उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में आर्यसमाज का प्रचार नगण्य ही रहा। स्वयं स्वामी दयानन्द भी अपने व्यस्त पर्यटनकाल में दक्षिण

की काशी पूना तक ही अपने संदेश का प्रसार कर सके थे। आज भी हम देखते हैं कि महाराष्ट्र, आन्ध्र तथा कर्नाटक के कुछ भागों में आर्यसमाज के नाम तथा कार्यों से कुछ लोग भले ही परिचित हों, परन्तु केरल तथा तमिलनाड जैसे प्रान्तों में आर्यसमाज एक अपरिचित संस्था ही है। इसी प्रकार वंगाल, आसाम तथा उड़ीसा आदि पूर्वीय प्रदेशों में भी आर्यसमाज मुख्यतः उत्तर भारतीय लोगों के माध्यम से ही पदारोपण कर सकता है। वहां के मूल निवासियों में उसका प्रवेश अभी भविष्य की वस्तु है।

सर्वप्रथम ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी तथा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का ध्यान दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार की ओर गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तो पं० धर्मदेव जी विद्या वाचस्पति तथा पं० केशवदेव जी शास्त्री आदि विद्वानों के माध्यम से दक्षिण प्रान्तस्थ जनता को वैदिक धर्म का स्फूर्तियुक्त संदेश प्रेषित किया। इन धर्म प्रचारकों ने वंगलोर, मद्रास, मैसूर आदि नगरों को अपना केन्द्र वनाकर महत्त्वपूर्ण प्रचार कार्य किया। उन्होंने स्थानीय भाषाओं के माध्यम से लेखन किया तथा उपदेश दिया। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद प्रकाशित किए गए तथा लघु पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। मालाबार प्रान्त में जब मोपला मुसलमानों ने धर्मान्धता का नग्न प्रदर्शन करते हुए हिन्दू समाज पर व्यापक अत्याचार किए तो महात्मा हंसराज के आदेश पर लाला खुशहालचन्द (वर्तमान महात्मा आनन्द स्वामी) के नेतृत्व में आर्य प्रादेशिक सभा के कार्यकर्त्ता दक्षिण पहुंचे तथा त्रिवेन्द्रम को अपना केन्द्र बनाकर सेवा कार्य करते रहे। इस निष्काम सेवा कार्य का केरल की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा था।

परन्तु आज आर्यसमाज के पास दक्षिण भारत के लोगों के लिए संदेश तो है परन्तु उसे पहुंचाने का माध्यम नहीं है। यदि आर्यसमाज तमिलनाडु तथा दूर दक्षिण की भारतीय प्रजा से अपना सम्पर्क सूत्र स्थिर रखता तो भाषा, क्षेत्रीयता तथा आर्य द्रविड संस्कृति के नाम पर जो विघटनकारी दूषित प्रवृतियां दक्षिण भारत के कुछ भागों में पनप रही हैं वे जड़ जमा नहीं पाती। कितने खेद की बात है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने वाला आर्यसमाज दक्षिण में हिन्दी प्रचार का भी कोई उपयोगी और व्यवहारिक कार्यक्रम संचालित नहीं कर सका। फलतः महात्मा गांधी को ही दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के माध्यम से यह कार्य करना पड़ा।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तो हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तथा सौराष्ट्र से लेकर ब्रह्मदेश पर्यन्त जिस विशाल आर्यावर्त देश में वैदिक धर्म का अविच्छिन्न वर्चस्व देखना चाहते थे उसे क्रियान्वित करने के लिए दक्षिण और पूर्व के उन प्रान्तों में आर्यसमाज को अपनी गतिविधियां तीव्रता से संचालित करनी चाहिए, जहां वे नगण्य सी हैं। इन प्रान्तों में प्रतिनिधि सभाओं का संगठन किया जाए तथा साहित्य प्रचार, सेवा कार्य एवं जन जागरण के अन्य साधनों द्वारा आर्यसमाज का संदेश घर-घर में प्रसारित किए जाने की व्यवस्था हो।

यह एक सुविदित तथ्य है कि सीमान्त प्रान्तों में तथा केरल के अधिकांश भागों में विदेशी ईसाई धर्म प्रचारक केन्द्र बनाकर जहां अपना धर्म प्रचार कर भोली भाली अशिक्षित एवं निर्धन हिन्दू प्रजा को अपने धर्म में दीक्षित करते हैं वहां उनमें राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को प्रोत्साहित कर देश की सुरक्षा तथा एकता को भी आघात पहुंचाते हैं। अतः आर्यसमाज के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह दक्षिण भारत में औषधालय, सेवा केन्द्र तथा सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना कर विदेशी धर्म प्रचारकों की अराष्ट्रीय प्रवृतियों का मुकाबिला करे तथा वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रौज्जवल पक्ष वहां के लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर समग्र देश की भावात्मक एकता का सेतु बने।

आर्य समाज और अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार—

महर्षि दयानन्द ने जहां आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों को एक सार्वभौमि स्वरूप प्रदान किया था, वहां वे अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा को भी यह आदेश दे गये थे कि देश देशान्तरों तथा द्वीप द्वीपान्तरों में वैदिक धर्म का प्रचार किया जाय। आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म, देश, काल, वर्ण तथा रंग की सीमाओं से ऊपर उठकर मनुष्य को वास्तविक मानव बनाने की बात कहता है अतः उसे मानव धर्म का ही पर्याय मानना चाहिये। इसी कारण आर्यसमाज के नेताओं का ध्यान उन देशों की ओर भी गया जहां भारत मूल के लोगों का निवास था, अथवा विगत शताब्दी में ही प्रवासी भारतीयों ने उन देशों में जाकर उपनिवेशों की स्थापना कर ली थी। दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका, मौरिशस, फीजी, गाइना आदि ऐसे देश हैं, जहां भारतीयों की संख्या पर्याप्त है। इन दोनों देशों में जहाँ भारतीय रीति नीति, धर्म और परम्परा, संस्कृति और भाषा किसी न किसी रूप में शेष थी, आर्य समाज का प्रचार सुगम रीति से हो सकता था। फलतः इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही आर्य समाजी, धर्म प्रचारकों ने अपनी विदेश प्रचार यात्रायें

की। स्वामी शंकरानन्द, भाई परमानन्द स्वामी, स्वतंत्रानन्द, स्वामी भवानी दयाल संन्यासी, मेहता जैमिनी तथा डा० चिरंजीव भारद्वाज आदि ख्यातनामा वक्ता, प्रचारक तथा धर्मोपदेशक समय-समय पर इन देशों की यात्रा कर वहां के लोगों में उत्पन्न धर्म जिज्ञासा को शान्त करते रहे तथा उनकी आध्यात्मिक पिपासा को सन्तुष्ट करने के लिये धर्म एवं संस्कृति की निर्मल स्रोतस्विनी को प्रवाहित करने का यत्न किया।

यह सत्य है कि विदेशों में आर्य समाज के प्रचार का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। हमारे प्रचारक उन्हीं देशों में जाते हैं जहां भारतीय मूल के लोग रहते हैं तथा जिनके बीच हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रचार कार्य किया जा सकता है। आज तो भारतीय धर्म तथा संस्कृति, योग, वेदान्त तथा भक्ति के नाम पर अनेक छद्म वेशी लोग यूरोप अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में अपना पाखण्ड जाल फैला रहे हैं जहां के लोग भौतिक चाकचिक्य से आक्रान्त होकर किसी अध्यात्मिक परिवेश में मानसिक शान्ति का अनुभव करते हैं। यह सत्य है कि धर्म और अध्यात्म के नाम पर आडम्बर एवं पाखण्ड को प्रोत्साहित करने वाले ये योगी और गुरु भारतीय विचारधारा का अमल धवल एवं अकलुष रूप विदेशी जनता के समक्ष प्रस्तुत करने में असमर्थ होते हैं अतः यहां भी आर्य समाज की ओर ही स्वभावतः दृष्टि जाती है।

आर्य समाज को अपना विदेश प्रचार का समग्र कार्यक्रम और आयोजन वस्तुवादी दृष्टिकोण पर आधारित करना होगा। विदेश प्रचार हेतु जाने वाले प्रचारक गण सच्ची लगन, वाले तो हों ही, उनमें उच्च कोटि का तप, त्याग, कष्ट, सहिष्णुता तथा अदम्य उत्साह भी अपेक्षित है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् तथा श्रण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः की वैदिक सूक्तियों को सार्थक करने वाले धर्म प्रचारक जब विदेशों में जाकर आर्य धर्म की गरिमा का प्राख्यान करेंगे तो स्वामी विवेकानन्द की उस उक्ति की सार्थकता सहज ही हृदयंगम हो जायगी जिसमें उन्होंने कहा था—I go forth to Preach a religion of which Buddhism is a rebel child and Chistranity is but a distant echo.

अर्थात् मैं उस (वैदिक) धर्म का प्रचार करने जा रहा हूं जिसका कि बौद्ध धर्म एक विद्रोही बालक है तथा ईसाई धर्म जिसकी दूर की प्रतिध्वनि मात्र है।

उपसंहार में हम प्रसिद्ध अमेरिकन विचारक एण्ड्रु जेक्सन डेविस के उन शब्दों को उद्धृत करना चाहते हैं जिसमें उसने आर्य समाज की तुलना उस दिव्य प्रचण्ड अग्नि से की है, जो संसार के अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड और विषमता को भस्म करने के लिये परिव्राजक दयानन्द के द्वारा उद्दीप्त की गई थी। इस क्रान्ति ज्वाला को बुझाने का प्रयास अन्य मतावलम्बियों ने तो किया ही, स्वयं हिन्दू धर्म के याजक और पुरोहितगण भी इसके उपशमनार्थ सर्वाधिक प्रयत्नशील रहे। परन्तु काषाय वस्त्र धारी संन्यासी के प्रोज्जवल ओज और तेज से दीप्त यह आर्य समाज रूपी हुतावत निरन्तर वृद्धिगत ही हो रहा है और कोई आश्चर्य नहीं यदि निकट भविष्य में वह संसार के समस्त ताप संताप पीड़ा और शोक का निवारण कर उसे शान्ति, सुख और मोक्ष का धाम बना देगा। ऐसा होने पर ही परिव्राट दयानन्द के दिव्य स्वप्न पूरे होंगे।

तैयारी मरने की करो जीने की नहीं

हम धन कमा रहे हैं जीने के लिये, घर बना रहे हैं जीने के लिये, होता यह है कि यह सब करते कराते हम मर जाते हैं और यह धन कोई और भोगता है। इस घर में कोई और रहता है। जीने की तैयारी करते-करते हम मर जाते हैं यदि मरने की तैयारी करते तो अमर हो जाते। आधी रोटी मिलेगी तो भी जीयेंगे, वस्त्र के नाम पर लंगोटी होगी तो भी जीयेंगे। किन्तु मृत्यु से न बचेगें जीने की क्या तैयारी जैसे तैसे जी ही जायेंगे तैयारी मरने की होनी चाहिए जो निश्चित है और जिससे कोई बचा नहीं है।

—विक्रम ठाकुर

राजनीति के धुरन्धर स्वामी

(जगदेवसिंह सिद्धान्ती दिल्ली)

अथ राजधर्मं व्याख्यास्यामः—

१—ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि,
सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षणम् (मनु७-२)

२—त्रीणि राजाना विदथे पुरुणि परिविश्वानि भूषथः सदांसि (ऋ-३।३८।६) ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिलके सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा प्रजा के सम्बन्ध व्यवहार में तीन सभा अर्थात्

विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या स्वातंत्र्य धर्म सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे।

३—तं सभाच समितिश्च सेना च (अथर्व १५।२।६)

४—सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः (अथर्व १६।५४।५ महर्षि दयानन्द जी महाराज का अर्थ -

उस राजधर्म को तीनों सभा संग्रामादि की व्यवस्था और सेना मिलकर पालन करें। सभासद् और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदों को आज्ञा देवे कि हे सभा के योग्य मुख्य सभासद् तू मेरी सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन कर और जो सभा के योग्य सभासद् हैं वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें।

इसका अभिप्राय यह है कि एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अद्भुत आश्चर्य जनक भाव यह है। किन्तु राजा जो सभापति, तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।

इससे प्रजा तन्त्र सर्वोत्तम है ।

५—महा विद्वानों को विद्यासभाधिकारी धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाधिकारी प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद् और जो उन सबमें सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभावयुक्त महान पुरुष हो उसको राजसभा का पतिरूप मानके सब प्रकार से उन्नति करें।

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें। महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह उत्तम उपदेश है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

आत्मा और परमात्मा

हे मनुष्यो ! इस शरीर में दो चेतन नित्य हुए जीवत्मा और परमात्मा विद्यमान हैं। उन दोनों में एक अल्पज्ञ और अल्प देशस्थ जीव है। वह शरीर को धारण करके प्रकट होता, वृद्धि को प्राप्त होता और परिणाम को प्राप्त होता है तथा हीन दशा को प्राप्त होता पाप और पुण्य के फल का भोग करता है। द्वितीय परमेश्वर ध्रुव, निश्चल, सर्वज्ञ, कर्मफल के बन्धन से रहित है ऐसा तुम निश्चय करो।

—ऋग्० ६।९।४

सत्य मार्ग का पथिक—
विरजानन्द के शिष्य की कहानी।

(विश्वनाथ शास्त्री भिलाई)

महापुरुष ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु और संसार में घट रही प्रत्येक घटना को बड़ी पैनी दृष्टि से देखते हैं, और उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं, इन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द जी आते हैं। १८२४ ई० में गुजरात प्रदेश में टंकारा नामक गांव में एक शैव परिवार में मूलशंकर नामक बालक का जन्म हुआ जो आगे चलकर स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के नाम से विख्यात हुआ।

१४ वर्ष की अवस्था में पिताजी की आज्ञा से मूल जी ने शिवरात्रि का व्रत रक्खा, और शिव मन्दिर में रात्रि भर जागते रहे। मूल जी ने शिव की मूर्ति पर चूहों को उच्छृंखलता से दौड़ते हुए देखा, उन्होंने मन में सोचा कि क्या त्रिशूलधारी शिवजी अपनी रक्षा इन चूहों से भी नहीं कर सकते। उसी क्षण से उनके मन में मूर्तिपूजा से घृणा हो गयी, और वे सच्चे शिव को पाने के लिए लालायित हो गये।

कुछ समय के पश्चात् मूल जी की बहिन और चाचा की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के दृश्यों को देखकर १९ वर्ष का युवक सोचने लगा कि मुझको भी इसी प्रकार से मृत्यु के मुख में जाना होगा, पण्डितों ने अमरत्व की प्राप्ति के लिए योगाभ्यास करने की प्रेरणा दी। उपर्युक्त घटनाओं से मूल जी के मन में संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो गया, और वे सच्चे शिव को प्राप्त करने की सोचने लगे।

उन्होंने २२ वर्ष की अवस्था में घर को छोड़ दिया और बनों में, पर्वतों में, घूम-घूमकर योगियों की तलाश करने लगे। टंकारे के मूल जी को लोग अब ब्रह्मचारी कहा करते थे, कई वर्ष तक ब्रह्मचारी जी नर्वदा नदी के तट पर भ्रमण करते रहे, ब्रह्मचारी जी २५ वर्ष की आयु में पूर्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रख्यात हुए। वे हरिद्वार के कुम्भ पर गए। और वहां से उस स्थान को चले गए, जहां से

अलखनन्दा निकली है। इसी भांति स्वामी जी १५ वर्ष योगियों की खोज में फिरते रहे। योग का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा, और उन्होंने अपने उपदेशों और लेखों में सर्वत्र योग और प्राणायाम करने पर बल दिया है, स्वामी जी का इन १५ वर्षों का जीवन कुछ अज्ञात सा ही रहा है, इस अवधि में वह मुमुक्षु ही रहे, और व्यक्तिगत आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए यत्नशील रहे। वे संसार के संपर्क में नहीं आये।

१८६० ई० में स्वामी जी अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए मथुरा में दण्डी विरजानन्द के पास आए। उन्होंने यहाँ ढाई वर्ष पर्यन्त अध्ययन किया दण्डी जी को आर्ष ग्रन्थों में श्रद्धा थी और सिद्धान्त कौमदी भागवत पुराण आदि ग्रन्थों में अनास्था थी, यहां स्वामी जी ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्त सूत्र, और कई अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किया और ऐसा प्रतीत होता है कि, वे यहां वेदों के साक्षात् सम्पर्क में नहीं आये। विद्या समाप्ति पर दण्डी जी ने गुरु दक्षिणा माँगते हुए दयानन्द से कहा—तुम ज्ञान के भंडार हो, ज्ञान को फैला दो, संसार में अज्ञान भरा पड़ा है। उसे दूर कर दो, घर-घर में वेदों का प्रकाश फैलाओ।

दण्डी जी ने स्वामी जी के जीवन पर एक गहरी छाप छोड़ दी, अब तक स्वामी जी मुमुक्षु मार्ग के ही पथिक थे। दण्डी जी की शिक्षा से उन्होंने निःश्रेयस के मार्ग को छोड़कर अभ्युदय का मार्ग अपनाया। स्वामी जी ने स्वयं लिखा है कि, हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़कर यह कार्य ग्रहण किया है। अब स्वामी जी अपने आपको वैदिक धर्म का उपदेश करने में गर्व समझते हैं। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि अभी स्वामी जी हिन्दू संन्यासी ही हैं। उन्होंने अभी मूर्ति पूजा, तिलक छाप, आदि को छोड़ा है। हिन्दू शास्त्रों के संस्कार अभी उनके मन पर अंकित है।

स्वामी जी १८६३ ई० में ३९ वर्ष की आयु में दण्डी जी से विदाई लेते हैं, उन्होंने १९६४-६५ में लगभग दो वर्ष तक आगरा में निवास किया। इन दिनों स्वामी जी अवधूत अवस्था में ही रहा करते थे। मूर्तिपूजा खण्डन पुराण खण्डन आदि विषयों पर ही उनके व्याख्यान शास्त्रार्थ होते थे। वे संस्कृत में ही वार्तालाप करते थे। आगरा में निवास करते हुए स्वामी जी को वेद पढ़ने की इच्छा हुई, कालिदास जी वेद के पत्रे जनके पास ले आये पर उनसे काम न चला, कहा जाता है कि, पं० सुन्दरलाल जी ने जयपुर से वेद

मंगवाकर उनको दिया, ऐसा प्रतीत होता है कि आगरा में ही पहले पहल उन्होंने वेदों का अध्ययन किया।

स्वामी जी ने अपने सार्वजनिक जीवन में सत्य को ही सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है, और सत्य मार्ग के पथिक बने हैं। उन्होंने मौलिक व्याख्यानों और शास्त्रार्थों में सत्य का ही आश्रय लिया है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में भी सत्य को ही आधार भूत तत्व माना है, उन्होंने अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रक्खा है।

स्वामी जी आगरा से ग्वालियर और वहाँ से जयपुर पधारे। वहाँ से मनुस्मृति, उपनिषद् और गीता आदि ग्रन्थों के प्रमाण सुनाकर प्रवचन किया करते थे। यहाँ शैवों और वैष्णवों के शास्त्रार्थ में उन्होंने वैष्णव मत का खण्डन किया, और शैव मत का समर्थन किया, जब वे जयपुर से पुष्कर आते हैं, तब भी कण्ठ में रुद्राक्ष की माला पहना करते थे।

परन्तु सत्य मार्ग का पथिक अजमेर पहुंचने पर शैव मत का भी खण्डन करने लगा अजमेर में ही १९६६ ई० में स्वामी जी का पादरी राबिन्सन, ग्रे और शूलब्रेड के साथ जीव, ईश्वर, सृष्टि क्रम और वेद विषय पर तीन दिन तक संवाद होता रहा, स्वामी जी बड़ी योग्यता से उत्तर देते रहे। चौथे दिन ईसा का ईश्वर होना, मर कर जी उठना, फिर आकाश पर आरोहण करना, इत्यादि बातों पर स्वामी जी ने प्रश्न किये, इनका पादरियों से कोई उत्तर न बन पाया, कहते हैं बाद में किसी आक्षेप के कारण चिढ़कर पादरी शूलब्रेड़ ने स्वामी जी से कहा कि ऐसी बातों में आप कभी कारावास में चले जायेगें, स्वामी जी ने बड़ी गम्भीरता से मुस्कराते हुए कहा, सत्य के लिए कारावास कोई लज्जाजनक बात नहीं है। पादरी जी! मैं लोगों के डराने से सत्य को नहीं छोड़ सकता, ईसा को भी लोगों ने फांसी पर लटका ही तो दिया था।

सन् १८६७ में स्वामी जी कुम्भ के मेले पर पहुंचे, उन्होंने सप्त सरोवर पर "पाखण्ड खण्डिनी" पताका गाड़ दी, और उपदेश करना आरम्भ कर दिया, आज तक लोगों ने संन्यासी के मुख से मूर्त्तिपूजा का खण्डन श्राद्धों का निराकरण, अवतारों का अमूलकपन, पुराणों तथा उपपुराणों का काल्पनिक होना और पर्व स्नान, महात्म्य का मिथ्यात्व नही सुना था। उन्होंने कुम्भ के मेले पर साधु संन्यासियों को प्रभावित करने का यत्न किया, किन्तु निष्फल! उन्होंने सोचा कि, परोपकार एक महान यज्ञ है, यह यज्ञ तब तक सिद्ध न

होगा, जब तक इसकी पूर्णाहुति में सर्वस्व स्वाहा न किया जायेगा, स्वामी जी अपनी पुस्तकें कपड़े और पैसा दूसरों को देकर तन-पर राख-रमा एक कोपीन मात्र धारी मौनालम्बी हो गये।

सत्य मार्ग के पथिक ने यह पाठ पढ़ रक्खा था कि "मौनात् सत्यं विशिष्यते" मौन से सत्य अच्छा है। एक दिन एक मनुष्य ने स्वामी जी की कुटी द्वार पर यह वाक्य कहा—निगम कल्प तरो गलितं फलम् (वेद से भागवत उत्तम है) स्वामी जी ने यह वाक्य सुनते ही मौन तोड़ दिया और भागवत खण्डन आरम्भ कर दिया। इसके पश्चात् स्वामी जी प्रचार क्षेत्र में उतर पड़े, शास्त्रार्थ के क्षेत्र में उन्हें आशातीत सफलता मिली, स्वामी जी की शास्त्रार्थ पटुता को देखकर शंकराचार्य की याद आ जाती है। शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को करारी हार दी थी। स्वामी जी ने पौराणिकों, ईसाइयों, मुसलमानों तथा कई अन्य लोगों से शास्त्रार्थ किए और विजय पाई। इन शास्त्रार्थों के कारण ही ईसाईयों और मुसलमानों का प्रभाव घटा और हिन्दू विधर्मी होने से वच गए। १८६९ में स्वामी जी ने काशी में पौराणिकों से शास्त्रार्थ किया। यह शास्त्रार्थ सर्व प्रसिद्ध माना जाता है। इसमें पौराणिकों की हार हुई।

स्वामी जी ने पर मत खण्डन और वैदिक धर्म की स्थापना के कार्य को स्थायी रूप देने के लिए ७-४-१८७५ को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। जून १८७५ में स्वामी जी का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हुआ स्वामी जी ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (सारे संसार को आर्य बनाओ) का जयघोष दिया। उन्होंने हिन्दू धर्म से पतित होकर विधर्मी वन गए लोगों को पुन: वैदिक धर्म में लाने का आन्दोलन किया। इसके साथ ही विधर्मी लोगों को भी शुद्ध करने का सन्देश दिया।

सत्य मार्ग के पथिक के सामने सर्वदा सत्य का ही आदर्श रहा है। १८७९ में बरेली में स्वामी जी ने व्याख्यान देते हुए कहा—लोग कहते हैं कि सत्य का प्रकाश न कीजिए, क्योंकि कलक्टर कुपित हो जायेगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुंचायेगा। अजी! चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाय, हम तो सत्य ही कहेंगे।

इस प्रकार सत्य का प्रचार करता हुआ वैदिक धर्म का उपदेशक ३०-१०-८३ को असीम में विलीन हो गया।

महर्षि के हृदय की पुकार

(प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर)

महर्षि दयानन्द को सुधारक विचारक के रूप में ही जानने का यत्न किया गया है। भारतीय राष्ट्रीयता को उनकी देन का भी कुछ मूल्याङ्कन किया गया है। दार्शनिक के रूप में भी महर्षि को संसार के सन्मुख प्रस्तुत करने का कुछ यत्न किया गया है। खेद की वात है कि योगेश्वर दयानन्द को समझने का प्रयास नहीं किया गया। इस विषय पर कोई अच्छा ग्रन्थ भी नहीं मिलता। यह विषय गुणियों गवेषकों की बाट जोह रहा है। प्रभु भक्ति में लीन विद्वानों व महात्माओं को इस दिशा में लेखनी उठाकर विश्व पर कुछ उपकार करना चाहिए।

अपनी अल्पमति के अनुसार में इन पृष्ठों में इसी विषय पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न करूंगा। यद्यपि महर्षि का जीवन चरित्र, महर्षि के पत्र व महर्षि के समस्त ग्रंथ इस विषय में सहायक हैं तथापि मेरे विचार में इस विषय का आधारभूत ग्रन्थ तो ऋषिवर की प्यारी कृति आर्यभिविनय ही है। मैं इसे 'सुधार सिन्धु' कहा करता हूं। यह भक्ति की सरिता है। ईशोपासना के विषय पर ऐसी अनुपम पुस्तकें कम ही मिलेंगी। इस पुस्तक में ऋषि के अन्त:स्तल के दर्शन होते हैं। महर्षि के हृदय की पुकार एक-एक पृष्ठ पर मिलेगी।

दूसरा प्रयोजन :—महर्षि स्वयं इसकी भूमिका में इस ग्रंथ की रचना का प्रयोजन बताते हैं। ऋषि लिखते हैं (१) ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान (२)भक्ति (३) धर्मनिष्ठा (४) व्यवहारशुद्धि इत्यादि। ये चार प्रयोजन हैं इसकी रचना के। इनकी सिद्धि का क्या फल होगा? ऋषि लिखते हैं :—(१) नास्तिक और पाखण्ड मतों से मनुष्यों का बचाव (२) मनुष्य का उत्तम स्वभाव व व्यवहार। (३) जगदीश्वर की मनुष्यों पर कृपा जिससे दुष्टता तजकर सब श्रेष्ठता स्वीकार करेंगे।

ऋषि की कामना क्या थी :—महर्षि लिखते हैं, "यह मेरी परमात्मा से प्रार्थना है, सो परमेश्वर अवश्य पूरी करेगा।"

तनिक गम्भीरता से विचारें तो स्पष्ट है कि महर्षि ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराकर धर्मनिष्ठाः भक्ति एवं व्यवहार शुद्धि द्वारा मनुष्यों को उत्तम वना कर सबको ईश्वर की कृपा का पात्र बनाना चाहते थे। ईश्वर की कृपा तो सब मतावलम्वी चाहते हैं। ऋषि ईश्वर की कृपा का पात्र बनने के लिए व्यवहार शुद्धि पर विशेष बल देते हैं। अवैदिक मतों में सत्कर्मों पर कोई बल देता ही नहीं। वैदिक धर्म में ईशोपासना के लिए व्यवहार शुद्धि आवश्यक है। प्रभु पूजन का एक फल व्यवहार एवं आचार शुद्धि भी है। वह आस्तिक ही क्या जिसका आचरण ही ठीक न हो और वह उपासक ही क्या जिसमें उपास्य के गुण समाविष्ट न हो जाएं।

महर्षि दयानन्द केवल अनुमान प्रमाण अथवा शब्द प्रमाण से ही ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। वह योगी थे इसलिए बारम्बार ईश्वर के प्रत्यक्ष की बात करते हैं। ऋषि आर्याभिविनय की भूमिका में भी 'प्रत्यक्षादि प्रमाणों से परमात्मा का स्वीकार (आश्रय) करता, वही जन अतीव भाग्यशाली है", वाक्य में अपने विचार उद्‌गार एवं पुकार प्रस्तुत करते हैं। ऋषि ने यहां स्पष्ट लिखा है कि वही जन भाग्यशाली हैं जिन्होंने ईश्वर का आश्रय लिया है।

महर्षि आस्तिकता की अथवा उपासक की एक और भी पहचान बताते हैं। यह है ईश्वर की आज्ञा का पालन। जो इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता वह उपासक नहीं। उसने कोई सिद्धि प्राप्त नहीं की। अवैदिक मतों में तो सृष्टि-नियम तोड़कर (चमत्कारों से) व्यक्ति सिद्ध बनते हैं यहां नियम पालन से वड़प्पन है। यह अवैदिक मतों से आर्य धर्म का मौलिक भेद है। ऋषिवर आर्याभिविनय की भूमिका में लिखते हैं :—"सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध कभी नहीं हों, किन्तु ईश्वर तथा उसकी आज्ञा में तत्पर हो के इस लोक (संसार-व्यवहार) और परलोक (जो पूर्वोक्त-मोक्ष) इनकी सिद्धि यथावत् करें, यही सब मनुष्यों की कृत्य कृत्यता है।"

महर्षि अपने इस "सुधा सिंधु" में छप्पन बार परमेश्वर की कृपा का आह्वान करते हैं।

सम्भव है मेरी गणना में भूल भी रह गयी हो, यह संख्या छप्पन से अधिक भी हो सकती है। बाबू मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी ने जब ऋषि से कहा—

"मेरे मस्तिष्क को तो आपने मनवा लिया परन्तु मेरा हृदय अभी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता"।

तब ऋषि ने यही तो कहा था कि मैंने प्रश्नों का उत्तर देने का आश्वासन दिया था, हृदय को बदलने का नहीं।

यह तो ईश्वर की कृपा से ही होगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि भक्ति भाव का उदय भी ईश्वर की कृपा का फल है, क्या हम इस कृपा के पात्र हैं ?

ऋषि इस पात्रता पर बड़ा वल देते हैं, ऋषि ईश्वर को 'कृपा सागर' बताते हैं, । स्मरण रक्खें उसकी कृपा, उसकी दया उसके न्याय का दूसरा नाम है।

जैसे मानवीय माता के दो स्तन होते हैं, दोनों से निकलने वाला दूध बालक की पुष्टी का कारण बनता है। परमेश्वर की कृपा व न्याय भी उस माता के दो स्तन हैं।

ऋषि वारम्वार कृपा व न्याय की महिमा का गान व आह्वान करते है।

महर्षि तीन वार ईश्वर के कृपा कटाक्ष को पुकारते हैं। इसी ग्रन्थ में एक वार भगवान के करूणा कटाक्ष का भी आह्वान किया है, चार वार परम् पिता को सहाय के लिए पुकारा है, महाराज इस ग्रन्थ रत्न में आठ वार ईश्वर के अनुग्रह को पुकारते हैं, ऋषि का रोम-रोम मानो ईश्वर की कृपा का आह्वान कर रहा है।

साधक और सिद्ध योगेश्वर दयानन्द इसी ग्रन्थ में आर्त हृदय से नहीं अपितु, गद्‌गद् होकर परमेश्वर को मित्रता के लिए पुकारते हैं। गद्‌गद् होकर उपासना करने वाले ऋषि महर्षि ही हो सकते है, दुखियों की आरती तो हम नित्य ही सुनते है, ऋषि इसी ग्रन्थ में 'अखण्ड उपासना' की वात कहते हैं, 'अखण्ड उपासना' तो ब्रह्म ऋषि दयानन्द जैसे मुनियों का श्रृंगार है। ऋषिवर लिखते हैं,

"जो आपका मित्र और जिसके आप मित्र हो, उसको दु:ख क्यों कर हो"।

ऋषि दो बार "ईश्वर प्राप्ति की स्पर्धा" की बात कहते हैं। महर्षि क्षण भर भी परमात्मा के सुख स्वरूप से विमुख होने को असह्य समझते हैं। परमेश्वर हम पर भी कृपा करें, ताकि हम ऋषि की पुकार को समझकर अपने जीवन सुधार का अभियान चला सकें।

"हम सुधरेंगे=जग सुधरेगा"

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, यह कल्याण मार्ग है।

अमर विजेता

(ले० पण्डित चन्द्रसेन आर्य, वैदिक मिश्नरी, सोनीपत (हरियाणा)

आर्यसमाज के सुनहरी इतिहास में सैंकड़ों महात्माओं एवं विद्वानों का सुनहरी नाम पढ़ते हैं, कई विद्वान् ऐसे भी हुए जिन्होंने पचासों वर्ष प्रचार में लगाये, सैंकड़ों शास्त्रार्थ भी करते रहे।

कईयों ने तो शहीदी प्राप्त की, जिन पर सारे आर्य जगत को गर्व होता है। शहीदे अकबर मीर पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर, वीर-वर स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान, महाशय राजपाल जी, पं० रामचन्द्र जी कश्मीरी, बलिदानी, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, महात्यागी महात्मा हंसराज जी, मुनिवर पं० गुरुदत्त जी एम० ए०, देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी एम० ए०, १९३९ में हुए हैदरावाद दक्षिण के सत्याग्रह में ३६ बलिदानी आदि के कारण आर्यसमाज खूब चमका है, आज तक आर्यसमाजियों एवं आर्य विद्वानों ने वैदिक पताका फहराई, आर्यसमाज के वर्तमान युग के पुराने शास्त्रार्थ महारथी श्री ठाकुर अमर सिंह जी, आर्य पथिक वर्तमान महात्मा अमर स्वामी जी महाराज, जिन्हें यह अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। अरनियां जिला बुलन्द शहर उ० प्र० की अमर ज्योति, जिन्होंने सारा जीवन संघर्ष में बिताया, सैंकड़ों विरोधियों से शास्त्रार्थ किये, सदैव विजेता ही रहे, पौराणिकों के ठाकुर ने जो मन्दिर में बन्द पड़ा रहता है, क्या कमाल करना था, जो आर्यों के चलते-फिरते "ठाकुर" पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने कमाल करके दिखाया।

वैदिक विचारों की धाक बिठाई, भारत में आज जितने भी मतमतान्तर या सम्प्रदाय हैं, सबसे लोहा लेने वाले, हमारे नायक, अमर विजेता, पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी हैं। इनके सम्पर्क में जो भी आया वहीं ऋषि भक्त बन गया। प्रभु इस अमर विजेता को और गौरव व यशादि प्रदान करें। ताकि आने वाली पीढ़ी इनके कठिन परिश्रम एवं विद्वता से रोशनी ले सकें।

मैं समिति को बधाई देता हूं, जिन्होंने ऐसा सुन्दर कार्य किया है।

क़ुर्आन की अनुसन्धानात्मक कहानी उस की अपनी जबानी

(श्री देवप्रकाश जी भू. पू. आचार्य अरबी संस्कृत महाविद्यालय अमृतसर)

कुर्आन का अर्थ और ठिकाना

कुर्आन कराअतधातु से पढ़ने के अर्थ में आता है। (रूहुल्कुआ न्नजमुल्हसन कुर्आन मिनल्क़रजते (पढ़ना) या जिसमें सूरतें जमा है (मुन्तहिल्अव) कुर्आन पहले लौह महफूज में था यह लौह महफूज़ एक बहुत वड़ी तख्ती है जो खुदा के अर्स (तख्त) के दाई तरफ है यह सफेद मोती से वनी है और इसके किनारे सुर्ख याकूत के हैं यह महफूज की लम्बाई चौड़ाई आसमान और जमीन के वराबर है और शैतान से सुरक्षित है खुदा उसको देखता है।

तफसीर मजहरी पारा ३० पृ ३७१

तफसीर इब्ने कसीर में है कि खुदा प्रति दिन इसको तीन सौ साठ वार देखता है (पृ. ४७) (जलालैन पृ। ४१६)

लौह महफूज सातवें आसमान पर है। वहां से हजरत मुहम्मद साहिव के पास जिब्रील फरिश्ता के द्वारा उतारा गया।

कुर्आन के वहां से हजरत महुम्मद साहिब के पास पहुंचाने के लिये कई विभिन्न आयते कुर्आन में हैं उन सव को मिला कर व्याख्याकारों ने यह परिणाम निकाला है कि लोह महफूज से रमज़ान के महीने में कदर की मुवारिक रात्रि में इसे उतारा गया कि आयत में इस बात का उल्लेख नहीं है कि कहां उतारा गया यदि कुर्आन तोरेत की तरह एक बार ही दिया जाता तो कुछ स्पष्ट करने की बात नहीं थी क्योंकि कुर्आन व्याख्याकारों की सम्मति में वीस से पच्चीस वर्ष की अवधि में हज़रत मुहम्मद साहिव के पास पहुंचा अतः कुरआन् के व्याख्याकारों ने इसको स्पष्ट करने के लिए यह व्याख्या घड़ी। इब्ने अब्बास ने कहा कि कुर्आन सब का सब लौहे महफूज से रमजान मास की कदर रात्रि को आसमाने दुनिया के बैतुल्हज्जत में उतारा गया और वहां से आवश्क्तानुसार जिब्रील ने २० साल में हजरत मुहम्मद तक

पहुंचाया फिर इस में से जितना खुदा चाहता था उतना कायम रखता था बाकी भुला देता था (तफसीर मजहरी पारा २ पृ. ३३३)

आजमृतफासीर ने लिखा कि कुर्आन के उतरने में मुस्लिम विद्वानों में मत भेद हैं कुछ का कहना है कि एक वार ही लौह महफूज से आसमाने दुनिया पर उतार दिया गया कुछ कहते हैं कि इस रात उतरना आरम्भ हुआ,

आजमुत्तफासीर पारा २. पृ, ३२२ इब्नेकसीर पृ. २३

रूहुल्कुर्आन में लिखा है कि इब्ने अब्बास के कथनानुसार कुर्आन कुल का कुल एक बार लोहे महफूज में आ गया था फिर २३ साल की अवधि में जिब्रील ने हजरत मुहम्मद तक पहुंचाया (यहां आसमाने दुनिया पर आने का जिक्र नहीं, यह कुर्आन उतरने का सिलसिला पैगम्बरी की प्रथम घडी से लेकर हजरत मुहम्मद की मौत तक जारी रहा (रूहुल्कुर्आन पृ. ८) फिर आगे लिखा कि इसी कदर की रात में खुदा ने कुर्आन के उतरने का फ़ैसला कर के कुल का कुल लौह महफूज में कायम कर दिया (रूहुल्कुर्आन पृ. २) न तो आयत में और न इस पुस्तक में आसमाने दुनिया का उल्लेख है।

कुर्आन का कलाम किस का है

मौलाना सय्यद रहमत हुसैन लिखते हैं कि कुर्आन किस का कलाम है कुछ का कहना है कि कुर्आन के शब्द खुदा के हैं : जिन्हें लौह महफूज में लिख दिया था, जिसमें से जिब्रील खुदा की आज्ञा से थोड़ा थोड़ा हजरत मुहम्मद के पास लाते रहे जैसा कि कुर्आन ने कहा "कि यह कुर्आन मजीद है जो लोह महफूज में लिखा हुआ है। (तफसीर अनतारूल्कुर्आन) अब दो बात आपके सामने आई एक तो यह कि कुर्आन लौह महफज पृ १४) से आस्माने दुनिया पर आ गया और दूसरी यह कि लौह महफूज में ही कायम कर दिया अब एक आयत और कुर्आन में आई है "इन्नहु लिकौले रसूलिन करीम" अरब के लोग कहते थे कि कुर्आन शाहद और दीवान का कथन है इस के उत्तर में यह आयत कही गई कि कुर्आन किसी ऐसे वैसे का कथन नहीं वल्कि एक शक्तिमान जिब्रील का कथन है इस आयत ने तो सारा कुर्आन का कहा हुआ सिद्धान्त ही खतम कर दिया इस लिए कई एक ने कहा कि कुर्आन के शब्द जिब्रील के हैं और ज्ञान खुदा का है।

एक तीसरा मत और है जो इस आयत "नज्जला विहिरूहल्अमीन अला कल्बिका" अर्थात् अर्थों को जिब्रील ने तुम्हारे दिल में डाल दिया।

(अनवारूल्कुर्आन पृ० १४)

ऊपर लिखित दोनों आयतों के सम्बन्ध में लिखा कि यह कुर्आन काहन का कलाम नहीं अपितु खुदा के रसूल जिब्रील या हजरत मुहम्मद का कलाम हैं। आगे व्याख्या कार ने लिखा कि यहां जिब्रील और हजरत मुहम्मद का कलाम मजाजन कहा गया हम कहेंगे कि यहां आयतों का अर्थ साफ ओरे स्पष्ट है यहां मजाज का आश्रय लेने की कया आवश्यकता है परन्तु व्याख्या कार ने विना प्रमाण के ऐसे ही आयतों का समन्वय करने के लिये भ्रान्ति डाल दी कि जिब्रील और मुहम्मद की जुवान से लोगों को कुर्आन मिला इसे जिब्रील और मुहम्मद का कथन कहा गया यह केवल भ्रान्ति है इस में कोई तत्व नहीं। तफसीर इब्ने कसीर ने साफ इकरार किया कि आयत में रसूले कौम से मुराद हजरत मुहम्मद साहिव हैं और यह भी लिखा कि सूरत तकवीर इस की निस्वत उस रसूल की तरफ की गई है जो फरिश्तो में से हैं, फर्मान है अर्थात् यह कौल उस वजुर्ग रसूल का है जो शक्ति शाली और अर्श के मालिक के पास रहने वाला है और है भी वह अमानत दार उस से मुराद जिब्रील हैं (तफसीर इब्ने कसीर सूरत हाका पृ० ३२) इसी प्रकार इब्ने कसीर ने सूरतुन्नजम में भी साफ इककार किया कि यह कोले है और लिखा कि अल्लाह फरमाता हैं कि हजरत मुहम्मद के मुअल्लिम (पढाने वाले) हजरत जिब्रील हैं जैसा कि और जगह फरमाया कि यह कुर्आन एक प्रतिष्ठित और शक्ति शाली फरिश्ते का कांल है जो अश के मालिक के हां उत्कृष्ट और माना हुआ विश्वस्त है।

(तफसीर इब्ने कसीर सूरत नजम पृ २१)

अब एक बात जो एतिहासिक है वह यह कि कुर्आन की ऐसी वे मेल आयतो को देख कर ही इसलाम के एक बड़े खलीफा मामूं ने वड़ा कड़ा हुकम कुर्आन के विषय में निकाला कि कुर्आन भी खुदा की अन्य मखलूक की तरह मखलूक है (ज्ञान नही) इस के विषय में खलीफा मामूं ने बगदाद के शासक द्वारा वगदाद के मुस्लिम विद्वानों को पत्र लिखा कि उन की परीक्षा की जावे जो यह मानते है कि कुर्आन, कदीम है कुर्आन को खुदा ने बनाया है इस कारण कुर्आन खुदा की मखलूक है फिर खुदा ने कहा कि हम उन लोगों का हाल वयान करते है जो गुजर चुके हैं इस से कुर्आन मखलूक हैं अतः जो आलिम कुर्आन को मखलूक नहीं मानते उनको जमा किया जावे और उन को हमारा पत्र सुना दिया जावे और परीक्षा ली जावे कि कुर्आन के खलक (पैदा सुदह) और हदूस सीमित) के विषय में उनका क्या विचार है यदि वे खलके कुर्आन के कायल हो जावे तो ठीक अन्यथा उनसे कहा जाये कि अपने सिद्धान्त के

विषय में प्रमाण पेश करें, काजियों को भी यही आज्ञा दी जाये। आगे मामू ने पत्र में बड़े-बड़े विद्वानों के नाम लिखे है फिर लिखा कि यदि वह अपने मन्तव्य से तोवा कर लें और उसकी घोषणा कर दे मुआफ़ कर दिये जावें। यदि वह अपने मन्तव्य पर अडे रहें और कुर्आन को मखलूक कहना कुफर समझें तो उनके सिर काट कर हमारे पास भेज दो।

(तारीखल्खुलफा अल्लामस्यूती पृ० २०७)

इसी प्रकार मामू के पश्चात् अल्मुतासम खलीफा हुआ उसके विषय में भी तारीखल्खुलफा ने आगे लिखा कि उसने इस्लामके बहुत से विद्वानों के कतल किया और २२० हिजरी में इमाम अहमद बिन हबेल को कतल किया इस के वाद तीसरे खलीफा वासिक विल्लाह हुये उन्होंने भी वरावर इसी अमर को जारी रक्खा और अहमद बिन नजरूल्खजादे को अपने हाथ से कतल किया (तारीखुल्लफा पृ० २२८) कुर्आन ओरे हदीस तथा इतिहास के पूर्ण विद्वान जलालुद्धीन स्यतीं ने विशेष कर तफसीर इन्तिकान में कुर्आन के रहस्यों का दिग दर्शन कराया है जिससे कुर्आन को वहुत हद तक जानाजा सकता है। अब हम वहां से लिखते है कुर्आन का उतरना कि एक ही वार हुआ और वह आस्माने दुनिया के बैतुलइज्जत में लाकर रख दिया गया फिर जिब्रील उसे वन्दों के कलाम और अमलों के उत्तर में वीस तेईस और पच्चीस साल की अवधि में हजरत मुहम्मद तक लाया।

(तफसीर इतिकान नोअ १६ पृ० १०४-१०५)

जिब्रील ने लोह महफूज से याद कर लेने के बाद उसे उतारा यह बिलकुल नई वात है न खुदा ने जिब्रील के दिल में डाला न आस्माने दुनिया पर लाया गया जिब्रील ने लोह महफूज से ही याद कर के हजरत मुहम्मद को वतलाया अल्लामा सयती ने लिखा कि किसी विद्वान का कहना है कि लौह महफूज में कुर्आन के अक्षर कोह काफ पहाड़ के बराबर हैं और अर्थ ला मुतवाही हैं (२) जिब्रील विशेष कर अर्थों को उतारते थे और रसूलिल्लाह अर्थों को जान कर उन्ही को अरबी जुवान में ले आते इसी वात को पुनः दोहराया हैं। (३) जिब्रील ने रसूलिल्लाह पर अर्थों को ही डाला और बाद में अरबी भाषा में उस के भाव वतलाये, (तफसीरय इत्तिकन वौनी १६ पृ० ११४)

आगे वही फरिशता उतरने की पांच किस्में अल्लामा सपूती ने बताई हैं। (१) वही घण्टा की झन्झनाहट की आवाज की तरह आती थी (२) हजरत मुहम्मद के दिल में फरिश्ता कलामे खुदा की रूह फूक देता था (३)

फरिश्ता इनसानी शक्ल में आकर हजरत को खुदा का कलाम सिखाता था (४) फरिश्ता स्वप्नावस्था में आप के पास आता था (५) यह कि स्वयं खुदा जागृत अवस्था में हजरत से कलाम करता था (इस तफसीर इतिकाल नौ १६) पृ० ११७-११८ फैजवख्श एजन्सी फीराजपुर।

सबसे पहले कुर्आन हजरत के पास कैसे पहुंचा

हजरत मुहम्मदहिरा गुफा में थे कि एकाएकी फरिश्ता आया और उसने कहा कि पढ़ तो हजरत मुहम्मद ने कहा मैं पढ़ा हुआ नहीं तो फिर उस फरिश्ता ने पकड़ कर खूब दवोचा यहां तक कि मैं थक कर पसीना-पसीना हो गया, फिर दोवारा कहा कि पढ़ मैंने कहा मैं पढ़ा नहीं फिर उसने मुझे दवोचा यहां तक कि मैं घबरा उठा इसी प्रकार तीसरी बार कहा पढ़ मैंने वही उत्तर दिया फिर उसने मुझे अपनी बगल में लेकर खूब दबाया और जब मैं परेशान हो गया तो मुझे छोड़ कर कहा कि पढ़ "इक़राआ बिइस्मे रब्बके" (इत्तिकान नौं ७ पृ० ५७) पाठक वृन्द आपने इल्हाम होने का नाटक देख लिया जिस प्रकार एक देहाती छात्र को मास्टर मार-मार कर पढ़ाता है उसी प्रकार (मुहम्मद साहिब को फरिश्ता पढ़ा रहा है। मास्टर के पास तो पढ़ाने के लिए बाल शिक्षा होती है। मगर यह खुदा का फरिश्ता बिना किसी पुस्तक के ही पढ़ने को कह रहा है कौन इस तरीका को इल्हाम होना कहेगा सिवाय उन लोगों के जिन्होंने अपनी बुद्धि को और किसी व्यक्ति के अर्पण कर रक्खा हो।

कुर्आन की तरतीब और जमा

मौलाना सय्यद नजमुल्हसन ने अपनी किताब रुहुल्लकुर्आन में लिखा कि कुर्आन मजीद का तरतीबेनजूल के अनुसार जमा करना हजरत अली के सिवाय सर्वथा किसी के बस में न था इस बात का विश्वास सुन्नत जमाअत और शीआमत दोनों ने किया है जैसा कि अल्लामाए जलालुद्दीन स्यती ने अपनी पुस्तक इत्तिकान में लिखा है और अल्लमाए कलेनी की किताब उसूले काफी में मौजूद है हजरत अली के जमा किए कुर्आन के विषय में लिखते हैं कि वह तरतीबे नजूल के अनुसार लिखा गया था।

(उलुमूलकुर्आन जिल्द १ पृ० ५८ और पृ० ६३ मिश्री)

इस कुर्आन के विषय में मुहम्मद बिन सीरीन का यह कहना है कि यदि वह उलवी कुर्आन हम तक पहुंचता तो हम विद्या के एक बहुत बड़े जखीरे से लाभ उठाते होते परन्तु शोक कि वह कुर्आन हम तक पहुंचने न दिया गया (तारीखुल्खुलफा पृ० १९७ देहली से प्रकाशित)

आगे कुर्आन का जमा होना हैं

जब यमामा के युद्ध में कुर्आन को जानने वाले बहुत लोग मारे गये तो उमर ने खलीफा अबूबकर को कहा कि यदि यह कत्ल इसी प्रकार जारी रहा तो कुर्आन हमारे हाथ से जाता रहेगा मगर खलीफा ने कहा कि जिस काम को हजरत मुहम्मद ने नहीं किया उसको मैं कैसे करूं मगर उमर के बार-बार कहने पर अबूबकर मान गये फिर उमर ने जैद को कुर्आन जमा करने को कहा उसने भी वही बात कहीं कि जिस काम को हजरत मुहम्मद ने नही किया उसे मैं कैसे करूं अन्ततः जैद भी उमर के बार-बार कहने और समझाने से लिखने पर राजी हो गया और उमर की अध्यक्षता में कुर्आन को लिखा अबूबकर ने हुकम दिया कि उमर और जैद दोनों मस्जिद के द्वार पर बैठ जाएं और जो कोई किताब अल्लाह का कोई भाग पेश करे जब तक वह दो गवाह न लावे तब तक उसको न लिखा जाए (इस मार्ग से कितना कुर्आन छूट गया होगा इसका विश्वास किया जा सकता है) वह कुर्आन जैद ने विभिन्न पुर्जो हड्डियों और झल्ली आदि से लिखकर अबूबकर के दे दिया और अबूबकर के बाद उमर और उमर के बाद उसकी लड़की हफसा के पास बन्धा बन्धाया पड़ा रहा। (कुर्आन इज्म लेखक मौलाना गुलाम अहमद पृ० ४२) उस्मान का कुर्आन को जमा करना-हजरत हजीफा को अराक की विभिन्न किरातों ने बहुत घबरा दिया। जब वह वापिस मदीना आया तो उसने हजरत उस्मान को कहा कि आप इस समय कुर्आन की सुध लीजिए इससे पहले कि मुसलमान भी यहूद और नसारा की तरह कुर्आन में विरोध पैदा कर दें।

(कुर्आन इज्म पृ० ४३)

फिर इत्तिकान ने लिखा कि उस्मान के समय कुर्आन के अन्दर इस कदर विरोध हो गया कि जिसके कारण पढ़ने वाले बच्चों और पढ़ाने वाले लोगों में तलवार चल गई (तफखी इत्तिकान नौ १८ पृ० १६०) फिर विरोध के विषय में आगे लिखा कि उस समय पढ़ने में इतना विरोध पड़ गया कि प्रत्येक दूसरे को गलत बताने लगा और बात बढ़ जाने के कारण उस्मान ने कुरैश की भाषा में कुर्आन को लिखवा दिया (तफसीर इत्तिकान नौ १८ पृ० १६१) हजरत अली ने कहा कि उस्मान के लिए भली बात कहने के अतिरिक्त और कुछ न कहो क्योंकि उन्होंने मुसाहिफ (कुर्आन) में जो भी तबदीली और परिवर्तन किया है हमारी एक बड़ी जमाअत की राय से किया है (तफसीर इत्तिकान नौ १८ पृ० १६०)

इस वाक्य से स्पष्ट है कि हजरत अली और अल्लामा सपूती कुर्आन में परिवर्तन मानते हैं फिर लिखा कि उस्मान ने कुर्आन क्यों जमा किया इसलिए कि कुर्आन के पाठ में बहुत विरोध फैल गया था, यहां तक कि लोगों ने कुर्आन को अपनी-अपनी भाषाओं में पढ़ना आरम्भ कर दिया था और एक दूसरे को आपस में गलत वताते थे इस प्रकार बात बढ़ जाने से उस्मान ने कुआंन को कुरेशे की भाषा में लिखवाया (तफसीर इत्तिकान नौ १८ पृ १६१) अव खुदा की भेजी हफ्त करात सात प्रकार का पढ़ना खतम हो गया। जैद ने अपने साथियों के साथ कुर्आन को काज के टुकड़ों हड्डियों झिल्लयों लोगों के समक्ष और कई प्रकार के लोगों से जमा किया हम कहते हैं कि पहला कुर्आन जो अबूबकर सिद्धीक ने जमा किया था उसको ही क्यों न लिखकर वाहर भेज गया। वह एक वड़ै रहस्य की बात है लेखक तो दोनों का मुख्य रूप से जैदे ही था, जैद ने लिखा उससे थोड़ा पता लग जायेगा। और वह यह कि अली का कुर्आन और अबूवकर का कुर्आन इब्ने मसऊद "अवय्य विन काव" के कुर्आन धरे ही रहे और उस्मान का चल गया इसके लिये नीचे का थोड़ा बयान देखें।

इब्ने उमर ने कहा कि तुम में से कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मैंने पूरा कुर्आन प्राप्त कर लिया जब कि उसे यह मालूम ही नहीं कि पूरा कुर्आन कितना था क्योंकि कुर्आन में से बहुत सा भाग जाता रहा है। अखा बिन जबैर ने कहा कि आयशा ने फरमाया कि रसूलिल्लाह के समय सूरत हजाव दो सौ आयतों की थी, फिर जिस समय उस्मान ने कुर्आन लिखे तो उस समय यह वहुत थोड़ी सी रह गई उवय्य विन काव ने भी यही कहा कि अब यह सूरत अहजाव बहत्तर तेहत्तर आयतों की है फिर कहा 'सूरतरजम' (पथराओं करने की) थी वह भी अब नहीं हैं आगे तफसीर इत्तिकान ने बहुत आयते लिखी हैं जो पहले कुर्आन में थी मगर अब नहीं हैं (तफसीर इत्तिकान नौ० पृ० ६४-६५) फिर लिखा कि इब्ने अबी हातम ने अबी मूसा से रवायत की है एक वड़ी सूरत हम कुर्आन में पढ़ा करते थे जो अब कुर्आन में नहीं हैं आगे और भी आयते लिखी हैं (इत्तिकान पृ० ६०) यहां स्थान गुंजायश नहीं कि हम सबको लिखें अलखला और अलहफद दोनों सूरते कुर्आन में नहीं सूरत तौबा के विषय में भी ऐसा ही कहा जाता है दबिस्तान मजाहिब ने एक लम्बी सूरत जुन्नूरैन लिखी है जो अब कुर्आन में नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कुर्आन से अल्हमद और

अन्तिम दो सूरत कुर्आन से निकाल दी थी वह इनको कुर्आन में नहीं मानता यह अब्दुल्लाह बिन मसऊद वह है जिनकी तरफ संकेत करके हजरत मुहम्मद ने कहा था कि जिसने कुर्आन पढ़ना हो वह अब्दुल्लाह बिन मसऊद से पढ़े (कुर्आन इज्म पृ० ४७)

आगे लेखक ने कुर्आन की पहली अरबी का फोटो दिया है जो वर्त्तमान अरबी से सर्वथा भिन्न है उसमें न तो नुकते है न मात्रा है पृ० ४८।

आगे लेखक ने लिखा कि पांचवीं सदी तक अरबी की किताबत की दरुस्ती होती रही वहां तक कि जो इस समय हमारे सामने हैं। वह हुई कुर्आन इज्म पृ० ५२।

सूरतों की वर्तमान शृंखला

अल्लामा मुहम्मद अजमल खां एम. ए. ने लिखा कि सूरतों की वर्तमान तरतीब जो इस समय के छपे कुर्आनों में है वह ऐतहासिक नहीं और न यह कहा जा सकता है कि यह तरतीब स्वयं हजरत मुहम्मद साहिब की दी हुई हैं बहुत बड़ी संख्या मुस्लिम विद्वानों की इस बात को मानती है कि कुर्आन की वर्त्तमान तरतीब सहाबा के यत्नों का नतीजा है (कुर्आन इज्म पृ० ५६)

कुर्आन के लेखक की एक नई उपज

कुर्आन म कई स्थानों पर लिखा कि कुर्आन लोगों की शिक्षा के लिए है मगर विशेष रीति से लिखा कि कुर्आन की दो प्रकार की आयते हैं एक तो मोहकम और दूसरी मुतशाहब मोहकम वह अयते हैं कि जिन के अर्थ स्पष्ट है और वही पुस्तक की असल अर्थात जड़ हैं और दूसरी मुतशाहब आयतें है। जिन के अर्थों में शुबह है और जिन लोगों के दिलों में टेढ़ा पन है वह संदेह युक्त आयतों के पीछे पडते हैं...मगर कोई भी खुदा के सिवाय उन की वास्तविकता को नहीं जानता मगर जो इल्म (विद्या के पक्के लोग है वह कहते हैं कि हम इस पर ईमान रखते है कि यह सब खुदा की तरफ से है (तफसीर इत्तिकान) 'तफसीर मजहरी ने स्पष्ट वर्णन कर दिया कि इन आयतों का ज्ञान खुदा के सिवाय और किसी को नही (तफसीर मज़हरी पा ३ पृ० १७७ से १८२।

इस सिद्धान्त के खिलाफ

यहां तो यह बात कही कि कुर्आन की कुछ आयतें स्पष्ट है और कुछ शुबह डालने वाली हैं मगर (पारा ११ में कहा कितावुन ओहक्मत आयाते ही

इस का मतलब यह किया है कि सारा कुर्आन ही मोहकम (पक्का) है। (पाए ११ रकू ७) फिर इसके प्रतिकूल दूसरी आयत हैं (किताबम्मत शाबहम्ममानी पा. २३ रकू १७ इस का मतलब है कि सारा कुर्आन ही मुतशावह शुवह डालने वाला है (तफसीर इत्तकान भाग २ पृ १) आप ध्यान से देखें कि कुर्आन क्या कह रहा है मोहकम क्या है और मुतशाहब क्या है उस का उल्लेख तफसीर इत्तेकानने किया है उसका लिखना यहां आवश्यक है इत्तेकान ने कई तरह दोनों शब्दों को स्पष्ट किया है। (१) जिस की मुराद स्पष्ट तौर से या तावील के द्वारा जानी जा सके वह मोहकम हैं और जिस चीज़ का ज्ञान खुदा ने अपने ही लिये विशेष बनाया है जैसे क़यामत और दुज्जाल आदि का आक्रमन (२) जिस के अर्थ स्पष्ट हों वह मोहकम और जो इसके उलट हो वह मुतशाहबा के लिये तफ़सीर इत्तकान ने बहुत सी किस्में लिखी है मगर चौथी वह है कि जिस बात के अर्थ अक्ल में आते हैं वह मोहकम और जो बात इस के खिलाफ हो (बुद्धि में न आ सके) वह मुतशाहब है (तफसीर इत्तेकान भा० २) यह ऐसा क्यों लिखना पड़ा इस लिये कि चलते हुये समय में लोगों को असमजसं में डालने के लिये हजरत मुहम्मद ने ऐसी बाते कह दी जिनका सिद्ध होना असम्भव था जैसे कर्मों का तोल होगा कर्म तोलने के लिये बड़ी लम्बी चौड़ी तराजू होगी खुदा को आंखों से देखोगे इत्यादि इस लिये यह दो प्रकार की आयतें हैं। लिखा—

कुर्आन का अत्यन्त भ्रान्ति जनक विषय

वह है नासिख मनसूख अर्थात कुछ आयते कुर्आन से निरस्त कर के दूसरी आयते बदलना। भ्रान्ति यह है कि जो आयतें कुर्आन से निरस्त की हैं उन में कुछ तो निकाल दी गई हैं और कुछ कुर्आन में ही हैं वह उस समय की आयतें हैं जब इस्लाम कमजोर था वह बड़ी शान्ति प्रिय और प्रेम से भरी थी हमने उन सब आयतों की सूची कुर्आन परिचय भाग १ में लिखी है आप देखें केवल एक "आयते सैफ" ने एक सौ चौबीस आयतों को मनसूख (निरस्त) कर दिया (तफसीर इतिकान भाग-२ नौ ४७ पृ ६२)

कुर्आन की अनुचित घोषणा

एक आयत है पारा पहले में दूसरी आयत है पारा १५ रकू १० वह है कि कुर्आन के सदृश कोई आयत नही ला सकेंगे चाहे सब दुनिया के इन्सान और जिन्न भी मिल जावें हम कहेंगे कि सैंकड़ों आयते कुर्आन में लोगों की कही मौजूद हैं मगर मुसलमानों को वह नजर नहीं आती आमने सामने हज़रत

मुहम्मद और अन्य लोग बात चीत करते हैं और वह उनकी बात कुर्आन में लिखी है वह कहते है आयतें अरबी में हैं विस्तारभय में आयतें नहीं लिख रहे वह कहते है कि हजरत मुहम्मद को कि हम तुझ पर कभी भी ईमान नहीं लावेंगे यहां तक कि आप धरती से पानी के चश्मे भर दें जिन में कभी पानी कम न हो। या तेरे हेतु खुर्मे और अंगूरों का उद्यान हो और उनके मध्य पानी की नहरें जारी कर या हम पर तू आसमान को खण्ड २ कर डाल दे तू हम पर जैसा तू कहा करता हैं या ले आवे तू अल्लाह और फरिशतों को सामने या हो तेरे वास्ते एक सोने का घर या चढ़ जावे तू आसमान में और फिर भी हम नहीं मानेंगे तेरे चढ़ जाने को यहां तक कि उतार लावे हम पर किताब कि हम उस को पढ़े इत्यादि (पा. १५ रकू १०) अब इस अरबी के कुर्आन की अरबी में आप को कुछ अन्तर मालूम नहीं होता है यहाँ ही नहीं कई मुकामात पर अरब के लोग जो कहते हैं हू बहू उनका कलाम दर्ज है और कोई अन्तर परस्पर नहीं मगर फिर भी मुसलमान कहे जाते हैं कि कुर्आन जैसी आयत बना के लाओ, कुर्आन में शैतान का, फरिशतों का, विभिन्न पैंगम्बरों का कलाम बहुत दर्ज है वह खुदा का कलाम कैसे होगा वह तो उन के कलाम की सूचना देने वाला हो सकता है ऐसी सूरत में सब कुर्आन खुदा का कलाम मानना हठ धर्मी के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता हम ने कुर्आन परिचय भाग १ में जिन लोगों ने कुर्आन बनाया उनकी आयतों और कुर्आन की आयतों के नमूने भी दिये हैं कुर्आन बनाने वालो के नाम जिन्होंने अपने कुर्आन बनाये असवद अन्मी (१) तलैहा अमदी

(अइय्याऐ तलबीस पृ १६ से २६)

मुसैलया बिन कबीर, मुखतार इब्ने उबैद, सालिहा

(अइस्मए तलबीस पृ १०४ से १०६ तक)

इसके अतिरिक्त नज़र बिन हारस ने भी कुर्आन जैसी आयतें लिखी थी (तफसीर मजहरी पारा ७ पृ ८७)

यहां तक ही नहीं अपितु आजमुत्तफासीर में लिखा है कि नजर बिन हारस तो हजरत मुहम्मद साहिब के पीछे पीछे कहता फिरता था कि देखो मेरा कलाम अच्छा है या मुहम्मद साहिब का मजमुन लम्बा हो गया अत: खतम करते हैं।

मुसलमानों के विषय में

धर्मदेव विद्या वाचस्पति वर्तमान स्वा० धर्मानन्द जी स० मन्त्री सार्वदेसिक सभा श्री श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली

२५ दिसम्बर सन १९४३ ई० को कराची में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का जो अधिवेशन मि० मुहम्मद अली जिन्ना के सभापतित्व में हुआ उसमें सत्यार्थप्रकाश के उन समुल्लासों की जब्ती के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया जिनमें अन्य मतों के प्रवर्तकों को विशेषतः इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद पैगम्बर के विरुद्ध आलोचना की गई है। इस प्रस्ताव को मुस्लिम लीग के सामने रखते हुए लाहौर के प्रोफेसर मलिक इनायतुल्ला ने जो भाषण दिया उसका सारांश देहली के मुस्लिमलीगी अङ्गरेजी पत्र (डान) 'Dawn' के २७—२२—४३ के अङ्क में इस प्रकार दिया गया था—

Moving the resolution on 'Satyarth Prakash professor Malik Inayatullah of Lahore said that *since the beginning of Islam' Muslms had neuer made Offensiue remarks against and religion*·········Muslims could not tolerate any further the continuance in the book of Chapter 12, 13 and 14 which were condemned by Muslims all over India.

(Dawn 27-12-43)

अर्थात् इस्लाम के प्रारम्भ से मुसलमानों ने किसी धर्म के विरुद्ध अप्रिय वा दिल दुखाने वाली आलोचना नहीं की।······मुसलमान इस पुस्तक (सत्यार्थप्रकाश) में १२, १३, १४ समुल्लासों के जारी रहने को कभी सहन नहीं कर सकते जिनकी सारे भारत में मुसलमानों ने घोर निन्दा की है। इत्यादि।

प्रो० इनायतुल्लाह तथा अन्य मुसलमानों की यह बात कितनी असत्य है यह अरबी के सुप्रसिद्ध और भारत में अनुपम विद्वान् श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी द्वारा संकलित इस पुस्तक के पढ़ने से निष्पक्षपात पाठकों को भली भांति ज्ञात हो जायगी। कुरान की आयतों का जो अनुवाद इस पुस्तक में उद्धृत किया गया है वह डिपटी नजीर अहमद के उर्दू अनुवाद और सेल के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया है जिन्हें प्रामाणिक माना जाता है। सैयद अब्दुल्ला यूसुफ अली, रौलवेल आदि के अंग्रेजी अनुवाद तथा शाहरफीउद्दीन और मौ० शाहवली उल्लाह के उर्दू अनुवाद इन वाक्यों के इसी आशय के हैं।

पाठक देखेंगे कि मुसलमानों के मूल धर्मग्रन्थ कुरान में अन्यमतावलम्बियों के लिये कितनी कठोरता और असहिष्णुता द्योतक शिक्षाएँ दी गई हैं। सत्यार्थ-प्रकाश में महर्षि दयानन्दजी की ऐसी शिक्षाओं के सम्बन्ध में यह युक्ति युक्त आलोचना, कि

"अब देखिये पक्षपात की बातें कि जो मुसलमानों के मजहब में नहीं हैं उनको काफिर ठहराना. उनमें श्रेष्ठों से भी मित्रता न रखने और मुसलमानों में दुष्टों से भी मित्रता रखने के लिए उपदेश देना ईश्वर को ईश्वरता से वहिः कर देता है इससे यह कुरान, कुरान का खुदा और मुसलमान लोग केवल पक्षपात अविद्या से भरे हुए हैं।" (सत्यार्थप्रकाश २४वीं आवृत्ति १४ वां समुल्लास पृ० ३४९— ३५०) "अब देखिये महा पक्षपात की बात है कि जो मुसलमान न हो उसको जहां पाओ मार डालो और मुसलमानों को न मारना भूल से मुसलमानों को मारने में प्रायश्चित और अन्य को मारने से बहिश्त मिलेगा ऐसे उपदेश को कूप में डालना चाहिए।" (स० प्र० १४ समुल्लास पृ० ३५२) इत्यादि उचित ही प्रतीत होती है जिसका एक मात्र उद्देश्य उनके अपने शब्दों में मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य का निर्णय, हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या द्वेष, वाद विवाद और विरोध घटाना था न कि इनको वढ़ाना।" (१४ समुल्लास अनुभूमिका)

प्रो० इनायतुल्लाह का यह कथन कि इस्लाम ने प्रारम्भ से कभी अन्य मतों की अप्रिय वा कठोर आलोचना नहीं की यद्यपि कुरान की उन आयतों से सर्वथा खण्डित हो जाता है तथापि मुसलमानों की ओर से जो पुस्तकें आर्य (हिन्दू) धर्म की आलोचना में लिखी गई हैं उनमें से दो-तीन निम्न उद्धरण देना अप्रासङ्गिक न होगा। अलीखान साहेव कृत 'नियोग का भोग' नामक पुस्तक में जो गुलजार इब्राहीम प्रेस मुरादाबाद में छपी थी निम्न कविता है जिस पर टिप्पणी अनावश्यक है।

इस्लाम के डंके को आलम में बजा देंगे।
चोटी को कटा कर, दाढ़ी को रखा देंगे॥
अब दाढ़ियां रखवा लें, इज्जत जिन्हें रखना हो।
वरना राहे हस्ती से हम उनको मिटा देंगे॥
मां बहन भी जायज न हो जिस मजहब मिल्लत में।
हम तेल को छिड़केंगे आग उसमें लगा देंगे॥
उन वेदों की तालीम की, वक्त नहीं कुछ दिल में।
दुनिया से मिटा देंगे, मिट्टी में मिला देंगे॥

हों दुश्मने दीन लाखों, पर्वाह न करें 'हामी'।
हम गर्दनें पकड़ेंगे, कदमों पै गिरा देंगे॥

यह कितनी 'प्रिय' और 'कोमल' समालोचना है, पाठक स्वयं देखें तथा प्रो० इनायतुल्लाह इत्यादि इस पर विचार करें।

'रद्दे हिन्दू' नामक पुस्तक में जो सन् १९१३ में मुहम्मद फखरुद्दीन के प्रेस लखनऊ में छपी थी, आर्य हिन्दू मात्र के परम मान्य श्री रामचन्द्र जी, श्रीकृष्ण महाराज और परममान्या श्री सीता देवी जी के विषय में निम्नलिखित समालोचना है।

पृष्ठ २८—"राम और कृष्ण वगैरह कि जिनको तुम लोग अवतार समझते हो सव गुमराह और बद ख्याल थे।"

पृष्ठ ३१—सातवीं वजह यह है कि वो राम निहायत बेगैरत (निर्लज्ज) और बेशरम था कि अपनी जोरू सीता की हराम कारी (व्यभिचार) और बदमुआमलगी मालूम करके घर से निकाल दिया।

पृष्ठ ३३—अजब यह है कि कृष्ण जैसे बदजात जानी (व्यभिचारी) फसादी को अवतार समझते हो। क्या यह मालूम नहीं कि कृष्ण अहीर यानी ग्वाले का बेटा था।"

पृष्ठ ४९—राम की सीता उठा रावण ने लङ्का ले गया।
हाथ जब लागा पराया, सत कहां उसमें रहा॥
और कृष्ण अवतार कहते सो था राना नावकार।
उससा कोई दूसरा जानी न था बदकार वख्वार॥
जुएबाजी में दिया कीन, कौनसा जुए में हार।
चोर था और था उच्चक्का, चुप तो रह कुछ दम न मार॥

पृष्ठ ५४—कब तलक परस्तिश करे, सफदर तू कर अब मुख्तसर।
सच नहीं हिन्दू के सब, झूठे हैं सारे शास्तर॥

ऐसे ही 'तेरो फकीर वर गर्दने शरीर' (बदमाश की गर्दन पर फकीर की तलवार) 'शुद्धि के अड़ियल टट्टू पर ताजियाना' 'तलकीने मजहब' 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' 'शुद्धि तोड़' इत्यादि सैकड़ों मुसलमानों द्वारा अश्लील भाषा में लिखी हुई पुस्तकें हैं जिनके उद्धरण तक देना हमें अत्यन्त अप्रिय और अरुचिकर प्रतीत होता है। आशा है सब विचारशील सज्जन इस पुस्तक को ध्यान से पढ़कर सत्य को ग्रहण करेंगे।

●

कुर्आन् में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अतिकठोर, उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

(शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी)

(१) इजा लकुल्लजीन आमन् कालू आमन्ना, व इजा खलौ इला शयात्वी-निहिम् कालू इन्ना मअकुम् इन्नमा नःहनु मुस्तःजिऊन् ।

(सू० २ । रु० २ । आ० १४)

अर्थः—और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाचुके तो कहते हैं हम ईमान हैं ईमान ला चुके हैं, और जब तनहाई में, अपने शैतानों से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ (मुसलमानों को) बनाते हैं ।

(इस आयत में ईसाई और यहूदी विद्वानों को शयातीन कहा गया है)

(२) फइस्लम् तफ्अलू वलन् तफ्अलू फत्तकुन्नारल्लती, वकूदुहन्नासु वल् हि्जारतु, उअिद्दत् लिल् काफिरीन् ।

(सू० २ । रु० ३ । आ० २४)

(इस आयत में दोजख की आग का इंधन मूर्ति पूजकों और मूर्तियों को बताया गया है। यह आयत सत्यार्थ प्रकाश के १४ वे समुल्लास के खण्डन नं० ८ में आचुकी है) ।

सेल (Sale) साहब False gods and idols मुराद ली हुई फर्माते हैं देखो पृष्ठ ३ Foot Note).

(३) फ इम्मायातियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़मन् तबिआ हुदाया फला खौफुन् अलैहिम् वला हुम् यःजनून् ।

सू० २ । रु० ४ । आ० ३८)

वल्लजीन कफरू व कज्जवू बिआयातिना उलाइक अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून् ।

(सू० २ । रु० ४ । आ० ३९)

अर्थ :—अगर हमारी तरफ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुंचे (तो उस पर चलना क्योंकि) हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न

तो (किसी किस्म का) खौफ होगा और न वह आजुर्दा खातिर (दुःखित) होंगे।

और जो लोग ना फर्मानी करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायंगे वही दोजखी (नरक वासी) होंगे, और वह हमेशा २ दोजख में रहेंगे।

(इस आयत में कुर्आन् व मुअज्जात से इंकार करने वालों को और उनको झुठलाने वालों को) दोजख (नरक) में हमेशा के लिए रहने वाला बताया गया है।

(४) वइज् काल मूसा लिकौम्हि याकौमि ! इन्नकुम् ज्वलम्तुम् अन्फुसकुन् वितिखाजिकुमुल्इज्ल फतूबू बारिइकुम् फकतलू अन्फुसकुम्, जालिकुम् खैरुल्लकुम् अिन्द बाँरिइकुम्।

(सू० २। रु० ६। आ० ५४)

अर्थ :—और जब मूसाने अपनी कौम से कहा कि भाइयो ! तुमने बछड़े की पूजा के इख्तयार करने से अपने ऊपर बड़ा ही जुल्म किया तो (अब) अपने खालिक की जनाब में तोबा करो और (वह यह कि अपने लोगों के हाथों से) अपने तईं हलाक करो। जिसने तुमको पैदा किया है उसके नजदीक तुम्हारे हक में यही बिहतर है।

(इस आयत में बछड़े या गाय वगैरः की पूजा करने वालों को) बाजिबुल कत्ल (मारने योग्य) करार दिया है, जो हमेशा के लिऐ हिन्दू मुसलमानों में झगड़े का कारण है।

(५) व लिल् काफिरीन अजाबुम्मुहीन्।

(सू० २। रु० ११ आ० ९०)

अर्थ :—और मंकिरों के लिये जिल्लत का आजब है। (इस्लाम को न मानने वालों को भयंकर तिरस्कार होगा)

(६) मन् कान अदूवल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रसुलिही व जिब्रील व मीकाल फ इअल्लाह अदूवल्लिल् काफिरीन्।

(सू० २। रु० १२। आ० ९८)

इस आयत १४ वें समुल्लास के २१ वें खण्ड में आ चुकी है कि जो अल्लाह, फरिश्तों पैगम्बरों और जिब्राइल का शत्रु है अल्लाह भी ऐसे काफिरों का शत्रु है।

(७) इन्नल्लजीन कफरू वमातु वहुम् कुफ्फारुन् उलाइक अलैहिम् लअ्नतुल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मईन् । खालिदीन फीहा, लायु-खफ्फफु अन्हुमुल् अजाबु वलाहुम् युन्ज़रून् ।

(सू० २ । रु० १६ । आ० १६१)

अर्थः—जो लोग (जीते जी दीन हक से) इंकार करते रहे, और इंकार ही की हालत में मर गए यही है जिन पर खुदा की लानत और फरिश्तों की और आदमियों की सब की, हमेशा २ इसी (फिटकार) में रहेंगे, न तो उन (पर) से अजाब (दुःख) ही हलका किया जावेगा और न उनको (अजाब के बीच बीच में) मुहलत ही मिलेगी ।

(८) रसलुल्लजीन कफरू कमसलिल्लजी यन्अिकु बिमाला यस्मउ इल्ला दुआअंव्वनिदाअन्, सुम्म म् बुक्मुन् उम्युन् फहुम् लायअ्किलून् ।

(सू० २ । रु० २१ । आ० १७१)

"और जो लोग काफिर हैं (बुतपरस्ती वा मूर्ति पूजा में) उनकी मिसाल उस शख्श की सी है जो एक चीज के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुनती सुनाती खाक नहीं (तो उस का चिल्लाना) महज (वेसूद) बुलाना और पुकारना है (जिसका कुछ नतीजा नहीं बुतों पर क्या मुंहसर है यह लोग खुद भी) बहरे गूंगे, अन्धे हैं तो यह समझते (बूझते) कुछ भी नहीं ।

इस आयत में मूर्ति पूजकों की और उनकी मूर्तियों की हंसी उड़ाई गई है और दोनों को वहरे, गूंगे और अन्धे कहा गया है ।

(९) व मंय्यर्तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फयमुत बहुव काफिरुन् फ उलाइक हबितवत् अअ्मालुहुम् फिद्दुनिया वल् आखिरति, वउला-इक असहाबुन्नारि' हुम् फीहा खालिदून् ।

(सू० २ । रु० २७ । आ० २१७)

और जो तुममें अपने दीन से बरगश्ता (विमुख) होगा और कुफ्र ही की हालत में मर जायगा तो ऐसे लोगों का किया कराया (क्या दुनिया) और (क्या) आखिरत (परलोक) (दोनों) में अकारत और यही हैं दोजखी (और) वह हमेशा (हमेशा) दोजख (नरक) ही में रहेंगे ।

(१०) वमन् आ उलाइक असहाबुन्नार् ।

(सू० २ । रु० ३८ । आ० २७५)

और जो (मनाही हुए पीछे) फिर (सूद) ले तो ऐसे ही लोग दोजखी हैं और वह हमेशा दोजख ही में रहेंगे।

(११) इन्नल्लजीन कफरू लन् तुग्निय अन्हुम् अम्वालुहुम् वला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैआ, व उलाइकहुम् वकूदुन्नार।

(सू० ३। रु० २। आ० ९)

जो लोग (दीन इस्लाम से) मुंकिर हैं। अल्लाह के हां न तो उनके माल ही उनके कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद ही (उनके कुछ काम आयगी) ओर यही हैं जो दोजख के इंधन होंगे।

(१२) लायत्तखिजिल् मोमिनूनल काफिरीन औलियाअ मिन्दूनिल् मोमिनीन्, वमंय्यफ्अल् जालिक फलैस मिनल्लाहि फी शैइन् इल्ला अन् ततक् मिन् हुम् तुका:।

(सू० ३। रु० ३। आ० २७)

मुसलमानों को चाहिये कि मुसल्मानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनाएं, और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं, मगर (इस तदबीर से) किसी तरह पर उन (की शरारत) से बचना चाहो (तो खैर)

(यहां मौलवी मुहम्मद अली अन्य सब अनुवादकों ने Protectors की जगह Firends यही अनुवाद किया है)

(१३) फ अम्मल्लजीन कफरू फ उअज्जिबुहुम् अजाबन् शदीदन् फिद्दुनिया वल् आखिरति, वमालहुम् मिन्नासिरीन्।

(सू० ३। रु० ६। आ० ५५)

तो जिन्होंने (तुम्हारी नबुव्वत से) इंकार किया उनको तो दुनिया और आखिरत (दोनों में बड़ी सख्त मार देंगे और कोई उनका हामी व मददगार न होगा (कि उनको हम से बचाए)

(१४) वमंय्यब्तगि गैरल् इस्लामि दीनन् फलंय्युक्बल मिन्हु, बहुव फिल् आखिरति मिनल् खासिरीन्। (सू० ३ रु० ९। आ० ८४)

और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका यह दीन मक्बूल (स्वीकृत) नहीं और वह आखिरत में जियांकारों (टोटे वालों) में होगा, खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो (तौरात की पेशीनगोइयों (भविष्य वाणियों) से पैगम्बर-आखिरुज्जमां पर) ईमान लाए पीछे लगे कुफ्र करने।

उलाइक जजाउहुम् अन्न अलैहिम् लअ्‌ नतल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मओन्, खालिदीन फीहा, ला युखफ्फफु अन्हुमुल् अजावु वलाहुम् युन्ज्वरून् ।

(आ० ८६)

इनकी सजा यह है कि इन पर खुदा की और फरिश्तों की और (दुनिया जहान के) लोगों की सब की फिटकार, कि उसी फिटकार में हमेशा (हमेशा) रहेंगे, न तो (आखिरत में) इन से अजाव (कष्ट) ही हलका किया जावेगा और न उनको मुहलत ही दी जावेगी ।

इन्नल्लजीन कफरू वमातू वहुम् कुफ्फारुन् फलंय्युक्वल मिन् अहदिहिम् मिल् उल् अर्जि जहवंव्वल विफ्तदा बिही उलाइक लहुम् अजावुन् अलीमुंव्वमा लहुम् मिन्नास्विरीन् ।

(आ० ९०)

जो इस्लाम से मुंकिर हुए और इंकार ही की हालत में मर गए उनमें का कोई शख्स (कुर्रए) जमीन (की गोल) भर कर भी सोना मुआवजे में देना चाहे तो हर्गिज कुबूल नहीं किया जावेगा, यही लोग हैं जिनको दर्द-नाक अजाव होगा और (उस वक्त) उनका कोई भी मददगार न होगा ।

(१५) वली यः सवन्नल्लजीन कफरू अन्नमा नुम्ली लहुम् खेरुंल्लि अनुफुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लियज्दाद इस्मन्, वलुहुम् अजाबुम्मुहीन ।

(सू० ३ । रु० १८ । आ० १७७

और जो लोग (दीन इस्लाम से) इन्कार कर रहे हैं, इस खयाल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ उनके हक में बिहतर है, हम तो उनको सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह (पाप) समेट लें और (आखिरकार) उनको जिल्लत (तिरस्कार) की मार है ।

(१६) इन्नल्लजीन कफरू बिआयातिना सौफ नुस्लीहिम् नारन् कुल्लमा नज्मेवजत् जुलूदुहुम् बदल्लाहुम् जुलूदन् गैरहा लियजूकुल् अजाब, इन्नल्लाह-कान अजीजन हकीमा ।

(सू० ४ । रु० ८ । आ० ५६)

जिन लोगों ने हमारी आयतों से इंकार किया हम उनको (कयामत के दिन) दोजख (नरक) में (लेजा) दाखिल करेंगे, जब उनकी खालें गल जायेंगी तो हम इस गर्ज से कि अजाव (का मजा अच्छी तरह) चखें, गली हुई खालों

की जगह उनकी दूसरी (नई) खालें पैदा कर देंगे बेशक अल्लाह (बड़ा) जबरदस्त साहब तदबीर है।

(१७) इन्नल्लजीन कज्जबू बिआयातिना वस्तक्बरू अन्हा लातुफत्तहु लहुम् अब्वाबुस्समाइलला यद्खुलूनल् जन्नत हत्ता यलिजल् जमलु फी सम्मिल् खियात्वि, व कजालिक नज्जिल् मुज्रिमीन्।

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिए आसमान के दर्वाजे खोले जावेंगे और न बहिश्त ही में दाखिल होने पाएंगे यहां तक कि ऊंट सुई के नाके में से (होकर न) गुजर जाए, और मुज्रिमों (अपराधियों) को हम ऐसी ही सजा दिया करते हैं।

लहुम् मिन् जहन्नम मिहादुंव्वमिन् फौकिहिम गवाशिन्, व कजालिक नज्जिज्वालिमीन्।

(सू० ७। रु० ५। आ० ४०। ४१

कि उनके लिए आग का विछौना होगा और उनके ऊपर से आग ही का ओढना, और सरकश लोगों को हम ऐसी ही सजा दिया करते हैं।

(१८) लकद् कफरल्लजीन कालू इन्नल्लाह हुवल् मसीहुब्नु मर्यम्।

(सू० ५। रु० ३। आ० १७)

जो लोग कहते हैं कि मर्यम के बेटे मसीह वही खुदा हैं, कुछ शक नहीं कि यह काफिर हो गए।

(१९) याऐयुहल्लजीन आमनू लातत्तखिजुल्यहूद वन्नसारा औलियाअः बअ्-ज्जुहुम् औलियाउ बअ्ज्विन्, वमंय्यतवल्लहुम् मिन्कुम् फइन्नहुम् मिन्हुम्, इन्नल्लाह लायःदिल् कौमज्ज्वालिमीन्।

(सू० ५। रु० ८। आ० ५१)

डिपुटी नजीर अहमद का अनुवाद:—

मुसलमानो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ यह लोग तुम्हारी मुखा-लिफत में बाहम) एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में से कोई उनको दोस्त बनायगा तो बेशक वह (भी) उनही में का (एक) है क्यों कि खुदा (ऐसे) जालिम लोगों को राह (रास्त) नहीं दिखाया करता है।

(२०) व मंय्युशाक्किर्रसूल मिम् बअ्दि मातबैयन लहुल्हुदा व यत्तबिअ् गैरसबीलिल् मोमिनीन नुवल्लिही मातवल्ला वनुस्वलिही जहन्नम, वसाअत् मस्वीरा। (सू० ४। रु० १७। आ० ११५)

और जो शख्स राहे रास्त के जाहिर हुए पीछे पैगाम्बर से किनारा कश रहे और मुसलमानों के रास्ते सिवा (दूसरे रास्ते) होले तो जो (रास्ता) उसने इख्तयार कर लिया है हम उसको जहन्नम (नरक) में (लेना) दाखिल करेंगे और वह (वहुत ही) वुरी जगह है।

(२१) याऐयुहल्लजीन आमन् लातत्तखिज् आबाअकुम् व इख्वानाकुम् औलियाअ इनिस्तहब्बुल् कुफ्रा अलल् ईमानि, व मैंयतवल्लहुम् मिन्कुम् फउलाइक हुम्ज् ज्वालिमून्

(सू० ९। रु० ३। आ० २३)

अगर तुम्हारे बाप और भाई ईमान के मुकाबले में कुफ्र को अजीज रखें तो उनको (अपना) रफीक (मित्र) न बनाओ, और जो तुम में से ऐसे बाप भाईयों के साथ दोस्ती रखेगा तो यही लोग (हैं जो खुदा के नजदीक) ना फर्मान है।

(२२) फइजन् सलखल् अश्हुरुल् हुम् फक्तुलुल् मुश्रिकीन है. सु वजत्तुमूहुम् व खुजूहुम् वःसुरूहुम् वक् उदूलहुम् कुल्ल मरवंद्, फइन् ताबू व अकामुस्स्वलात व आतुज्जकात फरवल्लू सबीलहुम् इन्नाल्लाह गफरुर्रहीम्।

(सू० ९। रु० १। आ० ५)

फिर जब अदवके महीने निकल जाएं तो मुश्रिकीन (मूत्तिपूजकों या ईश्वररेतर पदार्थ के पूजकों) को जहां पावो कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो और उनका मुहासरा करो और हर घात की जगह उनकी ताक़ में बैठो फिर अगर वह लोग तोबा करें और नमाज पढ़े और जकात (धार्मिककर) दें तो उनका रास्ता छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बखशने वाला मिहरबान है।

(२३) याऐयुहल्लजीन आमन् इन्नमल् मुश्रिकून नज्सुन् फला यक्रबू मस्जिदल्ह राम बअ्द आमिहिम् हाजा, वइन्‌रिवफतुम अ लतत फसौफ युग्नीकुमुल्लाहुं मिन् फज्लिही इन् शाअ, इन्नाल्लाह अलीमुन् हकीम्।

कातिलुल्लजीन लायोमिनून बिल्लाहि वलाबिल् यौमिल् आखिरि वलां युहर्रिमून माह्रंमल्लाहु वरसूलुहू, वला यदीनून दीनल् हक्कि मिनल्लजीन ऊतुल् किताब हत्ता युअत्वुल्जिज्यत अय्यदिंव्वहुम् स्वागिरून्

(आ० २९)

मुसल्मानो मुश्रिक तो निरे गन्दे हैं तो इस बरस के बाद (अदब) व हुर्मत वाली मस्जिद (यानी खाने काबा) के पास भी न फटकने पावें। और (उनके

साथ लेन देन बन्द हो जाने से) तुम को मुफलिसी (गरीबी) का अंदेशा हो तो खुदा (पर भरोसा रखो वह) चाहेगा तो तुमको अपने फजल (अनुग्रह) से गनी (समृद्ध) कर देगा, बेशक खुदा (सबकी नीयतों को जानता (और) हिकमत वाला है।

अहले किताब जो न खुदा को मानते हैं (जैसा कि मानने का हक है) और न रोज आखिरत को और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न दीन हक को तस्लीम करते हैं मुश्रिकों के अलावा) इन (लोगों) से भी लड़ो यहां तक कि जलील होकर अपने हाथों से जजिया दें।

(२४) याऐ युहल्लजीन आमन् कातिलुल्लजीन यलूनकुम् मिनल् कुफ्फारि वल् यजिदू फीकुम् गिल्ज्वा।

(सू० ९। रु० १६। आ० १२३

मुसलमानों! अपने आस पास के काफिरों से लड़ो, और चाहिये कि वह तुम में करारापन मालूम करें। और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो उनसे डरते हैं।

(२५) उलाइकल्लजीन कफरू बिआयाति रब्बिहिम् वलिकाइही फहबित्वत् अअमालुहम् फलानुकीमु लहुम् यौमल् कियामति वज्ना। जालिक जजाउहुंम् जहन्नमु बिमा कफरू वत्तखजू आयाती व रुसुली हुंज्वन्।

(सू० १८। रु० १२। आ० १०५। १०६)

यही वह लोग है जिन्होंने अपने पर्वदिगार की आयतों को और उसके हुजूर में हाजिर होने को न माना तो उनके अमल अकारत हो गए, तो कयामत के दिन हम उनके (आमाल नेक) का (रत्ती बराबर) वजन (भी हिसाब में) कायम नहीं रखेंगे।

यह जहन्नम इनकी उस बद किरदारी का बदला है कि इन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैगम्बर की हंसी उड़ाई।

(२६) वजअलनल्अग्लाल फी अअ्नाकिल्लजीन कफरू।

(सू० ३४। रु० ४। आ० ३३)

और जो लोग (दुनिया में) कुफ्र करते रहे हम उनकी गर्दनों में तोक डाल देंगे।

(२७) वइन तअ् जब् फ अजबुन् कौलुहुम् अइजा कुन्ना तुराबन् अइन्ना लफी खल्किन् जदीदिन, उलाइकल्लजीन कफरू बिरब्बिहिम्, व

उलाइकल् अग्लाल् फी अअ्नाकिहिम् व उलाइक अस्हाबुन्नारि, हुम् फीहा ख़ालिदून् ।

(सू० १३ । रु० १ । आ० ५)

अर्थः— और (ऐ पैगम्बर) अगर तुम (दुनिया में किसी बात पर) आश्चर्य करो तो काफिरों का (यह) कहना भी आश्चर्य जनक ही है कि जब हम (गल सड़ कर) मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम को (फिर) नये जन्म में आना होगा यही लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वरदिगार (की कुदरत) का इन्कार किया और यही लोग हैं जिन की गर्दनों में कयामत के दिनों तौक (पड़े) होंगे और यही लोग हैं दौजखी कि यह दोजख में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ।

(२८) बल् ज़ुय्यिन लिल्लजीन कफरू मक्रुहुम् व स्वद्दू अनिस्सबील्, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फमा लहू मिन् हाद् लहुम् अज़ाबुन् फिल् हयातिद्दुनिया वल अज़ाबुल् आख़िरति अशक्कु, वमा लहुम् मिन-ल्लाहि मिन्वाक् ।

(सू० १३ । रु० ५ । आ० ३३ । ३४

अर्थः—बात यह है कि मुंकिरों को उनकी चालाकियां भली कर दिखाई और राह (रास्त) से रोक दिया, और जिसको खुदा गुमराह करे तो कोई उसका राह दिखाने वाला नहीं । इन लोगों के लिए दुनियाँ की जिन्दगी में (भी) अजाब है (और आखिरत में भी) और आखिरत का अजाब (दुनिया के अजाब से) अलबत्ता बहुत (ज्यादा) सख्त है ।

(२९) वस्तफतहू व खाब कुल्लु जब्बारिन् अनीद् । मिव्वराइही जहन्नमु वयुस्क़ा मिम्माइन् स्वदीद् । यतजर्रउहू वला यकादु युसीग़ुहू व याती-हिल् मौतु मिन् कुल्लि मकानिव्वमाहुव बिमय्यितिन्, व मिव्वराइही अज़ाबुन् ग़लीज़ ।

(सू० १४ । रु० ३ । आ० १५ । १६ । १७)

अर्थः—और पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफिरों का झगड़ा कहीं) फैसल हो चुके (चुनाचे उनकी ख्वाहिश पूरी हुई) और हर एक हेकड़ ज़िद्दी हलाक हुआ (यह तो दुनियां की सजा थी और) (उसके लिए) दोजख है और (वहां) उसको पीप का पानी पिलाया जायगा) कि उसको जबर दस्ती चुस्किया ले लेकर पीएगा और (फिर भी) उसको गले से न उतार सकेगा और मौत (है कि) हर तरफ से आती (हुई दिखाई देती) है और वह (फिर भी नहीं मरता, और उसको (और) अजाब सख्त (भी) दर पेश है ।

(३०) व जअलू लिल्लाहि अन्दादल्लियुज़िल्लु अन् सबीलिही, कुल् तमत्तऊ फइन्न मस्वीरकुम् इलन्नार् ।

(सू० १४ । रु० ५ । आ० ३०)

अर्थ:—और उन लोगो ने अल्लाह के मद्दे मुकाविल (दूसरे माबूद) खड़े किए हैं ताकि (लोगों को) उसके रास्ते से गुमराह करें, (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि खैर चन्द रोज दुनिया में) रस बस लो फिर तो तुम को दोजख की तरफ जाना ही है ।

(३१) इन्नल्लजीन या योमिनून बिआयातिल्लाहि ला यः दीहिमुल्लाहु वलहुम् अजाबुन् अलीम् ।

(सू० १६ । रु० १४ । आ १०४)

मन् कफर बिल्लाहि मिम् बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रिह वकल्बुहू बिल् ईमानि व लाकिम्मन् शरह बिल् कुफ्रि स्वद्रन् फ अलैहिम् गज्वबुम् मिनल्लाहि, वलहुम् अजाबुन् अजीम् ।

(सू० १६ । रु० १४ । आ० १०६)

अर्थ:—जो लोग (हेकड़ी और हठ धर्मी से) खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते खुदा भी उनको राहे रास्त नहीं दिखाया करता और (आखिरत में) उनको अजावे दर्द नाक (होना) है ।

जो शख्स (कुफ्र पर) मजबूर किया जावे मगर उसका दिल ईमान की तरफ से मुतमइन हो (उससे कुछ मुवाखजा नहीं लेकिन जो शख्स ईमान लाए पीछे खुदा के साथ कुफ्र करे और कुफ्र भी करे तो जी खोल कर तो ऐसे लोगों पर खुदा का गजब और उनके लिए बड़ा (सख्त) अजाव है ।

(३२) व इजा करातल्क़ुर्आन जअल्ना बैनक व बैनल्लजीन ला योमिनून ब्रिल् आखिरति हिजाबम्मस्तूरा । व जअल्ना अला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ्क़हूहु व फी आजानिहिम् वक्रा ।

(सू० १७ । रु० ५ । आ० ४५ । ४६)

अर्थ:—और (ऐ पैगम्बर) जब तुम कुरान पढ़ते होते हो हम तुम में और उन लोगों में जिन को आखिरत का यकीन नहीं एक गाढ़ा पर्दा (हायल) कर देते हैं (ताकि राहे हक न देख सकें) और उनके दिलों पर गिलाफ डाल देते हैं । ताकि कुरान को न समझ सकें और उनके कानों में (एक तरह की) गिरानी (पैदा कर देते हैं ताकि सुन न सकें) ।

(३३) व मंय्यःदिल्लाहु फहुवल् मुःतदि, व मंय्युज्वलिल् फलन् तजिद लहुम् औलियाअ मिन् दूनिही, व नःशुरुहुम् यौमल् क़ियामति अला वुजूहिहिम् उम्यंव्व बुक्मंव्व स्वुम्मा, मावाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा खबत् जिद्नाहुम् सओरां । जालिक जाजाउहुम् विअन्नहुम् कफरू बिआयातिना व कालू अइजा कुन्ना अिज्वामंव्वरुफातन् अइन्नल् मब्ऊसून खल्कन् जदीदा ।

(सू० १७ । रु० ११ आ० ६७ । ६८)

अर्थः—और जिसको खुदा हिदायत दे वही राहे रास्त पर है, और जिसको (वह) गुमराह करे तो फिर (ए पैगम्बर) ऐसे गुमराहों के लिए तुम खुदा के सिवा (दूसरे) मददगार (भी) नहीं पाओगे और कयामत के दिन हम उन लोगों को उनके मुंह के बल उठाएँगे अंधे और गूंगे और वहरे उनका (आखिरी) ठिकाना दोजख, जब भुजने को होगी हम उनके लिए (उस को) और ज्यादा भड़कावेंगे, यह (जहन्नुम इस लिए) उन की सजा है कि वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते, और (कयामत का होना सुन कर) कहा करते थे कि जब हम (मरे पीछे गल सड़ कर) हड्डियाँ और रेजा २ हो जायेंगे तो क्या हम आज सरे नौ पैदा करके उठा खड़े किए जायंगे ।

(३४) उलाइकल्लजीन कफरू बिआयाति रब्बिहिम् व लिकाइही फ हबित्वत् अअ् मालुहुम् फला नुकीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज्ना । जालिक जजाउहुम् जहन्नमु बिमा कफरू वत्तखजू आयाती वरुसुली हुजुवन् ।

(सू० १८ । रु० १२ । आ० १०५ । १०६)

अर्थः यही वह लोग हैं जिन्हों ने अपने पर्वर्दिगार की आयतों को और (कयामत के दिन) उसके हुजर में हाजिर होने को न माना तो इनके अमल अकारत हो गए, तो कयामत के दिन हम इन (के आमाले नेक) का (रत्ती वराबर) वजन (भी हिसाब में) कायम नहीं रखेंगे । यह जहन्नुम इन (की उस वद किरदारी) का बदला है कि इन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैगम्वरों की हंसी उड़ाई ।

(३५) अलम् तर अन्ना अर्सल्नश्शयात्वीन अलल् काफिरीन तउज्जुहुंम् अज्जन् । फला तअ्जल् अलैहिम्, इन्नमा नउद्दुलहुंम् अद्दन् । यौम नःशुरुल् मुत्तकीन इलर्रह्मानि वफ्दन् । व नसूकुलमुज्रिमीन इला जहन्नम विर्दन् ।

(सू० १९ । रु० ६ । आ० ८३ से ८६ तक

अर्थ:—(ऐ पैगम्बर) क्या तुमने (इस बात पर) नजर नहीं की कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह इनको उकसाते रहते हैं तो (ऐ पैगम्बर) तुम इन (काफिरों) पर (नुजूले आवाज की) जल्दी न करो हम इनके लिए (रोजे कयामत के आने के) वह (दिन) गिन रहे हैं जब कि हम पर्हेज-गारों को। (खुदाए) रहमान के (यानी अपने) हुजूर में महमानों की तरह जमा करेंगे, और गुनहगारों को प्यासे (ऊंटों की तरह जहन्नुम की तरह हांकेंगे।

(३६) वमन् अअ् रज्व अन् जिक्री फइन्नलहू मओशतन् ज्वन्कों व नःशुरुहू यौमल कियामति अअ्मा। काल रब्बि लिम हशर्तनी अअ्मा व कद् कुन्तु बस्वीरा। काल कजालिक अतत्क आयातुना फ नसीतहा व कजालिकल् यौम तुंसा।

(सू० २०। रु० ७। आ० १२४ से १२६ तक

अर्थ :—और जिसने हमारी याद से रूगर्दानी की तो उसकी जिन्दगी जीक में गुजरेगी और कयामत के दिन (भी) हम उस को अन्धा (करके) उठायेंगे, (वह) कहेगा ऐ मेरे पर्वरदिगार तूने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया और मैं तो (दुनियां में अच्छा खासा) देखता (भालता) था, (खुदा) फर्माएगा ऐसा ही (होना चाहिये था दुनियां में) हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खबर न ली. और उसी तरह आज तेरी (भी) खबर न ली जायगी।

(३७) वलकद् आतैना इब्राहीम रुश्दहू मिन् कब्लु वकुन्ना बिही आलिमीन्। इज् काल लिअबैहि व कौमिही मा हाजिहित्तमासीलुल्लती अन्तुम लहा आकिफून्। कालू वजद्ना आबाअना लहा आबिदीन्। काल लकद् कुंतुम् अतुंम व आबाउकुम् फी ज्वलालिम्मुबीन्। कालू अजेतना बिल्ह-क्कि अम् अन्त मिनल् लाअिबीन्। काल बल् रब्बुकुम् रःबुरसमावाति वल् अर्ज्विल्लजी फत्वरहुन्न, व अन अला जालिकुम् मिनश्शाहिदीन्। वतल्लाहि लअकीदन्न अस्वनामकुम्बअ्द अन् तुवल्लू मुब्दिरीन्। फ जअलहुम् जुजाजन् इल्ला कबीरल्लहुम् लजल्लहुम् इलैहि यर्जिऊन्। कालू मन्फअल हाजा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज्ज्वालिमीन्। कालू समिअ्ना फतँ मज्कुरुहुम् युकालु लहू इब्राहीम्। कालू फातू बिही अला अअयुनिन्नासि लअल्लहुम् यश्हदून्। कालू अअन्त फअल्त हाजा बिआलिहतिन या। इब्राहीम्। काल बल् फअलहू कबीरुहुम् हाजा फस्अलूहुम् इन् कान् यंत्विकून्। फरजअू इला अंफुसिहिम्

फकाल् इन्नकुम् अंतुमुज्जालिमून् । सुम्मनुकिसू अला रुऊसिहिम्, लकद् अलिम्त मा हाउलाइ यंत्विकून् । काल अफतअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि मालायं फउकुम् शैओं व ला यज्वुर्रुकुम्, उफ्फ़िल्लकुम् वलिमा तअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि, अफला तअ्किलून् ।

(सू० २१ । रु० ५ । आ० ५१ से ६७ तक)

कालू हर्रिकूहु वंसुरू आलिहतकुम् इन् कुतुम् फाइलीन् ।

(आ० ६८)

कुल्ना या नारु ! कूनी बर्दंव्वसलामन् अला इब्राहीम् ।

(आ० ६९)

अर्थ :—और इब्राहीम को हमने शुरू ही से फहमे सलीम अता की थी और हम उन (की सलाहियत) से (खूब) वाकिफ थे जब उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम (के लोगों) से कहा कि (यह) मूरतें जिन (की परिश्तश) पर तुम जमे बैठे हो यह हैं क्या चीज ? वह बोले हमने अपने बड़ों को इन ही की परस्तिश करते देखा है। (इब्राहीम ने) कहा कि वेशक तुम्हारे बड़े सरीह गुमराही में पड़े रहे, वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिललगी करता है, (इब्राहीम ने) कहा (दिल्लगी की बात नहीं) बल्कि आसमान व जमीन का पर्वदिगार है जिसने इनको पैदा किया (वही) तुम्हारा पर्वदिगार है और मैं इसका गवाह हूं, और (आहिस्ता से यह भी कहा कि) बखुदा तुम्हारे पीठ फेरे और गए पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ चाल करूंगा, चुंनाचे (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़ फोड़) टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर उनके बड़े (बुत को इस गरज से रहने दिया) कि वह उसकी तरफ रजू करें। (जब लोगों को बुतों के तोड़े जाने का हाल मालूम हुआ तो) उन्होंने कहा (अरे) हमारे माबूदों के साथ यह गुस्ताखी किसने की ? इसमें शक नहीं कि उसने बड़ा ही जुल्म किया, (बाज) बोले कि वह नौजवान (आदमी) जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है उसको हमने (बुराई के साथ) इन (बुतों) का तजकरा करते सुना है। (लोगों ने) कहा तो उसको (सब) आदमियों के सामने लाओ ताकि (जो कुछ जवाब दे) लोग (उसके) गवाह रहें। (गर्ज इब्राहीम बुलाए गए और) लोगों ने (उनसे) पूछा कि इब्राहीम क्या हमारे म़ाबूदों के साथ यह (हरकत) तूने की है ? (इब्राहीम ने) कहा, (नहीं) बल्कि यह (बुत) जो इन (सब) में बड़ा है उसने यह हरकत की (होगी), और अगर यह (बुत) बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो, उस पर लोग अपने जी में सोचें और (आपस में) लगे कहने कि बिला शुबह तुम ही

सरे नाहक हो, फिर अपने सरों के बल औंधे (इसी गुमराही में) ढकेल दिए गए और (इब्राहीम से बोले तो यह बोले कि) तुमको तो मालूम है कि यह (बुत) बोला नहीं करते। (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम खुदा के सिवा ऐसी चीजों को पूजते हों जो न तुमको कुछ फायदा ही पहुंचाएं और न तुमको (किसी तरह का) नुक्सान ही पहुंचाएं। तुफ् है तुम पर और उन चीजों पर जिनको तुम खुदा के सिवा पूजते हो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। (वह आपस में) लगे कहने कि अगर तुमको (कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आग में) जला दो और अपने माबूदों की मदद करो, (चुंनाचे उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया)। हमने (आग को) हुक्म दिया ऐ आग! इब्राहीम के हक में ठंडक और सलामती (की मूजिब) बन।

(३८) इन्नकुम् व मा तअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि हस्बु जहन्नम, अन्तुम् लहा वारिदून्। लौ कान हाउलाइ आलिहतम् मावरदूहा, व कुल्लुन् फीहा खालिदून्। लहुम् फीहा जफीरुंव्वहुम फीहा ला यस्मऊन्।

(सू० २१। रु० ७। आ० ९८। ९९। १००)

अर्थ :—तुम और जिन चीजों की तुम खुदा के सिवा परस्तिश करते थे (वह सब) दोजख का ईंधन बनोगे (और) तुम (सब) को दोज़ख में जाना होगा। अगर यह (तुम्हारे माबूद सच्चे) माबूद होते तो दोज़ख में न जाते, और (अब) तुम सबको इसी में हमेशा (हमेशा) रहना है। इन लोगों को दोजख में चिलवांस लगी होगी और वह (अपने चिल्लाने के गुल में) वहां (किसी दूसरे की बात भी) न सुन सकेंगे।

(३९) हाजानि खस्मानिख्तस्मू फी रब्बिहिम्, फल्लजीन कफरू कुत्त्वेअत् लहुम् सियाबुम् मिन्नारिन्, युस्बब्बु मिन् फौकि रुऊसिहिमुल् हमीम्। युस्हरु बिही माफी बुत्वूनिहिम् वल् जुलूद। व लहुम् मकामिउ मिन् हदीद्। कुल्लमा अरादू अंय्यख्रुजू मिन्हा मिन् गम्मिन् उईदू फीहा, वजूकू अजाबल् हरीक्।

(सू० २२। रु० २। आ० १९ से २२ तक)

अर्थ :—(दुनियां में) यह दो (फ़रीक़) हैं एक दूसरे के मुखालिफ (और) आपस में अपने पर्वरदिगार के बारे में झगड़ते हैं, (एक फरीक खुदा को मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग (खुदा को) नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े क़िता कराए गए हैं, (और वह उनको दोजख में पहनाए जायेंगे और) उनके सरों पर से खौलता हुआ पानी उंडेला जाएगा जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (यानी अंतड़ियां वगैर) और खालें (सब) गल

जायेंगी, और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज होंगे (जिनसे उनकी कोबाकारी की जायगी) (और दोजख के अन्दर) घुटे घुटे जब जब (उनका जी घबराएगा और) उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जाएंगे, और (उनको हुक्म दिया जायेगा कि आग में) जलने के अज़ाब (के मजे पड़े) चखा करो।

(४०) व बुर्रिजतिल् जहीमु लिल् गावीन। व कील लहुम् ऐनमा कुन्तुम् तअ्बुदून, मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्स्वुरूनकुम् औ यन्तस्विरून। फ कुब्किबू फीहा हुम् वल् गावून व जुनूदु इब्लीस अज्मऊन्।

(सू० २६। रु० ५। आ० ९१ से ९४ तक)

अर्थ :—और दोजख निकाल कर गुमराहों के सामने कर दी जायगी और उनसे कहा जायगा कि खुदा के सिवा जिन चीजों को तुम पूजते थे (अब) वह कहां हैं, क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते या (तुम्हारी तरफ से कुछ) इंतकाम ले सकते हैं, फिर वह (माबूद) और गुमराह लोग (जो उनकी परस्तिश करते थे) और शैतान के लश्कर सब के सब औंधे मुंह दोजख में ढकेल दिये जायेंगे।

(४१) इन्नाल्लाह लअ्नल् काफिरीन व अअद्द लहुम् सओरा, खालिदीन फीहा अबदा, ला यजिद्न बलीयंव्वलानस्वीर्। यौम तुकल्लबु वुजूहुहुम् फिन्नारि यकूलून अत्वअ् नल्लाह व अत्वअ् निर्रसूल्।

(सू० ३३। रु० ८। आ० ६४। ६५। ६६)

अर्थ : बेशक अल्लाह ने काफ़िरों को फटकार दिया है और उनके लिए धधकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है उसमें सदा को और हमेशा हमेशा रहेंगे, (और) न (किसी को अपना) हिमायती ही पायेंगे और न मददगार। (यह वह दिन होगा) जबकि इनके मुंह (सीख के कबाब की तरह दोजख (की) आग में उलट-पुलट किये जाएंगे और (अफसोस के तौर पर) कहेंगे कि ऐ काश हमने (दुनियां में) अल्लाह का कहना माना होता और (ऐ काश) हमने रसूल का कहना माना होता।

(४२) वल्लजीन कफरू लहुम् नारु जहन्नम, ला युक्ज्वा अलैहिम् फ यमूतू वला युखफ्फफु अन्हुम् मिन अजाबिहा, कजालिक नज्जी कुल्ल कफूर। वहुम् यस्त्वरिखून फीहा, रब्बना अख्रिज्ना नअमल स्वालिहन गैरल्लजी कुन्ना नअ्मलु, अवलम् नुअम्मिर्कुम् मायतजक्करु फीहि मन् तजक्कर व आजकुमुन्नजीरु, फजूकू फमा लिज्ज्वालिमीन मिन् नस्वीर्। (सू० ३५। रु० ४। आ० ३६। ३७)

अर्थ :—और जो लोग मुंकिर हैं उनके लिए दोजख की आग (तय्यार) है, न तो उनको कजा आती है कि मर रहें और न दोजख का अजाव ही उनसे हल्का किया जाता है, हम हर एक नाशुक्र को इसी तरह सजा दिया करते हैं। और यह लोग दोजख में (पड़े) चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे पर्वदिगार हमको (यहां से) निकाल कर फिर दुनियां में ले चल कि हम जैसे अमल करते रहते थे वैसे नहीं (वल्कि) नेक अमल करेंगे। (हम उनको जवाब देंगे कि) क्या हमने तुमको इतनी उम्रें नहीं दी थीं कि जिसको सोचना (मंजूर) होता वह इतनी उम्र में (अच्छी खासी तरह) सोच समझ लेता, और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारे अजाव से) डराने वाला (रसूल भी) पहुंचा, तो अव (अपने किए के मजे चखो कि नाफर्मान लोगों का (यहां) कोई मददगार नहीं।

(४३) लकद् हक्कल् कौलु अला अक्सरि फाहिस इलल अजकान हिम् ला योमिनून् । इन्ना जअल्ना फी अअ् नाकिहिम् अग्लालन् फहुम मुक्म हून् । व जअल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्वमिन् खल्फिहिम् सद्दन् फ अग्शैनाहुम् फहुम् ला युब्स्विरून् ।

(सू० ३६ रु० १ । आ० ७ । ८ । ९)

अर्थ :—इनमें से अक्सर पर से तो फर्मूदा (खुदा) पूरा हो चुका है तो यह (किसी तरह) मानने वाले नहीं, हमने इनकी गर्दनों में (भारी-भारी) तौक डाल दिये हैं और वह ठोड़ियों तक (फंसे हुए) हैं तो इनके सर (ऐसे) उलझकर रह गये हैं (कि इनको रस्ता दिखाई नहीं देता। और हमने एक दीवार (तो) इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे, और ऊपर से इनको दिया ढाँक तो यह देख ही नहीं सकते।

(४४) कुलिल्लाह अअ्बुदु मुख्लिस्वल्लहू दीनी, फअ्बुद् माशेतुम् मिन् दुनिही, कुल् इन्नल् खासिरीनल्जीन खसिरू अन्फुसहुम् व अःलीहिम् योमल् कियामति, अला ! जालिक हुवल् खुस्रानुल् मुबीनु लहुम् मिन् फौकिहिम् ज्वुलुम् मिनन्नारि व मिन् तःतिहिम् ज्वुलल्न्, जालिक युखव्विफुल्लाहु बिही अिबादहू, या अिबादि फ्त्तकून् ।

(सू० ३९ । रु० २ । आ० १५ । १६)

अर्थ :—(ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तो खुदा ही की फर्मा-वर्दारी मद्दे नजर रखकर उसी की इबादत करता हूं, (रहे तुम) सो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो, (तुम ही को उसका खमयाजा भुगतना पड़ेगा। ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कह दो कि फिल् हकीकत घाटे में वह लोग हैं जो

कयामत के दिन अपना और अपने अहलो अयाल का नुक्सान कर लेंगे। सुनो जी ! यही तो सरीह घाटा है उनके ऊपर से आग ही का उनका ओढ़ना होगा और उनके नीचे (आग ही का) बिछौना, यही (तो वह अज़ाब है) जिससे खुदा अपने बंदों को डराता है, तो ऐ हमारे बंदो ! हमारा ही डर मानो।

(४५) अल्लाजीन कज्जबू बिल् किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसुलना, फ सौफ यअ्लमून्। अअ् नामिहिम वस्सलासिल् पसुहबून इजिल्अग्लाल् युस्हबून, फिल् हमीमि, सुम्मफिन्नारि युस्जरून्। सुम्म कील लहुम् ऐन मा कुंतुम् तुश्रिकून, मिन् दूनिल्लाहि, कालू ज्जल्लू अन्ना बल्लम् नकुन्नदऊ मिन् कब्लु शैअन्। कजालिक युज़िल्लुल्लाहुल् काफिरीन्।

(सू० ४० । रु ०। आ० ७० से ७४)

अर्थ :—(यह) वह लोग (हैं) जो (इस) किताव (यानी कुरान को झुठलाते हैं और उन (किताबों और सहीफों) को (भी झुठलाते हैं) जो तुमने अपने (दूसरे) पैगम्बरों की मारफत भेजे हैं सो आखिरकार इनको (इस झुठलाने का नतीजा) मालूम हो जायगा। जब कि तौक इनकी गर्दनों में होंगे, और (तौकों के अलावा) जंजीरें (पानी पिलाने के लिए) घसीटते हुए उनको झुलसते हुए पानी में ले जायेंगे, फिर आग में झोंके जायेंगे, फिर इनसे पूछा जायगा कि खुदा के सिवा तुम जिन (माबूदों) को शरीक (खुदाई) ठहराते थे (अब) वह कहाँ हैं, वह कहेंगे (अब तो वह) हमसे खोए गए (कि कहीं नजर नहीं आते) बल्कि (असल बात तो यह है कि) हम तो (इससे) पहले (खुदा के सिवा) किसी (और) चीज की पूजा करते ही न थे, अल्लाह काफिरों को इसी तरह बदहवास कर देगा।

(४६) इन्नल्लाह युद्खिलुल्लजीन आमनू व अमिलुस्स्वालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु, वल्लजीन कफरू यतमत्तऊन व याकुलून कमा ताकुलुल् अन्आमु वन्नारु मस्वल्लहुम्।

(सू० ४७ । रु० २ । आ० १२)

अर्थ :—जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (भी) किए बिला सुबह उनको अल्लाह (बहिश्त के ऐसे) बागों में ले जा दाखिल करेगा जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और जो लोग मुंकिर हैं (दुनियाँ में बेफिक्री के साथ) रमते बसते और जिस तरह चार पाए खाते (पीते) है यह भी (अनाप शनाप) खाते (पीते) हैं, और इनका (आखिरी) ठिकाना दोजख है।

(४७) मुहम्मदुर्रसूलल् ल्लाहि, वल्लजीन मअहू अशिद्दाउ अलल् कुफ्फारि रुहमाउ बैनहुम् ।

(सू० ४८ । रु० ४ । आ० २९)

अर्थ ; मुहम्मद खुदा के भेजे हुए (पैगम्बर) हैं, और जो लोग उनके साथ हैं काफिरों के हक में बड़े सख्त (हैं मगर) आपस में रहम दिल ।

(४८) सुम्म इन्नकुम् ऐयुहज्ज्वाल्लूनल् मुकज्जिबून् । ल आकिलून मिन् शजरिम् मिन् जक्कूमिन्, फमालिऊन मिन्हल्बुत्बून, फ शारिबून अलैहि मिनल् हमीम् । फ शारिबून शुर्बल् हीम्, हाजा नुजुलहुम योमद्दीन्

(सू० ५६ । रु० २ । आ० ५१ से ५६ तक)

अर्थ : फिर ऐ गुमराहों ! (और कयामत के) झुटलाने वालो ! तुमको (दोजख में) थूहर का दरख्त खाना होगा और इसी से पेट भरना पड़ेगा फिर ऊपर से झुलसता हुआ पानी पीना होगा और पीना (भी) होगा (तो डकडका कर) प्यासे ऊंटों का सा पीना, कयामत के दिन यह उनकी ज्याफत होगी ।

(४९) लातजिदु कौमैंयोमिनून बिल्लाहि वल् यौमिल् आखिरि युवाद्दून मन् हाद्दल्लाह वरसूलहू वलौ कानू आबाअहुम् औ अब्नाअहुम् औ इख्वानहुम् औ अशीरतहुम्, उलाइक कतब फी कुलूबिहिमुल् ईमान व ऐयदहुम् बिरूहिम् मिन्हु, वयुद्खिलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु खालिदीन फीहा ।

(सू० ५८ । रु० ३ । आ० २२)

अर्थ :—(ऐ पैगम्बर) जो लोग अल्लाह और रोजे आखिरत का यकीन रखते हैं उनको तो तुम न देखोगे कि खुदा और उसके रसूल के मुखालिफों के साथ दोस्ती रखें, गो वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके कंबे ही के (क्यों न) हों यही (वह पक्के मुसलमान) हैं जिनके दिलों के अन्दर खुदा ने ईमान का नक्श कर दिया है, और अपने फैजाने गैबी से उनकी ताईद की है, और वह उनको (बहिश्त के ऐसे) बागों में लेजा दाखिल करेगा, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और (वह हमेशा) हमेशा उन्हीं में रहेंगे ।

(५०) याऐयुहन्नबीयु ! जाहिदिल् कुफ्फार वल् मुनाफिकीन वग्लुज्व अलैहिम्, वमा वाहुम् जहन्नमु, व बेसल्मसीर् ।

(सू० ६६ । रु० २ । आ० ९)

ऐ पैगम्बर काफिरों के साथ (हाथ से) और मुनाफिकों के साथ (जवान से) जिहाद करते रहो, और उन पर सख्ती रखो, और उनका ठिकाना दोजख है, और वह (बहुत ही) बुरी जगह है।

(५१) इन्नल्लजीन कफरू मिन् अःलिल् किताबि वल् मुश्रिकीन फी नारि जहन्नम खालिदीन फीहा, उलाइक हुम् शर्रुल् बरीयः।

(सू० ६८। रु० १। आ० ६)

अर्थ :—वेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जो लोग (दीने हक से इन्कार करते रहे (वह आखिरकार) दोजख की आग में होंगे (और) उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे, यही बदतरीन खलायक हैं।

ईश्वर भक्त

परमात्मा मेरे कर्मों का फल भुगा रहा है दुःख में भी मैंने यही समझा कि इससे बढ़कर उसकी दया और क्या होगी।

—बाबा अमर सिंह खेडी

मौत

शेरों की तरह मरों कुत्तों की मौत नहीं।

—ठाकुर यशपाल सिंह

मन्त्री आर्यसमाज

जब उदेशक समाज में भाषण देने देर से पहुंचते हैं तो मंत्री जी आँखें फाड़ फाड़कर देखते रहते हैं और उपदेश के बाद जब उपदेशक चलते हैं तो मंत्री आखें मूंद लेते हैं कैसी उल्टी रीति है।

—रामनाथ सहगल

गाय और कुरान

लेखक—महेशप्रसाद मौलवी आलिम फ़ाज़िल
अध्यक्ष—बनारस यूनिवर्सिटी, काशी

कुरान शरीफ में गौ की कुरबानी क्या आवश्यक बतलाई गई है ? खुदा को प्रसन्न करने के लिए (मुसलमानों के यहां) क्या यही मार्ग है कि वे लोग गाय अवश्य मारा करें ? क्या गौ-माँस की प्रशंसा कुरान शरीफ में की गई है अथवा गौ-माँस को स्वास्थ्य के निमित्त बहुत अच्छा बताया है जिसके कारण बहुतेरे मुसलमान लोग गाय मारा करते हैं ? इस प्रकार प्रश्न बहुधा लोग मुझसे पूछा करते हैं । इसलिए मैंने उचित समझा कि कुरान शरीफ में गाय के विषय में जो कुछ चर्चा हो, उसको यदि एक साथ एकत्र कर दिया जाय और सबके सम्मुख रख दिया जाय तो लोग स्वयं यह नतीजा निकाल लेंगे कि उक्त प्रकार के प्रश्नों का उत्तर कुरान से (जो कि समस्त मुसलमानों की दृष्टि में सर्वमान्य है) क्या मिलता है ।

कुरान के बाद जिन ग्रन्थों का आदर मुस्लिम जगत् में है वह 'हदीस' के नाम से विख्यात हैं किन्तु मैं कुरान के सिवा हदीस या किसी ग्रन्थ के आधार पर कुछ नहीं लिखना चाहता क्योंकि (कुरान के सिवा) अन्य सारे ग्रन्थों को समस्त मुसलमान पूर्ण रूप से ठीक नहीं मानते । उनके विषय में परस्पर बड़ा मतभेद है । परन्तु यह भी ज्ञात रहे कि कुरान में अनेक स्थान ऐसे भी हैं इतिहास की शरण लिए बिना काम ही नहीं चल सकता क्योंकि केवल कुरान के ही शब्दों से पूरा अर्थ नहीं निकलता । ऐसी अवस्था में मुझे भी इतिहास की शरण लेनी पड़ी है । इसके सिवा यह भी जान लेना चाहिए कि गाय सूचक शब्द कुरान की जिस आयत (वाक्य) में आया है मैंने उसके केवल थोड़े से ही भाग को देने में सन्तोष नहीं किया बल्कि उस स्थान से सम्बन्ध रखने वाले आगे-पीछे के पूरे वाक्य या वाक्यों को मैंने लिख दिया है ताकि लोग भली भाँति जान सकें कि कुरान में गाय के विषय में चर्चा क्या है ।

प्रथम स्थल :—

अरबी भाषा में प्राय: 'बकरतुन' अर्थात् 'बकर:' शब्द गाय और 'बकरन'

अर्थात् 'वकर' शब्द बैल के लिए आता है। सबसे पहली बात यह है कि कुरान की ११४ सूरतों (अध्यायों) में से दूसरी सूरत (अध्याय) में समस्त कुरान का बारहवाँ भाग है। उस भाग का नाम ही 'सूरतुल्वकर' या 'सूरः वकर' अर्थात् गाय-विषयक सूरत (अध्याय) है क्योंकि उस अध्याय में गाय का वर्णन विशेष रूप से है। अस्तु, सब से पहले कुरान के उसी अध्याय में गाय के विषय में यह आया है —

(वइज काला मूसा······लअल्लाकुम ताकलून)

भावार्थ—और जब मूसा✻ ने अपनी जातिवालों से कहा कि निस्सन्देह अल्लाह तुमको आज्ञा देता है कि तुम एक गाय मारो। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमसे हँसी करते हो? मूसा ने कहा, मैं अल्लाह की शरण चाहता हूं कि मैं अज्ञानी बनूं।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह गाय कौनसी है। इस बात को वह स्पष्ट रूप से हमें बतला दे। मूसा ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह कहता है। कि वह गाय ऐसी है कि न तो अभी बूढ़ी है और न अभी बछिया ही है। इन दोनों के बीच की आयु वाली है। अतः जो कुछ तुम्हें आज्ञा हुई है उसे पूरा करो।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह गाय किस रंग की है। मूसा ने कहा कि निसन्देह अल्लाह कहता है कि वह गाय पीली है और खूब पीली है यहाँ तक कि देखने वालों को उसका रंग बहुत सुन्दर मालूम होता है।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह कौन सी है। इस बात को वह स्पष्ट रूप से बतला दे। क्योंकि हमको एक ही रंग की कई गायें प्रतीत होती हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम निस्सन्देह ठीक मार्ग पर होंगे।

मूसा ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह कहता है कि वह एक गाय है न ऐसी सधी हुई है कि जमीन को जोतती है और न उससे खेती ही सींची जाती है। वह पूर्ण रूप से ठीक है। उसमें कोई धब्बा नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा!

✻लगभग ६ हजार वर्ष बीते कि हजरत मूसा साहब एक बड़े पैगम्बर हो चुके हैं। इनको न केवल मुसलमान ही बल्कि ईसाई व यहूदी लोग भी मनाते हैं। इनका हाल 'किससुल अंबिया' नामी उर्दू किताब में विशेष रूप से है—लेखक।

तूने अब हमें ठीक ठीक बताया है। इस पर उन्होंने उसको जिबह किया यद्यपि ऐसा करने के लिए वे तैयार न थे।

और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला और उस व्यक्ति के लिए तुमने झगड़ा किया क्योंकि उसके घातक का ठीक पता तुम्हें नहीं था किन्तु अल्लाह उस बात को प्रकट करने वाला है जिसको कि तुम छिपाते थे।

निदान हमने कहा कि उस मृतक को गाय के किसी टुकड़े से मारो। (ऐसा करने पर वह मृतक जी उठा।) इसी प्रकार अल्लाह मृतकों को जिलाता है अथवा जिलावेगा। और अपने शक्ति के चिन्हों को दिखाता है ताकि (सब कुछ) तुम्हारी समझ में आवे ॥—सूर: बकर, आयत ६६-७२

गाय क्यों वध कराई गई थी? इस बात की बाबत अनेक मुसलमान लेखक ही लिखते हैं कि एक यहूदी ने अपने एक सम्बन्धी को मार डाला था। कोई व्यक्ति कुछ पता न चला सका, इस कारण लाश को दूर रख आया। मृतक के मित्रों ने हजरत मूसा साहब के समीप कुछ अन्य लोगों को दोषी ठहराया। उन लोगों ने इन्कार किया। अपराधी का पता चलाने के लिए अल्लाह ने आज्ञा दी कि एक गाय मारी जाय। अतः गाय मारी गई। फिर उस गाय के एक भाग से मृतक को मारा। वह जी उठा और अपने घातक का पता देकर फिर मर गया।

(दूसरा)

कुरान में दूसरा स्थान (जहाँ गाय का वर्णन है) सूरतुल् अन्आम या सूर: अन्आम अर्थात् पशु-विषयक अध्याय है। यह कुरान में छठा सूर: (अध्याय) है। इसमें आया है—

(व मिनल् अन्……कौमज्ज़ालिमीन)

भावार्थ– और पशु दो प्रकार के हैं, एक वह जो लादने में समर्थ हैं और दूसरे जो छोटे-मोटे हैं। हे लोगो! जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसे खाओ। और शैतान का अनुकरण न करो क्योंकि वह निस्सन्देह खुले-खजाना तुम्हारा वैरी है।

आठ जोड़े अल्लाह ने पैदा किये हैं। भेड़ में से (एक भेड़ा व एक भेड़ी) दो, और बकरी में से (एक बकरा व एक बकरी) जो दो हैं। कह (हे मुहम्मद)* कि अल्लाह ने (तुम्हारे लिए) भेडा और बकरा को हराम किया

*कुरान हजरत मुहम्मद साहब के द्वारा लोगों को मिला है। अतः कुरान के अनेक स्थानों में पाई जाती है कि जहाँ अल्लाह ने हजरत मुहम्मद साहब से कहा है कि तुम अमुक बात लोगों से पूछो या अमुक बात लोगों से कह दो—लेखक

है या भेड़ी और बकरी को या उस (बच्चा) को जो बकरी या भेड़ी के पेट में हो यदि (लोगों !) तुम्हारी बात ठीक है तो उसे बताओ।

ऊंट में से (एक ऊंट व एक ऊँटनी) दो, और गौ में से (एक गाय व एक बैल) जो दो हैं। कह (हे मुहम्मद !) कि अल्लाह ने ऊँट व बैल को हराम किया है या ऊँटनी व गाय को या उस (बच्चा) को जो गाय या ऊँटनी के पेट में हो। क्या तुम साक्षी थे जब अल्लाह ने ऐसा किया था ? अतः उससे बढ़कर अत्याचारी और कौन है जो झूठी बात को अल्लाह के सिर मढ़ता है ताकि लोग बिना सोचे विचारे भटके। सच तो यह है कि अल्लाह अत्याचारियों को ठीक मार्ग पर नहीं लाया करता।—सूरः अन्आम, आयात १४३ १४५

मुसलमानी धर्म के जन्म से पहले अरब में नाना प्रकार के टुकड़े प्रचलित थे। अतः अरब लोग भेड़, बकरी, ऊँट और गाय में से किसी अवस्था में किसी के नर को व किसी समय किसी की मादा को और किसी दशा में (उक्त पशुओं में से) किसी पशु के बच्चे को हलाल या हराम समझते थे। उनका ऐसा समझना उचित नहीं था। इस कारण उनके उक्त रीति व रिवाज का ऊपर सर्वथा खण्डन है और उनके विचारों की निन्दा की गई है।

(तीसरा)

गत अध्याय में जहां गाय की चर्चा है उसके निकट ही फिर गाय का वर्णन इन शब्दों में है:—

(व अल्लजीना हादू······व इन्नाल सादिकून)

भावार्थ—और जो लोग यहूदी हैं उन पर हमने (अल्लाह ने) प्रत्येक नाखूनवाले पशु को हराम किया है। और गाय व बकरी दोनों की चरबी हमने हराम की है किन्तु वह चरबी जो उनकी पीठ पर लगी हो अथवा अँतड़ियों पर या हड्डी में से मिली हो, हमने उसको उनके लिए हराम नहीं किया। यह सजा हमने उन्हें उनके द्रोह के कारण दी है और निस्सन्देह हम सच्चे हैं—सूरः अन्आम, आयात १४७

यहूदी लोग मिस्र में दास थे। हजरत मूसा साहब के उद्योग से छूटे। किन्तु उन्होंने हजरत मूसा की आज्ञा का पालन न किया। इस पर खुदा ने आज्ञा दी कि यह सब एक काफी समय तक अपना जीवन जङ्गल में व्यतीत करें। ऐसी अवस्था में दूध दही ऐसे भोजन के हेतु और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के निमित्त पशु उनके लिए बड़े उपयोगी और आवश्यक थे। इस कारण अल्लाह ने पशु हराम कर दिये थे ताकि उपयोगी पशुओं के मारे जाने की नौबत ही न आवे।

कुरान शरीफ में बारहवाँ सूरः यूसुफ है जिसमें अन्तिम बातें गौविषयक बातें हैं और इसमें सन्देह नहीं कि गाय के विषय में अब जो कुछ आवेगा वह गाय के मारने या खाने की बाबत नहीं है किन्तु मैं चाहता हूं कि कुरान में गाय के विषय में चाहे किसी प्रकार का वर्णन हो, वह सब का सब लोगों के सम्मुख रख दिया जावे। इस कारण निम्नलिखित बातों को लिख रहा हूं:—

(चौथा)

(व कालल् मलिकों······लअल्लहम् यालमून)

भावार्थ—मिस्र देश के बादशाह ने कहा कि मैंने स्वप्न में देखा कि सात मोटी गाये सात दुबली गायों को खाती हैं और सात हरी बाले सात सूखी बालों को भी। हे दरबार वालो! मेरे स्वप्न को बताओ यदि तुम स्वप्न पर विचार कर सकते हो।

दरबारवालों ने उत्तर दिया कि यहाँ भिन्न विचार हैं और हम स्वप्न के विचारने में समर्थ नहीं।

बादशाह का एक नौकर जो हजरत यूसुफ साहब के साथ बन्दीखाना में था, जिसका स्वप्न हजरत यूसुफ ने ठीक-ठीक विचारा था, वह बादशाह के पास था। उसे हजरत यूसुफ साहब चिरकाल के बाद याद आये। उसने आप बादशाह से कहा कि आपको मैं स्वप्न का ठीक अर्थ बता सकता हूँ। अतः मुझे बन्दीखाना में हजरत यूसुफ के पास जाने दीजिये जिन्होंने कि मेरा स्वप्न ठीक से विचारा था।

हे यूसुफ! तुम स्वप्न के विचारने में सच्चे हो। अपना मत इस स्वप्न के लिए प्रकट कीजिए कि सात मोटी गायें सात दुबली गायों को खाती हैं और सात हरी बाले सात सूखी बालों को भी। इसका ठीक अभिप्राय बताइए कि लोग समझ सकें। - सूरः यूसुफ, आयत ४३-४६

हजरत यूसुफ साहब का काल हजरत मूसा से भी कुछ पहले का है। यह भी एक पैगम्बर थे। यह बड़े सुन्दर थे। इनके भाइयों ने इन्हें जंगल के कुएँ में डाला, पर इनको सौदागर कुएँ से निकालकर मिस्र में ले गया। वहाँ वह बादशाह के सचिव के दास बने। सचिव की स्त्री ने इन पर झूठा कलंक लगाया। यह जेल में डाले गये। वहाँ बादशाह के दो कैदी नौकरों का स्वप्न आपने बहुत ही ठीक विचारा। उनमें एक बादशाह का फिर नौकर बना।

बादशाह ने उक्त स्वप्न देखा। कोई विचार न सका। नौकर जो कैद से छूटकर आया था उसने हजरत यूसुफ की बाबत और अपने स्वप्न की

बावत बादशाह को बताया। इस पर बादशाह ने नौकर को हजरत यूसुफ साहब के पास भेजा। उन्होंने स्वप्न का ठीक ठीक अभिप्राय बताया। बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ और अन्त में एक दिन यह नौबत पहुंची कि वह स्वयं बादशाह हुए। इनका भी हाल उर्दू के "किससल् अंबिया" में विस्तारपूर्वक है।

(१) बकर शब्द का अर्थ है—बैल। बकर शब्द का समस्त कुरान में तीन बार प्रयोग हुआ है। (क) दूसरी सूरत बकर की आयत ७० में, (ख) छठी सूरत अन्आम की आयत १४५ और १४७ में एक एक बार।

(२) बकरः या बकरत का अर्थ है—गाय (अथवा बैल)। बकरः शब्द समस्त कुरान में चार बार आया है। दूसरी सूरत बकर की आयत ६७, ६८, ६९ और ७१ में से प्रत्येक में एक बार।

(३) बकारत शब्द बकरः का बहुवचन है। अर्थ है—गायें। बारहवीं सूरत यूसुफ की आयत ४३ व ४६ में एक-एक बार अर्थात् समस्त कुरान में बकराम शब्द दो बार आया है।

कुरान में गाय के विषय में क्या है—इस बात का ज्ञान उक्त शब्दों के सहारे अँगरेजी अनुवादों द्वारा भी सुगमता के साथ जाना जा सकता है।

किसी-किसी कुरान या उसके अनुवाद में आयतों की संख्या गणना के अनुसार कुछ भिन्न ठहरती है। ऐसी दशा में संभव है कि आयतों की जो संख्यायें ऊपर लिखी गई हैं वह एक या दो अधिक या कम हों। ●

पति पत्नी सन्तुष्ट रहें

सन्तुष्टो भार्या भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्रवै ध्रुवम्॥

(मनु० ३।६०)

जिस कुल में पत्नी पति से तथा पति पत्नी से सन्तुष्ट रहता है वहां सदा कल्याण ही होता है।

जीना है तो

जीना है तो आर्यसमाज में आ, शुद्धि का तराना शौक से गा।
है ज्ञान इधर अज्ञान उधर, खुद बन ओरों को आर्य बना॥

—रामचन्द्र देहलवी

महर्षि दयानन्द कहां और कब !

महेश प्रसाद, मौलवी आलिम फाजिल
हिन्दू यूनिवर्सिटी काशी

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने लगभग २२ वर्ष की आयु (सं० १९०३ वि०) में सदैव के लिये गृह-त्याग किया। सं० १९४० वि० में स्वर्ग-लोक सिधारे। इस काल के वीच में ढाई-तीन वर्ष मथुरा में रहे। निदान लगभग ३५ वर्ष उनके ऐसे वीते हैं जिसमें उन्होंने प्रायः यात्रा ही की और बहुत से स्थानों में पहुँचे। किन्तु निश्चित रूप से जिन स्थानों पर उनके पहुँ-चने का पता चलता है उनकी संख्या (२०० दो सौ) से भी कम ही है। ऐसे स्थानों में से अनेक वह हैं जहाँ पर उनका ठहरना वहुत कम समय तक हुआ था और अनेक ऐसे हैं जहाँ पर उनका ठहरना कई मास से भी कहीं अधिक हुआ है। फलतः उक्त प्रकार के सारे स्थानों में जिस क्रम से उनका आगमन व प्रस्थान निर्धारित किया जा सका है उसी के अनुसार उन स्थानों का नाम तथा वहाँ के आगमन व वहाँ से प्रस्थान का समय विक्रमी संवत् के अनुसार दिया जा रहा है।

अव उक्त विषय के सम्बन्ध में इन बातों को भी जान लेना चाहियेः—

१—जिस स्थान में श्री महाराज जी का पधारना केवल एक बार हुआ है उस स्थान के पूर्व कोई अंक नहीं लिखा गया और जिस स्थान में एक से अधिक वार पधारना हुआ है उसके पहले अंक लिखे गये हैं जिनसे उस बार का पता लगेगा जिस बार वहाँ पर पधारना हुआ है। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि काशी के पूर्व जहाँ अंक ४ लिखा है वहाँ अर्थ यह है कि चौथी बार काशी में पधारना हुआ। परन्तु जिस अंक के पूर्व ऐसा × चिन्ह दिया गया है उससे समझना चाहिये कि इसके पश्चात् फिर उस स्थान में पधारने की नौवत नहीं आई। जैसा कि ×७ काशी से यह जानना चाहिये कि काशी में सातवीं बार पधारने के पश्चात् पुनः काशी में महाराज जी का आगमन नहीं हुआ।

२—प्रत्येक स्थान में पधारने व वहाँ से प्रस्थान करने के समय को विक्रमी संवत् के अनुसार दिया गया है। जिस संवत् के मास व तिथि का ठीक २ पता लगा है उसको कृ० (कृष्णा) शु० (शुक्ला) के साथ लिखा गया है। परन्तु ज्ञात रहे कि कभी २ कोई तिथि घट वढ़ जाया करती है। ऐसी दशा में एक दिन का हेरफेर हो सकता है।

३—प्रथम समय जो टंकरा के सम्मुख लिखा गया है वह वास्तव में उनके जन्म का समय है। और अन्तिम समय जो अन्त में अजमेर के साथ अंकित है वह स्वर्ग लोक सिधारने की तिथि है।

४—स्थानों का उल्लेख जिस ढंग पर नीचे किया गया है उन पर दृष्टि डालने से पता लगेगा कि कुछ स्थल ऐसे हैं जहाँ की दशा यह है कि जिस तिथि को कहीं से प्रस्थान किया उसी तिथि अथवा उसके बाद दूसरी तिथि को अगले स्थान पर श्री महाराज जी का पहुँचना हुआ है। हाँ, अनेक स्थलों में ऐसी बात नहीं। कारण यह कि बहुतेरे दो स्थलों के बीच में जहां जहाँ पर श्री महाराज जी का पधारना हुआ है उनके विषय में कुछ पता नहीं। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि संवत् १९२७ वि० में महाराज जी ने जब काशी छोड़ा तो सोरों में उनके पहुँचने का पता चलता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि काशी से सोरों पहुँचने के लिये रेल द्वारा जो सुगमता अब (सन् १९४३ ई० में) है वह सुगमता सं० १९२७ वि० (सन् १८७० ई०) में पूर्ण रूप में न थी। दोनों स्थानों के बीच में ३०० मील से भी अधिक की दूरी है।

५—अनेक स्थानों के नाम जो जीवन चरित्रों में अशुद्ध छपे हुये हैं उनका ठीक नाम काफी खोज के पश्चात् दिया गया है और ऐसी बात को स्पष्ट भी कर दिया गया है।

६—अनेक स्थानों से सम्बन्ध रखने वाले समयों को काफी उद्योग के पश्चात् यथा संभव ठीक लिखा गया है।

७—जिन स्थानों का नाम कोष्ठ में दिया गया है। वहाँ पर जाने आने व ठहरने आदि का सम्बन्ध उनके पूर्व वाले स्थानों के साथ ही सम्मिलित समझना चाहिये। जैसे फरुर्खाबाद के साथ दो स्थलों पर फतेहगढ़ लिखा गया है। निदान दो स्थानों को एक ही साथ समझना चाहिये।

८—जिन दो स्थानों के नामों के बीच में बिन्दियाँ दी गई हैं उन स्थलों पर समझना चाहिये कि उन दोनों स्थानों के नामों के बीच में एक या अनेक पदारोपित स्थानों के नाम ऐसे हैं जिन से हम वंचित हैं।

हमारे पाठकों का पदारोपित स्थानों के नामों के विषय में थोड़ा सा सावधान होना आवश्यक है क्योंकि:—

(१) अनेक नाम ऐसे हैं कि कई ढंगों से बोले अथवा लिखे जाते हैं। जैसे:—(झीलम, झेलम) (रिवाड़ी, रेवाड़ी) (देहली, दिल्ली) (कृष्णगढ़, किशनगढ़, किशुनगढ़)।

(२) कुछ नामों में व और ब का भेद होता है जैसे:— (वृन्दावन, वृन्दाबन)।

(३) कुछ स्थानों के नाम दो या अधिक हैं जैसे:—(प्रयाग, इलाहाबाद) (काशी, बनारस) (चुनार, चाण्डालगढ़, पत्थरगढ़)।

———

पदारोपित स्थानों की तालिका

स्थान	आगमन	प्रस्थान
टंकारा	१८८१	१६०३
......		
सायला	१६०३	१६०३ श्रावण
कोठागांगढ़	१६०३ श्रावण	१६०३ आश्विन
......		
सिद्धपूर	१६०३ आश्विन	१६०३ कार्तिक
......		
१. अहमदाबाद	१६०३ कार्तिक	१६०३ कार्तिक
१. वड़ौदा	१६०३	१६०४
१. चाणेद-कर्णाली	१६०४	१६०४
व्यास आश्रम	१६०४	१६०५
सिनोर✵	१६०५	१६०६
२. चाणेद-कर्णाली	१६०६	१६०७
......		
२. अहमदाबाद	१६०७	१६०८
......		
१. आबू	१६०६	१६११
......		
१. हरिद्वार	१६११ का अंत	१६१२ का आरम्भ
१. हृषीकेश	१६१२	१६१२
....		
१. देहरादून	१६१२	१६१२
टिहरी	१६१२ वैशाख	१६१२ वैशाख
१. श्री नगर+	१६१२ वैशाख	१६१२ वैशाख

✵इसका नाम छिनौर, छिनूर या चित्तौड़ कदापि ठीक नहीं—लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
रुद्रप्रयाग	१९१२ ज्येष्ठ	१९१२ ज्येष्ठ
अगस्तमुनि की समाधि	१९१२ ज्येष्ठ	१९१२ ज्येष्ठ
शिवपुरी	१९१२ आषाढ़	१९१२ भादों
२. श्रीनगर	१९१२ भादों	२९१२ भादों
१. गुप्त काशी	१९१२ भादों	१९१२ भादों
गौरी कुण्ड	१९१२ भादों	१९१२ भादों
भीमगुफा	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
त्रियुगीनारायण	१९१२ आश्विन	१९१२ आशविन
× ३. श्रीनगर	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
तुंगनाथ	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
१. ऊखीमठ	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
× २. गुप्त काशी	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
× २. ऊखी मठ	१९१२ आश्विन	१९१२ आश्विन
जोशी मठ	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
१. बद्रीनाथ	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
अलखन्दा का स्रोत	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
बसुधारा	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
माना के निकट	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
× २. बद्रीनाथ	१९१२ कार्तिक	१९१२ कार्तिक
चिलकिया घाटी	१९१२ अगहन	१९१२ अगहन
रामपुर+	१९१२ अगहन	१९१२ अगहन
काशीपुर (द्रोण सागर)	१९१२ अगहन	१९१२ फाल्गुन
......		
१. मुरादाबाद	१९१२ फाल्गुन	१९१२ फाल्गुन
सम्भल	१९१२ फाल्गुन	१९१२ फाल्गुन
१. गढ़मुक्तेश्वर	१९१२ फाल्गुन	१९१२ फाल्गुन
......		

+इस सूची में गढ़वाल (संयुक्त प्रान्त) के श्रीनगर से अभिप्राय है—लेखक ।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
१. फरुखाबाद	१९१२ चैत कृ०	१९१२ चैतकृ०
१. श्रृंगीरामपुर	१९१२ चैत कृ०	१९१२ चैत कृ०
......		
१. कानपुर	१९१३ चैत शु०	१९१३ चैत शु०
......		
१. प्रयाग	१९१३ श्रावण	९१३ श्रावण
१. मिर्जापुर	१९१३ भादों	१९१३ भादों
विन्ध्याचल	१९१३ भादों	१९१३ भादों
१. काशी	१९१३ आरम्भ आश्विन	१९१३ आश्विन
चण्डालगढ़ +	१९१३ आश्विन शु० २,	१९१३ चैत
......		
नर्मदा का स्रोत	१९१४ ज्येष्ठ	१९१६
......		
१. हाथरस	१९१७ कार्तिक	१९१७ कार्तिक
१. मुरसान	१९१७ कार्तिक	१९१७ कार्तिक
२. मथुरा	१९१७ "	१९२० वैशाख
१. आगरा	१९२० वैशाख	१९२१ आश्विन
धौलपुर	१९२१ कार्तिक	१९२१ कार्तिक
१. ग्वालियर (लश्कर)	" "	" "
......		
२. आबू	" "	" "
....		
×२. ग्वालियर	" माघ कृ० १२	१९२२ वैशाख शु० १२ या १३
करोली	१९२२ ज्येष्ठ	१९२२ आश्विन
खुशहालगढ़ +	" कार्तिक	" कार्तिक
१. जयपुर	" "	" चैत्र कृ०

स्थान	आगमन		प्रस्थान	
१. वगरु	,,	चैत्र कृ०	,,	,,
१. दूदू	,,	,,	,,	,,
कृष्णगढ़	,,	,,	,,	चैत्र शु०
१. अजमेर	१९२३	चैत्र शु०	,,	१९२३
१. पुष्कर	१९२३	,,	,,	ज्येस्ठ अ०
२. अजमेर	,,	ज्येष्ठ अ०	,,	,,
× २. कृष्णगढ़	,,	,,	,,	,,
× २. दूदू	,,	,,	,,	,,
× २. वगरू	१९२३	ज्येष्ठ (अधिक)	१९२३	ज्येष्ठ अधिक
२. जयपुर	,,	,,	,,	आश्विन
२. आगरा	,,	कार्तिक कृ०	,,	अगहन
२. मथुरा	,,	आगहन	,,	,,
१. मेरठ	,,	,,	,,	फाल्गुन
२. हरिद्वार	,,	फाल्गुन शु० १	१९२४	वैशाख
२. हृषीकेश	१९२४	वैशाख	,,	,,
३. हरिद्वार	,,	,,	,,	,,
कनखल	,,	,,	,,	,,
लंवेरा	,,	,,	,,	,,
शुकताल	,,	,,	,,	,,
मीरापुर	,,	,,	,,	,,
मुहम्मदपुर	,,	,,	,,	,,
परीक्षितगढ़	,,	,,	,,	,,
२. गढ़मुक्तेश्वर	,,	,,	,,	,,
१. चासी	,,	,,	,,	,,
१. कर्णवास	,,	,,	,,	,,
१. रामघाट	,,	,,	,,	,,
......				

---

*यह रामपुर वास्तव में काशीपूर के निकट उत्तर की ओर लगभग डेढ़ मील पर है—लेखक।

+चुनार को चण्डालगढ़ लिखा गया है—लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
१. सोरों	,, ज्येष्ठ	,, ज्येष्ठ
पटियाली	,, ,,	,, ,,
१. कम्पिल	,, ,,	,, ,,
१. कायमगंज	,, ,,	,, ,,
शमसाबाद	,, ,,	,, ,,
२. फर्रुखाबाद	,, ,,	,, ,,
....		
१. अनूपशहर	१९२४ ज्येष्ठ	१९२४ ज्येष्ठ
X ३. गढ़मुक्तेश्वर (की ओर)	,, ,,	,, आषाढ़ आरंभ
२. अनूपशहर	,, आषाढ़	,, आषाढ़
२. चासी	,, ,,	,, ,,
१. ताहिरपुर	,, ,,	,, ,,
२. कर्णवास	,, ,,	,, ,,
२. रामघाट	,, ,, शु० ५	,, ,, शु०
३. कर्णवास	,, ,,	,, भादों
३. रामघाट	,, भादों	,, ,,
४. कर्णवास	,, ,,	,, आश्विन
अहार	,, कार्तिक	,, कार्तिक
३. चासी	,, ,,	,, ,,
x २. ताहिरपुर	,, ,,	,, ,,
३. अनूपशहर	,, ,,	,, ,, का अन्त
५. कर्णवास	,, ,, का अन्त	,, अगहन
४. रामघाट	,, अगहन	,, ,,
१. अतरौली	,, ,,	,, ,,
५. रामघाट	,, ,,	,, ,,
बेलोन	,, ,,	,, ,,
६. कर्णवास	,, ,,	,, फाल्गुन कृ०
४. अनूपशहर	,, फाल्गुन कृ०	,, ,, शु०
६. रामघाट	,, ,, शु०	,, ,,
कछिलाघाट	,, ,, ,,	,, चैत शु०

☼ ग्वालियर—आबू—ग्वालियर—इन तीनों स्थानों पर आगमन व प्रस्थान का समय जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उस से मुझे सन्तोष नहीं—लेखक।

+ इसका नाम अजकल (सन् १९४७ ई० में) गंगापुर है—लेखक

स्थान	आगमन	प्रस्थान
गढ़ियाघाट	१९२५ चैत्र ,,	१९२५ चैत्र शु०
२. सोरों (अम्बागढ़)	,, ,, ,,	,, वैशाख
......		
७. कर्णवास	१९२५ ज्येष्ठ कृ०	१९२५ कार्तिक
......		
३ सोरों (अम्बागढ़)	कार्तिक	,,
सरावल✱	,, कार्तिक	,, ,,
शहबाजपुर	,, ,,	,, ,,
कादिरगंज	,, ,,	,, ,,
१. नरदौली	,, ,,	,, ,,
ककोड़ा	,, ,, शु० १३	,, आगहन कृ० १०
२. नरदौली	,, अगहन कृ० १०	,, ,, ११
+२. कायमगंज	,, ,, ,, ११	,, ,, शु०
+२. कम्पिल	,, ,, शु०	,, पौष
शुकरुल्लापुर	,, पौष	,, ,,
३. फरुखाबाद	,, ,,	१९२६ ज्येष्ठ
+२. शृंगीरामपुर	१९९६ ज्येष्ठ	,, ,,
जलालाबाद	,, ,,	,, ,,
कन्नौज	,, आषाढ़	,, आषाढ़
बिठूर	,, ,,	,, ,,
मदारपुर	,, ,,	,, ,,
२. कानपुर	,, ,,	,, आश्विन
शिवराजपुर	,, आश्विन	,, ,,
गाजीपुर	,, ,,	,, ,,
......		
२. प्रयाग	१९२६ आश्विन	१९२६ आश्विन
....		
रामनगर	,, ,,	,, कार्तिक
२. काशी	,, कार्तिक	,, अगहन

✱ सरावल के बदले सरदौल शब्द ठीक नहीं—लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
२. मिर्ज़ापुर	,, अगहन	,, माघ
३. प्रयाग	,, माघ शु० ५	,, फाल्गुन
३. मिर्ज़ापुर	,, फाल्गुन	१९२७ चैत
काशी	१९२७ चैत	,, ज्येष्ठ
....		
४. सोरों	,, ज्येष्ठ	,, ,,
१. कासगंज	,, ,,	,, आश्विन
बिलराम	,, आश्विन	,, ,,
चकेरी के निकट	,, ,,	,, ,,
हरनोट	,, ,,	,, ,,
७. रामघाट	,, ,,	,, ,,
५. अनूपशहर	,, ,,	,, कार्तिक
८. रामघाट	,, कार्तिक पूर्णिमा	,, अगहन
×४. चासी	,, अगहन	,, ,,
९. रामघाट	,, ,,	,, ,,
१. छलेसर	,, ,, कृ० ४ या ५	,, पौष कृ० १
२. अतरौली	,, पौष	,, पौष
बिजौली	,, पौष	,, पौष
×५. सोरों	,, पौष	,, चैत कृ०
२. कासगंज	,, चैत	१९२८ चैत शु०
....		
×१०. रामघाट	१९२८ ज्येष्ठ	,, आषाढ़
८. कर्णवास	१९२८ भादों अ०	१९२८ भादों अ०
×६. अनूपशहर	१९२८ भादों अ०शु. १४	,, कार्तिक
९. कर्णवास	,, कार्तिक	,, अगहन
....		
४. फरुखाबाद	,, अगहन	,, माघ
....		
४. प्रयाग	,, माघ	,, माघ
४. मिर्ज़ापुर	,, माघ	,, माघ
४. काशी	,, फाल्गुन	१९२९ चैत शु०
मुगलसराय	१९२९ चैत० शु०	,, बैशाख

स्थान		आगमन		प्रस्थान
१. डुमरांव	,,	वैशाख	,,	भादों कृ०
१. आरा	,,	भादों कृ ९	,,	भादों शु० ३ या ४
१. पटना	,,	भादों शु ३ या ४	,,	आश्विन कृ १५
मुंगेर	,,	आश्विन शु० १	,,	कार्तिक कृ० २
....				
१. भागलपुर	,,	कार्तिक कृ० ४	,,	पौष कृ० १
कलकत्ता	,,	पौष कृ. १ या २	१९३०	चैत शु० ४
हुगली	१९३०	चैत शु० ४	,,	चैत शु०
वर्द्दवान	,,	चैत शु०	,,	वैशाख
×२. भागलपुर	,,	वैशाख कृ० ५	,,	ज्येष्ठ कृ० ५
×२. पटना	,,	ज्येष्ठ कृ० ६	,,	ज्येष्ठ कृ०
छपरा	,,	ज्येष्ठ १४	,,	आषाढ़ कृ० १५
×२. आरा	,,	आषाढ़ कृ० १	,,	श्रावण शु० २
×२. डुमरांव	,,	श्रावण शु० २	,,	श्रावण शु० १५
५. मिर्ज़ापुर	,,	श्रावण शु० १५	,,	कार्तिक कृ०
५. प्रयाग	,,	कार्तिक कृ०	,,	कार्तिक कृ०
३. कानपुर	१९३०	कार्तिक कृ. १४	१९३०	अगहन कृ०
१. लखनऊ	,,	अगहन कृ०	,,	अगहन कृ० १४
४. कानपुर	,,	अगहन कृ० १५	,,	अगहन कृ० १५
५. फरुखाबाद	,,	अगहन शु० १	,,	अगहन पौष कृ०
× ३. कासगंज	,,	पौष कृ० ६	,,	पौष
× ३. अतरौली	,,	पौष कृ० १५	,,	पौष कृ० १५
२. छलेसर	,,	पौष शु० १	,,	पौष शु० ७
१. अलीगढ़	,,	पौष शु० ७	,,	माघ शु० ५
× २. हाथरस	,,	माघ शु० ५	,,	माघ शु०
३. मथुरा	,,	माघ शु०	,,	फाल्गुन शु० ११
वृन्दावन	,,	फाल्गुन शु० ११	,,	चैत कृ० ११
× ४. मथुरा	,,	चैत कृ० ११	१९३१	चैत शु० २
२. मुरसान	१९३१	चैत शु० २	,,	ज्येष्ठ
६. प्रयाग	,,	ज्येष्ठ	,,	ज्येष्ठ
५. काशी	,,	ज्येष्ठ	,,	आषाढ़ (अधिक)

स्थान		आगमन		प्रस्थान
७. प्रयाग	,,	आषाढ़ अ० कृ० २	,,	आश्विन
जवलपुर	,,	आश्विन	,,	आश्विन
नासिक (पंचवटी)	,,	आश्विन शु०	,,	आश्विन शु०
१. वम्वई	,,	कार्तिक कृ० १	,,	अगहन कृ० ८
१. सूरत	,,	अगहन कृ० ८	,,	अगहन
१. भड़ौंच	,,	अगहन	,,	अगहन
३. अहमदाबाद	,,	अगहन शु० ३	,,	पौष कृ० ५
(निम्रादद)×				
राजकोट	१९३१	पौष कृ० ८	१९३१	पौष शु० १२
वडोयान	,,	पौष शु० १३	,,	पौष शु० १४
४. अहमदाबाद	,,	पौष शु० १५	,,	माघ कृ० ८
२. बम्बई	,,	माघ कृ० ८	१९३२	आषाढ़ कृ०
१. पूना	१९३२	आषाढ़ कृ०	,,	आश्विन
सतारा	,,	आश्विन	,,	कार्तिक
२. पूना	,,	कार्तिक कृ० ९	,,	कार्तिक कृ०
३. बम्बई	,,	कार्तिक कृ	,,	पौष
× २. वड़ौदा	,,	पौष	,,	फाल्गुन
× ५. अहमदाबाद	,,	फाल्गुन	,,	फाल्गुन
× २. भड़ौंच	,,	फाल्गुन	,,	फाल्गुन
× २. सूरत	,,	,,	,,	,,
वलसार	,,	,,	,,	,,
वसीन रोड	,,	,,	,,	,,
४. वम्वई	,,	,,	१९३३	वैशाख
१. इन्दौर	१९३३	वैशाख	,,	वैशाख शु ७
......				
६. फरुखाबाद	,,	ज्येष्ठ कृ० १	,,	ज्येष्ठ शु० १
......				
६. काशी	,,	ज्येष्ठ शु० ४	,,	भादों कृ० १० या ११
जौनपुर	,,	भादों कृ० ११	,,	भादों कृ० १४

× निम्राद नाम के किसी स्थान का पता नहीं लगा। संभवतः नड़ियाद के बदले में यह नाम लिखा गया है—लेखक।

स्थान		आगमन		प्रस्थान
अयोध्या	,,	भादों कृ० १४	,,	आश्विन शु० ६
२. लखनऊ	,,	आश्विन शु० ६	,,	कार्तिक शु० १५
१. शाहजहांपुर	,,	कार्तिक शु० १५	,,	अगहन कृ० ५
१. बरेली	,,	अगहन कृ० ५	,,	अगहन शु०
२. मुरादाबाद	१६३३	अगहन शु०	१६३३	अगहन
२. बरेली	,,	अगहन शु०	,,	पौष कृ० १
राजघाट	,,	पौष कृ० १	,,	पौष कृ० १
×१०. कर्णवास	,,	पौष कृ० १	,,	पौष कृ० ३
३. छलेसर	,,	पौष कृ० ३	,,	पौष कृ०
२. अलीगढ़	,,	पौष कृ०	,,	पौष कृ०
१. दिल्ली	,,	पौष कृ०	,,	माघ शु० २
२. मेरठ	,,	माघ शु० २	,,	फाल्गुन शु० २
१. सहारनपुर	,,	फाल्गुन शु० २	,,	चैत कृ० १२
२. शाहजहांपुर	,,	चैत कृ० १४	,,	चैत कृ० १५
चांदापुर	,,	कृ० १५	१६३४	चैत शु० ८
३. शाहजहाँपुर	१६३४	चैत शु० ८	,,	चैत शु० ६
२. सहारनपुर	,,	चैत शु० ☼	,,	वैशाख कृ० २
१. लुधियाना	,,	वैशाख कृ० २	,,	वैशाख शु० ६
१. लाहौर	,,	वैशाख शु० ६	,,	आषाढ़ कृ० ६
१. अमृतसर	,,	आषाढ़ कृ० ६	,,	श्रावण शु० ६
गुरुदासपुर	,,	श्रावण शु० ६	,,	भादों कृ० २
२. अमृतसर	,,	भादों कृ० २	,,	भादों शु० ७
१. जालंधर	,,	भादों शु० ७	,,	भादों शु० ११
२. लाहौर	,,	आश्विन शु० ११	,,	कार्तिक कृ० ४
फीरोजपुर	,,	कार्तिक कृ० ४	,,	कार्तिक कृ० १४
३. लाहौर	,,	कार्तिक कृ० १५	,,	कार्तिक शु० २
रावलपिण्डी	,,	कार्तिक शु० ३	,,	पौष कृ० ७
झेलम	१६३४	पौष कृ० ८	१६३४	पौष शु० ६
गुजरात	,,	पौष शु० ६	,,	माघ कृ० १५

☼ संभवतः चैत शु० १२ या १३ को पहुंचे होंगे क्योंकि शाहजहाँपुर से मुरादाबाद तक रेल मार्ग (उस समय) था। मुरादाबाद से सहारनपुर लगभग १२० मील दूर है। लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
वजीरावाद	,, माघ कृ० १५	,, माघ शु० ५
गुजराँवाला	,, माघ शु० ५	,, फाल्गुन कृ० १४
४. लाहौर	,, फाल्गुन कृ० १४	,, फाल्गुन शु० ८
मुल्तान	,, फाल्गुन शु० ८	१९३५ चैत शु० १४
×५. लाहौर	१९३५ चैत शु० १५	,, वैशाख शु० १४
×३. अमृतसर	,, वैशाख शु० १४	,, आषाढ़ शु० १२
×२. जालंधर	,, आषाढ़ शु० १२ या १३	,, आषाढ़ शु० १४
×२. लुधियाना	,, आषाढ़ शु० १४	,, श्रावण कृ०
अम्बाला	,, श्रावण कृ.	,, श्रावण कृ०
१. रुडकी	,, श्रावण कृ. ११	,, भादों कृ, ८
३. अलीगढ़	,, भादों कृ. ९	,, भादों कृ. १३
३. मेरठ	,, भादों कृ, १३	,, आश्विन शु. ८
२. दिल्ली	,, आश्विन शु. ८✲	,, कार्तिक शु. १२
३. अजमेर	,, कार्तिक शु, १३	,, कार्तिक शु. १३
×२, पुष्कर	,, कार्तिक शु. १३	,, अगहन कृ. ४
४. अजमेर	,, अगहन कृ. ४	,, अगहन शु. ८
१. मसूदा	,, अगहन शु. ८	,, पौष कृ. १
१. नसीराबाद छावनी	,, पौष कृ. १	,, पौष कृ. ५
३. जयपुर	१९३५ पौष कृ० ६	१९३५ पौष शु० १
रिवाड़ी	,, पौष शु० २	,, माघ कृ० १
× ३. दिल्ली	,, माघ कृ० १	,, माघ कृ ९
४. मेरठ	,, माघ कृ० ९	,, माघ शु०
३. सहारनपुर	,, माघ शु०	,, माघ शु० १५
× २. रुड़की	,, माघ शु० १५	,, फाल्गुन शु० १४
ज्वालापुर	,, फाल्गुन कृ० १४	,, फाल्गुन शु० ६
× ४. हरिद्वार	,, फाल्गुन शु० ६	१९३६ वैशाख कृ० ८

✲ जीवन चरित्रों से आश्विन शुल्क १३ (९ अक्टूबर सन् १८७८ ई.) को दिल्ली में पहुंचने का पता चलता है किन्तु श्रीश्यामजी कृष्ण वर्मा जी के नाम के एक अप्रकाशित पत्र से (लिखित ७ अक्टूबर सन् १८७८ ई.) पता चलता है कि वह ३ अक्टूबर सन् १८७८ ई. अर्थात् आश्विन शु. ८ को दिल्ली में पहुंचे थे। लेखक।

स्थान	आगमन	प्रस्थान
२. देहरादून	१९३६ वैशाख कृ० ८	१९३६ ,, वैणाख शु० ९
४. सहारनपुर	" वैशाख शु० ९	" वैशाख शु० १२
५. मेरठ	" वैशाख शु० १२	" ज्येष्ठ शु० २
× ४. अलीगढ़	" ज्येष्ठ शु० २	" ज्येष्ठ शु० ७
× ४. छलेसर	" ज्येष्ठ शु. ७	" आषाढ़ शु. १५
× ३. मुरादावाद	" आषाढ़ शु. १५	" श्रावण शु. १२
बदायूँ	" श्रावण शु०१३	" भादों कृ. १२
× ३. वरेली	" भादों कृ. १२	" आश्विन कृ. ४
× ४. शाहजहाँपुर	" आश्विन कृ. ४	" आश्विन शु. १
३. लखनऊ	" आश्विन शु. २	" आश्विन शु. ९
५. कानपुर	" आश्विन शु. ९	" आश्विन शु. ८
७. फरुखावाद (फतेहगढ़)	" आश्विन शु. १०	" आश्विन (अ०)कृ० ८
६. कानपुर	" आश्विन (अ.) कृ.	" आश्विन (अ,)शु. २
× ८. प्रयाग	" आश्विन (अ.)शु. २	" आश्विन (अ.)शु. ९
× ६. मिर्जापुर	" आश्विन (अ.) शु. ९	" आश्विन(अ.)शु.१५
दानापुर	" आश्विन(अ.)शु. १५	" कार्तिक शु. ७
× ७. काशी	" कार्तिक शु. ७	१९३७ वैशाख कृ. ११
× ४. लखनऊ	१९३७ वैशाख कृ. ११	" वैशाख शु. ९
× ७. कानपुर	" वैशाख शु. १०	" वैशाख शु० १०
× ८. फरुखाबाद (फतेहगढ़)	" वैशाख शु. ११	" आषाढ़ कृ. ८
मैनपुरी	" आषाढ़ कृ. ९	" आषाढ़ कृ. १४
भारौल	" आषाढ़ कृ. १४	" आषाढ़ कृ० १५
६. मेरठ	" आषाढ़ शु. १	" भादों शु. १२
मुजफ्फरनगर	" भादों शु. १२	" आश्विन कृ. १३
७. मेरठ	" आश्विन कृ० १३	" आश्विन शु
× ५. सहारनपुर	" आश्विन शु.	" आश्विन शु.
+ ३. देहरादून	" आश्विन शु. ४	" अगहन कृ. ४ या ५
× ८. मेरठ	" अगहन कृ. ५	" अगहन कृ.
× ३. आगरा	" अगहन कृ. १० या ११	" फाल्गुन शु. १०

स्थान		आगमन		प्रस्थान
भरतपुर	"	फाल्गुन शु. १०		१६३८ चैत कृ० ५
× ४. जयपुर	१६३८	चैत कृ. ५	"	वैशाख शु. ६
५. अजमेर	"	वैशाख शु. ७	"	आषाढ़ कृ. १२
× नसीराबाद छावनी	"	आषाढ़ कृ. १२	"	आषाढ़ कृ. १२
२. मसूदा	"	आषाढ़ कृ. १२	"	भादों कृ. ६
१. ब्यावर	"	भादों कृ. ६	"	भादों कृ. ६
१. हरिपुर स्टेशन	"	भादों शु. १०	"	भादों शु. १०
रायपुर	"	भादों कृ १०	"	भादों शु. १५
✪ २ हरिपुर स्टेशन	"	भादों शु. १५	"	भादों शु. १५
✪ २ ब्यावर	"	भादों शु. १५	"	आश्विन कृ. १३
✪ ३ मसूदा	"	आश्विन कृ० १३	"	आश्विन शु. १४
हुरड़ा	"	आश्विन शु. १४	"	आश्विन शु. १५
१. रुपाहेली	१६३८	आश्विन शु १५	१६३८	कार्तिक कृ १
रायना +	,,	कार्तिक कृ. १	,,	,, कृ ३
वनेड़ा	,,	,, कृ. ३	,,	,, शु ४
भीलवाड़ा	,,	,, शु. ४	,,	,, शु ४
सोनियाना	,,	,, शु. ४	,,	,, शु ५
१. चित्तौड़	,,	,, शु. ५	,,	पोष कृ. १५
२. इन्दौर	,,	पोष कृ. १५	,,	,, शु. ६
× ५. बम्बई	,,	,, शु. ६ ✪	१६३६	आषढ़ शु. ८
खण्डवा	१६३६	आषाढ़ शु. ८	,,	श्रावण कृ. ४
× ३. इन्दौर	,,	श्रावण कृ. ५	,,	,, कृ. ५
रतलाम	,,	,, कृ. ५	,,	,, कृ. ८
जावरा	,,	,, कृ. ८	,,	,, शु. ६
२. चित्तौड़	,,	,, शु. १०	,,	,, अ० कृ. ११
१. नींबाहेड़ा	,,	× अ० कृ०. ११	,,	,, अ० कृ. ११
....				

+इसके वदले राटेरा नाम ठीक नहीं — लेखक।

✪जव कि इस तिथि को बम्बई में पहुँचना हुआ और ६ को इन्दौर छोड़ा था तो बीच में और कहीं पर ठहरना हुआ होगा। लेखक।

स्थान	आगमन		प्रस्थान	
उदयपुर	श्रावण	अ० कृ. १३+"	फाल्गुन कृ ५ या ६	
× २. नींबाहेड़ा	"	फाल्गुन कृ ७	"	कृ. ७
× ३. चित्तौड़	"	" कृ. ७	"	कृ. १३
× २. रुपाहेली	"	" कृ. १४	"	कृ. १४
शाहपुरा	१६३६	फाल्गुन कृ. १४	१६४०	ज्येष्ठ कृ० ४
६. अजमेर	१६४०	ज्येष्ठ कृ. ६	"	" कृ. ७
१. पाली	"	" कृ. ७	"	" कृ. ६
१. रोहट*	"	" कृ. ६	"	" कृ. १०
जोधपुर	"	" कृ. १०	"	आश्विन शु. १५
×२, रोहट*	"	कार्तिक कृ. १	"	कार्तिक कृ. २
×२. पाली	"	" कृ. २	"	" कृ. ५
×२. आवू	"	" कृ. ६	"	" कृ. ११
×७. अजमेर	"	" कृ. १२	"	" कृ. १५

अनेक जिलों के पदारोपित स्थान

भारतवर्ष में अंगरेजी राज्य के अनेक जिले ऐसे हैं, जिनके दो या अधिक स्थान श्री स्वामीजी द्वारा गौरवान्वित हुए हैं और उनका उल्लेख पुस्तक के पिछले पृष्ठों में पृथक्-पृथक् हुआ है - नीचे के लेखा से सुगमता के साथ पता लग सकता है कि बहुतेरे जिलों के कौन कौन स्थान सुशोभित हुए थे:—

संयुक्तप्रांत

जिला का नाम — जिला के गौरवान्वित स्थान

अलीगढ़—अलीगढ़, अतरौली, छलेसर, विजौली, मुरसान, हरनोट, हाथरस।

एटा कादिरगंज, कासगंज, गढ़ियाघाट, नरदौली, पटियाली, चकेरी के निकट बिलराम, शहवाजपुर, सरावल सोरों+।

+ उदयपुर में जब कि इस तिथि को पहुँचना हुआ है तो संभवतः दो दिन पहले चित्तौड़ छोड़ा होगा क्योंकि नींवाहेड़ा से रेल द्वारा जाना नहीं हुआ था। नींवाहेड़ा और उदयपुर के बीच में काफी दूरी है। लेखक।

* इसके वदले रोपट नाम ठीक नहीं—लेखक

+कुछ लोगों का मत है कि एटा के कुसौल देवकली व रूपधनी नाम के दो और स्थान भी सुशोभित हुये थे—लेखक

कानपुर—कानपुर, विट्ठुर, मदारपुर।

देहरादून—देहरादून, हृषीकेश।

फरूखाबाद - फरूखाबाद, फतेहगढ़, कन्नौज, कम्पिल, कायमगंज, जलालाबाद, शमसाबाद, शुक्रुल्लापुर, शृंगीरामपुर।

फतेहपुर गाजीपुर, शिवराजपुर।

वदायूँ—वदायूँ, ककोड़ा, कछिलाघाट।

बनारस—काशी, मुगलसराय, रामनगर×।

बुलन्दशहर—अनूपशहर, अहार कर्णवास, चासी, ताहिरपुर, राजघाट, रामघाट।

मथुरा—मथुरा, वृन्दावन।

मिर्जापुर—मिर्जापुर, चुनार, विन्ध्याचल।

मुजफ्फरनगर—मुजफ्फनगर, मीरांपुर, शुकताल।

मुरादाबाद—मुरादाबाद, सम्भल।

मेरठ—मेरठ, गढ़मुक्तेश्वर, परीक्षितगढ़।

मैनपुरी—मैनपुरी, भारौल।

शाहजहांपुर - शाहजहांपुर, चांदापुर।

सहारनपुर—सहारनपुर, कनखल, ज्वालापुर, रुड़की, लंढौंरा, हरिद्वार।

पंजाब प्रांत

गुजराँवाला—गुजराँवाला, वजीराबाद।

विहार प्रांत

आरा—आरा, डुमराँव।

बम्बई प्रांत

सूरत—सूरत, वलसार।

× सन् १९११ ई० से पूर्व यह स्थान जिला बनारस में था—लेखक

वृक्ष सजीव हैं

ले० स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती पूर्व संसद सदस्य
आचार्य– गुरुकुल वेदविद्यालय घरौण्डा (करनाल)

यह नितान्त सत्य है कि वृक्ष सजीव हैं, क्योंकि दार्शनिक दृष्टि से साधर्म्य और वैधर्म्य दो विभेदक सिद्धान्त हैं। अर्थात् समान धर्म और विरुद्ध धर्म, अब चिन्तनीय यह है कि क्या वृक्ष सजीव के सधर्मी हैं अथवा निर्जीव पाषाण आदि के समान हैं ? यह सर्व प्रसिद्ध है कि सजीव में बाल, युवा और वृद्ध अवस्थाएँ होती हैं। १—कीड़ी से हाथी तक मनुष्य पक्षी आदि सभी प्रथम शिशु होते हैं पश्चात् युवा, वृद्ध होकर मर जाते हैं। और पर्वत आदि निर्जीव जड़ में यह तीनों अवस्थाएँ कभी दृष्टिगोचर नहीं होती किन्तु वृक्ष भी वाल, युवा और वृद्धावस्था से ओतप्रोत हैं। इसको विद्वान् और अविद्वान् सभी स्वीकार करते हैं। किन्तु निर्जीव किसी भी भू-भूधर, जल, अग्नि, वायु आदि में ये अवस्थाएँ नहीं है। इससे स्पष्ट है कि वृक्ष सजीव हैं क्योंकि वृक्षों में सजीवों से समानता और निर्जीवों की विषमता हैं। २—सजीव प्राणी स्वयं जीवित रहते हुए समान जाति को जन्म देते हैं इसी कारण सभी सजीवों की वृद्धि होती है। वृक्षादि में भी यह धर्म प्रत्यक्ष सिद्ध है कि एक वृक्ष स्वयं जीवित रहते हुए समान जाति को जन्म देने का बीज देते हैं। परन्तु निर्जीव कोई भी रेल, मोटर, वायुयान, पत्थर आदि अपने रहते हुए अपने सदृश्य जाति को जन्म नहीं देते। ३—सर्व सजीव भोजन से जीवित रहते हैं, एवमेव वृक्षादि भी अपनी जड़ों से शक्ति लेकर जीवित रहते हैं। निर्जीव कोई वस्तु भोजन लेकर स्थिर रहती हो ऐसा नहीं है। ४—सजीव सभी प्राणी कोई वर्ष में एक बार और कोई दो बार समान जाति को जन्म देते हैं, एवं वृक्षादि भी कोई वर्ष में एक बार और कोई दो बार सजातीय बीज उत्पन्न करते हैं, किन्तु जड़ जगत् की कोई वस्तु समान जाति के जन्म का बीज उत्पादन नहीं करती है। ५—सभी सजीव उचित भोजन एवं वायु आदि न मिलने पर नष्ट हो जाते हैं, एवं वृक्षादि भी नष्ट हो जाते हैं। किन्तु निर्जीवों पर यह क्रिया दृष्टिगोचर नहीं होती। ६—यदि सजीव प्राणी का कोई अङ्ग टूट-फूट एवं क्षत-विक्षत हो जाता है तो वह उसको पूर्ण कर लेता है, एवं वृक्षादि भी कट-फिट जाने पर अपने घाव को भर लेता है। किन्तु निर्जीव वस्तुओं में टूट-फूट होने पर वह इसको कभी नहीं भर पाते हैं। ७—सभी सजीव प्राणियों के भोजन से रस रक्तादि बनते हैं, एवमेव वृक्षादि

में भी रस, दूध आदि देखे जाते हैं। ८—सजीव प्राणियों के देह में अस्थि एवं त्वचा आदि भाग होते हैं, एवमेव वृक्षों में भी अस्थि-त्वचा आदि होते हैं। परन्तु किसी निर्जीव में ऐसा नहीं पाया जाता। ९—जैसे सजीव प्राणियों में वायु एवं रक्त-संचार होता है, एवमेव वृक्षों में भी रस संचार होता है। १०—सजीव के जैसे अङ्ग में रक्त, रस एवं वायुसंचार न होने पर वह अङ्ग सूख जाता है, एवमेव वृक्षादि के भी जिस प्रदेश में वायु, रसादि संचार नहीं होता वह सूख जाता है, परन्तु निर्जीव वस्तुओं में यह भेद दृष्टिगोचर नहीं होता है। ११—सजीव प्राणियों पर शीतोष्ण एवं वर्षा का प्रभाव होता है, इसीलिए वे प्राणी प्रायः मर जाते हैं अथवा मूर्छित हो जाते हैं, इसी प्रकार वृक्षों पर भी शीतोष्ण और वर्षा का प्रभाव होता है, वे या तो सूख जाते हैं या निर्बल हो जाते हैं। परन्तु निर्जीव वस्तुओं पत्थरादि पर कोई प्रभाव नहीं होता है। १२—कोई सजीव प्राणी वायु के बिना जीवित नहीं रह सकता, एवं वृक्षादि भी प्राण वायु से युक्त हैं। वेद में वृक्षों में प्राणवायु माना है। पढ़ो ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त २३ मन्त्र २१ महर्षि दयानन्द कृत भावार्थ— "नैव प्राणैर्बिना कश्चिदपि प्राणी वृक्षादयश्च शरीरं धारयितुं शक्नुवन्ति।" इस भावार्थ में महर्षि ने वृक्षों को प्राण सहित शरीरधारी माना है। उसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय ३५ मन्त्र १५—"इमं जीवेभ्य" का भाष्य करते हुए जीव शब्द का अर्थ शरीरधारी प्राणी और वृक्ष स्थावर शरीरधारी माना है। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ९ में वृक्षों की उत्पत्ति कर्मों से मानी है तथा मनुस्मृति का प्रमाण देते हुए ९वें समुल्लास में स्वामी जी ने स्वीकार किया है—"शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः······" अर्थात् जो नर शरीर से चोरी, पर स्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि का दुष्कर्म करता है उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म मिलता है। इसी प्रकार अन्य भी अनेक मनुस्मृति के प्रमाण हैं। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १२ जैन प्रकरण में बड़े विस्तार से लिखा है और वृक्षादि के जीव को गाढ़ निद्रा महासुषुप्ति-स्थित माना है। सर्व-दर्शन-कार जीव की सिद्धि का प्राण, अपान को सर्वप्रथम लक्षण मानते हैं। वृक्षों में प्राण है, यह वेदों में भी अनेक स्थलों पर आया है। यह सर्वानुभूति है कि वृक्षों में प्राण, अपान अर्थात् वायु का आदान-प्रदान होता है तथा जीव जब शरीर को छोड़ता है तब जैसे जीव का जलादि में शरीर धारण करने का विधान है एवमेव औषधि वनस्पति आदि में शरीर धारण का विधान है। पढ़ो ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १६ मन्त्र ३—"औषधिषु प्रतितिष्ठा शरीरैः—" इत्यादि सहस्त्रों प्रमाण दिये जा सकते हैं। लेख की वृद्धि-भय से अन्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता।

शास्त्रार्थ-युग की झलकियां

✱ लेखक : पं० बिहारी लाल जी शास्त्री,
काव्यतीर्थ शास्त्रार्थ-महारथी, बरेली

१:—मौलाना सनाउल्ला अमृतसर से डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी (सुपुत्र पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर आगरा) का शास्त्रार्थ हो रहा था। प्रश्न था कि शैतान क्या है ? कैसा ? मौलाना साहब ने बोलते हुए यह शेर पढ़ा :—

"रात शैतां को ख्वाब में देखा"।

तत्काल डाक्टर साहब ने मौलवी साहब की तरफ हाथ का संकेत करके कहा :—

"सारी सूरत जनाब की सी थी।"

मौलाना झेंप गये जनता हंस पड़ी।

२:—गोरखपुर में प० धर्मभिक्षु जी से ईश्वर के मुख्य नाम पर शंका समाधान चल रहा था, पंडित जी कहते थे ईश्वर का मुख्य नाम "ओ३म्" है। मौलवी साहब का कहना था कि "अल्लाह", मंत्रीजी ने मेरे कहने से सोडा वाटर की एक बोतल ले जाकर मौलवी साहब को पेश करदी। मौलाना ने पी ली और पीते ही डकार आई। "औं" मैंने कहाकि अब मुंह से अल्लाह क्यों नहीं निकाला ? सब हंस पड़े। मौलाना भी हंसे।

३:—बरेली की जामा मस्जिद में शास्त्रार्थ था श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी से। मौलाना ने कहा कि कुरान शरीफ आखरी इलहाम है और सब इलहाम ऐसे हैं जैसे रोगी को जुलाब देने के लिए पहले मुन्जिश पिलाये जाते हैं फिर जुलाब का काढ़ा दिया जाता है। एकदम से काढ़ा नहीं दिया जाता। पंडित जी ने कहाकि मुंजिश और काढ़ा एक ही रोगी को दिया जाता है ? यह तो नहीं कि मुंजिस पिलाये जायें करीम को, और काढ़ा दिया जाये कमर को, मुंजिश पीने वालों और काढ़ा पीने वालों में हजारों वर्ष का फासला हो गया है। तौरेत जबूर इंजील का मुंजिस जिन्हें अल्लाह ने पिलाया था वे

क़ुरान शरीफ के काढ़े के वक्त तक सब मर चुके थे। इस पर मौलवी मियां सुस्त हो गये। श्रोता वाह-वाह करने लगे।

४:—पीलीभीत में शास्त्रार्थ हुआ, पौराणिक पंडितों और आर्य विद्वानों में। पौराणिकों ने बताया कि आर्यसमाज हार गया। तब पूज्य श्री स्वामी दर्शनानन्द जी को बुलाया गया। स्वामी ने कहा कि पौराणिकों का विज्ञापन निरा झूठा है। हार उसकी होती है जिसका पक्ष सिद्ध न हो सके। आर्यसमाज का पक्ष तो अन्य मतवालों को स्वीकार है फिर हार कैसी ? ईश्वर निराकार है, अजन्मा है। जीवित पितरों की सेवा होनी चाहिये। वेद ईश्वरीय पुस्तक है, आदि आर्यसमाज के सब ही पक्ष पौराणिकों से स्वीकृत हैं, अतः सिद्ध पक्ष वाले की हार कहां ? हां पौराणिकों के सब पक्ष साध्य हैं - ईश्वर साकार हैं, मृत पितरों का श्राद्ध हो, ईश्वर जन्म लेता है। आदि सब ही पक्ष साध्य हैं। अतः वे अपने पक्ष को सिद्ध न कर सकें तो उनकी हार है। सिद्ध करदें तो भी आर्यसमाज की हार कैसे ?

अतः पौराणिकों का विज्ञापन तर्क शून्य है।

५:– लखनऊ में शास्त्रार्थ था। इधर से थे श्री पंडित धर्मभिक्षु जी उधर से कई मौलाने थे। मौलवी साहब ने पूछा कि आप भी तो ज्ञानी हैं, विद्वान् हैं। पहले जन्म की वात आपके मन्तव्यानुसार योगियों को याद रहती हैं तो वताइये एक दो वात तो आपको भी याद रही ही होगी ? आप पहले जन्म में कौन थे ? कहां थे ?

पंडित जी ने कहाकि हां यह खूब याद है मैं पहले जन्म में लखनऊ में ही रहता था। आपका पिता मैं ही था अमीनाबाद में तुम मेरे साथ थे। तुमने रेवड़ी खाने की जिद्द की थी। तुम्हें खांसी हो रही थी। मैंने रेवड़ी नहीं खाने दीं, तुम रूठे तो मैंने एक चपत लगाया, तुम्हें भी बचपन की यह घटना याद ही होगी ? मौलवी साहब इस पर बड़े तिलमिलाये और आवेश के साथ बोले तुम मेरी जोरू थे। इस पर पंडित जी ने कहा कि कोई भी रिश्ता हो बहर हाल तुम से पहले जन्म में परिचय जरूर था। आप पुनर्जन्म को तो मान ही गये। इस पर जनता हंस पड़ी, मौलवी पछताने लगा।

६:--बदायू में शास्त्रार्थ था २१ मौलवी थे, और आर्य समाज की ओर से केवल श्री पंडित धर्म भिक्षु जी थे, मौलवी साहब ने कहाकि वेदों में एक ऋषि मत्स्य भी है। कहिये क्या मछलियों पर भी इलहाम होता था।

पंडित जी ने कहा कि ऋषि मनुष्य ही थे, नाम था उनका मत्स्य जैसे

आपके अवूहुरैरा विलाव नहीं थे पर नाम उनका विलाव का वाप (अवूहुरैरा) था। इस पर मौलवी साहव ने कहाकि हुरैरा थाम बिलाव का नहीं है। इस पर प्रधान शास्त्राथं जो कि एक मुसलमान रईस थे उन्होंने अरवीकोश लाने की आज्ञा दी। कोश में हुरैरा माने बिलाव के ही निकले इस पर प्रधान महोदय ने मौलवी साहव को फटकारा और पंडित जी की योग्यता की प्रशंसा करी।

७:—दिल्ली में शास्त्रार्थ था कादयानी मौलवी थे, अब्दुलहक और आर्य-समाज की ओरसे थे, डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी मौलवी साहव की मुसलमानों में प्रसिद्धि थी संस्कृत के पंडित होने की। मौलवी साहव ने प्रश्न किया कि ईश्वर का नाम कवि भी है। और "निरूकत" में कवी का अर्थ है "शवद" करने वाला, तो विना मुंह के ईश्वर 'शवद' कैसे कर सकता है ? इसलिये वेदों का ईश्वर मुजस्सिम हैं। और मुजस्सिम होता है फानी, इसलिये ईश्वर फानी है।

डाक्टरसाहव—हमारे यहां "निरुकत" नाम की कोई किताव नहीं है।

मौ० सा० आप क्या कह रहे हैं ? यह देखिये राजाराम के तुर्जुमे वाली निरुकत (हाथ से दिखाकर)। डाक्टर सा० —जरा कोई सज्जन जो संस्कृत पढ़े हों, इस पुस्तक का नाम तो पढ़कर सुनावें।

एक पंडित जी मौलवी साहव के हाथ से पुस्तक लेकर नाम पढ़ा — "निरुक्त"

डाक्टर साहव—मौलवी साहव ? आप संस्कृत न जानने वाले मुसलमानों में रोव गांठते हैं कि आप संस्कृत के विद्वान् हैं। जबकि आपको पुस्तक का सही नाम तक नहीं आता।

इस पर मौलवी वेदिल हो गया और अंत तक वहकता ही रहा। डाक्टर साहव ने वता दिया कि ईश्वर के शब्द परावाणी के हैं जो अव्यक्त होते हैं। ऋषियों के हृदयों में आकर वे व्यक्त होते हैं। इसलिये ईश्वर को परीक्षा की जरुरत नहीं।

७:—मेले में प्रचार हो रहा था, हमारे भजनीक जी ने कहा—"मांस मांस सव एक से क्या वकरी क्या गाय" इस पर एक मुसलमान खड़ा होकर वोला कि सव मांस एक से नहीं होते, मैं वता सकता हूं कि यह मांस वकरी का है, यह गाय का। इस पर वहस छिड़ गई। उस मुसलमान ने कहा कि आप मांस संगाइये मैं पहचान दूंगा।

मैं प्रधान था, मैंने खड़े होकर कहा :—मियाजी आपकी उम्र क्या है ? मियाजी, ७० साल।

मैंने कहा कि दोस्त ७० साल की उम्र तक गोश्त की ही पहचान करते रहे, अगर खुदा की पहचान करते तो जिन्दगीं वन जाती। इस पर वह मियां भी हँस कर वैठ गये और सब जनता हँस पड़ी।

ऐसे अनेक चुटकुले हैं जो शास्त्रार्थों में चलते रहते हैं, इनसे जनता का मनोरंजन होता है, शास्त्रार्थ कर्ताओं की प्रतिभा का प्रकाश होता है। अवतो शास्त्रार्थ वंद ही हो गये।

शास्त्रार्थों से साम्प्रदायिक सहिष्णुता बढ़ती थी, स्वाध्याय और विचार शक्ति बढ़ती थी। विवेचन जाग्रत होता था। राजनैतिक मूर्खों ने शास्त्रार्थ वंद कराये हैं।

धन

धन को प्राप्त होके उत्तम विद्यावान पुरुषों और श्रेष्ठ मार्गों में खर्चे॥

—ऋग० ३।१३।६

धर्म टूटना

अब घास का तिनका टूटने में देर लगती है परन्तु हमारा धर्म टूटने में देर नहीं लगती। चोटी में गांठ न देगें तो धर्म गया, अंगरखा लम्बा पहना गया तो धर्म गया।

—उ० म० दयानन्द सरस्वती

समाजवाद

सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिये।

—सत्यार्थ प्रकाश

महाराज के सानिध्य से खण्ड (५)

गायत्री----अनुवाद रचना

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो।
देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

ओ३म् हो रक्षक हमारे, सब गुणों की खान हो।
अज, अमर, अद्वैत, अव्यय, विश्ववित्विद्वान् हो ।।

भूः सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हो।
आप हे जगदीश ! सब संसार के कल्याण हो ।।

भुवः सब दुखः दूर करते, आप कृपा निधान हो।
स्वः सदा सुखरूप सुखमय, सुखद सुखधि महान हो ।।

तत् वही सुप्रसिद्ध ब्रह्मन् ! वेद वर्णित सार हो।
देव सवितुः सर्व उत्पादक व पालनहार हो ।।

शुभ वरेण्यं वरण करने योग्य भगवन् आप हो।
शुद्ध भर्गः मल रहित भजनीय हो, निष्पाप हो ।।

दिव्य गुण देवस्य, दिव्य स्वरूप देव अनूप के।
धीमहि धारें हृदय में दिव्य गुण गण रूप के ।।

धियो यो नः वह हमारी बुद्धियों का हित करे।
ईश 'प्रचोदयात्' नित सन्मार्ग में प्रेरित करें ।।

बुद्धि का शुभदान दे अपनी शरण में लीजिये।
वेदपथ का कर पथिक हमको 'अमर' पद दीजिये ।।

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली के एक समारोह में बाबा अमरसिंह जो, अमर स्वामी जी, ब्र० सत्यप्रिय जी, स्वामी भीष्म जी महाराज, ठाकुर विक्रमसिंह जी सन् १९६८ ई०

पुरोहित (१)

वेदों में पुरोहित शब्द का बहुत प्रयोग है। एक व्यक्ति मेरठ से मेरे पास आये और उन्होंने कहा कि वेदों में पुरोहित शब्द कहाँ-कहाँ है वे पते आप लिखवा दीजिये। मैं लिखवाने लगा तो लिखते लिखते थक गये और कहने लगे यह बहुत बड़ा काम है। मैं तो इतने ही प्रमाण लेकर जाता हूँ, चले गये पीछे मुझ को पता लगा कि वह सज्जन पुरोहित का अर्थ एम० एल० ए० और एम० पी० लगाना चाहते हैं। यह सुनकर मुझ को दुःख हुआ कि व्यर्थ परिश्रम किया।

वेद के आधार पर मैं "पुरोहित" शब्द पर पुस्तक भी लिखना चाहता हूं। इस लेख में वैदिक शब्द पुरोहित पर बहुत न लिखकर "वर्त्तमानस्थिति में पुरोहित" इस विषय पर लिखूंगा। वैसे याद दिला दूं कि—आर्य सामाजिक वृद्ध, युवा, बालक, नर नारी बहुतो को "अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्यदेवम् त्विजम् होतारं रत्नाधातमम्" (ऋग्वेद) कण्ठस्थ है।

निरुक्त में श्री यास्काचार्य जी ने पुरोहित शब्द पर कहा है —"पुरा एन दधति" जिसको अगुआ बनाया जाता है, वह पुरोहित होता है। अगुआ, अग्र-गन्ता, पथप्रदर्शक, नेता, लीडर और इमाम ये सब शब्द पुरोहित के लिए प्रयोग में आ सकते हैं।

पुराणिकों में विद्वान् भी पुरोहित हो सकता है और अविद्वान् भी। संस्कार कराने वाले भी पुरोहित हैं और पुरोहित के पुत्र कुल पुरोहित अनपढ़ भी पुरोहित होते हैं। विवाह संस्कार कोई पण्डित कराए, कुल पुरोहित अनपढ़ भी आकर बैठ जाएगा और संस्कार कराने वाला पण्डित यजमान को कहकर दक्षिणा उसको भी दिलायेगा। यजमान स्वयं भी उसका अधिकार मानता है। पुरोहित नामधारी स्वयं भी मांग लेता है और थोड़ी मिलने पर अधिक देने को भी कहता है। आर्य समाज में भी पुरोहित होते हैं। यहां अनपढ़ तो पुरोहित हो ही नहीं सकता है। कोई अधिक पठित हो, कोई कम हो, होगा पठित ही। वंश परम्परा से अनपढ़ व्यक्ति कोई पुरोहित नहीं हो सकता है।

आर्य समाज के पुरोहित प्राय: समाजों से कुछ मासिक वृत्ति लेते हैं क्योंकि केवल दक्षिणा के भरोसे पर पुरोहित रहना अत्यन्त कठिन है। पंजाबी यजमानों में विवाह संस्कारों में सबसे अधिक धन सेहरा पढ़ने वाले को मिलता है।

सेहरा पढ़ने वाला पहिले ही तय कर लेता है कि मैं इतना रुपया लूंगा। वह ठहराया हुआ रुपया दश, बीस, पचास न होकर तीस अंकों में ही होता है। सेहरा की कविता बोलने वाला जब उस अपनी तुकवन्दी को बोलता है तो—'आया सेहरा, सजाया सेहरा" आदि और उस तुकवन्दी में जब दूल्हा के चाचा, ताऊ, दादा, चाची, ताई, दादी उछल कर उसको नोट पर नोट देते हैं। वह आधे घन्टे में कई सौ रुपये ले जाता है। सेहरा बोलने वाला प्राय: शराबी, कबाबी और सेक्युलर अर्थात् लामजहब होता है।

पंजाबियों के विवाहों में एक तुक्कड़ और आता है। उसको शिक्षा बोलने वाला कहा जाता है। वह भी तुकवन्दी बोलता है। उस में भाव यह होता है कि "यह लाडो फूलों की तरह रखी गई थी। आँखों का तारा उस को समझा गया था। इसको जिगर का टुकड़ा समझा गया था। यह नाजों की पाली हुई बेटी आज जा रही है। आज बाप का कलेजा फट रहा है। माँ का दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा है।" उसको सुनकर माँ रोती है, बाप रोता है। चाची, ताई, दादी, बहिनें, भाभियाँ सब के सब रोते हैं। उस समय ऐसा लगता है कि अभी कोई मर गया है। इस अवसर पर जो अधिक रुलाता है, उसको अधिक रुपया मिलता है।

पुरोहित जी सेहरा के समय से रोने के समय तक कई घण्टे तक मुशकिल से अपना समय काटते हैं। प्राय: भोजनादि के समय भी उन को याद नहीं किया जाता है। पाँच छ: घण्टे उलटे सोधे रहने के पीछे उनको दक्षिणा दी जाती है।

हजारों रुपये बिजली और आतिशबाजी, बैंड, भंगड़ा आदि पर खर्च करने वाला, पुरोहित की दक्षिणा पर किफायत सोचता है। जो नया आर्यसमाजी हो तो वह कुछ उदारता से दक्षिणा दे देगा और यजमान पुराना आर्य समाजी होगा तो यह कम से कम देगा। पुराना आर्य समाजी वहाँ बैठा भी होगा तो यजमान को कम से कम दक्षिणा देने की सलाह देगा। पुरोहित जी ने यदि यह कह दिया कि "दक्षिणा थोड़ी है" तो उसके विरुद्ध बवंडर खड़ा हो जायगा। पुरोहित वरण करने के लिये धोती-तौलिया दे दिया तो समझो

यजमान ने सर्वस्व दान कर दिया। मेरा एक सूत्ररूप वचन प्रसिद्ध हो रहा है। वह यह है:—

पौराणिक पुरोहित अपने यजमान को ठगता है और आर्य समाजी यजमान अपने पुरोहित को ठगता है।"

(१) कई समाजों में पूरी दक्षिणा समाज को देनी पड़ती है। पुरोहित केवल मासिक वेतन का अधिकारी है।

(२) कई समाजों में दक्षिणा आधी समाज लेता है, आधी पुरोहित के पास रहती है।

(३) कई समाजों में दक्षिणा तो पुरोहित के ही पास रहने दी जाती है पर मासिक वेतन इतना कम होता है कि उतने पर चपड़ासी नहीं मिलता है।

(४) कई समाजों के अधिकारी प्रधान अथवा मन्त्री संस्कार कराते और दक्षिणा लेते हैं। उन समाजों के पुरोहित केवल अन्त्येष्टि संस्कार कराते अर्थात् मुर्दे जलाते हैं।

(५) कई समाजों के चपड़ासी भी संस्कार कराते हैं। उन समाजों में पुरोहित रक्खे जाते हैं पर अधिक देर टिक नहीं सकते क्योंकि एक तो आय कम होने से निर्वाह नहीं हो पाता, दूसरे चपड़ासी घर घर पुरोहित की विधिपूर्वक निन्दा करता रहता है। अतः पुरोहित जी को वेकार वताकर मुक्त कर दिया जाता है।

(६) वह पुरोहित यदि किसी समाज में जाये तो वह समाज पहले समाज का प्रशंसा पत्र मांगता है।

(७) किसी समाज से पुरोहित स्वयं दुःखी होकर अधिकारियों की इच्छा के विना जाता है अथवा किसी समाज से सेवक द्वारा की गई निन्दा अथवा किसी पदाधिकारी के साथ मतभेद होने के कारण हटाया जाता है। इन सब दशाओं में प्रमाण पत्र अथवा प्रशंसा पत्र मिलना असम्भव है। पर अगला समाज पिछले का प्रमाण पत्र अवश्य माँगता है।

(८) प्रशंसा पत्र के अभाव में समाज दया करके कम से कम वेतन पर उनको पुरोहित रख लेता है और उनको कह दिया जाता है कि आपको परीक्षार्थ रक्खा जा रहा है। परीक्षा यह है कि पुरोहितजी वर्त्तमान पदाधिकारियों तथा उनकी पत्नियों को प्रसन्न करने और प्रसन्न रखने में सफल हो गये तो यावत् तावत् का नित्य संबंध देखकर कुछ समय टिके रहें। नहीं तो नहीं ही है।

(९) एक समाज में एक विद्वान् पुरोहित है। उनकी पत्नी भी विदुषी है और दोनों ही बहुत अच्छे हैं। दोनों समाज का बहुत काम करते हैं पर समाज उनको १५० रु० मासिक वृत्ति देता है।

(१०) एक समाज में एक महाविद्वान् पुरोहित ने बहुत ही अच्छा कार्य किया। जैसा पहले किसी ने न किया था न पीछे कोई कर सका। उस सज्जन को डिक्टेटर रूप नये प्रधान जी के दुर्व्यवहार के कारण त्यागपत्र देना पड़ा और उस प्रधान ने उस सज्जन पुरोहित के विरुद्ध वह तूफान खड़ा किया कि भगवान् ही बचाये।"सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते" कविरत्न पं० अखिलानन्द जी जब आर्य समाज में थे, तब एक श्लोक स्वनिर्मित सुनाया करते थे जिसका अर्थ यह है कि "आर्यसमाजी किसी कारण यदि बहुत प्रसन्न हो जाय तो वह "धन्यवाद" दे देगा और यदि अकारण ही अप्रसन्न हो जाय तो उन दोषों का आरोपण करेगा जो कभी स्वप्न में भी उसमें न आये हों। उसका जीवन दुश्वार कर देगा।"

(११) एक समाज में एक युवक पुरोहित गुरुकुल के स्नातक थे। योग्य भी थे और कर्मठ इतने थे कि प्रातः चार बजे से रात्रि के दश बजे तक धर्म प्रचार, कर्म काण्ड, पठन पाठन में ही व्यस्त थे। उनके माता पिता कुछ समय के लिये उनके पास आ गये तो समाज ने अपनी चारपाइयां उनसे ले ली और कह दिया कि अपनी चारपाइयां बनाओ। मैंने उन तीनों को भूमि पर सोते देखा तो उस समाज के प्रधान जी को पत्र लिखा कि योग्यता और कर्त्तव्य परायणता में जैसे पुरोहित आपके समाज में हैं ऐसे मुशकिल से ही कहीं मिलते हैं और इनके चले जाने पर ऐसा पुरोहित आपको मिलेगा नहीं। इनके साथ ऐसा व्यवहार नही होना चाहिये कि चारपाइयां भी छीन ली गई।

श्री प्रधान जी का उत्तरपत्र मेरे पास आया। उसमें मुझको आदेश था कि "आप आदर्श पुरोहित के लक्षण लिखें।"

मैंने उसके उत्तर में लिखा कि आप आदर्श आर्य सभासद, आदर्श मन्त्री और आदर्श प्रधान के लक्षण लिखिये, मैं आदर्श पुरोहित के लक्षण उनके साथ ही लिख दूंगा।

न उन्होंने आदर्श प्रधान आदि के लक्षण लिये न मुझ को लिखने की आवश्यकता पड़ी। वह जो सज्जन पुरोहित थे वह आजकल किसी सरकारी पद पर हैं। हजारों रुपया मासिक उनकी आय है। समाजों में ससम्मान बुलाये जाते हैं पर उस समाज को आजतक योग्य पुरोहित नहीं मिला। कभी किसी

भजनीक को पुरोहित रख लिया। कभी कोई परीक्षार्थी नवसिखिया आ गया। "जैसी नकटी देवी वैसे ऊत पुजारी"—"यादृशी शीतलादेवी तादृशो वाहनः खरः"।

(१२) दिल्ली के ही एक समाज ने पुरोहित की आवश्यकता का विज्ञापन समाचार पत्रों में छपाया। उसमें जो विशेषण लिखे थे कि प्रार्थी में ये होने चाहियें। वे ऐसे थे कि उन विशेषणों वाला व्यक्ति दो हजार रुपया मासिक पर भी नहीं मिल सकता है। अब तो पांच हजार मासिक पर भी नहीं मिलेगा। मैंने उस समाज को पत्र लिखा कि जिन विशेषणों से युक्त आप पुरोहित चाहते हैं। परमेश्वर कृपा करें कि वैसा पुरोहित आपको मिल जाय तब कृपया मुझ को अवश्य सूचित करना। मैं उस महापुरुष के चरण स्पर्श करने के लिये आऊंगा। वह कहां मिलना था? विज्ञापन निकालना चाहिए—

"लावे कोई ऐसा नर, पीर ववर्ची भिश्ती खर।"

(१३) पौराणिक पुरोहित योग्य हो, अयोग्य हो, उसके परिवार की आवश्यकताओं की चिन्ता यजमानों को होती है। उनकी पुत्रियों के विवाहों में यजमान लोग इतना धनादि देते हैं कि पूरा कार्य होने पर और बच जाता है। पुत्रियों के विवाहों में पौराणिक पुरोहित का कुछ भी व्यय नहीं होने पाता है।

(१४) ईसाई मिशनरियों में पति का भी वेतन प्रभूत है और पत्नी का भी। साथ ही उनके लड़के लड़कियों की शिक्षा मुफ्त होती है और घर में खर्च के लिये भी लड़के लड़कियों के नाम पर मासिक वृत्ति पृथक् मिलती है।

आर्य समाज के पुरोहित और उपदेशक के बच्चों को मासिक वृत्ति तो मिलनी असम्भव ही है, उनके बच्चे किसी भी पाठशाला या गुरुकुल में किसी भी स्कूल या कालिज में निःशुल्क शिक्षा नहीं पा सकते हैं।

हैड चपड़ासी—

(१५) महा पंडित श्री बिहारीलाल जी शास्त्री कहते हैं कि—आर्य समाज का पुरोहित हैड चपड़ासी होता है। मैंने उनको बताया कि कई समाजों में चपड़ासी ही हैड और पुरोहित उसका असिस्टेण्ट होता है। पुरोहित को चपड़ासी का अनुशासन और कभी-कभी आदेश भी मानना पड़ता है।

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का एक प्रसिद्ध वाक्य है—

"जगत् गुरु ब्राह्मण, ब्राह्मण का गुरु संन्यासी।
संन्यासी का गुरु· आर्यसमाज का चपड़ासी॥"

झगड़ा—

(१६) पुरोहित या उपदेशक का कुछ विवाद यदि समाज के अधिकारी या समाज के चपड़ासी से हो जाय तो मेरा साठ वर्ष से भी अधिक वर्षों का अनुभव है कि उस विवाद में पुरोहित और उपदेशक की निश्चय हार, चपड़ासी की जीत होती है। चपड़ासी का काम नित्य घर-घर घूमने का है। वह किसी के बच्चों को प्यार कर आता है। किसी की शाक भाजी बाजार से लाकर दे जाता है। किसी का आटा पिसा देता है। हाथ जोड़ सकता है। पैर पकड़ सकता है और उसके पास घर घर जाने के लिये खुला समय है। बड़ा भोला बनकर धीरे-धीरे विधिपूर्वक पुरोहित की निन्दा निरन्तर करता रह सकता है। पुरोहित यह सब कुछ कर नहीं सकता है। अतः निश्चय ही पुरोहित की हार होती है।

प्रसंगवश यह लिखता हूं कि मैं चौरासी वर्ष का बूढ़ा चलने फिरने में असक्त, असमर्थ हूं। धन कमाया नहीं। कोई मकान भी बनाया नहीं। पहला भी फूट गया। सन्तान परेशान है। एक सज्जन मेरे घोर विरोधी हैं। वे घर-घर घूम घूम कर मेरी घोर निन्दा करत हैं। मेरी सेवा करने वालों पर भांति भांति के लांछन लगाकर उनको हर प्रकार से बरबाद करने का घोर प्रयत्न करते हैं। उनके पास दिन रात खुला समय है। मैं कहीं सफाई देने जा नहीं सकता—"अतथ्यस्तथ्यो वा हरति महिमानं जनरवः। बात सत्य हो व असत्य सुनने वालों पर प्रभाव डालती ही है, किसी को क्या पड़ी है जो बात की तह तक पहुंचने का परिश्रम करे।

उन बेचारे गरीबों की सहायता कोई क्यों करे ?

एक हंस और हंसिनी की कहानी है। हंस और हंसिनी दोनों थककर रात्रि को एक बड़े वृक्ष पर विश्राम करने के लिए ठहर गये। उस वृक्ष पर एक उल्लू रहता था। जब हंस और हंसिनी दोनों अपने गन्तव्य स्थान के लिए जाने लगे तो उल्लू ने हंसिनी को पकड़ लिया और कहा कि "यह मेरी पत्नी है।" गवाहियों की आवश्यकता हुई तो हंस परदेशी था। उसका गवाह कोई न बना। पड़ौस के सभी पक्षियों ने उल्लू की गवाही दी। उन्होंने कहा... "हमको तो नित्य काम इससे पड़ता है और आगे पड़ना है। परदेशी हंस से हमको क्या काम !"

यह नीति बहुत चलती है। गरीबों, परदेशियों और आने जाने वालों से किसी को क्या लेना है ? अतः पुरोहित की हार अवश्य होती है।

पुरोहित और समाज के सदस्य—

(१७) पुरोहित दो सौ रुपये समाज से लेता है और सदस्य एक दो रुपये समाज को देता है। पुरोहित का चौवीस घण्टे प्रतिदिन समाज को देना कुछ मूल्य नहीं रखता है। सदस्य और अधिकारी का एक सप्ताह में एक घंटा भी बहुत मूल्य है। सदस्य और अधिकारी अपने आपको शासक मानते और पुरोहित को शासित (नौकर) समझते हैं। यही कारण सारे बिगाड़ का है।

(१८) एक विद्वान् ने सारी आयु में एक बार पुरोहिताई की। कई वर्षों तक बहुत सफलता के साथ उनका कार्य चला। एक नये प्रधान बने। उन्होंने अकारण पुरोहित जी पर रोब डालने के लिये शिकायत की कि…आप मेरे अनुशासन में नहीं रहते हैं।" पुरोहित जी ने कहा…काम तो समाज का पूरा करता हूं। समाज को हानि पहुंचाने वाला कोई काम नहीं करता हूं। सदा समाज के लाभ का ही ध्यान रखता हूं और अनुशासन आप क्या चाहते हैं?" श्री प्रधान जी ने कहा:—"समाज का कार्य करते हुए भी मेरे अनुशासन में रहना चाहिये।" पुरोहित जी ने कहा…श्री प्रधान जी? शासन में रहने का नाम अनुशासन है तो यह बताइये कि शासन करने का अधिकार विद्वान् को होना चाहिये अथवा अविद्वान् को?" प्रधान जी ने उत्तर तो कुछ नहीं दिया। पर सांप की सी फुंकार मार कर उठकर चले गए। पुरोहित जी ने भी समझ लिया कि क्या होना है। अतः त्यागपत्र लिखकर दे दिया कि मैं श्री प्रधान जी के साथ काम करने में असमर्थ हूं अतः मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जावे।

अपना बोरिया बिस्तरा उठाकर चले आये। वह ही उनका प्रारम्भिक पौरोहित्य था और वह ही अन्तिम। "आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूंक।"

बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा लिया।"

उसकी बला से बूम रहे या हुमा रहे।"

(बूम—उल्लू। हुमा—वहिश्त की चिड़िया)

प्यारे पुरोहित गण !

उसने जो कुछ कह दिया, यह आप मत कहना। यदि आपने भी यह कह दिया तो "ढोल से भी खाल जायेगी" आप छोड़कर चले जायेंगे तो आपके पीछे बहुत से खुशामदी और चापलूस आ जायेंगे। आर्यसमाज का काम सर्वथा चौपट हो जायगा।

"सितम सहे जा करम किये जा, यही था तर्जे अमल ऋषि का।
इसी पै आमिल "प्रेम" तू हो कि हक तुझे कामगार कर दे।"

गम्भीरता से कर्त्तव्य का पालन किये जाइये। आपका परिश्रम व्यर्थ नही जायगा। समय आवेगा जब विद्वानों का, धर्मात्माओं का सम्मान करने वाले भी आगे आयेंगे।

"लगा रख दिल किनारे से कभी तो लहर आयेगी।"

मैं बहुत आशावादी हूं, कभी डरता नहीं, घबराता नहीं, कभी रोता नहीं परमेश्वर पर पूरा विश्वास रखता हूं।

पाय अटके रहे, अलि गुलाब के फूल।
अइहें पाय वसन्त ऋतु, इन डारन पै फल॥"

उपदेशकों के विना उन्नति का कार्य कभी नहीं हुआ, कभी नहीं होगा। "उपदेश्योपदेष्ट्रवात्।" (सांख्य)

उपदेश का कार्य उपदेष्टाओं से ही होगा।

"इतरथा अन्धपरम्परा।" (सांख्य)

उपदेशकों के बिना अन्ध परम्परा ही चलती है।

"मारग सोई जा कहें जो भावा।
पण्डित सोई जो गाल वजावा।"

आपके ऊपर ऋषि दयानन्द जी महारजा का ऋण है। उसको उतारना उनका परम कर्त्तव्य है जो उसको जानते हैं। जो उसको नहीं जानते, उनका कुछ कर्त्तव्य नहीं है। इसलिए कहिए…"वयंराष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:" (वेद)

हम राष्ट्र में जागने वाले पुरोहित हैं।

नारि पूजा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला: क्रिया:। (मनु ३।५६)

जहां नारि की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं जहां तिरस्कार होता है वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं।

आयु घट बढ़ सकती है

लें० अमर स्वामी परिव्राजक

अकाल मृत्यु होती है या नहीं ? आयु निश्चित है या नहीं ? इन दो नामों से वाद-विवाद शंका-समाधान और शास्त्रार्थ भी होते रहे हैं, मैं इन दोनों शीर्षकों को छोड़कर "आयु घट-वढ़ सकती है" इस विवाद के विषय के केवल वह प्रमाण इस लेख में दूँगा। जो महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा संस्कार-विधि में प्रयुक्त हुए हैं, पश्चात् अवकाश मिला तो इस विषय पर अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों से वहुत-से प्रमाणों का संग्रह पुस्तक के आकार में प्रकाशनार्थ लिखकर दूँगा।

यह लेख विद्वानों तथा अन्य स्वाध्यायशीलों के लिये लिखा गया है। इस लेख में दिये प्रमाणों को विचार पूर्वक विचारशील सज्जन देखें और फिर निश्चय करें कि—अकाल मृत्यु होती है वा नहीं तथा आयु निश्चित है या नहीं ?

मैं इस लेख में केवल प्रमाण ही उद्धृत करूंगा विस्तार में नहीं जाऊंगा, पाठक गण प्रमाणों को देखें और विचार करें।

(१) "देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे" यजु० २५।१५। संस्कारविधि स्वस्तिवाचन में २५ वा मन्त्र

(२) 'जीवेम शरदः शतम्" यजु० ३६।२४। संस्कारविधि शान्ति प्रकरण में।

(३) ओं अग्न आयूँषि पवस। ऋग्वेद ९।६६।१९। सं. सामान्य प्रकरण में।

(४) ऊनषोडवर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम्।
यथाधत्ते प्रमान् गर्भं, कुक्षिस्त स विपद्यते॥
जातो वा न चिरं जीवेत् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रिय।
तस्मादत्यन्तबालायां, गर्भाधानं न कारयेत्॥ सुश्रुत शारीरस्थान (संस्कारविधि गर्भाधान प्रकरण)

(५) यत्ते सुसीमे०……जीवेम शरदः शतम् । पारस्कर गृह्यसूत्र (गर्भाधान प्रकरण में) ।

(६) "प्रजामस्यै जरदष्टिं कृणोमि ।" (मन्त्र ब्राह्मण) स. सीमन्तोन्नयन

(७) प्रते ददामि०……आयुस्मान गुप्तो देवताभिः शतं जीव शरदो लोके अस्मिन् ॥
आश्वलायन गृह्यसूत्र स० जातकर्म संस्कार में ।

(८) "त्वा आयुषा आष्युमन्तं करोमि ।" पारस्कार गृह्यसूत्र
इस प्रकार का पाठ यहां आठ वार और आया है इस प्रकार ये १६ प्रमाण हुए ।

(१७) ओम् इदमाज्यमिदमन्नमिदमायुरिदममृतम्
मन्त्र ब्राह्मण और गोभिल का वचन (संस्कारविधि जातकर्म संस्कार में) ।

(१८) शतं शरदो जीवसे ।
ओं अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव । आश्वलायन

(१९) वेदो वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् ॥ (जातकर्म संस्कार में)

(२०) त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ यजु० ३।६२ (जातकर्म में)

(२१) ओम् वेद ते हृदयं……पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम ॥ पारस्कार (जातकर्म सं. में)

(२२) ओं इन्द्राग्नी शर्मयच्छत०…… यथायं न प्रमीयते पुत्रो जनि अधि । मन्त्र ब्राह्मण (जातकर्म में)

(२३) संवत्सरस्त्वायुषे जरायै परिददाम्यसौ ॥७७॥ मन्त्र ब्राह्मण (जातकर्म में)

(२४) अङ्गादङ्गात् सं भवसि हृदयादधि जायसे ।
प्राणं ते प्राणेन सन्दधामि, जीव ते याददायुम् ॥८॥ मन्त्र ब्राह्मण (जातकर्म में)

(२५) अङ्गादङ्गात् सं भवसि हृदयादधि जायसे ।
वेदो वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् ॥९॥

(२६) अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव ।

आत्मासि पुत्र मा मृथाः स जीव शरदः शतम् ॥१०॥ मन्त्र ब्राह्मण (जातकर्म में)

(२७) इमं जीवेभ्यः परिधिं ददामि, मैषां नु गादपरोअर्थमेतत् ।
शतं जीवन्तः शरदः प्ररूचीस्तिरो मृत्युं दधतां पवतेन ॥
अथर्व० १२।२।२३ (जातकर्म में)

(२८) आशीर्वाद—

हे बालक ! त्वमायुष्मान् वर्चस्वी, तेजस्वी श्रीमान् भूयाः । (आर्य भाषा में) "हे बालक" (तू) आयुष्मान् विद्यावान्, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी प्रतापी, परोपकारी, श्रीमान् हो ॥ (नामकरण के अन्त में)

(२९) संवत्सरस्त्वायुषे जरायै परिददातु असौ ॥ (नामकरण में)

(३०) ओं इन्द्राग्नी मे शर्म यच्छतं, प्रजायै मे प्रजापती ।
यथायं न प्रमीयेत् पुत्रो जनित्र्या अधि ॥ मन्त्रब्राह्मण (निष्क्रमण-संस्कार) में)

(३१) अङ्गादङ्गात्०..........आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् ॥१॥

(३२) प्राजापतेष्ट्वा हिङ्कारेण जिघ्रामि ;
सहस्रायुषा ऽसो जीव शरदः शतम् ॥१॥

(३३) गवां त्वा हिङ्कारेणेव जिघ्रामि ।
सहस्रावा ऽसौ जीव शरदः शतम् ॥ पारस्कर (निष्क्रमणसंस्कार में)

(३४) अस्मे प्रयन्धि० अस्मे शतशरदो जीवसे० पारस्कर (निष्क्रमण-संस्कार में)

(३५) तच्चक्षुर्देवहितं० जीवेम शरदः शतम्० यजु० ३६।४ (निष्क्रम सं० में)

आशीर्वाद

(३६) त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः । (निष्क्रमण सं० के अन्त में)

आशीर्वाद

(३७) ओं त्वमन्नपतिरन्नादो वर्धमानो भूयाः । (अन्नप्राशन सं० में)

(३८) ओं अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उदन्तु वर्चसा ।
चिकित्सतु प्रजापति, दीर्घायुत्वाय वर्चसे ॥ पारस्कर (चूड़ाकर्म संस्कार में)

(३९) ओं सविता प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं ।
दीर्घायुत्वाय वर्चसे ॥ पारस्कर (चूड़ाकर्म संस्कार में)

(४०) ओं शिवोनामासि स्वतिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिंसी: ॥
यजु० ३।६३ (चूड़ाकर्म संस्कार में)

(४१) ओं निवर्त्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननाय, रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय, सुवीर्याय ॥ (यजु० चूड़ाकर्म में)

(४२) ओं येन धाता बृहस्पतेरग्नेरिन्द्रस्य चायुषे ऽवपन् ।
तेन त आयुषे वयामि सुश्लोक्याय स्वस्तये ॥ आश्वलायन गृह्यसूत्र (चूड़ाकर्म सं० में)

(४३) ओं येन भूयश्च० तेन त आयुषे वपामि० आश्वलायन (चूड़ाकर्म सं० में)

(४४) येन पूषा० तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे ॥ मन्त्र ब्राह्मण १।६।७ (चूड़ाकर्म सं० में)

(४५) ओं येन भुरिश्चरादिवं०
तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये ॥
पारस्कार (चूड़ाकर्म सं० में)

(४६) ओं त्र्यायुषं० ॥ यजु० ३।६२

(४७) ओं यत् क्षुरेण० शुन्धि शिरो मास्मायुः प्रमोषीः ।
आश्वलायन० १।१७।१५ (चूड़ाकर्म में)

आशीर्वाद

(४८) ओं त्वं जीवः शरदः शतं वर्धमानः ॥

(४९) ओं येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम् ।
तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥१॥ पारस्कर (उपनयन सं० में)

(५०) ओं यज्ञोपवीत परमं पवित्रं० आयुष्मं० ॥ पारस्कर (उपनयन-सं० में)

आशीर्वाद

(५१) ओं त्वं जीव शरदः शतं वर्धमान; आयुष्मान् तेजस्वी वर्चस्वी भूयाः ॥ (उपनयन संस्कार में)

(५२) ओं अग्ने समिध० अहमायुषा मेधया० । पारस्कर (वेदारम्भ सं० में)

(५३) ओं आयुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि ॥२॥ (उपनयन सं० में) आचार्य का आशीर्वाद

(५४) आयुष्मान् विद्यावान् भव सौम्य ॥ (वेदारम्भ संस्कार में)

(५५) अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्त, आयुर्विद्यायशोबलम् ॥
मनुस्मृति अध्याय २, श्लोक १२१ (वेदारम्भ सं० के पीछे)

(५६) ओं परिधास्यै यशोधास्यै, दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ।
शतं च जीवाभिशरदः पुरुची, रायस्पोषमभिसंव्यपिष्ये ॥
पारस्कर गृह्यसूत्र (समावर्तन संस्कार में)

(५७) रूपसत्वगुणोपेता, धनवन्तो यशस्विनः ।
पर्याप्तभोगाधर्मिष्ठा, जीवन्ति च शतं समाः ॥

मनु० अ० ३ श्लोक ४०

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का किया अर्थ
वे पुत्र व कन्या सुन्दर रूप बल पराक्रम शुद्ध बुद्धमानादि उत्तमगुणयुक्त, पुण्यकीर्तिमान् और पूर्ण भोग के भोक्ता अतिशय धर्मात्मा होकर १०० सौ वर्ष तक जीते हैं। (विवाह संस्कार के प्रमाणों में)

(५८) ओं जरां गच्छ शतं च जीव शरदः सुवर्चारयिं च ।
पुत्राननुसं व्यस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ पारस्कर गृह्यसूत्र
१।४ १२ (विवाह सं० में कन्या को वस्त्र देते हुए)

(५९) ओं या अकृन्तन्नवयन्० तास्त्वा देवीर्जरसे
संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ पारस्कर १।४।१३
(वर वधू को वस्त्र देता हुआ बोलता है)

(६०) ओं परिधास्यै यशोधास्यै, दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ।
शतं च जीवामि शरदः ।
पारस्कर (विवाह संस्कार में वरवस्त्र धारण करते समय बोलता है

(६१) ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या
जरदष्टिर्यथासः । ऋग्वेद १०।८५।३६ ॥
(विवाह संस्कार में पाणिग्रहण के समय वर बोलता है)
महर्षि का अर्थ—(जरदष्टिः) जरावस्था को प्राप्त ।

(६२) ममेयमस्तु पोष्या० शं जीव शरदः शतम् ॥
अथर्व १४।१।५२ (वि० सं० में पाणिग्रहण करता वर बोलता है)

ऋषि का अर्थ—(मया पत्या) मुझ पति के साथ (शतम्) सौ (शरदः) शरद ऋतु अर्थात् शतवर्ष पर्यन्त (शं—जीव) सुखपूर्वक जीवन धारण कर।

(६३) ओं प्रेभो ऽहमस्मि० पुत्रान् विन्दावहै बहून्। ते सन्तु जरदष्टयः० पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतम् ॥७॥ पारस्कर (विवाह सं० में शिलारोहण से पहिले वर बोले)

ऋषि भाष्य—(बहून पुत्रान् विन्दावन है) बहुत पुत्रों को प्राप्त होवें (ते) वे पुत्र (जरदृष्टयः) जरावस्था के अन्त तक जीवनयुक्त (सन्तु) रहें।

(शतम्) सौ (शरदः) शरद ऋतु अर्थात् शतवर्ष पर्यन्त एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से (पश्येम) देखते रहें। (शतं शरदः) सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से (जीवेम) जीते रहें और (शतं शरदः) सौ वर्ष पर्यन्त प्रिय वचनों को सुनते रहें

(६४) लाजा होम के दूसरे मन्त्र में है—

"आयुष्मानस्तु मे पतिः" मेरा पति बड़ी आयु वाला होवे। यह वधू कहती है कि—मेरे पति कि आयु बड़ी हो वह लम्बी आयु वाले हों। पारस्कर १।६।२

विवाह संस्कार में सूर्यदर्शन करते हुए वर बोलता है—

(६५) ओं तच्चक्षुर्देवहितं० पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ यजु० ३६।१४

(६६) ओं ध्रुवमसि० मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम्। पारस्कर १।८।१९ (विवाह सं० में ध्रुव दर्शन कराते समय वर का वचन)

ऋषि—भाष्य—(मया) मुझ (पत्या) पति के साथ (प्रजावति) बहुत उत्तम प्रजायुक्त होकर सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दपूर्वक जीवन-धारण कर।

पत्नी भी इसी प्रकार कहे कि—आप मुझ पत्नी के साथ उत्तम प्रजायुक्त होके सौ वर्ष पर्यन्त जीवें।

(६७) इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ॥
अथर्व० १४।१।२२ (गृहाश्रम के आरम्भ में दूसरा मन्त्र)

(६८) इहेमाविन्द्र संनुद० विश्वमायुर्व्यश्नुताम् ।। अथर्व १४।२।२६ (गृहाश्रम के आरम्भ में)

ऋषि भाष्य—(एनो) ये (पति-पत्नी) दोनों (स्वस्तकौ सुखयुक्त होके (विश्वम्) सम्पूर्ण १०० वर्ष पर्यन्त (आयुः) आयु को (व्यश्नुताम्) प्राप्त होवें।

(६९) प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमान दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं ते आयुः सविता कृणोतु ।।

ऋषि भाष्य—हे पत्नी! तू (शतशारदाय) शतवर्ष पर्यन्त (दीर्घायुत्वाय) दीर्घ काल जीने के लिए (सुबुधा) उत्तम बुद्धि युक्त (बुध्यमाना) सज्ञान होकर (गृहान्) मेरे घरों को (गच्छ) प्राप्त हो और (गृहपत्नी) मुझ घर के स्वामी की स्त्री (यथा) जैसे (ते) तेरा (दीर्घम्) दीर्घ काल पर्यन्त (आयुः) जीवन (प्राप्तः) होवे वैसे (प्रबुध्यस्य) प्रकृष्ट ज्ञान और उत्तम व्यवहार को यथावत् जान।
यहां महर्षि दयानन्द जी महाराज के भाष्य में भी स्पष्ट है कि—उत्तम ज्ञान और उत्तम व्यवहारों से आयु सौ वर्ष तक हो सकती है उत्तम ज्ञान और उत्तम व्यवहारों के बिना घट जायगी।

(७०) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।।

यजुर्वेद अ० ४० मन्त्र २ (गृहाश्रम प्रकरण में)

सन्ध्या में भी—'जीवेम शरदः शतम्' यह प्रार्थना दिन में दो बार की जाती है।

(७१) नवशस्येष्टि और संवत्सरेष्टि में भी—
ओं यन्मे किंचित० आदि मन्त्र में भी—
"जीवतः शरदः शतम्" पाठ है।

(७२) आचरल्लभते ह्यायुराचाद्रीप्सिताः प्रजाः ।।मनु० ४।१५६
ऋषि—धर्माचरण ही से दीर्घायु उतम प्रजा और अक्षय धन को मनुष्य प्राप्त होता है।

(७३) दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःख भागी च सततं, व्याधितोऽल्पायुरेव च ।। मनु ४।१५७
ऋषि—जो दुराचारी पुरुष होता है वह सर्वत्र निन्दित दुःखभागी और व्याधि से अल्पायु हो जाता है।

(७४) सर्वलक्षणहीनोऽपि, यः सदाचारवान् सः।

श्रद्धानोऽनुसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ।। मनुस्मृति ४।१५८।।
ऋषि टीका—जो सब अच्छे लक्षणों से हीन भी होकर सदाचार युक्त सत्य में श्रद्धा और निन्दा आदि दोष रहित होता है वह सुख से सौ वर्ष पर्यन्त जीता है ।

ये मैंने ७४ प्रमाण केवल महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा लिखी संस्कारविधि में से दिये हैं ।

लेख के अन्तिम भाग में कुछ मन्त्रों तथा श्लोकों पर ऋषि के ही अर्थ मैंने दिये हैं उनसे सारे लेख तथा उसमें दिये गये प्रमाणों से भाव स्पष्ट हो गया है।

सार यह है कि—उचित ज्ञान और उचित व्यवहारों, आचरणों से आयु बढ़ सकती है और अज्ञान तथा अनुचित आहार-व्यवहार से आयु घट सकती है ।

इस विषय पर मैं एक पुस्तक भी लिखना चाहता हूं जिसमें इस लेख से कई गुणा अधिक प्रमाण हो सकते हैं ।

शास्त्रार्थ के मैदान में

लेखक : शास्त्रार्थ-महारथी अमर स्वामी (अमरानन्द)

संन्यास आश्रम गाजियाबाद, (उत्तर प्रदेश)

(१) श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ईसाइयों, मुसलमानों और पौराणिकों से भी मुबाहिसे और शास्त्रार्थ करते थे, उनका मुबाहिसा पादरी ज्वालासिंह जी के साथ हो रहा था। स्वामी जी कह रहे थे कि—लक्षण-प्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः न तु प्रतिज्ञामात्रेण"। आप जीव और प्रकृति का लक्षण करिये।

पादरी जी ने कहा—स्वामी जी आप तो हर बात न्याय में ले जाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि—मेरा स्वभाव है कि—मैं हर बात न्यायानुकूल करता हूं आपको न्याय पसन्द नहीं है तो अन्यायानुकूल ही कहते रहिये। श्रोता बहुत हंसे।

(२) स्वामी दर्शनानन्द जी और मौ० सनाउल्ला साहिब अमृतसरी का मुबाहिसा था "रूह और माद्दे की कदामत" (जीव और प्रकृति का अनादित्व) स्वामी जी कहते थे कि—जिस वस्तु की उत्पत्ति है, उसका विनाश अवश्यम्भावी है। जिसका आरम्भ है उसका अन्त है। जीव और प्रकृति अनादि हैं और अनन्त हैं, आप उनका आदि मानते हैं तो अन्त भी मानिये या उनको अविनाशी मानते हैं, अनादि भी मानिये, एक किनारे का दरिया नहीं होता है।

मौलवी साहिब ने कहा कि—इल्म हिन्दसा की इब्तदा एक से होती है और इन्तहा कहीं नहीं, अरबों खरबों से भी आगे हिसाब जाता है।

स्वामी जी ने कहा—गणित का आरम्भ एक से होता है, ऐसा कहना गलत है। गणित जितना एक से आगे को चलता है उतना ही-और-उसी प्रकार ही-पीछे को भी है, जैसे एक बटा दो, एक बटा चार, एक बटा लाख, एक बटा अरब आदि। मौलवी साहिब इसका खण्डन न कर सके और श्रोता चकित रह गये।

(३) श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर का एक मौलवी के साथ मुवाहिसा हो रहा था पण्डित जी ने कुर्आन की बहुत सी आयतें बोली और सब सही बोली। मौलवी से उनका कुछ जबाव तो वन न सका वह बोला कि पण्डित साहिब आपने कुरान गलत पढ़ा—पण्डित जी ने कहा— कि—मैं कब कहता हूं कि मैंने सही पढ़ा—हजरत मुहम्मद साहिब की जिन्दगी में ही कुरान गलत पढ़ने वाले आपस में झगड़ा किया करते थे, हर एक पढ़ने वाला दूसरे पढ़ने वाले को कहता था कि तुम गलत पढ़ते हो। साबित है कि वह किताब ही गलत है। गलत को गलत ही पढ़ा जाएगा। गलत को सही कौन पढ़ सकता है?

(४) श्री पं० भोजदत्त जी के ज्येष्ठ पुत्र डा० श्री लक्ष्मीदत्त जी आर्य मुसाफिर का मुसाफिर पादरी फ्रैंक जानसन (पं० श्री नीलकण्ठ जी शास्त्री के पौत्र) के साथ महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ—डाक्टर साहिब की दलीलों का खण्डन और उनके सवालों का जवाब पादरी से न वन सका, मुबाहिसे के बाद आंखों में आंसू भर कर पादरी ने कहा—डाक्टर साहिब! आपके सवालों का जवाब मैं नहीं दे सका और कोई पादरी नहीं दे सकता है। इनका जवाब है ही नहीं। मेरे दादा (पं० नील-कण्ठ जी) के सामने ये बातें आती तो वह ईसाई क्यों बनते? डा० साहिब ने छाती से लगाकर पादरी से कहा—आप ईसाईयत को छोड़कर हमारे पास आजाइये।

पादरी ने कहा—डाक्टर साहिब! अब वहां से आने पर न हमको वह मान मिल सकता है जो मिलना चाहिए और न वह धन मिल सकता है जो ईसाई रहते हुए मिलता है, जो तीर कमान से निकल गया उसका वापिस आना मुश्किल है।

(५) पं० श्री मुरारी लाल जी शर्मा से एक उद्दण्ड व्यक्ति ने शंका समाधान के समय कहा—मैं एक लघु शंका आप पर करना चाहता हूं, आप समाधान करेंगे?

श्री शर्मा जी बोले—आप मुंह में ही लघु शंका क्यों रक्खे हुए हैं, मुंह से बाहर निकालिये।

(६) पौराणिक पण्डित अखिलानन्द ने शास्त्रार्थ में कहा—स्वामी दयानन्द जी ने यजुर्वेद के भाष्य में लिखा है कि उल्लू पालने चाहियें, आर्य समाजियों ने उल्लू क्यों नहीं पाले?

आर्य पण्डित ने कहा—आर्य समाज ने दो उल्लू पाले थे, सो दोनों उड़ गये (भीमसेन और अखिलानन्द की ओर संकेत था) लोग बहुत हंसे अखिलाजी लज्जित हो गये।

(७) रुलियाराम जी अमृतसरी (पौराणिक) ने वद्दोमल्ली जि० स्यालकोट (पंजाब) में कहा स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन-चरित्र में लिखा है—मैंने स्वप्न में देखा कि—शिव और पार्वती मेरे पास खड़े हैं। पार्वती जी कहती हैं कि—इस (दयानन्द) का विवाह करा देना चाहिए, शिवजी इसमें सहमत नहीं थे, पार्वती जी अधिक आग्रह करने लगी, स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि इतने में मेरी आंख खुल गई और मैं बहुत रोया।

रुलियाराम जी ने कहा—स्वामी दयानन्द जी इसलिए रोये कि—हाय मेरा विवाह होते-होते रुक गया, थोड़ी देर और सोया रहता तो विवाह हो जाता।

मैंने कहा—श्री रुलियाराम जी ने स्वामी जी की बात का सर्वथा उलटा अर्थ निकालने का विफल प्रयास किया है। उसी स्वलिखित चरित्र में लिखा हुआ है कि घर पर विवाह की तैयारियां होती देखकर ही विवाह से बचने के लिए घर से भागे थे।

शिव पार्वती के विवाह सम्बन्धी सम्वाद को स्वप्न में सुनकर रोने का कारण यह हो सकता है कि मैं तो विवाह से बचने के लिए सम्पत्ति शाली घर और परिवार को छोड़कर भागा था—पर पौराणिकों के देवी-देवता यहां भी सगाई लिए फिरते हैं और स्वप्न में भी पीछा नहीं छोड़ते।

मेरी यह बात सुनकर श्रोता बहुत प्रसन्न हुए और अपनी प्रसन्नता को रोक न सके, खिल-खिलाकर हंस पड़े। रुलियाराम जी सर्वथा फीके पड़ गये।

(८) मियानी जि० सरगोधा (पंजाब) में पौराणिक शास्त्रार्थ-कर्त्ता पं० श्रीकृष्ण जी शास्त्री तथा पतरेड़ी जि० अम्बाला में पं० माधवाचार्य जी ने मुझको शास्त्रार्थ करते हुए कहा कि आपने दीर्घकाल तक आर्य समाज का प्रचार किया पर आर्य समाज़ी लोगों ने आज तक आपको ब्राह्मण नहीं माना, अब तक आपको ठाकुर ही कहा जाता है।

मैंने कहा—प्रथम तो ठाकुर शब्द किसी वर्ण का बोधक नहीं है, जन्मना ब्राह्मण कहलाने वाले विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर कहलाते रहे। उनके

पिताजी महर्षि कहलाते हुए भी महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर कहलाते रहे। संगीत सम्राट् पं० ओंकारनाथ ठाकुर ही कहलाते रहे।

दूसरे मुझको सारा आर्यसमाज ब्राह्मण मानता है, जन्मना ब्राह्मण कहलाने वाले मेरे अनेकों शिष्य हैं जो गुरु मानते और मेरे पैर छूते हैं, मगर मैं देखता हूं कि आप लोगों के वंश में सैंकड़ों वर्षों से ठाकुरों की जय बोली जाती और ठाकुरों की कल्पित मूर्तियों के भी चरण धो-धो कर चरणामृत पिया जाता है ऐसा देखकर मैं अपने आपको ठाकुर कहलवाना बन्द नहीं करता हूं कि—मैं पूज्य हूं, पुजारी क्यों बनूं ?

(९) झांसी में ईसाई-प्रचार-निरोध-सम्मेलन हो रहा था। एक ईसाई पादरी ने एक प्रश्न किया। श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने सुन्दर उत्तर दे दिया, उसने दूसरी वार वही प्रश्न दुहराया, पण्डित जी ने और सुन्दर उत्तर दिया, पादरी ने तीसरी बार फिर वही प्रश्न किया। पण्डित जी ने और अच्छा उत्तर दिया, चौथी बार वह फिर उठकर खड़ा हुआ सभा के प्रधान जी ने रोक दिया कि वस अब आपको समय नहीं दिया जायेगा।

उस पादरी ने श्री देहलवी जी से प्रार्थना की कि मुझको फिर समय दिलवाइये।

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने पूछा कि—पादरी जी ! आप इस जन्म में कुछ अच्छे काम भी न करें और अपने खुदा से अर्ज करें कि—मुझको दूसरी बार जन्म और दे दे तो क्या वह आपको दूसरा जन्म दे देगा ?

पादरी ने कहा—हरगिज नहीं देगा।

श्री पण्डित जी हंसकर बोले कि—फिर आपके खुदा से तो हमारे प्रधान जी अच्छे हैं जिन्होंने आपको तीन बार समय दे दिया।

इस उत्तर से सभा में हंसी का फव्वारा फूट निकला और पादरी लज्जित होकर चला गया।

(१०) दानापुर (पटना) समाज का उत्सव था। श्री पं० देहलवी जी भी विद्यमान थे। शंकाओं का समाधान करने के लिए उन्होंने ही मुझको नियुक्त कराया था।

बहुत शंकाएँ हुई, मैंने सबका समाधान किया। एक बिगड़े हुए युवक ने पर्ची में एक ऐसा ही प्रश्न लिखकर दिया—

(प्रश्न) औरत और जहर दोनों में कितना अन्तर है ?

मैंने उत्तर दिया—प्यारे युवक ! औरत वह है जिसने तुमको जन्म दे दिया और जहर वह है जो तुमको मार सकता है। एक का अनुभव हो चुका

है दूसरे की परीक्षा करके देखलो, अन्तर तुमको ही नहीं तुम्हारे सारे सम्वन्धियों को भी प्रकट हो जायगा। इस उत्तर से लोग वहुत प्रसन्न हुए।

(११) राजधनवार जिला हजारी बाग (विहार) में पौराणिक पं० माधवाचार्य जी के साथ मैंने पुराणों की अवैदिकता सिद्ध करने को शास्त्रार्थ किया। पण्डित अखिलानन्द जी मेरे सामने ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों को वेद विरुद्ध सिद्ध करने को शास्त्रार्थ में प्रवृत्त थे पर सर्वथा असफल हुए, कहने लगे कि—

मैं भी पहिले आर्य समाजी था और देखिये आर्यसमाज की आज छीछालेदर कर रहा हूं। आर्य समाजियों की ओर हाथ घुमाकर कहा—"इस घर को आग लग गई" अपनी ओर संकेत करके कहा—"(इस) घर के चिराग से"।

पूज्य श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, श्री पं० आचार्य रामानन्द जी शास्त्री पटना और पं० गंगाधर जी शास्त्री व्याकरणाचार्य पटना उस समय हमारे मंच पर विराजमान थे।

मैंने अखिलानन्द जी की ओर संकेत करके कहा, सत्य है कि···यह मिट्टी के तेल का चिराग हमारे घर में जलता था, हमारे घर में वदवू फैलाता और हमारे घर की दीवारें काली करता था, हमारे घर को आग इसने भी लगानी आरम्भ की थी। हमने घर को हानि पहुंचने से पहिले ही उस आग को वुझा दिया और इस मिट्टी के तेल वाले चिराग को निकाल कर वाहर कर दिया, अब हमारे घर में विजली के वड़े-वड़े वल्व (श्री आचार्य रामानन्द जी आदि की ओर संकेत करके कहा) प्रकाश कर रहें हैं और यह मिट्टी के तेल का चिराग उस घर में टिमटिमा रहा है जिसमें घोर अंधियारा था।

मेरे इस उत्तर को सुनकर हमारा विद्वत्मण्डल हंसी के मारे लोट पोट हो गया। श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज जी मुझको सदा सिद्धान्त मार्तण्ड और प्रमाण महार्णव कहा करते थे। यावज्जीवन जब भी मिलते थे इस उत्तर को अवश्य याद दिलाते और बहुत प्रसन्न होते थे।

मैंने शास्त्रार्थ संस्मरण के रूप में कुछ शास्त्रार्थों के चुटकले लिख दिये हैं, पाठकों को इनसे कुछ लाभ भी होगा और मनोरंजन भी होगा। विशेष लाभ के लिए एक "शास्त्रार्थ संग्रह" छपाने का विचार है जिससे अपार लाभ होगा। धन होने पर वह ग्रन्थ छप सकेगा।

अमर सूत्र

१. पुराने आर्य नेताओं ने अपने घरों को उजाड़ कर आर्य समाज को बनाया था। नये, आर्य समाजी नेता आर्य समाज को उजाड़ कर घरों को बना रहे हैं।

२. पौराणिकों में पुरोहित अपने यजमान को ठगता है। आर्य समाजी यजमान अपने पुरोहित को ठगता है।

३. पौराणिकों में ज्ञानी अज्ञानियों को अपनी आज्ञा में चलाते हैं। आर्य समाजी अज्ञानी ज्ञानियों को अपनी आज्ञा में चलाते हैं।

४. पौराणिकों में अपूज्यों की पूजा होती है। आर्य समाज में पूज्यों का अनादर होता है।

५. पौराणिकों में संन्यासी सबसे बड़ा माना जाता है। आर्य समाज में संन्यासी का कोई महत्त्व नहीं है।

६. पौराणिकों में संन्यासी जीवन निर्वाह के लिए निश्चिन्त होता है, आर्य समाजी सन्यासी को जीवन निर्वाह की चिन्ता तो निरन्तर रहती ही है। मरने के लिए भी चिन्ता रहती है कि कहाँ मरूँ।

७. आर्य समाज में एक ओर यज्ञ और योग के नाम पर पाखण्ड प्रबल वेग से बढ़ रहा है। दूसरी ओर राजनीति का राक्षस आर्य समाज को जिन्दा ही खा जाना चाहता है।

"श्री महात्मा अमर स्वामी जी महाराज"

८. आर्य समाज को क्षति पहुँचाने वाला आर्य समाजी ही है।

"प्रिंसिपल हंस स्वरूप जी, डी० ए० वी० स्कूल" चण्डीगढ़

९. आर्य समाज वह अस्पताल है, जिसमें मरीज आदमी भर्ती होते हैं, तथा फिर इसमें से पारसमणि बन कर बिलकुल स्वस्थ निकलते हैं।

स्व० महात्मा हंसराज जी

१०. आर्य समाजी अगर खुश हो जावे तो वह धन्यवाद कर देता है। अगर रूष्ट हो जावे तो जीना भी हराम कर देता है।

"लाजपत राय आर्य"

११. आर्य समाजी वही है, जो न खुद चैन से बैठे न किसी को बैठने दे।

स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी

१२. आर्य समाजी अपनी बात को आप नहीं मानता तथा अन्यों से मनवाना चाहता है।

"स्वामी मुनीश्वरा नन्द जी महाराज"

१३. दुनियां के विगड़ों को आर्यसमाज सुधार सकता है और बिगड़े आर्य समाजी को कोई नहीं सुधार सकता है। डा० बिक्रमसिंह

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव;
त्वमेव सर्वम् मम् देवदेव ॥

मात तुही गुरु तात तुही, पितु भ्रात तुही धन धान्य भंडारो।
ईश तुही जगदीश तुही, मम शीश तुही प्रभु राखन हारो॥
राव तुही उमराव तुही, मन भाव तुही अरू नयन को तारो।
सार तुही कर्त्तार तुहीं, घर वार तुही परिवार हमारो॥

स्व० ठाकुर सरदार सिंह जी महोपदेशक
(अरनियां निवासी)

भजन

अखिलाधार अमर सुख धाम, एक सहारा तेरा नाम।
कैसी सुन्दर सृष्टि बनाई, चन्द्र सूर्य सी ज्योति जगाई।
कैसी अद्भुत वायु बहाई, एक से एक विलक्षण काम॥
एक सहारा तेरा नाम १॥

सुन्दर सरस सुधा सम पानी, अमृत अन्न खायें सब प्राणी।
गुण गावें ज्ञानी और ध्यानी, भजें निरन्तर आठों याम॥
एक सहारा तेरा नाम ॥२॥

पत्र-पत्र रंग रूप निराला, पुष्प-पुष्प में गन्ध विशाला।
फल-फल पृथक प्रेम रस प्याला, लीला तेरी ललित ललाम॥

एक सहारा तेरा नाम ॥३॥
सज्जन सद्गुण गरिमा गावें, धर्म धुरीण ध्यान में लावें।
कुटिल-कुचील-कुपात्र न पावें, हे जगदीश आपका धाम॥
एक सहारा तेरा नाम ॥४॥

आप अमर सत्पथ के स्वामी मैं हूं अमर असत्पथ गामी।
एक नाम के दोनों नामी मैं गुण रहित आप गुण ग्राम॥
एक सहारा तेरा नाम ॥५॥
महात्मा अमर स्वामी जी महाराज

भजन

हर दिल में है, वह वसा हुआ, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।
न भटक तलाश में जा वजा, जो यहां नहीं तो कहीं नही ।।
वह निहां भी है वह अयां भी है, वह यहां भी है वह वहां भी है ।
वह मकीं भी है वह मकां भी है, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।
हर शाखो वर्ग में है निहां, हर गुल में गुन्चे में वह अयाँ ।
सौ वार कहता है वागवां, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।
वह जमीं में भी है जमाँ में भी, वह मुहीत अर्जो समां में भी ।
वह मकीं में भी है मकां में भी, जो यहां नहीं तो कही नही ।।
वह है कौन, कहता कि है नहीं, बिना उसके कोई भी शै नहीं ।
विना उसके खल्क रह नहीं, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।
जहां इल्लतो मालूल है, जहां फेल है मफऊल है ।
फाइल किसे न कबूल है, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।
जिसे सूझ वाला दिमाग हो, और इल्म दिल का चिराग हो ।
तो जरूर उसका सुराग हो, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं ।।
मेरी आंख उसका ही नूर है, मेरे दिल में उसका सरूर है ।
मुझे यह यकीं तो जरूर है, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।
वही हर जगह में है जलवागर, हर शय में आता है वह नजर ।
उसे ढूंढ दिल ही में तू 'अमर' जो यहां नहीं तो कहीं नहीं ।।

महात्मा अमर स्वामी जी महाराज

भजन

जरूरत क्या उन्हें है सीमो जर की ।
कि जिस पर आपने नजरे महर की ।।

उसे दुनियां के बन्दों से गरज़ क्या ?
गदाई कर चुका जो उसके दर की ।।

किसी से क्यों उसे खौफो खतर हो ।
शरण पकड़ी है, जिसने परमेश्वर की ।।

लगा है इश्क उसका जिस वशर को ।
उसे परवाह क्या है, अपने सर की ।।

जिसे उस खालिके अकबर का डर हो।
उसे दहशत नहीं तेगो तवर की॥

हुआ हो इश्क जिसको उस हंसी का।
उसी ने जिन्दगी अपनी "अमर" की॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

हर दिल में है वह बसा हुआ जो यहां नहीं तो कहीं नहीं।
न भटक तलाश में जा बजा, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

हर रंग में उसका ही रंग है, हर ढंग में उसका ही ढंग हैं।
हर वक्त हर जगह संग है, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

हैं हरेक को वही पालता, वही गर्भ में है सम्भालता।
वही साफ देखता भालता। जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

क्या शय कहां से निकाल के और किसमें क्या-शय डाल के।
क्या बनाया जिस्म सम्भाल के, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

क्या अजीव कान ओं नाक हैं, क्या अजीव चीज ये आँख हैं।
गर वह न होता तो खाक हैं, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

क्या अजीव शम्सो कमर बने, क्या अजीव लालौ गौहर बने
क्या अजीब शाखो समर बने, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

क्या अजीव अर्जो समां बने, क्या अजींब कोनो मकां बने।
ये उसी से सारे निशां बने, जो यहां नहीं तो कहीं नहीं॥

जहां देखो जलवा है रू नुमा, जहां देखो है वही वह अयां।
यह अक्ल मन्दों का है बयां, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं॥

है गरीब की वही आह में और वे जुबानों की चाह में।
वकस हैं उसकी पनाह में जो यहां नहीं तो कही नहीं॥

वही हर जगह में है जलवागर, हर शय में आता है वह नजर।
उसे ढूंढ़ दिल हि में तू "अमर" जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं॥

'अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

किस लिये डरती है बुल-बुल चह चहा दिल खोलकर ।
तू बतासा है न जो, पी जाय कोई घोलकर ।।

आह तेरी में वह ताकत है कि तेरे सामने ।
सर नगूँ सय्याद होगा, आजमाले बोल कर ।।१।।

लूट गया गुलशन तेरा सद हैफ तू खामोश है ।
ले गया गुलची हजारों वे वहा, गुल रोल कर ।।२।।

मैं नहीं कहता कि तू सय्वाद को गाली सुना ।
पर यह कहता हूँ कि अबतो बात कर तू तोलकर ।।३।।

ताकते सय्याद क्या जो एक लमहा रुक सके ।
जिस घड़ी चिल्ला उठें, सब दिल जले इक गोल कर ।।४।।

वक्त है अब कामं का, होशियार हो देरी न कर ।।
जल्दतर सब साथियों को ले जगा झकझोल कर ।।५।।

गर तुझे मरना ही है तो मौत कुत्तों की न मर ।
नाम तू करले "अमर" यह जिन्दगी का मोल कर ।।२।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

अय साहिबान बज्म इधर कान कीजिये ।
अब कौम की तरफ़ भी ज़रा ध्यान दीजिये ।।

तजलील व तहकीर बहुत हो चुकी इसकी ।
अब और मजल्लत का न सामान कीजिये ।।१।।

मर जायेंगे मिठ जायेंगे हम कौम के लिये ।
मिटने न देंगे इसको यह ऐलान कीजिये ।।२।।

आपस का सीख लीजिये इत्तिहादो इत्तफाक ।
अपना न अपने हाथों से नुकसान कीजिए ।।३।।

अब हो चुकी है मुद्दतों, अपनों से अदावत ।
अब तर्क घरू जंग का, मैदान कीजिये ।।४।।

खाते रहे हो आज तक गैरों की ठोकरें ।
अहबाब व अगयार की पहचान कीजिए ।५।

दुश्मन-शक्ल को देखते, डर करके मरमिटे ।
अर्जुन व भीम भीष्म से बलवान् कीजिए ॥६॥
कदमों में जिनके खुद व खुद दुनियां झुकाये सर ।
रामो लेखन श्री कृष्ण सी सन्तान कीजिए ॥७॥
इल्मो अकल को देखकर, हैरान हो जहां ।
गौतम कपिल कणाद से विद्वान कीजिये ॥८॥
दिखला के अलुल अज्मियाँ कुछ ऐसी हिकमतें ।
विज्ञान से जहान को हैरान कीजिए ॥९॥
कह दो कि "अमर" हैं मरेंगे न रकीवो !
जी चाहे जिस तरह से परेशान कीजिए ॥१०॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

काशी में कोई बताते हैं, काबा में कोई कहते हैं ।
मैं कहता हूं भटको न कहीं, भगवान हर जगह रहते हैं ॥
जो भटके भटके फिरते हैं, उनको न मिले न मिलेंगे कभी ।
हर समय उन्हें दर्शन होते, जो गैल ज्ञान की गहते हैं ॥२॥
जो सुख सागर से दूर रहें, उनको सुख का सम्पर्क कहां ?
वह भाग्यहीन भगवान् बिना, नित नूतन संकट सहते हैं ॥२॥
जो पामर पोच पतित पापी, प्रभु प्रेमामृत नहीं पीते हैं ।
दुर्व्यसनी दुष्ट दुराचारी, दुख दावानल में दहते हैं ॥३॥
सद्धर्मी सभ्य सदाचारी, सत्पुरुष 'अमर' पद पाते हैं ।
भगवान् भक्त सुजनों के लिए, सुखस्रोत सदा ही बहते हैं ॥४॥

अमर स्वामी जी महाराज "अमर"

आर्य वीरों की भावनायें—भजन

आर्य राष्ट्र निर्माण करेंगे, हम अपने बलिदानों से ।
गूंज उठेंगे अवनि अम्बर, साम वेद के गानों से ॥
दबी पड़ी है अपनी संस्कृति भारत के प्राचीरों में ।
छुपा हुआ वीरत्व सो रहा, भारतीयवर वीरों में ॥
कला और विज्ञान हमारे, छुपे हुए हैं टीलों में ।
सुप्त पड़ी हैं सैन्य शक्तियां, राजपूत और भीलों में ॥
नव जीवन हम देंगे इनको अपने प्रबल विधानों से ॥१॥

इस छाती पर झेला हमने, है ईरानी तीरों को ।
किया पराजित कई बार, हमने यूनानी वीरों को ।।
बार बार कुंठित कर डाला, हूणों की शमशीरों को ।
मुंह की खानी पड़ी सदा ही, शक जैसे रणधीरों को ।।
विजय प्राप्त की कन्यायें ली हमने रिपु बलवानों से ।।२।।
आर्य वीर बन जो प्रण ठाना, उसको पूर्ण करेंगे हम ।
करे कोई अवरुद्ध मार्ग में, किंचित नहीं डरेंगे हम ।।
देश विदेशों में भारत का, उज्वल भाल करेंगे हम ।
भारत मां की विपदा सारी, देकर शीश हरेंगे हम ।।
श्रुति संस्कृति सर सरसायेंगे खेल खेलकर प्राणों से ।।३।।

अमर स्वामी जी महाराज "अमर"

नोट—"निजाम हैदराबाद जेल को जाते समय"
पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज कृत
"अमर नजम"

(किसी पर बिला बजे जुल्मों सितम करने का दुष्परिणाम)

नजम

कायम "निजाम" रह चुका, हो चुकी हुकमरानियां ।
जुल्मों सितम बिलावजह मिटने की हैं निशानियां ।।

मेरा कहा गलत सही, फिर भी ये बात ठीक है ।
जुल्मों सितम से मिट गई, राजो की राजधानियां ।।१।।

बूढ़ों ने बढ़ के धर्म पै कुर्बां बुढ़ापा कर दिया ।
आयेगी काम कब कहीं, चढ़ती हुई जवानियां ।।२।।

ये तो बता दो बात वह, क्या थी जो गढ़ चित्तौड़ में ।
जिन्दा चिता में जल गई चौदह हजार रानियां ।।३।।

जीना उन्हीं का ठीक है, मरना उन्हीं का खूब है ।
करते हैं धर्म के लिए कुर्बा जो ज़िन्दगानियां ।।

जग में रहेंगी आर्यों आपकी "अमर" कहानियां ।
जड़ से मिटेगी एक दिन जालिम की सितमरानियां ।।४।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

गजल

पिसर गो इल्मी हुनर से दूर है, अपने कामों से बहुत मशहूर है।
नेक सब डरते हैं उसके नाम से, सब बदों की आँख का वह नूर है ॥
बाप से माँ से फकत इतना हैं काम, दो-वरना कुछ न मुझसे दूर है।
किस लिए तुमने मुझे पैदा किया, खिदमते महमां सदा दस्तूर है ॥
मैंने कब दी थी तुम्हें दरख्वास्त यह, मुझको बुलवाना जनाब जरूर है।
दीनो-दुनियाँ से नहीं मतलब उसे, रात दिन मयके नशे में चूर है ॥
वह न झुक सकता किसी के सामने, पुर तकब्बुर है बड़ा मगरूर है।
है बहुत महनत मशक्कत से गुरेज लेके देना भी नहीं मंजूर है ॥
ऐसे फरजन्दो से वे औलाद खूब, चाहे दौलतमन्द है मजदूर है।
तू 'अमर' रहना नहीं मरना है मर, यह तेरी औलाद तेरा कसूर है ॥

'अमर स्वामी जी महाराज

भजन

(बच्चे के जन्म दिन पर)

तुम कौन हो और कहां के?
कौन पुराना नगर छोड़ इस नये नगर में झांके ॥
किस माता का दूध पिया था। कौन पिता से
प्यार लिया था ॥
किस गुरु से शिक्षा पाई थी, राजा कौन वहां के ॥१॥
यह कुछ याद नही आता है, अन्य नवीनों से नाता है।
मात-पिता-भाई-सम्बन्धी सब कुछ नये यहाँ के ॥२॥
आओ-आओ प्यारे आओ इस घर के स्वामी बन जाओ।
गुणी और गुणवान बनो तुम, भूषण भारत माँ के ॥३॥
आर्य जाति का सुयश बढ़ाओ, धर्म ध्वजा जग में फहराओ।
देश-विदेश सभी गुण गावें यहाँ के और वहां के ॥४॥
राम सदृश गुणवान बनो तुम, व्यास सदृश विद्वान बनो तुम
कर्ण भीम, भीष्म-अर्जुन सम वीर बहादुर बाँके ॥५॥
सुख स्वरूप प्रभु के प्यारे हो, सुखी रहो दुख से न्यारे हो।
सब प्रकार भंडार भरे हों, सब सुख हों दुनियाँ के ॥६॥
तुमसे भारत माँ की जय हो, तुमसे शत्रु पक्ष का क्षय हो।

तोप-तीर तलवार सम्भालो बम के करो धमाके ॥७॥
सौ बर्षों से अधिक जियो तुम ईश प्रेम पीपूष पियो तुम।
"अमर" कीर्ति के वजें सभी जगह, नित-नित ढ़ोल ढ़माके ॥८॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

आर्य समाजियों से:—

हम तो कहते हैं कि, आपस में लड़ाई क्यों हो।
मेल होता है तो हो, लोग हंसाई क्यों हो॥
आजकल मेल मुहब्वत ही चाहते हैं सभी।
फिर यहां भाई से भाई की जुदाई क्यों हों॥
हम तो हैराँ हैं परेशाँ हैं अजव हालत है।
धर्म के जानने वालों में लड़ाई क्यों हो॥
धर्म का झूठ बहाना बना इज्जत पै लड़ें।
ऐसे लोगों में बताओ तो सच्चाई क्यों हो॥
गैर लड़ते हैं तो लड़ते रहे परवाह नहीं।
दुश्मने जाँ किसी भाई का ही भाई क्यों हो॥
एक का एक, हर इक काम में मुखालिफ हो।
ऐसे हालत में दोनों की भलाई क्यों हो।
काम करना है तो कुछ कर लो मगर जिद न करो।
तुम मरो या "अमर" हो जाओ, तबाही क्यों हो॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

(आर्य समाज की पुकार आर्य समाजियों से

हो चुकी आपस की बस तकरार रहने दीजिऐ।
आये दिन की जूतियां पैजार रहने दीजिए॥
क्यों पड़े हो हाथ धोकर जान के पीछे मेरी।
मुझको जिन्दा ऐ मेरी सरकार रहने दीजिए॥
हो चुकी हिकमत तुम्हारी बस करो रहने भी दो।
हजरते ईसा मुझे बीमार रहने दीजिए॥

अपने घर में तो हजारों तीर तुम बरसा चुके।
दुश्मनों के लिए भी दो चार रहने दीजिए ॥
आपकी हालत पै दुश्मन हंस रहे हैं देख लो।
कुछ तो नीचा ही सरे अगयार रहने दीजिए ॥
वह "अमर" पद पा गया जिसने दिया मुझको फरोग
इसलिये किस्मत मेरी वेदार रहने दीजिए ॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

हंसती है सारी दुनियाँ रंगत है जाफरानीं।
वर्बाद कर रहे हो चढ़ती हुई जवानीं ॥
तिफलाना कौड़ियों में सीमाव रेजियाँ कीं।
वदअस्ल सीपियों में कीं मश्क दुर फिशानी ॥
नादानियों की हद है, भर-भर के चुल्लुओं में।
हाथों से अपने फैंका खुद आवे जिन्दगानीं ॥
हाथों से तुमने अपनी चलमी मशीन तोड़ी।
पुर्जे तमाम ढीले, वेकार है कमानीं ॥
गो लाख तुम छुपाओ, छुपती है कब ये वातें।
झँपी हुई सी आँखें, करती हैं, मिस्ल ख्वानीं ॥
कमजोरियों के वाइस वदहाल-हाल है अब।
हर दम लगे हुए हैं, अमराज नागहानीं ॥
क्या खाक जिन्दगी है, कुछ जिन्दगी नहीं है।
ये जिन्दगी तुम्हारी, है मौत की निशानीं ॥

"अमर 'स्वामी जी"

नज्म

(कोमी शहीदों को शिकायत कोंम वालों से)

मिट्टी हुई जिनके लिए बरबाद हमारी।
अफसोस ! उन्हें खाक नहीं याद हमारी ॥
है धर्म से ज्यादा तुम्हें बेटों से मुहब्बत।
औलाद वालों क्या, न थी औलाद हमारी ॥

दौलत के नशे ने तुम्हें, मद होश कर दिया ।
दौलत से थी तबियत न कभी शाद हमारी ।।
क्या हम नहीं कर सकते ये इन्कार धर्म से ।
जब काटते थे गरदने जल्लाद हमारी ।।
हम धर्म पर मारे गये पर आह तक न की ।
हड्डी ही थी छाती, न थी फौलाद हमारी ।।
हम चाहते हैं धर्म पर हर एक फिदा हो ।
पर आप तो सुनते नहीं फरियाद हमारी ।।
कायम रखोगे धर्म को कायम रहोगे सब ।
तब ही रहेगी कौम भी आबाद हमारी ।।
समझा न करो मर गये हम सारे "अमर" है ।
अब हो गयी है आत्मा आजाद हमारी ।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

(बिलावल ताल-तीन)

सोच समझ कर पग धर मग में ।
लाग न जाय शूल कहीं पग पग में ।।
पाँच ठगों से सावधान रह,
अपना समझ न इनको जग में ।
नजर बचत सब धन हर लेंगे,
कपट भरा इनकी रग-रग में ।। सोच०
यथा योग्य व्यवहार करो तुम,
समझो भेद साधु और ठग में ।
बिना विचारे कर्म किया तो,
संकट है, भय है, डग-डग में ।। सोच०
मन की चंचलता को त्यागो,
जैसी चंचलता है खग में ।
निश्चित धर्म मार्ग में सुख है,
दुख है संशय में डगमग में ।। सोच०

—अमर स्वामी जी महाराज

भजन

दिल तो प्यारा है मगर दिल से भी प्यारा तू है।
पर गजब ये है कि, इस दिल से भी न्यारा तू है।
दिल दुखाने का भी दावः मैं करूँ किस पै करूँ।
दर्दे दिल तू ही है, और दिल भी हमारा तू है ॥१॥
मुझको तेरे सिवा कोई भी नजर आता नहीं।
रोशनी जिसमें है, आँखों का वो तारा तू है ॥२॥
तू "अमर" है कभी मरता नहीं, हम मरते हैं।
मरने वालों के लिए एक सहारा तू है ॥३॥

"अमर स्वामी जी महाराज"

भजन

कलेजा थाम कर सुन लो चमन वालो सदा मेरी।
उड़ाना चाहता सय्याद गर्दन बे खता मेरी ॥
मैं इस गुलशन की बुल-बुल हूँ यही है गुलिस्तां मेरा।
मुहब्बत मिट नहीं सकती वतन से महरबां मेरी ॥
बहुत मिन्नत समाजत की खपाये जिस्मो जां अपने।
मगर अफसोस है, महनत गई सब रायगां मेरी ॥
मैं अपने मुलक की हालत जमाने को सुनाता हूँ।
जुवां क्यों बन्द करते हो यहां मेरी वहां मेरी ॥
खता मेरी यही है, वेखता हूं मैं जमाने में।
हकीकत हो गई है साफ खलकत पर अयां मेरी
ये कहते हैं सुना देंगे तेरी भी दास्तां गम की।
मजा जब है कि खुद आकर सुनें वो दास्तां मेरी ॥
मुझी को ले चलो साहिब मैं खुद उनको सुना दूंगा।
अजब ढग का मेरा मजमू अजब तर्जे बयां मेरी ॥
यूं कहने को तो कह दोगे कि अब इसको रिहा कर दो।
कहां से लाओगे—साहिब दहन मेरा जुबा मेरी ॥
"अमर" हूँ सर बकफ रहता हूं, मुझको मौत का क्या डर।
सदाकत जान लेंगे आप वक्त इम्तिहा मेरी ॥

"अमर स्वामी जो महाराज"

वक्त पर निकले किसी से कम नहीं

(ले० कुवर शत्रुञ्जय सिंह जी एम० ए० चौहान)

वह यह कहते थे कि इनमें दम नही ।
वक्त पर निकले किसी से कम नहीं ।।

हर नगर भारत का बसता देख लो ।
हर युवक को कमर कसता देख लो ।।
क्या कभी देखे इन्होंने बम नहीं ।
वक्त पर निकले किसी से कम नहीं ।।

हम मसल डालेंगे पाकिस्तान को ।
हम कुचल देंगे सरे शैंतान को ।।
अब कदम सकता हमारा थम नहीं ।
वक्त पर निकले किसी से कम नहीं ।।

टैंक को समझे डबल् रोटी जवान ।
सैंकड़ों को खा मिटा डाली थकान ।।
वीर क्षत्रिय हैं भगोड़े हम नहीं ।
वक्त पर निकले किसी से कम नही ।।

बमों जैटों और टैंकों का गरूर ।
कर दिया दम भर में हमने चूर-चूर ।।
चल सका घुसपैठ का ऊधम नहीं ।
वक्त पर निकले किसी से कम नहीं ।

देखकर दुनिया हमें हैरान है ।
पांव तोबा के पड़ा शैंतान है ।
सामने कोई सकेगा थम नहीं ।
वक्त पर निकले किसी से कम नहीं ।।

आज आर्य का कर्त्तव्य

दुष्ट देश द्रोहियों को दर दर मंगादे भीख,
दस्यु दानवों के दल दाल सा दलेजा तू ।
संकट में डाल दे समग्र शत्रु सैनिकों को,
छेद छेद छातियों को सेल से सलेजा तू ।।

चीर चीर चीनियों के चार चार टूक करदे,
मार मार मींड मींड माटी में मले जा तू।
आज अमर" आर्य अरि अनी में लगादे आग
कपटियों कुचालियों के काढ़ले कलेजा तू॥
[अमरसिंह "अमर" आर्य पथिक]

चीन की चिन्गारी

हिमगिरि की चोटिनु सों प्रचण्ड अग्नि ज्वाल जगे,
शीतल समीर, दाह दारुण उपजायगी।
मेघनु सों मेहनु की फिर न लगेगी झड़ी॥
भू पै अंगारनु की ढेरी लग जायेगी॥
नदी नद तड़ाग कूप सवै अग्नि रूप होंय,
चारों दिशानु मांहि आगि दिखलायगी।
चीन चिन्गारी "अमर" फेंके वारूद वीच,
चारों ओर चीन में प्रलय सी मच जायगी॥
[अमरसिंह 'अमर" आर्य पथिक]

भारत ने पापी पाकिस्तान को पछाड़ दिया।

भुट्टू और अयूव ऐबदार ने लड़ाई छेड़ी,
वीर चहुआन ने लुटेरों को लताड़ दिया।
जैंट वायुयान तीव्र तोपों से तोड़ डाले
बम्ब वर्षकों को पीट पंखों को उखाड़ दिया।
पैंटन टैंकों पर बड़ा था अभिमान उन्हें
वीरों ने पेट उनका फुलका सा फाड़ दिया।
शत्रुञ्जय' किया वीर बांके रणधीरों ने
भारत ने पापी पाकिस्तान को पछाड़ दिया॥
[डा० मृत्यु जयसिंह जी एम राही]

(अमर स्वामी जी महाराज के अमर दोहे)

धन्यवाद कर ईश का आज "अमर" हर्षाय।
अतिथि अन्न निज भाग्य का, तेरे घर में खाय॥
आप निरन्तर छू रहे, हो मेरे सब गात।
यह निश्चय कर "अमर" प्रभु, शुद्ध र हूँदिन रात॥

मेरे मन में आपका, है हर समय निवास ।
यत्न करूंगा "अमर" प्रभु, झूठ न आवे पास ॥

जगदीश्वर है हृदय में करके यह विश्वास ।
"अमर" न आने दूं कभी द्वेष द्रोह को पास ॥

प्रभु प्रकाश के पुञ्ज हैं, करते ज्ञान प्रकाश ।
हो इस निश्चय से "अमर" अन्धकार का नाश ॥

मैं सुपुत्र हूं आपका आप सुपिता महान ।
"अमर" न इस सम्बन्ध को तोड़ो हे भगवान ॥

जो न कुछ भी जानता पर समझता सब कुछ जानता हूँ ।
मूर्खता का ढेर उसको है "अमर" मैं मानता हूं ॥

बोलचाल और चतुरता सभी रीति और नीति ।
जो सीखे विधिवत, "अमर" पावे सबसे प्रीति ॥

विद्या धन संचय करे, अजर अमर वत् जान ।
धर्म करे नित "अमर" बुध, मृत्यु निकट पहुंचान ॥

विद्या धन सब धनों में "अमर" श्रेष्ठ शुभ जान ।
जो न नशै न बिके लुटे, घटे न कीन्हें दान ॥

विद्या देती नीच को, राजों तक पहुंचाय ।
जैसे "अमर" समुद्र में नदी काष्ठ ले जाय ॥

दो जन पत्थर बांध के जल में देओ डुबाय ।
धनी न दान करे "अमर" निर्धन तप न कमाय ॥

शस्त्र-शास्त्र की दो "अमर" विद्या लो पहचान ।
हंसी-बुढापे एक से दूजी से सन्मान ॥

कच्चे बर्तन में सदा देता चिन्ह कुम्हार ।
बच्चों में गुण "अमर" नित, दीजै इसी प्रकार ॥

सारे संशय मेट कर "अमर" ज्ञान प्रकटाय ।
सबका लोचन शास्त्र है, इस विन अन्ध कहाय ॥

धन सम्पत्त-यौवन-"अमर" चौथा है कुविचार ।
एक समर्थ विनाश में कौन दशा जहं चार ॥

(कराची हवाई बन्दर पर समुद्र के प्रति कहा)

धिक् गरजना विशालता, रे जलनिधि हत भाग।
तेरे तट ढूंढत "अमर" वाडीकूप तड़ाग॥

मट्ठे में गुण वहुत हैं, पियो "अमर" हर रोज।
इसके आगे हेच हैं, काड लिए, ग्लूकोज॥

शर्म समझ जिसको नहीं उसे 'अमर' धिक्कार।
ब्रह्मा भी उस अधम का कर न सके उद्धार॥

प्रजातंत्र में तो 'अमर' सबका एक हि मोल।
मनुष्य गिने जाते यहाँ लखि न जाती तोल॥

डेमीक्रेसी में 'अमर' सबका एक ही रेट।
वोट गिने जाते यहां नहीं क्वालिटी न वेट॥

आदमी बे मौत ही मरने लगा, आदमी से आदमी डरने लगा।
दुश्मनों से दोस्ती तो दूर है, दोस्तों से दुश्मनी करने लगा॥

धन-यौवन-सम्पत्-"अमर" चौथा है अविवेक।
चार जहां वहां क्या दशा जब विनाश कर एक॥

विद्या बिन जिसने "अमर" दीनी आयु बिताय।
फंसे पण्डितों में कभी, ज्यों दल-दल में गाय॥

किसी वंश से हो "अमर" गुण से पूछा जाय।
कीचड़ से उपजे कमल, सबको सदा सुहाय॥

ऋणी पिता वैरी "अमर" व्यभिचारिन मां जान।
वैरी रूपवती त्रिया-सुत वैरी बिन ज्ञान॥

हो समृद्ध और धार्मिक गुणी पुत्र विद्वान।
सेवक बन वश में रहे "अमर" पुण्य फल जान॥

एक गुणी सुत है भला, उसकी "अमर" न होड़।
एक चन्द्र तम को हरै, तारे व्यर्थ करोड़॥

कडुवा वचन न सुनना चाहो, जिसके मुख से चतुर सुकान।
किया करो उसका मुख मीठा, "अमर" वचन अनुभव की खान॥

उद्योगी नर के "अमर" भरे रहें धन कोष।
जो प्रयत्न असफल रहें तो इसमें क्या दोष॥

मनुज निपट प्रारब्ध पर तजे न 'अमर" उपाय।
तिल से बिन पुरुषार्थ के तेल न सकते पाय॥

भय-मैथुन भोजन शयन "अमर एकसम जान ।
धर्म विशेष मनुष्य में, इस विन पशु समान ।।

स्वधन सुपुत्र अरोगता प्यारी जाहि सुवानि ।
अर्थ करी विद्या "अमर" है जग सुख की खानि ।।

अमर स्वामी जी

(नज्म)

तेरे जलवे से जहां पुरनूर है ।
नाम तेरा खल्क में मशहूर है ।।
नेक वन्दो को सदा तेरी पनाह ।
मेरे मालिक यह तेरा दस्तूर है ।।

उससे मेरा सवाल

मेरे महरवां मुझे सचवता, कि-तुही है या तेरा ख्वाव है ।
जो तू मेरी अक्ल में आ रहा, यह तू आव है कि-सुराव है ।
१. मैं हूं पूछता तू न बोलता, तू सवाल का तो जवाव दे
कि-यही जवाव है जाने मन, कि-जवाब से ही जवाव है ।।
२ मैं ढूंढता तुझे जा बजा, तू है पास मेरे सदा वसा ।
मेरी जानता है तू बेवसी, क्यों मुख पै तेरे नकाब है ।।
३ मुझे तेरे दीदका शोक है, मेरा तेरे साथ ही प्यार है ।
मैं हूं महवे हैरत कि-अब तलक तुझे (तेरा) मेरे साथ हिजाब है
४. मुझे हर घड़ी तू है देखता, मेरे ऐबो हुनर परेखता ।
मैं नजर न तुझसे मिला सकूं, मेरे दिल पै तेरा रुआव है ।।
५. तुझे ढूंढना मेरा दीन है, तुझे मानना ईमां मेरा ।
तुझे भूलना है मेरी खता, तुझे जानना ही सवाव हैं ।।
६. मैं हूं भूल जाता तुझे कभी तू मुझे कभी नहीं भूलता ।
मेरी खसलतों में है भूलना, तुझे याद सवका हिसाव है ।।
७. तुझे भूलकर तुझे छोड़कर, जो भटकता फिरता है दर वदर ।
न वो दीन का न जहांन का, उस वशर का खाना खराव है ।
८. तेरी बन्दगी मेरी जिन्दगी, तुझे छोड़ना मेरी मौत है ।
तुझे पाके जो है "अमर" हुआ उसे मौत है न अजाव है ।।

अमर स्वामी "अमर"

(गजल)

न काशी में मिला, पाया न तू मक्के मदीने में।
मेरे महबूब हे तू फिल हकीकत मेरे सीने में॥
मुसलमां हज्ज में हिन्दू तीर्थ में क्यों सर पटकता है।
न है कुछ आवे जम जम में न गंगा जल के पीने में॥
न जाहिद को मिला पाया भगत को और न रिन्दों को।
न मस्जिद में न मन्दिर में न मय में और न मीने में॥
अमीरो की अटारी पर तू न शाहों के किलों में है।
सिकन्दर की हुकूमत में न कांरू के दफीने में॥
जहां ढूंढे वहां हाजिर जहां देखे वहां जाहिर।
चमक तेरी नजर आई मेरे दिल के नगीने में॥
तेरी हर गुल में खुशबू है, तेरी हरशय में रंगत है।
मिला हर चीज में लेकिन मिला अपने करीने में॥
मैं न देखुं तुझको तो मेरी खता।
हर जगह हर शय के मैं तेरा जहूर है॥
तू है खलिक में तेरी मखलूक हूँ।
तो भी मुझमें अकल है न शऊर है॥
तेरे बन्दों में नहीं मेरा शुमार।
यह मेरा ही एक खास कसूर है॥
मैं बदी से वाज आ जाऊँ तो फिर।
पास है मेरे न मुझसे दूर है॥
तू मिला होगा कहीं मूसा को दूर।
मेरा दिल ही मुझको कोहेतूर है॥
नाम से मैं भी "अमर" तू भी अमर।
सिफत में मैं दूर हूँ, तू दूर है॥

अमर स्वामी जी महाराज "अमर"

भजन

(हैदराबाद जेल में रचित)

ये किसका फसाना है, ये किसकी कहानी है।
सुनकर जिसे महफिल की हर आँख में पानी है॥
जलने में मजा क्या है? क्यों सत्य के दीपक पर।
दीवाने पतंगों ने जल जाने की ठानी है॥

मुझको दे मिटा जालिम मत धर्म मिटा मेरा ।
ये धर्म मेरे ऋषियों मुनियों की निशानी है ।।
ताकत का तकव्वुर हैं उनको तो फिर हममें भी ।
कुछ गैरते कौमी हैं, कुछ जोशे जवानी है ।।
मत देर करो । उठो अब देश के सुकुमारो ।
विगड़ी हुई भारत की फिर लाज बचानी है ।।
क्या खाक लिखे जब की महवस में 'मुसाफिर' को ।
दो ज्वार की रोटी हैं, और दाल का पानी है ।।

"कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर"

शेर

आया गाने को जिसे गा न सका वह गीत ।
साज मिलाने में "अमर" समय गया सब बीत ।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

शेर

विद्या के दो शत्रु हैं कहो "अमर" वह कौन ।
अज्ञानी की वाह-२ ज्ञानवान की मौन ।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

कवित्त

(वर्त्तमान पति से भ्रान्ति)

चौडी किनारी की धोती सजी तन ।
बांधनी फैंट न लांग लगानी ।।
मूड़ में मांग संवार लई ।
और मूछन की दयी मेट निशानी ।
चप्पल पहन के चद्दर ओढ के ।
सुन्दर चाल चले मस्तानी ।।
देख सुरूप "अमर" पिय को ।
तिय पांय लगी जिय जान जिठानी ।।

"अमर स्वामी जी महाराज"

कवित्त

(क्रोध मुखी स्त्री)

लोहे की दौहरी-लोहे की तेहरी,
लोहे के पाँय पेंजनी वाढ़ी ।
कोड़ी ही कान में कौड़ी ही नाक में,
कौडिन की गजरागति गाढ़ी ॥
मूड़ के वाल विखेर लये,
और मूसल हाथ में थाम के ठाढ़ी ।
कामनी रूप अनूप बनो,
जैसे नील के कुण्ड में बौरिके काढ़ी ।

"अज्ञात"

कवित्त

(लड़ाकू बहू)

सास मरे सुसरा पजरे,
या बाखर में कबहूँ न रहूंगी ।
ज्येठ पजारे के मारूँ पटा,
और देवर की धबती न सहूंगी ॥
द्योर-जिठानी छटी ननदी,
कोई एक कहेगी तो लाख कहूंगी ।
लैं बसि अन्त नहीं पिय "शंकर",
पीहर की कलि गैल गहूंगी ॥

महाकवि "शंकर"

दोहा

जन्म दातृ सबकी "अमर" मृत्यु नहीं यह बाँझ ।
जन्म सुरौप्य प्रभात है, मृत्यु सुनहरी साँझ ॥

अमर स्वामी जी "अमर"

दोहा

उड़ न सके आकाश में पक्ष विहीन विहंग ।
पक्ष हीन मानव "अमर" रहता अचल अपंग ॥

अमर स्वामी जी "अमर"

दोहा

धनियों में समुदारता, निर्धन में सन्तोष ।
रहे "अमर" तो जाय मिट, याचकता का दोष ॥

अमर स्वामी जी "अमर"

भजन

उठेगी हमारी कलम धीरे-धीरे।
लिखेगी हकीकत कलम धीरे-धीरे ॥
चले आ रहे हैं जो सर को उठाये।
झुकेगी उन्हीं की नजर धीरे धीरे ॥
उठे हैं जो तूफाँ डुवोने को किश्ती।
वह खुद डूब जायेंगे कहीं धीरे धीरे।
जो ना हो यकीं मेरी इस बात पर
तो क्यों लिख रहेगी कलम धीरेधीरे ॥
'हरि' क्या वतायें इस शासन की खसलत।
हटेगा ये जुल्म मगर धीरे धीरे ॥

हरि प्रकाश "हरि"

शेर

जवानी में मजा है पारसाई का।
वो नाखुदा है, जो किश्ती बचायें तूफां से ॥

"हरि"

शेर

किसी का अहलें जवानी में पारसां रहना।
खुदा की कसम, ये जवानी की तौहीन है ॥

"हरि"

बाधायें कब बांध सकी हैं, आगे वढ़ने वालों को।
विपदायें कब रोक सकी हैं, मर कर जीने वालों को ॥

वाल दिवाकर हंस

भजन

सुनते रहेंगे कब तलक गुजरी हुई कहानियां।
छेड़िये बात काम की छोड़िये लन तरानियाँ ॥
जो कुछ हुआ सो हो गया आहों फगांसकाम क्या।
उठ कर उन्हें बचाईये वाकी जो हैं जिन्दगानियाँ ॥१॥
मेरा कहा गलत सही लेकिन ये बात ठीक है।
जुल्मों सितम से मिट गई राजों की राजधानियां ॥ २ ॥

यह तो बताओ बात क्या थी वो गढ़ चित्तौड़ में ।
जिन्दा चिता में जल गई चौदह हजार रानियां ॥३॥

ऐ नौ जवानों आपका प्यारा, वतन गुलाम है ।
आयेंगी काम सब कहो उठती हुई जवानियाँ ॥४॥

जीना उन्हीं का ठीक है, मरना उन्हीं का धन्य है ।
कुर्बा जो कौम के लिए करते हैं जिन्दगानियाँ ॥५॥

दामन न छोड़ा आज तक आपने इन नफाक ।
जिसकी वजह से पिट गई राजों की राजधानियां ॥६॥

मुह में जुबाँ 'मुसाफिरे' खस्ता के हैं, मगर सितम ।
दिल की न कह सका हाय बे जबानियाँ ॥७॥

कुँवर सुखलाल जी आर्य "मुसाफिर"

भजन

जो भगवान से लौ लगाते रहेंगे,
वो जो मुँह से मांगोगे पाते रहेंगे ।
सुनेगा न ईश्वर भी फरियाद उनकी,
जो बाते ही बातें बनाते रहेंगे ॥ १ ॥

न होगी अगर हिन्दुओं में एकता,
लात सदा गैरों की खाते रहेंगे ।
लगाया न छाती से अछूतों को हमने,
तो ये लाल जाति के जाते रहेंगे ॥२॥

अहद कर लिया है, कि जब तलक जियेंगे,
वतन से मोहब्बत निभाते रहेंगे ॥३॥

उठायेंगे उनको जो गिर चुके हैं,
जो रूठे हैं उनको मनाते रहेंगे ॥४॥

बला से कफस में हो या आशियाँ में,
चमन के लिए चहचहाते रहेंगे ॥५॥

न पहुंचेंगे जब तक मंजिल पै मुसाफिर,
कदम हर समय हम बढ़ाते रहेंगे ॥६॥

कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर"

गजल

मर्दे—कामिल आफतों से डर के घबराते नहीं ।
राहे—मंजिल पर कदम रख करके लौटाते नहीं ॥ १ ॥

बेजुवां मखलूके-अल्लाह पर न जो खाते रहम ।
वो खुदा के लाख सजदे करके भी पाते नहीं ॥ २ ॥

ऐ दिले नादां न हिम्मत हार, दुश्मन हो जहां ।
जिनपै रहमत है खुदा की खौफ बो खाते नहीं ॥ ३॥

जिन्दगी और मौत का है सिलसिला यूं तो कदीम ।
पर खुदा से जो मिले वन्दे, वो फिर आते नहीं ॥ ४ ॥

हर कजा से वाद लाजिम है, हयाते—नौ—मगर ।
लौट कर अपनों से कोई हाय ! मिल पाते नही ॥ ५ ॥

इश्क की लज्जत का कोई कर सकेगा, क्या वयां ?
दर हकीकत जो इसे चखते हैं, बतलाते नही ॥ ६ ॥

"श्री पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री"

गजल

ऋषीवर तेरे अहसां को न भूलेगा जहां वरसों ।
तेरी रहमत के गीतों को ये गायेगी जुवां वरसों ॥१॥

तेरे कदमों को दुनियां आस्ताने पाक समझेगी ।
झुकायेगा अदव से सर जमाना फिर यहां वरसों ॥२॥

तेरे आने से गुलशन में वहारें लौट आयी हैं ।
तेरी आमद से पहिले था चमन जेरे खिजां वरसों ॥३॥

तेरी सूरत तेरी सीरत तेरी आदात और फितरत ।
जहां को हम सुनायेंगे वना कर दास्तां वरसों ॥४॥

तू अपनी राहे—मंजिल से न भटका एक पल को भी ।
अगर्चे लाख लोगों ने लिए थे इम्तिहां वरसों ॥५॥

तेरे ढेलों व पत्थर से किये स्वागत जमाने ने ।
पिये हंस करके तूने जहर के प्याले यहां वरसों ॥६॥

रहेंगे आफतावों-चांद धरती जव तलक कायम ।
तेरे औसाफ के चर्चे करेगा ये जहां वरसों ॥७॥

तेरी हस्ती-ए-लासानी का सानी मिल नहीं सकता ।
तेरी सूरत को, तरसेंगे जमीनों-आसमां बरसों ॥ ८ ॥
तू सचमुच था पतित-पावन कि तारे वो पतित तूने ।
जिन्हें रक्खा था साये तक से हमने दूर यों बरसों ॥९॥

'श्री पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री"

भजन

माता के सिखाये पुत्र पूर्ण विद्वान् होते हैं ।
माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर हैं ॥
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत हैं ।
माता के सिखाये सुत सपूत और शूर हैं ॥
माता के सिखाये फंसे अष्टादश व्यसन में ।
माता के सिखाये सारे अवगुणों से दूर हैं ॥
कहे "तेजसिंह" इसमें माता ही है मुख्य कारण ।
इसलिए पुत्र पुत्रियों को पढ़ाना जरूर है ॥

चौधरी तेज सिंह

भजन

तब मैं व्याकुल हो जाता हूँ ।
जब दीन गरीब लाचार कोई, फिरता है एक-एक दाने को ।
एक ओर कोई धनवान खड़ा, उसके अरमान मिटाने को ॥
उस बेकस के तड़फाने को, कुछ खोटी खरी सुनाने को ।
ताने देकर धमकाने को, तिरछी आंख दिखलाने को ॥
उत्सुक है दास बनाने को निज धन का रौब जमाने को ।
बेशर्म लफंगा बेईमान कह कह कर उसे लजाने को ॥
तू हट जा भग जा दूर परे को बेशर्म माँगता खाने को ।
मैं अपने मन में देख-देख पछताता हूँ घबराता हूं ॥१॥ तब मैं···
जिस पुण्य भूमि में किसी समय यज्ञों की सुगन्धि घूमती थी ।
ऋद्धि सिद्धि आकर जिसके चरणों को नित्य चूमती थी ॥
गौतम व कपिल कणाद मुनि वशिष्ठ से पथ प्रदर्शक थे ।
था स्वर्ग समान देश अपना, सामान सभी आकर्षक थे ॥
था सदाचार इतना ऊंचा दुनिया ने जिसे आजमाया था ।
प्राणों की बाजी लगा-लगा कर भी निज धर्म बचाया था ॥

उन ऋषियों की सन्तानों की क्या हालत वनती जाती है ।
वल वैभव-गौरव नष्ट हुआ, फैशन में सनती जाती है ।।
नित्य खाकर मीट केक बिस्कुट, और शराव की प्याली ।
सब कर्म धर्म और हया शर्म हो गया खतम बकते गाली ।।
वो लाली कैसे बने वक्त की जब मन को दौड़ाता हूँ ।।२।। तव···

जव तन मन धन अर्पण सब ही कर दिया किसी को जाता है ।
क्षण-क्षण पल-पल रह चातक सम होकर अति दीन लगाता है ।।
मन में अरमान मिलन के ले प्रेमी से मिलने जाता है ।
वह देख दूर ही से उसको छिप जाता है, हठ जाता है ।।
अपने मतलव के लिए उसे वहकाता है, फुसलाता है ।
और झूठा प्यार दिखाता है, पल में अपना बन जाता है ।।
पल भर में उसे वनाता है, मतलव पूरा हो गया जहाँ ।
फिर कुछ न किसी से नाता है ।
मतलवी जमाना है कितना जव मैं अन्दाज लगाता हूं ।।३।। तव··

तुम ये न समझो कि मैं केवल गीत सुनाता फिरता हूँ ।
तुम ये न समझना कि मैं किसी का दिल वहलाता फिरता हूं ।।
तुम ये न समझना कि मैं कोई टके कमाता फिरता हूं ।
तुम ये न समझना कि मैं किसी पर रोब जमाता फिरता हूं ।।
छा रहा अविद्या अन्धकार मैं इसे मिटाता फिरता हूं ।
मैं केवल एक विचारों की अग्नि सुलगाता फिरता हूं ।।
मैं सिर्फ जहालत की दुनिया में आग लगाता फिरता हूं ।
तुम भूल गये अपनी गाथा मैं याद दिलाता फिरता हूं ।।
तुम जाग उठो सोने वालो मैं तुम्हें जगाता फिरता हूं ।
पर तुम करवट तक नहीं बदलते कबसे तुम्हें जगाता हूं ।।४।। तव···

दुर्भाग्य देश का उस दिन था, वैठी थी जहां सभा सारी ।
वैठे थे अन्धे धृतराष्ट्र वैठे थे भीष्म ब्रह्मचारी ।।
वैठे थे द्रौणाचार्य गुरु वैठे थे कौरव नर नारी ।
और सिंहासन पर बैठा था वह दुर्योधन अत्याचारी ।।
वैठे थे कृष्ण भगवान कहीं, प्रस्ताव सन्धि का सुना दिया ।
मांगे थे केवल पांच गांव, पांडव के इतना दवा दिया ।।
हर तरह नीच को समझाया, परिणाम युद्ध का जता दिया ।

उसने सूई की नोक बराबर भी भूमि देने को मना किया ॥
इन इतिहासों के पन्नों की मैं जब-जब खोज लगाता हूं ॥५॥ तब···

इक ओर महात्मा राम दूसरी ओर भरत पंडित ज्ञानी,
चरणों में जिनके बनी हुई थी, गेंद देश की रजधानी।
गये बिछड़ तात, गये बन को भ्रात गई बिगड़ बात जब ये जानी,
हो गया अधीर नयनों से बहता था नीर कहता था ये वाणी।
जब तलक मिले राम नहीं, आराम नहीं मैं जाऊं बन को,
सारे ही संकट हो जाय नष्ट जब पालूंगा जीवन धन को।
चरणों में भ्रात के लिपट गया, अर्पित करके निज जीवन को,
ले चरण पादका फिरा और नहीं छुआ तलक सिंहासन को।
वह प्रेम भ्रात का कहां गया अब यह जानना चाहता हूं ॥६॥ तब···

जिसका मृदु दूध दही मक्खन खा पीकर मनुज उछलता है।
जिसके बेटों के कंधों के बल पर ये मानव पलता है।
सूर्य निकलने से प्रथम छुरा उसकी गर्दन पर चलता है,
अपनी निर्बलता का प्रतीक उसकी आंखों में ढलता है।
वो पाप देश को दहता है, नहीं किया हुआ फल गलता है,
भुखमरी, गुलामी, बेकारी इसका परिणाम निकलता है।
करें किससे गिला "प्रकाशवीर" अपने मन में व्याकुलता है,
मन इसी व्यथा में जलता है, आँखों से खून उबलता है।
क्या कहूं सुनाऊं किसे नहीं सुनता है जिसे सुनाता हूं ॥७॥ तब···
मुझको भारी यश मिले मेरे उर में किंचित भी चाह नहीं,
जीवन दो दिन या चार रहे, इसकी भी कोई परवाह नहीं।
कोई रूपवान धनवान बने, मेरे उर में होती डाह नहीं,
कोई कंकर पत्थर बन रोके रुक सकती मेरी राह नहीं।
है चाह यही मेरे मन में निज देश का गौरव मान बने,
इस मातृ भूमि प्रिय भारत का फिर दुनिया में स्थान बने।
चाहे नही मोटर कार रेलगाड़ी और वायुयान बने,
पर इन सबके बनने से पूर्व इन्सान सही इन्सान बने।
जब इन्सानों को पशुओं से भी गिरा हुआ मैं पाता हूं ॥८॥ तब मैं···
जिनके हथकन्डों के द्वारा सज्जन पिटवाये जाते थे,
सरदार भक्त सिंह से योद्धा सूली लटकाये जाते थे।
भारत मां की जय बोलने वाले कैद कराये जाते थे,

कितने ही देश प्रेमी काले पानी भिजवाये जाते थे।
साहब को डाली देते थे, और उनके पीछे घूमते थे,
वो डेमफूल कहते थे। फिर भी उनके तलवे चूमते थे।
अंग्रेजों के गुलाम और अमन सभा के हामी थे,
उन लोगों को जब संसद की कुर्सी पर बैठे पाता हूं ॥९॥ तब···

एक सज्जन थे एम. एल. ए, जब वोट मांगने आये थे,
पानी पीकर मेज पीट कर भाषण वहुत सुनाये थे।
पतले-पतले और दुवले से कुछ ऐसा ढंग वनाये थे,
मानों दरिद्रता देवी को वह कंधों पर विठलाये थे।
कर भाग दौड़ गये पहुंच सदन में जाते ही, मिल गई सीट,
मिल गया मकान आधुनिक ढंग का दोनों वक्तों मिला मीट।
गये भूल स्वयं को भी फिर तो तज दई दया बन गये ढीट,
खा गये विनौले सीमेंट कोयले भट्टों की खा गये ईंट।
जिनके घर पर था नही फ़ूंस, खाते थे चूहे कलावाजी ॥
वन गये महल वन गये छैल खुद क्या सारे गोती नाती।
मिल गई कार, होकर सवार फैमिली सिनेमा में जाती,
पीकर शराव आ गया शवाव हो गये जनाव जैसे हाथी।
नवयुवती के गल हाथ दिये जव इन्हें घूमते पाता हूं ॥१०॥ तव···
बन रहे बाँध लम्वे चौड़े, गया टूट मनुजता का वन्धन,
गई छूट वतन की परम्परा गया मानव असली दानव बन।
खुश हो जाते हैं मन्त्री गण, होता है जहाँ पर अभिनन्दन,
पर आज आत्मा ऋषियों की कर रही अरे कितना क्रन्दन।
क्या इसीलिए सरदार भक्त सिंह बिस्मिल ने खाई फांसी,
क्या इसीलिए सन् सत्तावन में लड़ी वीर रानी झांसी।
क्या इसीलिए नेता सुभाष दर-बदर फिरा बन संन्यासी,
क्या इसी लिए जेलों में सड़े और भूखे मरे भारतवासी।
क्या इसीलिए वंगाल प्रान्त में खेलीं गई खूनी होली,
क्या इसीलिए जलियां वाले में खाई वीरों ने गोली।
तुम ही कह दो प्रकाशवीर इन देश के ठेकेदारों से,
शासन चलता है नहीं कही, दुनियां में तुच्छ विचारों से।
चरखा चलता है हाथों से, शासन चलता तलवारों से,
जो होते हैं नर समझदार जाते हैं मान इशारों से।
यह नहीं समझते हैं, इनको देकर प्रमाण समझाता हूँ ॥११॥ तब···

प्रकाश वीर शर्मा भजनोपदेशक 'व्याकुल'

भजन

आनन्द श्रोत वह रहा, पर तू उदास है।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥
फूलों में जो सुवास ईख में मिठास है।
भगवान् का त्यों विश्व के कण कण में वास है॥
टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही।
जिसको तू ढूँढता वो सदा तेरे पास है।
कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है॥
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक प्रकाश इन्द्रियों का दास है॥

पं० प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न

भजन

सोये मल्लाह तो नैया को पार कौन करे।
जब सुधारक का पतन हो, सुधार कौन करे॥
आप ही जब फंसे दल बन्दियों की दल २ में।
विश्व में वेद ज्ञान का प्रचार कौन करे॥
पंच ही कर रहे हो जब चारसौ बीसी।
देश से दूर फिर ये भ्रष्टाचार कौन करे॥
नाच रंग में हो मस्त देश के युवक ही जब।
रक्षा हित देश द्रोहियों पै वार कौन करे।
रात दिन घर में घुसे जहर उगलते हैं।
ऐसे सांपों को देव मान प्यार कौन करे॥
मिटा विद्युत 'प्रकाश' से अंधेरा घर २ का।
हृदय मन्दिर का नष्ट अन्धकार कौन करे।

पं० प्रकाश चन्द्र कविरत्न

भजन

रे पुजारी ! स्वार्थ वश ये पाठ पूजन और है।
किन्तु उस भगवान का निष्काम चिन्तन और है॥
देखते हैं जिसमें हम उस दिव्य दर्पण कार को।
तृप्त करता जो तृषित को वह सजल धन और है॥

भर न दम वैराग्य का अय ! राग के रंग में रंगे ।
त्याग के रंग में रंगा, वह सन्त जीवन और है ॥
देख बाहर की चमक धोखा न खाना तू 'प्रकाश'
ये अरे ! पीतल निरा है, शुद्ध कचन और है ॥

पं० प्रकाश चन्द्र जी 'प्रकाश'

भजन

अगर पाप में आपका दिल नहीं है ।
तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है ।
न हो उसकी मखलूक से प्यार जिसको ।
वो आदमी कहाने के काबिल नहीं है ॥
तुझें दुनियां काबू में कर लेगी नादां ।
जो काबू में तेरे तेरा दिल ही नहीं है ।
ये हस्ती है किसकी तू रहता है जिसमें ।
अगर उसकी हस्ती का कायल नहीं है ॥
जिसे दुनियां कहते हैं अय दुनिया वालो ।
ये रण क्षेत्र है, कोई महफिल नहीं है ।
जिसे मरना आता नहीं राहे हक में ।
वो नामर्द है, मर्दे कामिल नहीं है ॥
हथेली पै हो जिसका सर इसमें कूदे ।
ये दरिया है वो जिसका साहिल नहीं है ।
"मुसाफिर" है तू हार हरगिज न हिम्मत ।
जरा और चल दूर मंजिल नहीं है ।

कुंवर सुखलाल जी आर्य 'मुसाफिर"

भजन

बाहर की लगी हवा ऐसी, घर का भी आंगन भूल गये ।
कर नकल और की भारतीय, निजदेश आचरण भूल गये ॥
खा मीट केक, पी टी. बिस्कुट, होटल का टोटल बढ़ा दिया ।
घी दूध मलाई, दही, मक्खन बल वर्धक भोजन भूल गये ॥१॥
घी शुद्ध यहां किस तरह मिले, वेजिटेबिल फिर क्यों बिके ।
कुत्ते हैं घर-घर में बंधे हुए गौओं का पालन भूल गये ॥२॥

पहने नित कोट पैन्ट टाई कालर वो हैट आदि तन पर।
पगड़ी चादर, धोती कुरता, पीताम्वर अचकन भूल गये ॥३॥

नटखट निर्लज्जा, नखराली, पति को तलाक देने वाली।
इंगलिश लेडी पर मुग्ध हुए, सीता का सतिपन भूल गये ॥४॥

केवल एक उंगली से सीखा करना गुड़बाई, गुड़ मार्निंग।
दोनों कर जोड़ नमस्ते कहें, करना अभिवादन भूल गये ॥५॥

डारविन की थ्योरी, शेक्सपीयर, मिलटन की कविता याद रही।
श्रुति दर्शन, कालीदास काव्य, भरत, रामायण भूल गये ॥६॥

नीरस कटु अंग्रेजी टरटर, अब तक है मुंह पर लगी हुई।
अति सुगम, सरस, मृदुतर "प्रकाश" हिन्दी उच्चारण भूल गये ॥७॥

पं० प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न अजमेर

भजन

वतायें तुम्हें हम दयानन्द क्या था, ऋषि था फरिश्ता था या देवता था।
थे विद्या से भरपूर उसके खजाने, शहन्शाह था, गो वजाहिर गदा था ॥
रहा उम्र भर शेर ये हक परस्ती, वतन का था शैदां पर फिदा था।
अंधेरे में जो ठोकरें खा रहे थे, वह उन गुमराहों के लिए रहनुमा था ॥
उसी की थी हिम्मत बचाया वरना, निशां हिन्दुओं का मिटा जा रहा था।
जुवां में भी योगी की तासीर ऐसी, कि उनका सखुन नाव के बे खता था ॥
किया जिसके झौकों ने सरसब्ज गुलशन, वह वादे बाहरी, था वादे शवा था।
घटाओं में चमका था यह वर्क बन कर, मुजस्सिम तज्ल्ली था नूरे खुदा था ॥
गरज कोई माने न माने 'मुसाफिर' दयानन्द दर्दे वतन की दवा था।

कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर,

महर्षि दयानन्द जी महाराज का बताया हुआ दन्त मंजन

माजू फल, मुरेठी, पपरिया कत्था, रूमी मस्तगी, नीलाथोथा, ये पाँच चीज बरावर अर्थात् आध-आध पाव नीला थोथा को अग्नि पर फुला कर थोड़ा-सा जल कड़ाही में रखकर बुझालें और बुझाके शीघ्र निकाल के पांचों चीजें अलग-अलग पीस लें। उन पांचों चीजों के बरावर आक के जड़ की छाल पृथ्वी से खोदके धो डाले जिससे मिट्टी कंकर न रहे। छाल को छोटी-छोटी काट के जिस जल में नीला थोथा बुझाया है। उसमें छ:वों चीजें डाल

के लोहे की कड़ाही में लोहे की मूसली से कूटे। जब महीन हो तब निर्वात स्थान में पीसे जब तक अंजन के समान न हो जाये पीसता जाये पीछे किसी शीशी में भर रखे। दान्तुन करके फिर पीछे अंगुली से दांत और मसूढ़ों में लगावे। इससे दांत पुष्ट रहेंगे न हिलेंगे न गिरेंगे न पीड़ा होगी।

यह दंत मंजन ऋषि दयानन्द जी ने जयपुर से ३१ मार्च १८८०, (१८८१) को स्वामी कृपाराम जी जंगल विभाग देहरादून को अपने हाथ से पत्र में लिखकर भेजा था।

(सम्पादक)

शान्ति कैसे होगी

एक बार हम सब विद्यार्थी हापुड़ में पं० रामचन्द्र जी देहलवी के पास उन्हीं की कोठी के मैदान में घास पर बैठे पढ़ रहे थे अचानक ही बीच में एक ग्रामीण कंधे पर चादर रक्खे हाथ में मोटा लठ लेकर उपस्थित हो गया और पं० जी से पूछने लगा कि अमेरिका और रूस जैसे बड़े-बड़े राष्ट्र मांसाहारी हैं। हजारों निरपराध प्राणियों की हत्या करते हैं और बात दुनियां में शान्ति की करते हैं क्या ऐसे शान्ति हो जायेगी देहलवी जी ने तपाक से उत्तर दिया जब तक निरपराध प्राणियों का वध बन्द नही होगा तब तक दुनिया में शान्ति न हो सकेगी।

जयप्रकाश आचार्य

निरक्षर भट्टाचार्य

स्वामी ब्रह्मानन्द जी बैठे हुए थे साथ में कुछ सत्संगी जन भी थे एक साधु आया जिसकी सफेद दाढ़ी-तेजस्वी चेहरा देखकर सब लोग खड़े हो गये। सम्मान सहित आसन देकर कुशल क्षेम पूछा वार्तालाप में पता चला कि वह अनपढ़ है तो स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने साथियों से कहा कि महाराज तो निरक्षर भट्टाचार्य हैं। तुरन्त यह सुनकर दाढ़ी वाले साधु खड़े हो गये और बोले महाराज मैं तो अनपढ़ हूं इस महान् आचार्य की उपाधि के योग्य तो आप ही हैं। सब लोग हंस पड़े।

रामफल आर्य

भजन

रे वतादे कोई कहां गई तरुणाई ।
गई, गई, बस गई, लौटकर फिर न कभी वह आई । रे वता दे···
जिसकी रक्षा के हित खाई मेवा और मिठाई ।
दूध, दही, घृत, मक्खन खाया, हलुवा, खीर, मलाई । रे वता दे···
पिश्ता और वादाम छुहारे, ढेरों किशमिश खाई ।
लड्डू, पेड़ा और इमरती, वरफी, वालुशाई, । रे वता दे···
रसगुल्ले-रसबड़े आदि पर, जिसकी रही चढ़ाई ॥
उस वेवफा रांड ने मुड़कर सूरत नहीं दिखाई । रे वतादे···
चली गई चुपचाप तोड़ कर ममता, मोह, मिताई ।
उसे ढूंढते कमर झुक गई, फिर भी थांग न पाई । रे वता दे···
ऊँचे-ऊँचे पर्वत लांघे, नीचौ नदियाँ खाई ।
अव दस अंगुल नीचा ऊँचा देख बुद्धि चकराई ॥ रे वता दे···
कान न सुने, आँखं नहीं देंखे, पग चले लंगड़ाई ।
तन में रोग़ समूह समायो, मन में भूल समाई ॥
रे नवयुवकों वात हमारी, सुनी कान में भाई ।
ये तरुणाई धोखा देगी, तजकर स्नेह सगाई ॥ रे वता दे···
इसके जाने से पहले कुछ करलो अमर कमाई ।
जितना लाभ ले सको ले लो फिर न उठेगी पाई ॥
तव फिरोगे कहते कहां गई तरुणाई ।
रे वता दे कोई कहां गई तरुणाई ॥

अमर स्वामी जी

सारंगी वाले

ठा० अमरसिंह जी का शास्त्रार्थ पं० माध्वाचार्य से बद्दोमली (पश्चिमी पाकिस्तान वर्तमान में) होने वाला था था जैसे ही ठाकुर साहब आर्यसमाज के मंच पर पहुंचे सब लोगो ने करतल ध्वनि से स्वागत किया, किन्तु सनातन धर्म के ऊँचे मंच पर बैठे माध्वाचार्य ने कहा लो आ गये मुझसे शास्त्रार्थ करने ये लाहौर में सारंगी बजाते ये अव शास्त्रार्थ करेंगे । (ठा० जी को गान विद्या का बड़ा शौक था) तपाक से ठाकुर जी ने जनता की ओर अभिमुख हो कहा सुनो, सारंगी बजाने से हमारा सिद्धान्त कम नहीं हो जाता न मेरी विद्या व योग्यता कम हो जायेगी बल्कि मैं भी पौराणिकों के भगवानों में शामिल हो गया माध्वाचार्य तिलमिलाये तो ठाकुर जी बोल उठे शिवजी डमरू बजाते थे, कृष्ण जी बांसुरी बजाते थे, नारदजी वीणा बजाते थे, तुम्हारे देव हैं । मैं भी तुम्हारा देव हो गया हूं । शर्म के मारे माध्वाचार्य निरूत्तर हो गये और जनता ने तालियों की गडगड़ाहट से मैदान गुंजा दिया । सम्पादक

दयानन्द दिव्य दर्शन (१)

अमर स्वामी महाराज ने एक घटना सुनाई कि सन् १६३० में मैं चुनियां तहसील लाहौर में गया वहां से २५ मील दूर दीपालपुर नामक स्थान में एक सनातनी पंडित रहते थे जिनके बारे में यह प्रसिद्ध था कि उन्होंने स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ किया था। मैं २५ मील पैदल चलकर उनके दर्शन करने गया और जिज्ञासा थी कि स्वामी दयानन्द जी महाराज के बारे में पूछूं। उन पं० जी का नाम मेरे याद नहीं रहा। उस समय उनकी आयु ८० वर्ष से ऊपर थी तथा वह अंधे हो चुके थे। मैंने जब उन्हें नमस्ते की तो बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आर्यसमाजी मालूम देते हो, मैंने अपना परिचय दिया कि मैं सभी का महोपदेशक ठाकुर अमरसिंह हूँ।

मैंने कहा कि सुना है आपने स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ किया था उस प्रसंग को आप से ही सुनना चाहता हूं। पंडित जी गंभीर होकर बोले हम तो नादान थे पौराणिक लोग मुझे ले गये चूंकि यहाँ व्याकरण दर्शन विद्या में मैं ही महान पंडित था।

स्वामी जी से शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ, प्रथम तो उन्हें देखते ही सबकी बोलती बंद हो गई किन्तु साहस करके मैंने मूर्ति पूजा पर चर्चा चलाई। स्वामी जी बोले मूर्ति शब्द वेद में परमात्मा के निमित्त नहीं है। साथ ही स्वामी जी ने कहा पांच मिनट बोलना है मुझे और कुछ न सूझा मैंने कहा मिनट शब्द वेद में कहां लिखा है। दिखाओ स्वामी जी हँसे कि हम लोगों ने तालियां बजायीं उठकर के चल पड़े। अरे शास्त्रार्थ क्या करना था। वे तो सूर्य थे और हम सब जुगनू।

—सम्पाव

जलता दीपक

अमर स्वामी जी महाराज ने एक घटना सुनाई कि स्वामी दयानन्द जी महाराज पर्वत की चोटी पर योगाभ्यास कर रहे थे और जमीन से ऊपर आकाश में उठकर भ्रमण कर रहे थे। एक मुसलमान नवाब जो शिकार खेलने गये थे। शिकार न मिला और अंधेरा सा होने लगा तो अपने घोड़े को एक पर्वत से जो प्रकाश फूट रहा था उसी ओर बढ़ा दिया, पर्वत पर जलते दीपक के पास पहुंचने के लिये घोड़े को नीचे ही वृक्ष से बांध कर अपनी

राईफल संभाल कर चला तो देखता क्या है कि वहां दीपक तो जल नहीं रहा है किन्तु एक दिव्य मूर्ति जमीन से ऊपर आकाश में, हवा में उड़ रही है। मुसलमान आश्चर्य चकित रह गया मूर्ति नीचे जमीन पर आकर बैठ गई। पैरों से हाथ लगाकर मुसलमान ने नमस्ते की पूछा कौन हैं आप, तो उत्तर मिला मेरा नाम दयानन्द सरस्वती है।

महर्षि दयानन्द के यौगिक जीवन से सम्बन्धित यह घटना एक उर्दू के समाचार पत्र में एक मुसलमान सज्जन ने अपनी आंखों से देखी, अपने पर बीती छापी थी।

—सम्पादक

लोह-पुरुष

श्री पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी के सम्बन्ध में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान होगा।

पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज भारत की दिव्य विभूति हैं।

आप वेदों-शास्त्रों उपनिषदों के बाइबिल और कुरान पुराणों के धर्म ग्रन्थों के महान् ज्ञाता शास्त्रार्थ महारथी सुप्रसिद्ध साहित्यकार और वाणी भूषण लोहपुरुष महात्मा है। देश का परमसौभाग्य है कि आपको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। परमात्मा से प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी महाराज को चिरायु और शतायु करे। आपकी छत्र छाया में वैदिक धर्म का विश्व के कोने-कोने व्यापक प्रचार हो।

श्री ठा० विक्रम सिंह जी को धन्यवाद है जिनके प्रयास से अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है।

भारत का भविष्य उज्ज्वल बने पूज्य स्वामी जी के चरण चिन्हों पर चलने की शक्ति हमें दे।

निवेदक

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी मंत्री वेद विश्वविद्यालय
निर्माण समिति सराय रुहेला, नई दिल्ली-५

विविध

२३—मान्यवर श्री अमर स्वामी जी महाराज आर्य समाज के एक जाज्वल्यमान रत्न हैं जिनमें मिश्नरी भावना कूटकर भरी हुई है। आपके व्याख्यान ओजपूर्ण, कथा सरस तथा शास्त्रार्थ प्रतिवादी को परास्त करने वाले होते हैं। आपका अपने सहयोगी उपदेशकों तथा पुरोहितों के साथ बड़ा मधुर व्यवहार होता है तथा आप उनके गौरव एवं प्रतिष्ठा की रक्षार्थ सदा सन्नद्ध रहते हैं। मैं श्री स्वामी जी के दीर्घायुष्य की प्रभु से कामना करता हूं।

—चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण आर्य समाज
हनुमान रोड, प्रधान आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली प्रदेश

२४—पूज्यपाद अमर स्वामी जी आज तो एक संन्यासी हैं आर्य जगत के मूर्धन्य, परन्तु पूर्वकाल हम में से किसी को भूल नहीं सकेगा जब कि ठाकुर अमर सिंह आर्यउपदेशक के नाम से आप प्रसिद्ध थे और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिकधर्म प्रचार प्रसार करते हुए पिशावर से कन्या कुमारी तक सम्पूर्ण देश में अहर्निश व्याख्यानों और शास्त्रार्थों द्वारा आर्य समाज के आकाश मण्डल में सूर्य्य समान दीप्यमान हो रहे थे।

प्रतिदिन के मुनाजरों या मुवाहिसों में मदेमुकाबिल पर निरन्तर वैदिक सत्शास्त्रों के प्रमाणों और अखंड युक्तियों से ऐसा गलवा जमाते कि वह अवाक होकर देखते ही रह जाते वा येन-केन प्रकारेण शास्त्रार्थ के मंच से कन्नी कतराने में ही अपनी कुशलता मानते थे।

मुख मण्डल की वह लाल तेजोमय आकृति और राजपूती ठाकुरी शान की पगड़ी भला किस को नहीं मोह लेती थी? ऐसा प्यारा व्यक्तित्व तथा वाणी में तेजस्विता और अपूर्व विद्वत्ता का दिगदर्शन श्रवण और दर्शन से ही सम्बंध रखता था।

अब जबकि आप अपनी मनोहर वेद कथाओं दीर्घायु के अनुभव खोज पूर्ण व्याखानों से संन्यास आश्रम में प्रवेश कर यत्र-तत्र भ्रमण करते हुए आर्य जगत को अमृत पान करा रहे हैं, हम वेद ज्ञान के पालक बृहस्पति परमेश्वर से प्रार्थी हैं कि चिरकाल पर्यन्त अमर स्वामी जी की अमर (वेद) वाणी मानव मात्र के कल्याण के लिये स्वस्थ रहे जिस से हमारा मार्ग प्रदर्शन होता रहे।

—मंगल प्रार्थनाओं के साथ चरण सेवक
आशुराम आर्य पुरोहित, चण्डीगढ़

स्वामी विज्ञानानन्द जी सरस्वती के अन्तिम दर्शन

आचार्य उदयवीर जी शास्त्री, प्रो० रत्नसिंह जी, ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थ, अमर स्वामी जी महाराज संन्यास आश्रम गाजियावाद

सन १६७८ ई०

२५—आर्यसमाज सत्यान्वेषी पूज्य शास्त्रार्थ महारथी, उपाधि से विभुषित वेद वेत्ताओं, धर्म शास्त्र आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ, मनस्वी, विद्वान गुरुवर, धर्म पिता, श्री अमर स्वामी जी महाराज का अभिनन्दन अति आवश्यक है यह कार्य सभाओं की ओर से होना चाहिए था परन्तु कई सम्भ्रान्त विद्वानों ने श्री भाई ठा० विक्रम सिंह जी शास्त्री के संयोजकत्व में निकालना ही उचित समझा। कारण कि सभाओं के अधिकारीगण व्यक्तिगत संघर्षों में व्यस्त हैं उन्हे अपने विद्वानों का सम्मान करने कराने का अवसर ही कहाँ हैं। अतः मैं श्री ठा० विक्रम सिंह जी शास्त्री को बधाई देता हू कि अपने पूज्य गुरुवर जी का अभिनन्दन ग्रन्थ निकाल रहे हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने कई विधर्मियों से सैंकडो शास्त्रार्थ किये हैं और सर्वत्र विजय प्राप्त की है। एक शात्रार्थ मैंने गढ़ मुक्तेश्वर में पौराणिक दिग्गज पण्डितों से स्वामी जी का सुना, देखा जो श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता में तथा श्री पं० लोकनाथ जी तर्क शिरोमणी की उपस्थिति में हुआ था। जिस में स्वामी जी को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। गढ़मुक्तेश्वर के समस्त श्रोता गणों ने स्वामी जी का महान अभिनन्दन किया जुलूस निकाला समाज की विजय हुई एक शास्त्रार्थ मैंने स्वामी जी का बांकनेर में देखा-सुना जब स्वामी जी ने संन्यास नहीं लिया था कलकत्ता आर्य समाज के धर्माचार्य पद को सुशोभित कर रहे थे। पौराणिक दिग्गज पण्डित बांकनेर में समाज के सिद्धान्तों पर कीचड़ उछाल रहे थे तथा महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज को कुवाक् वक रहे थे और शास्त्रार्थ के लिये समाजियों को खुला आह्वान कर रहे थे उस समय दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने और पूज्य श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने बांकनेर के आर्यों को कहा कि श्री ठा० अमर सिंह जी शास्त्रार्थ महारथी (पूर्वनाम) अब श्री अमर स्वामी जी महाराज को कलकत्ता से बुलाया जाय। श्री स्वामी जी को बंगाल से बुलाया और बांकनेर में जो शास्त्रार्थ हुआ देखते-सुनते बनता था पौराणिकों का मुंह बन्द हो गया, बोल नहीं सके। ऐसे समर सेनानी सिंह समान आर्य समाज के महान रक्षक-सेवक वैदिक सिद्धान्तों तथा बौद्ध जैन ईरानी-कुरानी-पौराणिक वैदिक धर्म के अतिरिक्त समस्त मत-मतान्तरों-सम्प्रदायों के ज्ञाता विद्वान, मर्मज्ञ, पूज्य श्री स्वामी गुरुवर अमर स्वामी जी महाराज का अभिनन्दन करता हूं और जिन महानुभावों ने इस ग्रन्थ के प्रसारण में सहयोग दिया है उन सब को साधुवाद देता हूं कि उन्होंने अपना कर्त्तव्य निभाया है। विशेष भाई श्री विक्रम सिंह जी शास्त्री को धन्यवाद और बधाई देता हूं कि गुरु ऋण से

उऋण होने का यत्न किया किया और कराया है। पूज्य गुरुवर-धर्म पिता श्री स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजली अर्पित करता हूं।

—ओम प्रकाश शर्मा आर्यपथिक सिद्धान्तालंकार
पुरोहित-आर्यसमाज शाहदरा दिल्ली

२६—पूज्य अमर स्वामी जी महाराज जिनके चरणों में बैठकर विद्या की साधना पूर्ण की, आज पुलकित मन से आर्य जगत अपनी भावनाओं से अभिनन्दन कर रहा है गुणों का वर्णन इस वाणी के वश में नहीं है। जब भी उनके समीप होता हूं महात्माओं का प्रशाद आनन्द और शान्ति पाता हूं।

व्याख्यान के समय महान पंडित-शास्त्रार्थ के समय युक्ति और प्रमाण का पुलन्दा, खेती के समय सुलझे किसान—न्याय के समय ज्ञानी सरपंच—संगीत में तानसेन—भोजन में निपुण रसोईया—आचार विद्या के अद्भुत ज्ञाता—आयुर्वेद के धन्वन्तरि शुभ गुण विभूषित गुरु को नमस्कार करता हूं।

विक्रमसिंह शास्त्री
—आर्य समाज डिफेंसकालोनी नई दिल्ली

"परोपकाराय सतां विभूतयः"

२७—यह वचन परम पूज्य गुरुवर के जीवन पर स्पष्ट परिलक्षित होता है! मेरा बचपन पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में वीता। लेकिन कभी यह देखने को नहीं मिला, कि उन्हें कभी अपने लिए जीता पाया।

आज देश के प्रत्येक कोने में उनके द्वारा बनाये उपदेशक, भजनीक, प्रोफेसर हैं। जो देश और समाज के प्रति महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा कर रहे हैं। कितने ही अनमोल ग्रन्थ आर्य जगत को देकर सम्पूर्ण जीवन विधर्मियों से शास्त्रार्थ कर भावी आर्य नवयुवा पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

स्वामी जी की उच्च एवं पवित्र मनोवृत्ति का इससे बड़ा प्रमाण और क्या मिल सकता है? कि वह रोते हैं तो दूसरों के लिए, जीते हैं तो दूसरों के लिए। किसी के भी दर्द को वह सहन नहीं कर पाते हैं:— वसुधैव कुटुम्बकम् को उन्होंने हमेशा चरितार्थ किया।

यह सत्य है—महान लोगों का जीवन ही परोपकार के लिए होता है। स्वामी जी ने मूक होकर हमेशा इस महानता का परिचय दिया है। अपनों के लिए तो सब ही जीते हैं! महान तो वो ही हैं जो दूसरों के लिए जीते और मरते हैं!

आज जिधर भी मैं नजर दौड़ाता हूं तो मुझे कोई ऐसा प्रान्त नजर नहीं आता--जहां सुदृढ़ शरीर रूपी भवन खड़े दिखाई न देते हों! सर्वं श्री ठा० विक्रमसिंह जी शास्त्री एम० ए० जिनके अथक—परिश्रम का फल यह अभिनन्दन ग्रन्थ है और आज आर्य समाज के मंचों पर मंचन कर रहे हैं! श्री प्रो० वीरपाल जी विद्यालंकार, श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री, नेत्रपाल जी शास्त्री कश्मीर, श्री योगेन्द्र जी जम्मू, वेद प्रकाश जी शास्त्री, वेदपाल जी शास्त्री श्री वेदव्यास जी भजनोपदेशक: इसी प्रकार के कितने ही नवयुवक हैं—अगर सूची तैयार की जाये तो एक अलग ही ग्रन्थ तैयार हो जायेगा !

इस शुभ एवं पवित्र कार्य के लिए श्री ठा० विक्रमसिंह जी बधाई के पात्र हैं ! जिन्होंने यह पुण्य कार्य किया है।

मैं परमपिता परमात्मा से ऐसी महान—विभूति, शास्त्र मर्मज्ञ, तपस्वी, कर्मठ परोपकारी संन्यासी के शुभ स्वास्थ्य की कामना के साथ शतशः नमन करता हूं।

—विजय विद्रोही' पत्रकार

१९ बी०, जी० टी० रोड, गाजियाबाद

गौ आदि गाय पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दुग्धादि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है।

—गौ करुणानिधि

दक्षिणा

ऋत्विग्वरणार्थं कुण्डलागुलीयकवासांसि ।

ऋत्विजों के वरण के लिए सोने के कुण्डल और अंगूठी तथा सुन्दर वस्त्र होने चाहिए।

—संस्कार विधि

एक अमर ज्योति

लेखक—लाजपत आर्य
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
दयानन्द नगर गाजियाबाद उ० प्र०

२८—मुझे सन् १९६७ ई० में अपना जन्मस्थान "धाठेड़ा" जि० सहारनपुर को छोड़ कर हिसार दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में जाना पड़ा। क्योंकि वहां की कालिज की संगति अनुकूल नहीं थी, हमारे ताऊ जी श्री वैद्य गोविन्द सहाय जी गुप्ता उनकी वैसे भी यह इच्छा थी कि हमारे परिवार में से कम से कम एक व्यक्ति तो ऐसा तैयार हो जो आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करे।

उन्होंने मेरी वहां की संगति देखकर मेरे बिगड़ जाने के भय से एवं अपनी इच्छा पूर्ण करने हेतु मुझे हिसार भेज दिया था।

वहां से मुझे किसी[1] कारण वश स्नातक होने से पहले ही अमर स्वामी जी महाराज के पास आना पड़ा। उस समय सी० आई० डी० मेरे पीछे बड़ी जबर्दस्त थी। (ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम-हरिद्वार)।

---

१. कारण यह था कि मेरे विचार आरम्भ से ही उग्र रहे, मैंने वहां पर सोचा कि हम लोग यहां से उपदेशक बन कर निकलेंगे, परन्तु मनुस्मृति में लिखा है कि जिस देश का राजा गलत हो, तो वहां की प्रजा कैसे सही हो सकती है। इसी आधार पर मैंने भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमति इन्द्रागांधी जी को एक उपदेशात्मक पत्र लिख दिया, उन्होंने मेरा उपदेश तो क्या खाक मानना था, उस पत्र की फोटो स्टेट कापि कराकर हर प्रान्त की सी० आई० डी० को दे दिया गया। उसका परिणाम निकला—कि मुझे विद्यालय छोड़ना पड़ा। मुझे विद्यालय के अधिकारियों ने महात्मा अमर स्वामी जी महाराज का पता बता कर उनके पास भेज दिया। विद्यालय वालों का व्यवहार भी कुछ अच्छा नहीं रहा, जिसका पता, श्री पं० देवराज जी सन्धीर (एडवोकेट) जी को है।

मैंने स्वामी जी महाराज को आकर सभी बातें बताई तो उपदेशक विद्यालय वालों के व्यवहार के लिऐ तो स्वामी जी महाराज ने उनको पत्र लिखा। और मुझे आश्वासन दिया कि—तुमने कोई धारा न० ३०२ का केस नहीं किया, चिन्ता मत करो अज्ञानता में भूल हो जाती है। मैं स्वामी जी के पास रहने लगा, उस समय स्वामी जी की आँखों में मोतिया बिन्द था, दीखता नहीं था बिल्कुल अन्धे थे।

मैंने स्वामी जी का नाम बहुत पहले से सुना हुआ था, मुझे स्वामी जी ने व्याख्यान तैयार कराने आरम्भ किये। मैं भी उपदेशक बनने की तैयारी करने लगा। कुछ समय पश्चात स्टेज पर बोलना आरम्भ कर दिया। पूरे चार वर्ष तक सी० आई० डी० पुलिस मेरे पीछे रही, स्वामी जी ने ही मुझे बचाया। मैं यह निश्चय पूर्वक कह सकता हूं, कि—"अगर अमर स्वामी जी महाराज मेरे जीवन में न आते तो मैं जेल में होता, अथवा कुछ पता नहीं मेरे जीवन का बिगड़ कर क्या बनता?"

झलकियां एवं विशेषताएं :—

मैंने स्वामी जी महाराज के पास रह कर उनके जीवन की कुछ अदभुत बातें देखी, जिनको संक्षेप में कहता हूँ।

स्वामी जी का नियम था, छोटा हो या बड़ा समाज, जिसको एक बार समय दे दिया, फिर चाहें कितने ही बड़े समाज का निमन्त्रण आवे, उन्होंने उसे मानना नहीं, और उत्सव आदि के अन्त में रूपया आदि के बारे में कहना नहीं, दे दिया तो ठीक न दिया तो प्रतीक्षा नहीं करनी। और खाने-पीने सम्बन्धी कोई किसी अधिकारी से नहीं कहना अपने पास से पैसा देना, जो इच्छा हो ले लो। हमेशा हमें यही निर्देश होता। स्वामी जी महाराज का एक विशेष नियम था कि—"रोटी के लिए गाड़ी नहीं छोड़नी, गाड़ी के लिए रोटी छोड़ देनी" स्वामी जी के पास छोटा आदमी आवे या बड़ा सबसे वही प्रीतिपूर्वक व्यवहार एवं स्टेज कोई भी हो, हमेशा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों पर बोलना और उनका प्रतिपादन करना ही स्वामी जी का मुख्य उद्देश्य रहा है।

स्वामी जी का कहना था—कि पाप को समाप्त करो, पापी को नहीं, पापी को समाप्त करने से पाप समाप्त नहीं हो सकते।

आपके पास जो भी आया, उसे त्यागा नहीं बल्कि, उसका सुधार करने का प्रयत्न किया।

बहुत सी जगहों से हवाई जहाज एवं फर्स्ट क्लाश का किराया आता, तो स्वामी जी हमको कहते। कि बेटे। राजे !! उनको लिख दो हमारा नियम है कि हम कभी समाज के पैसे का अपव्यय नहीं करते, हम तो थर्ड क्लाश में जावेंगे, अतः वह वहां स्टेशन आदि पर आकर हमारी प्रतीक्षा न करें।

वहां पहुच कर थर्ड क्लास का किराया रखकर शेष वापिस कर दिया, स्वामी जी महाराज ने कभी मान-अपमान की चिन्ता नहीं की, स्वामी जी महाराज ने कभी एक दो व तीन पैसे के सिक्के कभी काम में नहीं लायें, एक जेब में ये सिक्के पड़े रहते, इनको सदा वह भिखारियों को बांटते हैं।

स्वामी जी के जीवन की अगर मैं सभी विशेषताएं लिखने लगूं तो एक नया विशाल ग्रन्थ तैयार हो जावेगा।

मैंने स्वामी जी के पास रह कर सोचा कि—मौखिक रूप से प्रचार सम्भव नहीं, यह स्थायी नहीं है। अतः मैंने सन् १९६० ई० से ही साहित्य द्वारा प्रचार करना आरम्भ किया।

और उस प्रकाशन का नाम भी स्वामी जी महाराज के नाम पर ही रक्खा, मेरी इच्छा है कि वैदिक सिद्धान्तों के ऊपर ग्रन्थ लिखे जावें एवं वह प्रकाशित हों, तो वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार होगा।

सच तो यह है कि—स्वामी जी महाराज के ही प्रताप से मैं यहां तक पहुंचा हूं। अन्यथा मैं भी अग्रवाल परिवार से सम्बन्धित हूं कहीं पर व्यापार करता, और परिवार, भी वह जिसे सारा देश जानता है। सहारनपुर जिले में तो कहीं खड़े होकर पूछिये—कि श्री ला० प्यारे लाल-गोकल चन्द जी घाठेडे वाले कौन हैं ? आपको पता लग जावेगा।

हमारे पूर्वजों में से अनेकों विभूतियां हुई हैं। अभी-२ वर्तमान में श्री कृष्ण चन्द जी लैफ्टीनैन्ट गवर्नर-दिल्ली राजा जो हमारे ताऊ जी के सुपुत्र हैं।

स्वामी जी के आशीर्वाद से मैं ही नहीं सैकड़ों नवयुवकों के जीवन बने हैं।

और वह स्वामी जी की कृपा से सीख-२ कर कार्यक्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उनकी कुछ सूची मैंने अमर गीताञ्जली के पीछे दी है। पाठक गण वहां देख सकते हैं।

मैंने पारसमणि को देखा तो नहीं। हाँ सुना है कि उससे लोहे को स्पर्श करा देने से लोहा भी सोना हो जाता हैं।

पूज्य गुरुजी महात्मा अमर स्वामी जी महाराज किसी पारस मणी से कम नहीं हैं, जिनके सम्पर्क में आकर अनेकों व्यक्ति तर गये। अनेकों दीपक इस अमर ज्योति से प्रकाश—पा-पा कर जल रहे हैं धन्य हो ऐसी "अमर ज्योति को"।

जिसे मेरा शत् ! शत् ! प्रणाम् है।

हिन्दू

अब 'हिन्दू' इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यवर्त इन नामों का अभिमान करो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए तो हुए परन्तु नाम भ्रष्टतो हमें न होना चाहिए।

—उपदेश मंजरी

स्त्री पगड़ी है

हे स्त्री। जैसे पगड़ी आदि वस्त्र सुख देने वाले होते हैं वैसे तू पति के लिए सुख देने वाली हो।

—यजु० ३८।३

श्री अमर स्वामी जी महाराज

—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार
आचार्य उपदेशक विद्यालय टंकारा

२६—श्री मान्य अमर स्वामी जी का नाम सुनते ही उनका वह तेजस्वी रूप आंखों सामने आया है। ठा० अमरसिंह जी के नाम से उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन वहुत लम्बे समय तक कार्य किया।

मेरा उनसे व्यक्तिगत परिचय वहुत छोटा पर बहुत पुराना है। सन् १९२६ से मैं गुरुकुल से स्नातक बनकर निकला। कुछ मास उसी कार्यक्षेत्र विलोचिस्तान में वहां मेरे पूज्य पिताजी पं० ठाकुर दास जी सप्लाई तथा ट्रांसपोर्ट के विभाग में सरकारी कर्मचारी के रूप में काम करते थे—रहना हुआ। पूज्य पिताजी पुराने समर्पित आर्य समाजी थे। उनके लिये दफतर से पहले और दफतर से पीछे का सारा समय आर्यसमाज के ही लिए था। क्वेटा आर्यसमाज के गुरुकुल विभाग में वे उपमन्त्री से लेकर प्रधान तक क्रमश: सव पदों पर कार्य कर चुके थे।

ठा० अमर सिंह जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित उपदेशक थे। क्वेटा इनका आना जाना प्राय: रहता था। क्वेटा में गुरुकुल विभाग तथा कालिज विभाग दोनों के कार्य कर्ताओं में परस्पर बहुत सौहार्द था। लगभग कोई विरोध न था। जहां तक मुझे स्मरण है। कुछ वर्ष तक यह भी आन्दोलन चला कि दोनों विभाग एक हो जायें। कालिज विभाग के पास विकसित स्कूल था और गुरुकुल विभाग के पास सुन्दर हाल तथा कन्या पाठशाला। विलोचिस्तान की स्वतन्त्र प्रतिनिधि सभा वनाने का विचार उठा पर अधूरा ही रह गया।

स्वाभाविक था कि जो भी प्रचारक अथवा उपदेशक जाते थे सब आर्य भाई उनका परिचय प्राप्त करते थे। मान्य ठा० अमरसिंह जी का मेरे पिता जी से अच्छा परिचय था। मुझे अव भी ठाकुर जी की पुरानी मूर्ति का धुंधला सा स्मरण है। गेंहवा रंग, तीखे नैन नकश, अकड़ी हुई मूंछे, प्रभावी आंखें और ठकुराई की अकड़। धोती कुर्ते के साथ गले में उतरीय।

श्री अमर स्वामी जी महाराज क

आर्य समाज वड़ा वाजा

सन् १९७३ ई०